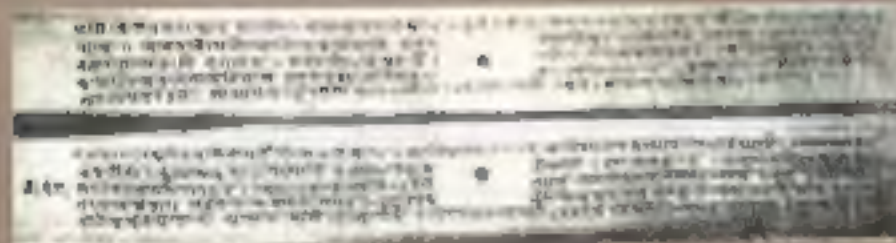




विद्यापति-गीत-समग्र

- प्रकाशक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- संपादक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- लेखक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- संशोधक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- प्रमाण - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- संशोधक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- प्रमाण - डॉ. मोहिन्द कृष्ण
- संशोधक - डॉ. मोहिन्द कृष्ण



CIIL

विद्यार्थी - डॉ. मोहिन्द कृष्ण

विद्यापति-गीत-समग्र

विद्यापति-गीत-समग्र



विद्यापति-गीत-समग्र

संशोधक
डॉ. मोहिन्द कृष्ण



भारतीय भाषा संस्थान
मैसूर

विद्यापति-गीत-समग्र

© भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

प्रकाशन संख्या: 1025

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक : पं. गोविन्द झा

प्रकाशक : भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

प्रथम संस्करण 2012

मूल्य :

मुद्रक : भारतीय भाषा संस्थान प्रेस, मैसूर।

विद्यापति-गीत-समग्र

सम्पादक
पं. गोविन्द झा



भारतीय भाषा संस्थान
मैसूर

Vidyapati-Gita-Samagra (Collection of the songs of Vidyapati)
Compiled by Pt. Govinda Jha

First Published: July 2012
Ashada 1933

© Central Institute of Indian Languages, Mysore 2012

This material may not be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic, or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from:

Dr. S.N. Barman
Director in charge
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore - 570 006, INDIA

Phone: 0091-821-2515820 (Director)
E-mail: barman_ashokbari@rediffmail.com

Fax: 0091-821-2515032
PARX: 0091-821-2345000
Website: <http://www.ciiil.org>

For further information contact:
Dr. K. Kapila
Head, Press & Publications
E-mail: kapila@ciiil.org or kapila@rediffmail.com

ISBN-978-81-7343-124-1

Price: ₹ 700/-

Published by
Dr. S.N. Barman, Director in charge
Central Institute of Indian Languages, Mysore

Printed at
CIIIL Printing Press,
Manasagangotri,
Mysore-570 006, India

Cover Design: H. Manohar

आमुख

विद्यापतिक प्रेम आ' विरह-गाथा केँ जे क्यो आजुक समयो मे पढ़ैत छथि, हुनक मन मे कृष्ण-भक्ति तरंगक स्थान पर राधा-विरहक भावे अधिक प्रकट भऽ उठैत छनि। श्याम-नाम मे राधा एतेक तल्लीन भेल छथि जे हुनका लागनि - हुनक शरीरक पंच-तत्त्व मे जे आटिक अंश छनि से मिला जाइक ओहि आटिक संग जाहि पर सँ कृष्ण चलैत छथि, हुनक शरीरक भीतर जे आगि सदा धधकि रहल छनि सेहो मिला जाइक दर्पणक आलोक मे जतय कृष्ण अपना केँ कहियहु कखनहु तिहरैत छथि, शरीरक भीतर जतय जलराशि उमड़ि-गुमड़ि कए बहैत रहैत अहि से सदा बाहर आवि कए ओहि नदी-मुहुरिणी मे मिला जाइक जतय श्रीकृष्ण अवगाहन करैत छथि आ' राधाकेँ भीतरक सबटा प्राण-वायु बाहर भऽ कए मिला जाइक प्रकृतिक वायु-सुंज मे जकर मधुर प्रवाह सँ कृष्णक अंग-अंग शीतल भऽ जाइत छनि निदारुण ग्रीष्म मे। एहन राधा जे एहि सेन आकाश बने घईल छथि जे तकर भीतर सँ श्याम-मेघक यातायात चलैत रहल युग-युग सँ - ताहि राधा केँ मनो-व्यथा केँ जे क्यो अपन अजर लेखनी सँ अमरन्य प्रदान कैने छथि त ओ आर क्यो नहि, कबि-कोविल विद्यापति छथि। विद्यापतिक राधा छथि स्वप्नान्या लारी, माटि-पातो केँ संयोजन सँ जतिक शरीर-मूलक अन्वय बनल छनि, जतिक प्रेम-भाव, प्रेम-भावना आ' प्रेम-भाव हुनका अस्वप्नान्या बना देने छनि। जखन संगल-कटयक युग से बंगालक कलेबो कवि कृष्ण-जीवन पर, नहि त हुनक मीमांसयता पर, नहि त राधा-कृष्ण प्रेमक उन्मत्तता पर आ' ले बिबु त देह-तत्त्व पर जोर देने छलाह, तखनहि विद्यापति मानवीक ईश्वर-प्रेम मे जे आनन्द आ' विघाटक छवि प्रस्फुट भ' उठैत तकरहि काव्य-दर्पण प्रस्तुत कैने छलाह - एहि ओ बाकी सब मध्ययुगीन कवि सँ भिन्न छलाह एकर पूर्णग अन्वयन संयोजन संकलन आई धरि भेल नहि छल जाहि दुरुह कार्य मे पंडित

मोहिन्द झा अत्यन्त सहस्रक संग अशीतिपरक अवस्था मे हाथ देने छथि जकर परिणाम आई पाठकक समक्ष विद्यापति-समयक रूप मे प्रस्तुत अछि।

जाहि नाट्य-रचनाक लेल मिथिलाक मध्य-युगक मंच प्रख्यात छल, ताहि नाटकीयताक छाप सेहो विद्यापतिक रचनामे हमरा भेटत। जाहि वर्णन-रत्नाकरक शयनय विक्षेपण आ' सामाजिक व्याख्यान सँ मध्य-युगक ज्ञान-चर्चा समृद्ध भेल छल, ताहि तरहक आलोचक-वर्तिका हाथ मे पीने विद्यापतिक रचना डेग-डेग बढ़ैत गेल छल, जकर उत्कृष्ट उदाहरण मात्र 'भू-परिक्रमण' ग्रन्थ मे भइल, हुनक सृजनी साहित्य मे सेहो पाओल जायत। तर्क-वितर्क, भाव-विभाव, वाद-विरोधाद - समक स्थान भेल छल कवि-कोकिलक कुहू-स्वरमे। एम्हर Harcourt Brace Company केर पोथी 'Reading about the World' (1999) ग्रन्थक पढ़िन खंड मे (जकर संपादन कैने छलाह कतेको प्रख्यात साहित्यशास्त्री मिलि कए, जाहि मे छलाह-Paul Bruns, Mary Galloway, Douglas Hughes, Arfar Hussain, Richard Law, Michael Myers, Michael Neville, Roger Schleminger, Alice Spitzer आओर Susan Swan प्रमुख) अत्यन्त गूढ़ वर्णन मे एहि तथ्य केँ व्यक्त कैने छलथिन्ह- "In the well-known tradition of the influential early Indian poem called *Gita-Govinda* by Jayadeva, Vidyapati's love-songs re-create and reveal the world of Radha and Krishna, the major erotic figures of Indian mythology and literature. Such poems convey the devotion of Krishna's worshippers through the metaphor of human erotic love. While Jayadeva's poem celebrates Krishna's love and pays comparatively little attention to Radha the woman, Vidyapati is primarily concerned with the intense passion of Radha's love."

सबसँ पैघ पाथीक्य विद्यापति आ' हुनक युगक तथा बादहुक अन्य कवि सभ मे ई छलनि जे हुनक कविता केँ ने मात्र 'वैष्णव पदावली' केर दर्जा देल जा सकैत छनि आ' ने 'शक्त पदावली' केर। कौनो एक विद्यापति एसगरे राजाक संग कृष्णक प्रेमक संगहि हर-पार्वतीक अन्योन्य अन्त-संबंध केँ सेहो अपन काव्य मे प्रस्फुटित क' सकलन्ह सेहो शोधकर्ता लोकनिक लेल आई आश्चर्यक विषय छनि।

मुदा एहन सब तरहक शंका-समाधान भऽ जायत मोहिन्द बाबूक एहि महान सम्पादकीय कृतिक माध्यमे।

ताहू सँ महत्वपूर्ण बात ई जे जतेक ठाम सँ विद्यापति कवियरक रचनाक पांडुलिपि आई धरि शोध-कर्ता लोकनि केँ प्राप्त भेल छनि, जेना कि रामभद्रपुर आ' तरौनी मे तालपत्र मे, खंडित रूप मे सही- से सभटा समेटि कए सम्पादक एहि महा-संकलन मे लऽ अछनि छथि, जे कि अत्यन्त श्रम-साध्य कार्य छल। ताहि मे गिर-मजुमदार तथा नेपाल-पोथी सभटा प्रतिफलित भेल अछि उपयुक्त टीका-टिप्पणी केर संग। आई जे नगेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संकलित संपूर्ण पदावली रहितै, त एहि तरहँ खंडित रूप केँ जोड़बाक दुःसाध्य कार्यक आवश्यकता नहि होइतैक।

अस्तु, देर अवश्य भेल मुदा तैयहु जे काज भारतीय भाषा संस्थानक अनुसूच्य सँ मैथिली प्रेमी विद्यापतिक पाठक-वर्गक समक्ष आई आवि रहल अछि, तकर श्रेय सम्पादक-प्रकाशक पाठक सब केँ जाइत छनि। एतक शतकक बादो विद्यापति केँ अविस्मरणीय बना देबाक श्रेय भारिसक हुनक प्रकाश-भगता केँ जाइत छनि जे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश सँ लऽ कए मैथिली- सबटा माध्यम मे अनुसूचीय साहित्यक सृजेक छलाह। हुनक पदावली समय केँ जन-समक्ष मे आवि कए संस्कृतक वर्तमान प्रशस्ति हमरा समक्ष दिशि सँ साधुवादक पात्र बनल छथि। आ' प. मोहिन्द झाजीक विषय मे न जतेक लिखब वा बाजब, से कबो हैत। एहन वर्ज्योनी मिथिला मे होइत रहलाह, तँ मैथिली टिबन रहि सकसोह, एतयहि कौन संस्थानक पैस, कौपी एडिटर, प्रकाशन-विभाग सँ लऽ कए वर्तमान निदेशक, सभ केँ हम अभिनन्दन ज्ञापन करि छियनि।

शान्तिनिकेतन
1 जुलाई, 2012

प्रो. उदय तारायण सिंह 'नचिकेता'
रवीन्द्र भवन, विश्व भारती तथा
भूतपूर्व निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान,
मैसूर।

विषय-क्रम

[दि. - बायें दिशक अंक □ स्रोतक कक्षाक दिक् आ दक्षिण दिशक गीतांक चिह्न]

आमुख v

प्रस्तावना ix

संकेतव्याख्या xxxi

भाग एक - गीतांक 1 सँ

प्राचीन स्रोतक गीत -- (1) रामभद्रपुर-तालपत्र 1 सँ; (2) नेपाल-तालपत्र 95 सँ; (3) तराई-तालपत्र 333 सँ; (4) रागतर्हिणी 506 सँ; (5) भाषागीतसंग्रह 536 सँ; (6) हरगौरीविवाह 567 सँ; (7) गोरक्षविजय 573 सँ; (7) प्रकीर्ण 599 सँ।

भाग दू - गीतांक 612 सँ

आधुनिक स्रोतक गीत -- (1) विजय 612 सँ; (2) भोल झा 669 सँ; (3) सीताराम झा 693 सँ; (4) जगन्नाथ गुप्त 712 सँ।

भाग तीन - गीतांक 793 सँ

बंगाल स्रोतक गीत-- (1) जगन्नाथ गुप्त 793 सँ (2) पण्डित बाबा 849 सँ (3) बेनीपुरी 855 सँ (4) मजूमदार 866 सँ।

परिशिष्ट (पृष्ठ 527) [दि. - दक्षिण दिशक अंक पृष्ठक चिह्न]

(1) विद्यापतिक वंशावली पृष्ठ 507; (2) विद्यापति प्रतीक पृष्ठ 599; (3) शिव सिंहक वंशावली पृष्ठ 601; (4) भक्तिकाले अपल नाम पृष्ठ 604; (5) सन्दर्भ ग्रन्थ पृष्ठ 607; (6) गीतक अनुक्रमणी पृष्ठ 608।

प्रस्तावना

रूपरेखा ओ स्रोत

महाकवि विद्यापति मैथिल समाजक आ' विशेषतः मैथिली भाषा आ' साहित्यक गौरवध्वज धिक्काह। हिनक अर्चा-चर्चा तँ उचिते खूब धूमधामसँ होइत रहल अछि, परन्तु खेदक विषय जे हिनक समग्र गीतांक संग्रह आइ धरि मैथिली जगतमे प्रकाशित नहि भए सकल अछि। बंगला, अंग्रेजी आ' हिन्दीमे जे प्रकाशित अछि तकरा तँ पूर्ण कहि सकैत छी, जे सन्तोषजनक, विषयक तँ एहि सभमे गीतक पाठ बहुत बिगडल अछि तथा अर्थहु मे बहुतो भ्रमि अछि। तँ हमरा आवश्यक बुझएस जे विद्यापतिक समग्र पारम्परिक गीत, बिगडल पाठ आ' अर्थक सुधारि, सहज सुगंध छाया-नुवादक संग एकत्र प्रकाशित कएल जाए। एही आवश्यकताक पूर्तिक प्रथम प्रयास चिक ई *विद्यापति-गीत-संग्रह*।

विद्यापतिक पारम्परिक गीत कतेक उपन्यास अछि से कहब कठिन। तखन प्रस्तुत संग्रहक नाममे समग्र शब्द एक विशेष अर्थमे राखल अछि -- समग्र अर्थात् प्राचीन हस्तलेखमे लिखिला ओ नेपालमे पाओल गेल समग्र गीत। एहन प्राचीन हस्तलेख आठ गोटा जात अछि -- (1) रामभद्रपुर-तालपत्र, (2) नेपाल-तालपत्र, (3) तराई तालपत्र, (4) भाषागीतसंग्रह, (5) रागतर्हिणी, (6) हरगौरीविवाह नाटक, (7) गोरक्षविजय नाटक तथा (8) जगन्नाथगीत। दुइ-चारि गीत शिबु आनहु प्राचीन स्रोतसँ लेल गेल अछि।

उक्त आठहु हस्तलेखमे बहुतो सम्पत्ति लुप्त अछि। जे बाँचल अछि ओही अछल अखिरि देखबाक सौभाग्य हमरा नहि भेल। अतः विमनसिबिल प्रकाशनहि के अपन स्रोत बनए पडल :

(1) विद्यापति विशुद्ध पदावली - सम्पादक शिवनन्दन ठाकुर।

- (2) Songs of Vidyapati - सम्पादक तुभेन्द्र झा।
- (3) विद्यापति-पदावली - प्रकाशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्।
- (4) भाषागीतसंग्रह - सम्पादक रमानाथ झा।
- (5) हरगौरी विद्याह - सम्पादक राजदेव झा।
- (6) गोरक्षाविजय - सम्पादक शशिनाथ झा।
- (7) मैथिली प्राचीन गीतावली - सम्पादक सुरेन्द्र झा।

एहि स्रोत सभक गीतक अतिरिक्त विद्यापतिक अनित्यमाना शतशः गीत आधुनिक लिखित आ मौखिक स्रोतमे विशेषतः बंगालक वैष्णव पदावली सभमे भेटैत अछि। एकरा सभक प्रामाणिकता तँ बड सन्देह अछि, तेओ नाममे 'समय' शब्दक सार्वकालिक हेतु एहनी स्रोत सभ दू भागमे हए देल अछि - अर्वाचीन स्रोतक गीत आ' बंगाल स्रोतक गीत। पहिल भागमे समयता राखल अछि। द्वितीय भागक गीत सभमे बड-बड समस्या अछि। व्यावहारिक दृष्टिरे बंगालक स्रोतवाना बहुतो गीत छोटि देयर पड़ल। पूर्वक सम्पादकलेकनि एहि प्रकरण छटनी कएत अएलाह अछि।

अर्वाचीन स्रोतक गीत लगभग सभ आलोक लोकमुखी मैथिलीमे रचित अछि आ' एकर मची लोकप्रसिद्ध आ' लोक अछि। तँ एकर सभ गीतक सम्पूर्ण छायानुवाद देब अनावश्यक बुझल। आवश्यकतानुसार यत्न संक्षिप्त टिप्पणी मात्र हए देल अछि। सरल-सुबोध होएबाक कारणे पाठो अधिकतर स्वतः शुद्ध अछि। तँ एहि भागमे पाठोदारी व्यवहिते करए पड़ल अछि।

विद्यापतिक गीत कोन कर्म राखल जाए इहो एक गम्भीर प्रश्न छल। पूर्वक कलोक सम्पादक लोकनि गीतके विषयानुसार सज्जोतनि,

कलोक स्रोतक अनुसार। विद्यापति विहारी मजूमदार रचनाक्रमे वा ऐतिहासिक दृष्टिरे विन्यास कएल। प्राचीन हस्तलेख सभमे कतहु रागकम लक्षित होइत अछि। हम गीतकम स्रोतानुसार राखल अछि आ' स्रोतकम कालक्रमानुसार राखल। एहिमे हमरा एक सुनभ ई सूझल जे अध्ययनके स्पष्ट आभास भेटतनि जे विद्यापतिक भाषा आ' भाव कोना-कोना एहि छओ-सात सए वर्षमे बदलैत गेल अछि।

पाठोदारीक प्रयास

सिद्धान्ततः स्रोतगत पाठमे कोनहु प्रकारक परिवर्तन करब अनधिकार चेष्टा मानल जाइत अछि। प्रायः सेह स्रोचि पूर्वक स्रोत संस्करण मे सामान्यतः अधिकत राखल गेल अछि। एक विद्वान् तँ स्पष्ट शब्दमे कहिओ देलनि अछि :

[आवय ग्रन्थे जे पठ जे भावे पाया गियाछे सेई भावेइ छापा हईल। छन्द ओ बालान संशोधनेर वर्तनी चेष्टा कया हय ना।]

परन्तु आलोच्य हस्तलेख सभक दुस्स्थितिके देखैत हमरा ई आवश्यक आ' व्यावहारिक बुझल जे गीतक पाठमे मुख-परम्परया, प्रतिनिधि-परम्परया वा अजलपश जे वर्तनी, व्याकरण, छन्द आदिक अशुद्धि स्पष्टतः लक्षित होइत अछि तकरा मूलमे संशोधित जाए देल जाए। विद्वान् सम्पादक लोकनि बहुतो बिगड़ल पाठवाना प्राचीन हस्तलेख सभक सम्पादन एही विधिरे करैत अएलाह अछि। से नहि कहने प्रकाशन व्यवहारोपयोगी नहि भए शुद्ध शोधकमे भए जाएत आ' सामान्य पाठक गीतक वास्तविक स्वरूप जनबार्स घटित रहि जाएत। मूलक जे अंश बदलत से पाठ-टिप्पणीमे यथावत् देखाए देल अछि, जाहिमे मूल पाठके मूल करबाक दोषी नहि होइ। हँ, व्याकरण, वर्तनी, अक्षराशुद्धि आदिक नुसार पाठ-टिप्पणीमे देखाएब अनावश्यक बुझल।

परिचरित पाठ दू प्रकारक अछि। पहिल ओ जे आज स्रोतमे भेटल आ अधिक उपयुक्त बुझएल। दोसर ओ जे हम तर्क द्वारा स्वयं मटल। नीक होइत जे ई बात सूचित कए देल जाइत आ इहो स्पष्ट कर देल जाइत जे मूल पाठसँ विचलन कोन कारणे कएल गेल। परन्तु से कएने पोथी मोटाए जाइत तँ विचलनक स्पष्टीकरण एहि प्रस्तावनाहिमे एकरे कए देब व्यावहारिक बुझल।

मूल हस्तलेख आ पूर्वक संस्करण सभमे जे पाठविकृति पाओल जाइत अछि तकर अनेक कारण अछि। विद्यापतिक गीतक जतेक हस्तलेख पाओल गेल अछि से शब्दा हुनक समयसँ कमसँ कम एक सए वर्ष पछानिक मानल जाइत अछि। एहि अवधिमे स्वभावतः हुनक भाषाक स्वरूप बदलल होएत आ गीत सभ पर अनुलेखनकालीन भाषाक प्रभाव पड़ल होएत। तकरा मूल अवस्था पर आनय गइन अनुलेखनसंगे प्रभाव अछि। सीमाव्यवश गीत प्रचुर मात्रामे उपलब्ध अछि आ ओहि सभमे दुटलो-फुटली रूपमे विद्यापति-कालक भाषाक स्वरूप झलकैत अछि आओर ताहि आधारपर पाठोद्धार बहुत किछु सम्भव अछि। पूर्वक सम्पादकसभकनि ई काज नहि कएल। ततये नहि, ओ लोकनि मूल स्रोतक पाठहिक परम प्रामाणिक मानि कोनो हस्तलेख करवाथँ चिरत रहसह। अवरये मूलान्वित संस्करण (क्रिटिकल एडिशन) जे मूलपाठमे हस्तलेख नहि कएल जाइत अछि, परन्तु व्याख्यामे आ टिप्पणीमे मूलपाठक भाषा आ तकर निरूपण देखाओल जाइत अछि। पाठोद्धार नहि कए पाएब तँ शक्य थिक, परन्तु प्रत्यक्षतः विगड़ल, संयतिहीन, अप्रसंगिक आ दुर्बोध पाठहुकेँ परम प्रामाणिक मानि असाधारण दुष्टिक बर्तै छीथि-तीरकें अर्थ वैयाप देब कयनाथि समीचीन नहि कहल जाएत।

ई बात नहि जे पूर्वक संस्करण सभमे पाठोद्धारक प्रयास एकदम नहि कएल गेल। सुधार उत्तरोत्तर होइत गेल अछि। तेओ बहुत विकृति रहि

गेल, जकर मुख्य कारण हमरा जनैत हस्तलेखक मूल पाठकेँ अधिक श्रद्धासँ देखब थिक। एहिसेँ अतिरिक्त छठ-विकृतिक मोटा-मोटी पाँच गोटा कारण ज्ञात होइत अछि :

(क) लिपिवाचन-भ्रम - अनुलिपिकर्ता अपन आदर्श हस्तलेखक अक्षर चिन्हवामे बहुत चुकलाह अछि। कखनहु अक्षर अस्पष्ट छल तँ भ्रम। अधिकतर भ्रम एहि कारणे भेलनि अछि जे लिखतामे बहुत अक्षरक आकृतिमे परस्पर साम्य अछि। एहना स्थितिमे पासंगिक अर्थ बुझलाहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हल जाए सकैत अछि आ तकर प्रयास अनुलिपिकर्ता विशेषतः व्यवसायी अनुलिपिकर्ता नहि करैत छथि। ओना तँ विभिन्न अक्षरमे साम्य सभ लिपिमे होइत अछि, परन्तु मिथिलाक्षरमे से किछु अधिक देखि पढ़ैत अछि, जेना (1) र, य तथा व मध्य ; (2) ल, न, ण तथा ष मध्य ; (3) ध, द, क तथा र मध्य ; (4) तु, ओ, ए, उ तथा त मध्य ; (5) सु तथा अ मध्य, इत्यादि। किछु उदाहरण देखल जाए :

संदेह - तिर्यक थिक शुद्ध रूप आ ओक थिक गीतांक।

- (1) य < र - बापु बहीरि : बापु सारि (97) ; गबह : गबल [180] ; चराबहि परि : रघाबहि आबि [223] ; देख : देख [245] ; रे बथा : वेबथा [137] ; बाज : राज [170] ; राति नयसि बाति लहाए [171] ; रिस : बिस [278] ;
- (2) तु < त तथा सु < अ - तुअ : तसु [101, 123, 121] ; जलाइति : मुलाइवि [268] ; अचिरे : सुधिरे [175] ;
- (3) तु < ओ - अर : आतुर [96] ; बरिसओ सार : बरिस तुसार [35] ;

(4) ल < न - नोट : लोट [166] : दुर लए: दुलए [209] :
कलोने : कलोले [275]

एहन ठाम अर्थ बुझलहि पर अक्षर ठीक-ठीक चीन्हाल जाए सकैत अछि। अर्थ सोचबाक कह कमे अनुमिपिकार करैत होएताह।

(ख) लिप्यन्तरणजन्य विकृति - आलोच्य हस्तलेख सभ तिरहुतामे अछि। छपवाक कममे तकर नागरी लिप्यन्तरण कराओल गेल। एहू कममे बहुत पाठ बिगडल अछि। समान लिपिसँ अनुमिपि करबामे एकटा विशेष सुविधा रहैत छैक - जँ पढ़ल नहि भेल तँ आदर्शतुल्य शैक्षिक आकृति बनाव दिओक, अगिन पाठक ठीक-ठीक पढ़ि लेताह। ई सुविधा लिप्यन्तरणमे नहि छैक। तँ तिरहुतासँ नागरीमे उतारल लेखमे आपल पाठविकृतिक उद्धार करबामे ओकर मूल तिरहुताक आकृतिक ध्यान करए पडैत छैक। जेना, नागरी पाठ अछि तु अग्निजानी, विन्तु तु प्रसंगमे वैसैत नहि अछि, तँ एकर तिरहुता रूपक ध्यान कएल, तखन बुझाएल जे ई तु नहि, ओ थिक - ओ अग्निजानी जातए जे तिरहुतामे तु आ ओ दुनूक आकृतिमे बहुत साम्य अछि। एहि प्रकार लिप्यन्तरणजन्य पाठ-विकृति बहुत पाओल जाइत अछि।

(ग) छन्द नहि जानब - विद्यापतिकासीन गीतमे दू प्रकारक छन्द चलि रहल। पहिल वर्णवृत्त, जाहिमे वर्णक संख्या नियत रहैत छल। दोसर मात्रावृत्त, जाहिमे मात्राक संख्या नियत रहैत छल। पद्यति विधिलेखमे वर्णवृत्तक उदाहरण भए गेल तँ बंगालमे मात्रावृत्तक। यथा, कृष्णदासक बंगाली रामायण आ बलरामदासक महाभारत घोटह वर्णवृत्तक पयार नामक छन्दमे अछि तँ चन्द्राङ्गाक मैथिली रामायण आ मनबोधक कृष्णजन्म सोलह वा पनरह मात्राक चौपाइ छन्दमे अछि। लगैत अछि हमर आलोच्य सम्पादक लोकनिके, उदाहरण भए जएबाक कारणे, वर्णवृत्तक

जान नहि रहलनि आ तहि पयारकें चौपाइ बुझि, सोलह/पनरह मात्रा पुरएबाक फेरमे किछु जोड़ैत शुद्धो पाठकें अशुद्ध करैत गेलाह। ई जोड़ कतहु मूल पाठहिमे कोतक बीच राखल भेटैत अछि तँ कतहु पादटिप्पणीमे। एतए एक-दूटा उदाहरण देखल जाए। सभसँ प्राचीन हस्तलेख राम, मे पाठ अछि - हदम लोहर जानि न भेला [12]। ई एगारह वर्णक छन्द मे रचल अछि। एतए सुभ, आ राघ, दू सम्पादक न के नहि कए छन्द तोड़ि देलनि अछि। एही गीतक चारिम चरण अछि न मुख बचन न चित थोर (एगारह वर्ण)। एहिमे सुभ, रह जोड़ि छन्द तोड़ि देल - न मुख बचन न चित (रह) थोर। एहिमे पाँचम चरण पर गुरुजन लइका मे सुभ, आ राघ, दू दुजत के दुजत बनाव छन्द तोड़ल।

(घ) व्याकरण नहि जानब - विद्यापतिकासीन भाषाक व्याकरण नहि जनबाक कारणहु कतहु-कतहु पाठ बिगडल अछि। राम, गीतसँ, 394 मे पाठ अछि निसिर मदीपति दाए छापि लेल राजा भेल वसन्त। एहिमे छापि लेल नहि, छापि कहुँ चाही, किएक तँ समाधि विद्यापद भेल आगौ अछिए। ई कहुँ अध्यय सम्पत्ति के भए गेल अछि। एहिमे [16] मे पढ़ि कए नहि, पढ़ि कहुँ चाही, विद्यापतिक भाषामे एहन छम कए नहि चलि रहल। एही गीतमे कुमुम धूरि मलयमिल पुरनि मे मलयमिल चाही, कर्मपाध्यक बलीमे -ए लगैत अछि। तुल, हिन्दी - मलयमिल मे कुमुमधूरि भरी। गीत [71] मे किछु दोष नहि हमारि, हदयहु चाहि विचारि, एतए दोष पुलिन थिक, तँ हमारि नहि हमर चाही। शुद्ध पाठ होएत किछु नहि दोष हमार, विदए कह विचार।

(ङ) अर्थ नहि जानब - अधिकतर पाठविकृतिक कारण थिक अर्थ बुझबाक चिन्ता नहि करब। एही कारणे अक्षर चिन्हबामे भग होइत अछि। उदाहरण अछि कामदेव ओइनी (अग्निजानी चाही) ; नव रतिपति

नव परिमल जागर [6] (नव रितुपति नव परिमल जागर काशी) : विचार
निसाचर केर स्थानमे निचर निसाचर भए गेल [11]

वर्तनी ओ शब्दस्वरूप

पाठोद्धारक समय एकटा इहो प्रश्न उपस्थित भेल जे भिन्न-भिन्न
ठाम पाओल गेल भिन्न-भिन्न वर्तनीमे कौनो एके अपनाओल जाए आकि
एकरूपता अन्वयक आग्रह छाडि हस्तलेखमे जे जहिना अछि तहिना रहए
देल जाए? इहो प्रश्न विचारणीय जे वर्तनी प्रतिनिधिकारक अपन थिक कि
कविक? जे कविक तखन तँ यथावत् राखब समीचीन। जे से नहि तखन
ओहिमे परिवर्तन कएल जाए सकैत अछि। हमए जनैत वर्तनी
प्रतिनिधिकारक थिक, किएक तँ सभ हस्तलेखमे भिन्न-भिन्न वर्तनी पवैत
छी।

जे से मानी तँ वर्तनी सुधारव चाखनीय। किन्तु वर्तनी प्राचीनताक
आभास दैत अछि तँ किन्तु नवीनताक। जेना मञ्जु आ मोञ्जु मे पहिल
मञ्जुचीन थिक तँ दोसर प्राचीन। मोर, मोहि, मो पति इत्यादिक सारसभ
पत्नीक होइत अछि जे पूर्वमे मोञ्जु छल, पछाति मञ्जु भए गेल। एहिना
पूर्वमे अधिकरणकारक चिह्न चन्द्रचिन्दु छल जे प्रजनः मुख होइत गेल।
सभसँ महत्वपूर्ण अछि छ जे प्राचीन मैथिलीमे छल, किन्तु पछाति
रङ्गल भए गेल। प्राचीन वर्तनीकेँ यथावत् राखब समीचीन बुझइत अछि।
सभसँ बेसी दुविधाक स्थिति अछि तत्सममे छव केर। प्राचीन खलसँ चल
अईत ई दुविधा मैथिलीकेँ आइ थरि गछारने अछि। आलोच्य हस्तलेख
सभमे राम, य केर सर्वथा त्याग कएने अछि तँ आज दिविसक स्थितिमे
अछि। एहिना स्थितिमे प्रसिद्ध तत्सममे सर्वत्र य राखब अधिक व्यावहारिक
बुझएत। तँ वर्तनीक विषयमे हम नहि लिखब पर पहुँचलहुँ जे
प्राचीनताक आभासबाला व्याकरणनुकूल वर्तनी यथावत् रहए दैल जाए,

आज-आज विवेकानुसार सुधारल जाए सकैत अछि। मूल हस्तलेखक
वर्तनीमे जे परिवर्तन कएल अछि से पाठशुद्धिमे देखाओल नहि।

पाठ-समीक्षा

पूर्वमे कहल जे कौन-कौन कारणेँ पाठ बिगड़ल आ' बिगड़ल गेल।
आब एक गीतक पाठ-समीक्षा बिस्तारपूर्वक कएल जाए। एहीमे प्रायः सभ
प्रकारक पाठविकृतिक प्रचुर उदाहरण भेटत आ' तकर उद्धारक रीति सेहो
भेटत।

हृदय तोहर जानि न भेल। आनक रतन आनि मजे देल।।।।।
कएल माधव हमे अफाड़। हाथि मेलाउलि सिंहसमाज।।२।।
राखइ माधव मोरि बिनती। देहे परिहरि पर जुबती।।३।।
चुम्बने नयन काजर गेला। दलने अधर खण्डित भेला।।४।।
पीन बबोधर लखरे मल्ला। जनि महेश्वर संखर घन्टा।।५।।
न मुख बचन न मन थीरे। खान्द घनहन सबे सरीरे।।६।।
घर गुरुजन दुजन सङ्का। लओलह माधव मोहि कलङ्का।।७।।
मन बियापलि तबे दूति मोरि। घेतन गोपए वंजलि चोरि।।८।।

- (1) हृदय - राम. हृदय। य स्वयंके लोप तद्वयक उच्चार थिक।
प्रा. मे पूर्वकालमे लोप घलैत छल, परन्तु पछाति तत्सममे
पुनः य उपस्थित भए गेल। यथा राम. पओधर, नजन, जेपा.
पयोधर, नयन (नयन, नयन सेहो)।
- (2) न - नेपा. नहि। न पाठ शुद्ध थिक, कारण जे ई गीत
रंगारह वर्गक धरण बाला वर्णवृत्तमे अछि; नहि रखने छन्द
दुईत अछि।
- (3) आनक - नेपा. वरक। राम. आनक। प्रा. मे ज व्यंजन
नहि, उत्तरवर्ती स्वरक सानुनासिकताक प्रतीक थिक। राप.

- (4) मेलाउलि तथा मोरापि १ तथा च केर तिलमय रामे के बहुत ठाम पाओन जाहुन भोले न पओन भा आयेन ठाम भेटेछ ते ल राखन
- (5) समाज १४ एकर अथे नंदे हुंदे प भोरा, भो भय करिब छथि हाथी जो सिंह के समाज मे निना भय बुद्ध नथे होत सिद्ध के साथ निना दय
- (6) जुबती तथा मुगरी य विरक्त भम विरक्त रामे मे सर्वत्र पाओन ५ अंश मे न भए जाइत ओछे।
- (7) चुम्बने ई कण्ठकारक विरक्त ते चयक पाओन भुम्बने चुम्बनेसँ विरक्त पाओ पारन लामे नाभिउय रामे रक्ते लोहोकेयना दहन अथे नाइत अछि ते कल रामे चन्द्रविन्दु लोहो दैन जाइत।
- (8) नयन राम लसल हृदय कर्ता करिब य रामे लामे भा लयन भेटो पाओन लउत।
- (9) पयोधर राम पयोधर पाओन के विरक्त।
- (10) नखरे तथा नखर भगवा विरक्त लामे लोहो होइछ सुम एकरा लखर होइ का दैन लहिमे ते फाँलन ओछे। लहमे भयो भा छन्द दनु विरक्त अछि

(11) दूसरी रात 4:10 को 3-4 घंटे के बाद भी आवाज
सुना तो दूसरी रात 4:10 को आवाज

(20) बेकल नेण गुणुनि हीक नहि चोरि न गुन हंडनहि मरि
प्रशसा तखन नखन द्यको चोरि विषाद

ई भेल पाठसमीक्षक एक उदाहरण, एहि प्रकार जे सभ गीतक
समीक्षा लिखिन्हुं न वेसकार अप जइत ते मरिहें भेल पाठ समीक्षा
करैत गेलहुं जे पाठ उनक बुझाएल से राखल,

अब पाठ चिकित्सक शिष्ट शेरक उदाहरण देखल जाए एहिसे (क)
थिक मूल हस्तलेखन पाठ (ख) थिक पाठोचित पाठ आ (ग) थिक
टिप्पणी।

क, कन्हू मारस बारस बार गुन कृपुमखन राप कक
अथ मरिहें छीये कही छिआ हुआ ककमदेव टित मे ही मारस पड़ी के
प्रेमपाश मे जोड रहा है (ख) कन्हू म. मारसल मरिहें गुणन कृपुमखन
कन्हू कृद ककमदेव धनुष पर बाण चढ़ाए हल छथि। (ग) कन्हू
पाठनम मारस पड़ीक तनी भवमरिहें

(क) जनि ज. पसर नहरो केने मरिहें, (कन्हू मरिहें की
नपट, राप प 24 (ख) जनि टिट पाशान र. री भेल पाशान केने
हड होइत अछि (कन्हू मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
कोना

3 क मरिहें मान विह मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
त. मी मान धल की मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
कि हानि न हो जाय राप प 45 (ख) मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
हानि मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें

4 क दारुण सुनि दुरन्त बोल नहि कम कम लागल गून
दुजेल का दारुण वजन सेलकर कृष्ण को मेर। गुण वदन बोला नान
पडा राप प 25 (ख) दारुण सुनि दुरन्त बोल नहि कककब
लागल मरिहें सुनि छी दुजेल बोल दारुण होइत अछि. मी मरिहें मरिहें
कककब नहि मरिहें

5 (क) पर मरिहें बोल दुर जाए साथ परह दममो हलजाए
दममो के अनुरोध से उचित अनुरोध किया जाता है एक जल दूर
चला जाता है फल यही होता है कि साथ और, नारिका दोनो दूर
हट जाते हैं राप प 26 (ख) पर मरिहें बोल दुर जाए साथ परह
दममो हलजाए आनक मुझमोली मुझमोली राप दूर भेल साथ म
राप दूर पसल भेल

6 (क) मरिहें दारुण न करिहें बोल विमुख वृत्ताना है मी
(मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें
मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें मरिहें

गीतक प्राभाषिकता

वास्तव में प्रस्तुत संग्रह कि कुछ उर्दीबा जिनका पता म. दे. र. है
उर्दीबा के विशालतम विमानों कि छोटी भाग छोटी म. दे. र. के ऊपर

गीतक प्रासाधिकला मुक्तवाक प्रयास विभात विहारी मज्जमदार
विहारापूर्व कएल अछि आ तकर रचनाक पीछोहासक क्रम सेहो निरूपित
कएल अछि हुनकर सभसँ धए प्रासाधिकलाक भाषा निरूपित कएल जाए
ते प्रभुन सभसँ गीतक गुरि गोटे हएत । गवि आ सभसँ दुनो
नामवला केवल अछि नाम वाला । ई ई विधाने छि
प्रकारक शिष्याणी द्वारा लिखैत कोनो नाम वाला तथा । विन्नु नाम वाला
एक नाम कोनो प्रासाधिकला इतरांतर अन्य मानले जाए सयैत अछि
इहो सम्भव से नै होला कोनो अछि गीतको विरचनको नमो गीतको गीत
ही

1. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 2. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^3} = \frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 3. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^4} = \frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 4. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^5} = \frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 5. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^6} = \frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 6. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^7} = \frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 7. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^8} = \frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 8. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^9} = \frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 9. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{10}} = \frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$
 10. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{11}} = \frac{d}{dx} x^{-11} = -11x^{-12} = -\frac{11}{x^{12}}$
 11. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{12}} = \frac{d}{dx} x^{-12} = -12x^{-13} = -\frac{12}{x^{13}}$
 12. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{13}} = \frac{d}{dx} x^{-13} = -13x^{-14} = -\frac{13}{x^{14}}$
 13. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{14}} = \frac{d}{dx} x^{-14} = -14x^{-15} = -\frac{14}{x^{15}}$
 14. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{15}} = \frac{d}{dx} x^{-15} = -15x^{-16} = -\frac{15}{x^{16}}$
 15. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{16}} = \frac{d}{dx} x^{-16} = -16x^{-17} = -\frac{16}{x^{17}}$
 16. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{17}} = \frac{d}{dx} x^{-17} = -17x^{-18} = -\frac{17}{x^{18}}$
 17. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{18}} = \frac{d}{dx} x^{-18} = -18x^{-19} = -\frac{18}{x^{19}}$
 18. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{19}} = \frac{d}{dx} x^{-19} = -19x^{-20} = -\frac{19}{x^{20}}$
 19. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{20}} = \frac{d}{dx} x^{-20} = -20x^{-21} = -\frac{20}{x^{21}}$
 20. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{21}} = \frac{d}{dx} x^{-21} = -21x^{-22} = -\frac{21}{x^{22}}$
 21. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{22}} = \frac{d}{dx} x^{-22} = -22x^{-23} = -\frac{22}{x^{23}}$
 22. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{23}} = \frac{d}{dx} x^{-23} = -23x^{-24} = -\frac{23}{x^{24}}$
 23. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{24}} = \frac{d}{dx} x^{-24} = -24x^{-25} = -\frac{24}{x^{25}}$
 24. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{25}} = \frac{d}{dx} x^{-25} = -25x^{-26} = -\frac{25}{x^{26}}$
 25. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{26}} = \frac{d}{dx} x^{-26} = -26x^{-27} = -\frac{26}{x^{27}}$
 26. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{27}} = \frac{d}{dx} x^{-27} = -27x^{-28} = -\frac{27}{x^{28}}$
 27. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{28}} = \frac{d}{dx} x^{-28} = -28x^{-29} = -\frac{28}{x^{29}}$
 28. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{29}} = \frac{d}{dx} x^{-29} = -29x^{-30} = -\frac{29}{x^{30}}$
 29. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{30}} = \frac{d}{dx} x^{-30} = -30x^{-31} = -\frac{30}{x^{31}}$
 30. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{31}} = \frac{d}{dx} x^{-31} = -31x^{-32} = -\frac{31}{x^{32}}$
 31. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{32}} = \frac{d}{dx} x^{-32} = -32x^{-33} = -\frac{32}{x^{33}}$
 32. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{33}} = \frac{d}{dx} x^{-33} = -33x^{-34} = -\frac{33}{x^{34}}$
 33. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{34}} = \frac{d}{dx} x^{-34} = -34x^{-35} = -\frac{34}{x^{35}}$
 34. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{35}} = \frac{d}{dx} x^{-35} = -35x^{-36} = -\frac{35}{x^{36}}$
 35. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{36}} = \frac{d}{dx} x^{-36} = -36x^{-37} = -\frac{36}{x^{37}}$
 36. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{37}} = \frac{d}{dx} x^{-37} = -37x^{-38} = -\frac{37}{x^{38}}$
 37. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{38}} = \frac{d}{dx} x^{-38} = -38x^{-39} = -\frac{38}{x^{39}}$
 38. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{39}} = \frac{d}{dx} x^{-39} = -39x^{-40} = -\frac{39}{x^{40}}$
 39. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{40}} = \frac{d}{dx} x^{-40} = -40x^{-41} = -\frac{40}{x^{41}}$
 40. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{41}} = \frac{d}{dx} x^{-41} = -41x^{-42} = -\frac{41}{x^{42}}$
 41. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{42}} = \frac{d}{dx} x^{-42} = -42x^{-43} = -\frac{42}{x^{43}}$
 42. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{43}} = \frac{d}{dx} x^{-43} = -43x^{-44} = -\frac{43}{x^{44}}$
 43. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{44}} = \frac{d}{dx} x^{-44} = -44x^{-45} = -\frac{44}{x^{45}}$
 44. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{45}} = \frac{d}{dx} x^{-45} = -45x^{-46} = -\frac{45}{x^{46}}$
 45. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{46}} = \frac{d}{dx} x^{-46} = -46x^{-47} = -\frac{46}{x^{47}}$
 46. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{47}} = \frac{d}{dx} x^{-47} = -47x^{-48} = -\frac{47}{x^{48}}$
 47. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{48}} = \frac{d}{dx} x^{-48} = -48x^{-49} = -\frac{48}{x^{49}}$
 48. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{49}} = \frac{d}{dx} x^{-49} = -49x^{-50} = -\frac{49}{x^{50}}$
 49. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{50}} = \frac{d}{dx} x^{-50} = -50x^{-51} = -\frac{50}{x^{51}}$
 50. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{51}} = \frac{d}{dx} x^{-51} = -51x^{-52} = -\frac{51}{x^{52}}$
 51. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{52}} = \frac{d}{dx} x^{-52} = -52x^{-53} = -\frac{52}{x^{53}}$
 52. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{53}} = \frac{d}{dx} x^{-53} = -53x^{-54} = -\frac{53}{x^{54}}$
 53. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{54}} = \frac{d}{dx} x^{-54} = -54x^{-55} = -\frac{54}{x^{55}}$
 54. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{55}} = \frac{d}{dx} x^{-55} = -55x^{-56} = -\frac{55}{x^{56}}$
 55. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{56}} = \frac{d}{dx} x^{-56} = -56x^{-57} = -\frac{56}{x^{57}}$
 56. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{57}} = \frac{d}{dx} x^{-57} = -57x^{-58} = -\frac{57}{x^{58}}$
 57. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{58}} = \frac{d}{dx} x^{-58} = -58x^{-59} = -\frac{58}{x^{59}}$
 58. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{59}} = \frac{d}{dx} x^{-59} = -59x^{-60} = -\frac{59}{x^{60}}$
 59. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{60}} = \frac{d}{dx} x^{-60} = -60x^{-61} = -\frac{60}{x^{61}}$
 60. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{61}} = \frac{d}{dx} x^{-61} = -61x^{-62} = -\frac{61}{x^{62}}$
 61. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{62}} = \frac{d}{dx} x^{-62} = -62x^{-63} = -\frac{62}{x^{63}}$
 62. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{63}} = \frac{d}{dx} x^{-63} = -63x^{-64} = -\frac{63}{x^{64}}$
 63. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{64}} = \frac{d}{dx} x^{-64} = -64x^{-65} = -\frac{64}{x^{65}}$
 64. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{65}} = \frac{d}{dx} x^{-65} = -65x^{-66} = -\frac{65}{x^{66}}$
 65. $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{66}} = \frac{d}{dx} x^{-66} = -66x^{-67} = -\frac{$

विद्यापतिक परिचय

विद्यापतिक अंश शुक्ल एतद्गोदाक्षर साध्यान्तेन शब्दात्
काव्यपगोत्रेय ब्राह्मण कुलमे बद्धमण्डलान् २५ (१३५० ई.) म. ५ सं. ११
अशुद्धी तित्वाक येनीपरतं याताक अन्तरेन येनीये गाममे भव. 'दत्तक
कुलक मूलपुरुष गद टिप्पणीमें वर्णित छत्ताह ते ह्वाक सन्तान विन्दक
विमपीयस कर्तव्य उशि विद्यापतिम् १३ कुलक गाममे भवित
ब्राह्मणक एनीमे अन्तरेण स्य भेदेन जीते, टाख पन्थक दू. ५४४
परिशिष्ट २ मे. तन्नुसर दितक विनः छत्ताह गण्डानि ताकु म्प
गदगद देनी मगगाह पूछाड श्रीशकर मन्त्र सन्तान ते दितक कुलक
दितका तीन पुत्र ह्वापि ताकु गाममे भवित ताकु म्प नन्तरे क्क

पक्षीक आधार पर विज्ञानिक उन्मेष पक्षीक प्रशासकी परिधि में
 देल गेल अछि न्याय तथा जनसह्य समस्य पर प्रभुत्व अछि न
 जोगियाक इतिहासमे विज्ञानक पुनरुत्थानक महत्त्व लक्ष्मी रामजीक
 लक्ष्मी राम प्रशासनमे अछि न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व
 अछि इन्क पुनरुत्थानक देल गेल अछि न्यायक महत्त्व अछि न
 न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न
 न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न
 न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न्यायक महत्त्व अछि न

[illegible]

उन्नीस छत्ताह ई स्वर्णनूतादान काल अनेक मुहूर्तमे विजय प्राप्त कएल अ और धर्मशास्त्रमे नैथिन परम्परा स्थापित कएल ई वर्णव्यवस्था राजा हरसिंहदेवक महामहारी छत्ताह

जखन १२४२५ ई में ग्यानुऔन तुगायक हरामे देवये परान्त
कर देल अन्हार १२५५८ क बीच कीराचशान तुगायक मेथिलक
शमस्तधिकार अइनेद्वार भोलीधर ठाकुरक देल तखन पुन देवादिनायक
आफ पुन आ धौन लोकाने घण्डेश्वर ठाकुरक नेतृत्व मे मिथिलक
शमस्तभूत धारलनि। २ ती बदलनाह शसन बिमडवार आ जालेक हथमे
रहल।

[illegible]

विद्यार्थिक विद्यालयों में छात्रों को ज्ञान प्रसारित करने में मदद करने के लिए एक विशेष विभाग शुरू किया गया है। इस विभाग के माध्यम से छात्रों को नवीनतम विज्ञान और तकनीक के बारे में जानकारी दी जायेगी।

भयानक पाहुन घन जहाँ कानसे दुबकल भा नटने पावर रहैये जे देखि नहि पड़लह विद्यापति कन देलखिन। एतेण स्तनदुष्टीन तहसे रहैये जायते अर्थात् ठीके स्तनदुष्टिके सुख वस्तु नहे मूझैत छैक। ई बात सभिसबसे या मङ्गलजी से अल होयत किाक ते पक्षधरके मङ्गलजीमे माअ भा सरिसबसे बहिनोय।

ताहि दिन मिथिलासे न्यायशस्त्र भा धर्मशस्त्र मुख्य रूपे पचलिन छल विद्यापति न्यायशस्त्र पढ़ल नकर कोन एमाण ताँदे भैल भौंके। परन्तु धर्मशास्त्रीक रूपमे विद्यापति दूरे दूर धीरे सुविदेन उत्ताह। दण्डन प्रकाण्ड धर्मशास्त्री रहलन्हन भेलाय भयत ह्मा ह्मा मे विद्यापतिके बेरि बेरि उद्धत कएने छथि किछु पछित हिनक एनिदुन्दी या हिनका प्राँते कुच्छालु सेहो उत्ताह। केशवसेय हिनक इल्लेख भौल्लेख न्यायचक्र शब्दे फाल भैल धर्मशास्त्रमे ई अनेक गन्थ लिखल।

विद्यापति शस्त्र जे कोनो पढ़ने होय पाठक लेखे छैते देखैत न लोअग सीतह पतराह तयक मङ्गलसे गन्धर्व या ललल नर नरमी भौल्लिब। राजनसे धीरे पछिछिछि चलय छल उहने नादुन भैल राजा गणेशकर कय कर। अर्थात् ह्माक गन्धर्व होयल लेख। गणेशकर सालक की मिसिह जेलाक ह्माक दुर्गादशरथक भेट गेल। तय पतराओलनि आ विद्यापतिके राजाजिहल जनक शसन कर गेल। विद्यापति कीजिनता मे तँदे धर्मशास्त्रीक काव्यशास्त्रक विद्यापति लिखल।

कीर्तिसिद्धक असामर्थिक निधन भेला पर मङ्गलजी तस्मिन्क अश्रामे सान्नाह नखन देउतेह बन्धुदेहल चलय भा होयल भा तोखेबाबसे चललाह ते मङ्गलजी हिनका राज का लेल दि कनसे ई देश भ्रमण कएल भा किछु दिन हुनका सर तेमिथारणमे लिखल। एही यात्राक क्रममे ई भू प्रेक्षण लिखल न सकेल परमेश्वरपाईमे

एहि गन्धर्व मङ्गलजी कर कथा मङ्गलजी वा पुरुषपरीक्षा चिरकाल रकर नखय रहल होयत युवराज शिवसिद्धक एक आदेश पुरष बनारह।

तेमिथारणमे दुरा पर विद्यापति आ शिवसिद्ध दू दम्पत्योदनमे उदेश कएल अरम्भ भेल भनह विद्यापति ई रस नन राजा सिद्धसे सपनस लखेमादेये रमाना वहर लागल रमधारा विद्यापति दू विद्या काल ते मिथिलापति सन विद्यापतिक कोनहु पत्नीक नाम ज्ञान नहि भौंके। शिवसिद्धक सनो धौक नाम ज्ञान भैल। लखिमा सुयम नधुमनी सुरमा भौंति मेधावरी भा मंदपरी बहुते नाम विद्यापतिक गीतक अन्तिमे अखन भैल शिवसिद्ध प्राय नि सन्तान रहलाह विद्यापतिक तीन पुत्र भा दू कन्या पतिव पुत्र हरपति मुदाहस्तक रहैये कोन राजाक मे जात नहि भैल हिनक एक गन्धर्व भौंके देवराजन्धर्व नाईसे प्रवीण होइत भैल ते देवजीनेय शरवक विद्यापति उत्ताह शेष दू दोलक गचरति आ नरगाँव विद्यापति विद्यापति भैल भौंके।

विद्यापति ई गन्धर्व सकल जीवन लज्जा नील ज्ये पति नैल रहल गहि नहि मे राजा विद्यापति विद्यापति देउतेह मङ्गल पति रहलाह आदरनीय नाम भौंके गयो त ह्मा जेला ह्मा कर रहलाह आ मङ्गलजी मङ्गल मङ्गल भौंल रहलाह गी कालमे की गीतकी आ गीतकी नय नाटक सेहो चल।

एहि कालमे शसन प्रशसन भा राजनीय जनसङ्घर्षमे विद्यापतिक भूमिक भवदभेद महत्वपूर्ण रहल होयत ननु तय सुगता केवल जनसङ्घर्षमे भौंल भैल। राजा शिवसेह चलल गीतक नाम सुकल नील देवपाई

विद्यापतिक जीवनमें वह मिथिलाके दुन्दुप्रासमें कई सभसे अधिक आनन्दके दिन भी छलें होएत अहिजे विद्यापति मिथिल पर छटि जायथ वल्लभनाके परास्त काल टाहिह मंगेयमें अछिह शिष्टिह गज भोलाह विद्यापति महाराजवाण्डतक पद पर नियुक्त भोलाह आ विलक गामदान प्रजोवाले यहि घटनावालीक वणत एक अवसर गामसे सम्भवत विद्यापति स्वयम् रचल दर दुम्भ १७८७

एहि स्वर्ण कालक सन्त भेल ४०५ ६ ७ क आस पास नखन नीलपुरक इन्द्राहिसराह मिथिला पर आक्रमण कएल आ युद्धमें शिष्टिह अर्जक्षित आ गेलाह विद्यापति राजी लोकालके लए सुझाये लणलसे समरी पान्तक राजावाली गामसे राजा पुरहि यक आशयसे जीवन यापन करए लगलाह, एतए ई पुराद्वयक हेतु लिखनायलक रचना करल जाहिमे चितकी वरी काल विधल गए नकर नमूना सभ देल गेल अछि एतए ई अपन जीवनक सभसे उदास काल कहलक हेतु शिष्टिह वलक प्रभाविति कहैत रहलाह।

कालक्रमे मिथिलामे राजकीय विद्रोह होय गेल आ राजा एक हाथसे सभ गेय सत भागल विद्रोहक बाद पड़ोसक भौटे राज्यवासीन राजा होइल गेलाह आ विद्रोह सभसे दो दिन गेलक बाद विद्यापति आ विद्यापति तहि रहलह अन्तरगत राजा राजा शिष्टिह शत्रु तब निवोध कर पड़लैन देखू जीत गेल, शत्रुक सत्ता लेलक अहि रथा आ कृष्णक स्थान लेलक गेल आ गेह देल, जीवन स्वतन्त्र लेलक चक्षुस आ पूजा करलक एही उद्योगसे न करै रहलक न महाराजपतिह यहि गेलाह काल राजावासीन नहि गेल भौटेक लोकालक राजावासी क्षीण होइत गेल ताहे ई राजावासी लोकालक महाराज विनोद गेल खोसा बलम

विद्यापति अपन दृष्टिसभसे सनक ठाम तिथिक उल्लेख कएने छथि सनके सम्कालीन आ इतरकालीन व्यक्तिसभक दिशेन ओइनिह रचनानी लोकालके लामोचलख कएने छथि एहि सभसे विद्यापतिक कालक्रम ज्ञान होइत अछि परन्तु एहि अवधिक कालतिह अधिकतर लक्षणासत में अछि जकर सन्त विन्दु वह विद्यास्पद अछि श्रीमच्छिष्ट विद्यापति अपन एक अग्रभूत गाथासे (अन्तर्गत १४५) लक्षणा सतक संग संग शकसत सही देल अछि एहिसे सिद्ध होइत अछि ते विद्यापतिक समयसे लक्षणा सत आ इसवीय सतक बीच १५७७ वर्षक अन्तर छल तदनुसार दिवकास सम्बद्ध मुख्य मध्य घटन क्रम क इलाख देखैत न

१३५० बाल्य विमर्शमे अग्रयन मौरसतमे

१४५५ विमर्शमे सभ विमर्शमे सभ विमर्शमे

१५५५ दुराजक सभ ओइली आ लोकावासी अग्रयनक सभ

१६५५ विमर्शमे सभ विमर्शमे सभ विमर्शमे सभ विमर्शमे

१७५५ दुराजक सभ ओइली आ लोकावासी अग्रयनक सभ

१८५५ दुराजक सभ ओइली आ लोकावासी अग्रयनक सभ

१९५५ विमर्शमे सभ विमर्शमे सभ विमर्शमे सभ विमर्शमे

1418 भाग्यनक पतिनिंगे सम्पन्न र नदलैलीं पचाइनेन
पदसिंह विष्णुदेवी नरसिंह अ धीरभक्तिक संग
विष्णुदेवीक हेतु गङ्गावाक्यावली तथा शैलवेस्वसर
नरसिंहक हेतु विष्णुसार हनक पञ्च धीरभक्तिक हेतु
दासवाक्यावली तथा धीरसिंहक हेतु दुर्गाभक्तिनारायणक
रचना,

टिप्पणी १ जे लक्ष्मणभक्तिक अन्तर्भ विन्दु ०५ इ ते नगा
मालन जाए ते तदुसार रघुदेवक तन्त्रि अधिकसे अधिक दम गये अगा
धुसकत

टिप्पणी २ प्रस्तुत सप्तहमे गीतक श्रवणमे दुर्गादेवि
व्यक्तिसभक सगी आश्रित राजा रानी सभक वशावली तथा विष्णुदेवि
वशावली परिशिष्टमे देखल जाए,

सकेतव्याख्या

गोर	गोरभक्तिकथ
व	नरौली तालघर
तरी	नरौली पानघर
मनु	नरौलीतथ गुम
तान	तानारामगौर
भाया	भायादेवसंगर
मनु	विमान विहारी मनुमदर
रमा	रमानथ झा
राग	रागभक्तिकथ
शप	शपभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ
राम	रामभक्तिकथ

१. रामअद्वपुर-तात्पत्रक गीत

तुपुधन तजत निरक्ति रहु काय, भरमहु कवहु खंड ताहि नाम १
 मज्जेहि बाधन करय अवधान, ज्ञानो परचारिअ तजो पर जाना २
 ३ १ तजगि मज दान सून, जे रत जान तकर बड पून ३
 जहुअ सो हृदय बड मिलिन' समाज लहुअ सो रहब अजुधि भरा लाजे ४
 कावधारी अनुगत जवनस लागी लखब हृदयगत पेन ५
 शिक्षावते भज सुन धरताहि कलत' रज्ज्वरस धरदम मुगारि ६
 रुज्ज्वरस रहु रस नात 'सिधसिद्ध' लखिमदेवि रमाल

1. अपतः 2. परिचारिका 3. मित्रि 4. अग्रसभो 5. कते 6. राण
मित्रासह 7. दो 8. नेपा मी

संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। १. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। २. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ३. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ४. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ५. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ६. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ७. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ८. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। ९. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं। १०. संक्षेप रूप में निम्न १० तथ्य उद्धृत हैं।

१ भजे २ मों ३ सति।

हमने निम्नलिखित बातें पढ़ीं :
 1. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 2. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 3. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 4. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 5. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 6. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 7. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 8. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 9. जो लोग अपने देश के हितों के लिए
 10. जो लोग अपने देश के हितों के लिए

राधा कण्ठक गमरएन सखीसँ सखीन छथि १ हम भूडी गुमा
दिहिसि के ओकरा जेहारन जाने सोझक बेर की कहवहु २ आरु भा
बीर हएन लेल। छती उधारि लेन देह कांए लगन (३) हे सखी की
कहबहु रहैत बाज हांइन अछि रोषक काज थिक गएकें चितन्ह ओ
तारीक भलाउंग की वृझन ४ चीरक कमली खोलन चीरें दहाओन
सही देखिकें ओ लग सोई भाजन ५ ओकरा कनेक मधुव उचल कहन
से की कहबहु हम कनेर गमार केँ दूध रसधार से घोड़ा पथाम
कायल ६ लगक सखी ओकरा हाथ धा थ कासकन सिखाय लागल
न ओ गोपगमन गोपी सखीकें बजावत लागन ७ हे सखी रस की
दिकैक से तो तहि सौन छह बह पुण्यवती सखीकें पिसा पवैत
आ ८ ८) लह तो ओकर मगल की कहैत छह ओकर न हम कसौती
पर कसिकें लिखि गेलहु ९ विद्यापति जैत छथि हे मूदरी पिसा
भरोष विरु सोन बजावतें लगवत १० अछि ओकर रस नानादह
सिखा लागन हाँक जौ राज सखीनएन

[illegible]

સે યિર હાલત અગ્રા 2 સત્કલ સેલ 3 રુફ

द्विती वचक प्रेमी कृष्ण के गजन जैन अछि । १) हे बालक
सदा मोहर प्रेमक कारण द्वयि भए गेलि तो भारी वचक (बोचछ, छह।
तोरा केवल रूपक मोभ छहु प्रेम दूर भए गेलहु राधा १५५ भा
सकलस्थल छदि धरि गेलि । (२) सुन्दरि कजि कजि के नयन
पठजोबकहु अछि तो गचल छह तेरो जलेक कात दए मृति लेह। करार
अपना लेल कोनो चिन्ता नहि अछि । तोरे हिन लेल कहैत छिजहु । (३)
हम मिलनक आशा दए भोगै कुल्यती परनारिके घरमे लए भनखहु।
वेचारी तनखोहस गेलि । हइने सभ कुदृष्टिवासी गुणोवांछ सभ सफल
भेलि । कलक लगवाक अवसर पओलक । तो कलक विषय कहल । (४)
दूरीक हे बालक सुनैक कृष्ण नज्जए गेलार । लखनुरा टोकाक दोने राज
शिवसिंह रुपनारायणक आश्रयमे पितापति हे गेल गचल ।

मनुष्य के दो अंग हैं जो कि शरीर के अंदर से निकलते हैं। वे हैं श्वास और पाचन। श्वास शरीर को ऑक्सीजन प्रदान करता है, जबकि पाचन भोजन को पचाने और शरीर को पोषण प्रदान करने के लिए काम करता है।

1. कांति 2. दुः 3. सुखं 4. विमल

दुर्गा रक्षा के अभियोगों के कारण भी । एक ही में अभियोगों का
दुर्गा रक्षा के अभियोगों के कारण भी । एक ही में अभियोगों का
दुर्गा रक्षा के अभियोगों के कारण भी । एक ही में अभियोगों का

उद्देश्य (उद्देश्य) नतीज (नतीज) रति (रति) मूल (मूल) जहाँ (जहाँ) प्रस्तुत (प्रस्तुत) अछि (अछि) । 5 जे (जे) चित्त (चित्त) गच्छ (गच्छ) रहए (रहए) तँ (तँ) । सागर (सागर) नासरीके (नासरीके) पाछे (पाछे) बहुत (बहु) के (के) करतार (करतार) ।

6

[illegible]

१. रक्षितानि। २. लक्षण ३. सद्यः ४. अपलक्षण गद्य ५. की

[illegible]

सहज सुन्दर लोचन लीला काजर अञ्जलि ८ कर भीमा १
 चित्तक दण सुन्दर मसी दण्ड मस्ति ९ का नसी
 चली सुन्दर लीला चञ्चल सकल भिल नहु सन १०
 एमर सौख्य की अङ्गना ११ अञ्जलि १२ अञ्जलि १३
 पण्डित सखि भूखन भद्र सुख सुख लहं मडग १४
 सरल कवि विद्यापति १५ अञ्जलि १६ अञ्जलि १७
 रूपतराज १८ रत जाल रानी लखिमा देवी रजाल १९

१. केर रङ्ग

अभिषार लल तैभार हाइत राधाके मखी कहैत छथि ११ रङ्ग
 भाषिण्य का मयल सुन्दर रङ्ग एकरा काजर अञ्जलि नगा अञ्जलि १२
 वनार २ चित्तक पसरित, मे कही कस्तुरी लगल अञ्जलि १३
 चालक समान हागलला लीह वनार ३ ४ सुन्दरी लख छथि
 लखवाक बहाना लखि का ५ दण अञ्जलि ६ अञ्जलि ७ अञ्जलि ८
 पुण्य होकर अञ्जलि ९ लोहर देहम लीह सख पसरि रहल छथि १०
 दूक भन्ने अनुवाक हो न अञ्जलि ११ काजर पण्डित १२ अञ्जलि १३
 पण्डित छथि सुख म सुखलक का १४ हाइत १५ लीह सुख
 म सुखि रह मडल सुख लीह लीह लीह लीह लीह लीह १६
 मडल कवि विद्यापति कहैत छथि मडल १७ अञ्जलि १८ अञ्जलि १९
 छथि २० रानी लखिमा देवीक लीह लखिमा देवीक लीह लीह लीह लीह

विद्यापति अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि

काजरकदु भेलि २ कद कत कहिली ३ अञ्जलि ४ अञ्जलि ५ के ६
 सही १

कृष्णक थारसर विद्यिन्न राध दूती के कहैत छथि ११ है
 दूती लो जे कहलह नाहि सँ हम विन्यामे पदि गेलहुँ आ विन्या हमर
 अञ्जलि कवचित कए दैलक १२ एकर काजर लो जे कृष्णक सँ स्वय
 रमण कालह नाहँसँ, हमर मन विद्यिन्न भए गेल पावतिक टीप
 सिद्धाए गेल विन्यामे अञ्जलि विद्यिन्न भए गेल १३ है सखी की
 कहलहुँ कए लगीत छी न विन्या आओर यदि माइत अछि बान्हल
 बान्ह जकाँ एम दूटि गेल १४ अथथ चाल की थिक से लो जनेत
 होएद आओर काल दू लख रमण कालह १५ होसर हमर प्राण ननेत
 अछि १६ १७ १८ १९ २० विद्यापति है रजाल एकर रस लखिमा देवीक
 पण्डित राजा विद्यापति ननेत छथि

अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि
 अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि अञ्जलि

१ लख रहल २ अञ्जलि ३ अञ्जलि ४ सख ५ अञ्जलि

राधा मिलनसे टिछनक हाल सखी के सुनौन छाँये । है सखी बड़ मनोरथसँ पिशुनक लज्जरिसँ यचीन भक्तिरसक तेनारी काल परन्तु ते सफल नहि भेल मनोरथ ततहि रहल। हम भगवति नारं छी । १ है सखी इ हमर टिनक दीप थिक पढ़े जन्मसे ते भरी एष काल तहि एहन पराभव भेल एहि लेल भजकपर लाभर किएक करव । २ ते घर गेलहु ते सकलस्थल पहुँचलहु मनक मनोरथ तहि एल। छी गेने बाटमे घान हुसि के उगि गेल यात्रा रुकि गेल । ३ हमर बात लकिन काल पोषासल रहि गेल तकर एष भणी हमही होयल। हम एका दर जाय गेनेक पैघ मन्नाप के सह्य । ४ विचारनि कहैव जहि विचारमे पैघ धारण की पैघ सभ विपत्तिक समाधान थिक कृष्ण पर एष लखन रह मिलन अवश्य होएन।

दुन्दुबनं तयन फाजुर गोलः तमने भयं खण्डित भयः ४ ।
 पीतं पयोधर तयरे मरुतं जति तमसः होवर चन्द्र ५
 न मुख बचन न शील शीर कज्य घनहन भय तयरे ६
 घर गुरुजने दुन्दुबन सडका तयनीत माधव भयं कनकुर ७
 भन विद्यापति तजे इते भयं गेवन जयार वकल वयं ८ ।

१. त ८ राश्व

दूरी राधाके घर दुरायाक अनुगम कृष्णसे करैत छथि
तोहर हृदय केहन छहू से गहिले बुझबस नहि अपन जाई आनक पत्नी
परनारी तोरा अर्पिते देनि भाहु 2 हे काज के कारन हम लोक नहि
कएल। साथेकि सिंहसे भिदाए दलहु 3 हे काज हमर चितनी मजद
परनारीके आय छति दहक 4 बुझबस करैत करैत एकर भविष्य जानर
मेहराण मेनैक अधर दंतसे क्षत भए गेलैक 5 पूर स्वयं तखतमे
गठरा भए गेलैक तेना शिखर शिखरमेक शिखर पर राज छथि गेल
हो 6 ते भुवसे शीख बगडाई छैक ने चित रहित होय छैक मगर
शरीर तोरस कापि रहलैक अर्पित 7 घरमे गुलामके ओ एकर दुके
समाक कर छैक हे काज ती हमर कलक लखर 8 हे काज
कहैत छथि हे दूरी तो भजमे 9 ते न बुझबस होय छथि रा दहक
आदि पूर्वादेक घर काजो लाय काज शिखर 10 भजि

[illegible]

गते दमस्ति दमस्ततः नैसत दैविः ॥ ३६
 चापे चक्रं मुधारन गेहल निरसिह मसिह ॥ ४
 कर्णे कुल मठाग न गुलन मध्य अधुन नाल
 इदंते मीत्र करुण तरे कामदेव मगभालः ॥ ५
 मस्तमः दृष्ट सत्य मस्तन मुनि दक्षिणे वाली
 ॥ ६ दि भालां चन्द्रक कल राहु मेरालि माली ॥ ६
 कर्णित मस्तक की मिति सति मालां चालाते दायि
 जिम कर्णिते संधे समगू मेशी लक्ष्मी जयि ॥ ७ ॥

1 ત્રાગુ; 2 ન 3 માણિ; 4 સદેગની 5 કોનંતે

[illegible]

भरत कमल कहने विपरीत होमक कलने हार से चीन
 के पतिभोजन यह परमान चम्पके कान्ठ पृष्ठि निरभार २
 १ १ मधुच पलटि निहार अपरव टोडिभ गृहनि भवत्प
 कृप गेभीय मरिचिनि लौर जलमु संसर तता पित लंग ४
 धहकि चहकि दुई मज्जन खेव कला कमान चारद हरि लेन ५
 कप हेरि निशिरे कर बट धमिले कलन ताकर नवमद ६
 विद्यापति भन बुझ राममर १०० शिखिरे लखिमारीदे कनन १

धरत २ हासकला से हार संधीन ५ उमि गय ११ १३ ६
 विद्यापति १११

सखी कृष्णके राधाके सुखता सुनकोर छांथे १) है कान्हू लान
 कमल (पार ज केराक यमद जय) इतरा जिममम मरि अजोर से
 हसक कला धोले से डि हरीन सोडे के विभाजन न चम्पक
 फूल से धरती (राधाव देह) धलन है मरु दुईके देव एकटा
 अपुवे दू गिय अलनार लोछे धरि भउ १४ लोचक (विद्यापति) १५
 गरीय कृष्ण लोडी भउ १६ लोचक सेजय कर लल ल भउ १७
 दुई गोर लज्ज (मरिचि) लोचक गोर के कलन भउ १८ ललदेव धनय
 (भउ) लोचक मुई हरे ललक को उर देम लोचक लोचक देवे
 लोचक गहुके विजद लोचक ललक समीय ललक केमल लुई लोच
 अपाभन १९ विद्यापति कहैत लोचक ललक ललक लुई लोच
 लखिमारीदे लोचक ललक विद्यापति

विद्यापति पद पारहिन १) लल भउ १२ लल भउ
 लल भउ १३ लल भउ १४ लल भउ १५ लल भउ
 लल भउ १६ लल भउ १७ लल भउ १८ लल भउ
 लल भउ १९ लल भउ २० लल भउ २१ लल भउ २२

भुज्जन मल वीरि विद्यापति मदे मलरार भाव
 नवले जने विभय रण नखर लने गमव ३
 भन विद्यापति मल लने वीरि विद्यापति मल लने वीरि विद्यापति
 राज विद्यापति मल लने वीरि विद्यापति मल लने वीरि विद्यापति ४

१ एतर २ लोह अमृमिण पाठ

सखी राधाके उपदेश दैत छथि ने पण्डितक मोह छडह १) है
 सखी ने स्थिर जगह सखी पति के छवि अस्थिर जगह पण्डित
 दैत मत के लगवत अछि से मभम हीन उपेक्षित भा दिन दिन क्षीण
 भेलि जाइत अछि स बहुत पराभव पवैत अछि १२ है सखी मतके
 स्थिर कएने रहत नै हठव भावुकलखल मोन काज कएल जाए नै
 ओकर परिणाम लोक जाई भए सकैत अछि १, वीरिभार लोक समारक
 कोनहु भावदिस अपन मत सोचे विचारके लगवैत अछि जखन जेह
 विभय रण लोचिनि निगद करक थिक मय पति गेहर विभय थिकहु
 लकरहिम प्रेम निजो कवह १ १) विद्यापति कहैत लोचि है राधा सुनह
 मलमे मल पण्डितक लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि
 लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि लोचि

लल भउ १) लल भउ २) लल भउ ३) लल भउ ४) लल भउ ५)
 लल भउ ६) लल भउ ७) लल भउ ८) लल भउ ९) लल भउ १०)
 लल भउ ११) लल भउ १२) लल भउ १३) लल भउ १४) लल भउ १५)
 लल भउ १६) लल भउ १७) लल भउ १८) लल भउ १९) लल भउ २०)
 लल भउ २१) लल भउ २२) लल भउ २३) लल भउ २४) लल भउ २५)

लल भउ २) लल भउ ३) लल भउ ४) लल भउ ५)

सायक वसन्तक एण्ड सायिकाके मुन्नेन छथि । मन्थपवन
 फूलक परागमें भरि गेल है सहकार कोकिलक कू कू ध्वनिमें। धुँक
 (शिथिल शत्रुक धरिपाटी रहित नयक वसन्तक धरिपाटीन हारे पक्ष
 गेल ओकरा म्यान्में आन धरिपाटी चलल (काहेमें मज करव गेल
 अछि ते 12 है साजेली है नय तन शान्त नयस्थ) जाते तह
 राजा शिशिरके अपन पराक्रममें दवाए वसन्त गला भेलाह । तो न
 कामशब्द रहितरहस्य आद्योपान्त पढ़ते छह हैआ सप्तर पर अजली
 भेला भए गेलह आजुक दिन काहेमें लह भेलाहुँ छौवनक वान्तमें जाते
 धरित रहित अछि

मन्थकरी धसमसि विहक सोम नर दिह कर कन कितन रिस
 सोमह सहस गति लीयत । मन्थकरी कन भेलाह धरिपाटी
 जने कि वान्त साधे वान्तहुँ आन मय लीयत नय नय आन
 सजयक यमे रह सय अनुपम भवतक मन्थ मन्थक पा गेल 4
 दिगो दामन नयार भन पायहुँ गुन वान्तुवनी कुन 5
 12 वान्त मन्थ पुष्प रसमन्थ राग मन्थमन्थ मन्थमन्थ 6

का 1 मन्थ 2 धरिपाटी 3 वान्त 4 नयार 5 लह 6 दाम

मन्थी रुसलि राधाके जीमन छथि 1, मन्थी मन्थ 2 मन्थ
 दवाकन नाथ आ मन्थ तो किदने कहीदने बात मन्थी मन्थी छ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थी मन्थक वीच रहै अछि 3 (3) मन्थ की
 कहीदने आ तो लोकि वान्त अछि नयार काहे आन मन्थके छवि लोकि
 मन्थन जने लम प्रेम समयक प्रभाव रहै अछि 14 समगान्तमन्थ
 कान्तमन्थ मन्थ लोचक मन्थ अधनाह दिस नि नयन मन्थ 5, दिगरी
 के देखि नयारक मन्थ लोभार मन्थ अछि वन पुनरी मन्थ 6 मन्थ

मन्थ कृपाइत मन्थ 16 दिवापति मन्थ छथि ई रस लखिभदेवीक पति
 रस मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ

मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ

18

ओ मन्थ कौमल मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 2
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 3
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 4
 ओ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 5
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 6

1 मन्थ मन्थ मन्थ 2 मन्थ मन्थ मन्थ 3 मन्थ मन्थ मन्थ

मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 1 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 2 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 3 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 4 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 5 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 6 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 7 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 8 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 9 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 10 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 11 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 12 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 13 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 14 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 15 ओ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ 16 ओ मन्थ मन्थ

मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ
 मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ मन्थ

तोर गगनागत जीवत मोर आभाजे पडल धातुहो तोर ५
 तन्ति पठसोलाहु तोर ठाम लाहेन बघन धोवद आम ६
 तबुअ भो नहिाके तजे विभारि दुति करतव नजे तबुअ ७
 दूरन जो कव भजे कानि वरि तबुअ द्वाते दुती ८
 भन विषाणजे वरु तबुअ नजे तबुअदवे गगन ९

1. काष्ठित करिह 2. छुटा 3. रहइ 4. मटमै 5. मकका 6. लहि

दूती रुसलि राधाके मतवत एहि १) नवका कलवा मे सभके
लाज होइत छैक किन्तु विनु नवल काह नहि नवत छैक २) ते ताथे
काछिके कृष्णके रिझावह ३) जेहने कलवाह तेहने कलवाह (इहामे
जएवह)। लखनहि दुनेभ प्रेम भेटतहु ४) ई सखी झट दए अभिसार
करह समार मे गुप्त प्रेम करब बह पाए वस्तु शिक ५) वागने उभ
देखि लेत मे एका नहि काह तीहर गैरी मयदह जान समारभदक तर
दयालाह ६) तीरा कलकलरा ता ताप का ता ता मयदह समार को ल
भार गेल कलकल रिज हस ता मयदह रावह तीहर मयदह वस
नगभोने रहहु ७) हमरा ओ तीगलरा पदवीवह भा ती ओकर
शोभापपूर्ण ८) एतए वचनके छेड़तूर बहिन ९) कलवा अघे नवत
छह १०) तेओ ती ओकर शिकने छह किन्तु दूरी के समार ती
गिहवनी बजाम देवह ११) दूतल प्रेम नवतु हस जेनक केर लख
गल राधा दुतीक मुह ताकि होमे रहवीह प्रेमल भा गीह १२)
दिवापति कहैत छैथ राती लखिमाहवीक समार ई रात नवत एहि

भक्तिनि शाल मीत भनं रुध मध्या मन मध नलसिज थांथा १
 दिष्टेयम भनं कानि रहयः नेसर नाथदि नष्ट अग्रध २
 दूने भा अनु जलमा नाथ येन भनं शिष्टे भक्ति मकरि ३
 तन कर जौसल भक्तिहं मन्द तरानिक उदय लक्षन की चन्द ४
 पर भनने शेष दुर जाए मध्या राई दुःखी हलया ५
 शिष्टांते भन ब्रह्म रसमन्त राग शिष्टिदि लक्षिमिदोये कन्त ६

1. सति 2. मतांगेज मन्त्र मथ झाङ्क 3. मेन्ति भेन्ति 4. गोआरें 5.
6. चण्ड 7. गंध 8. ताय बराह

दुर्गा भवत कालक कलिनना राधा आ कृष्णक सुतयैत उचि ।
मांतेली राधा मौन भवे भात तदि वैसकीक आभर वृष्णाक भज के
काभवंदना मयि रहल छी ३ ४ ज सश्यागवश केले रसम मिलतमे
कानी गद्या होइत रहति न तकर सकट दीप तेजराक अशान दुर्गाक
माथपरा पराक देत छथि ५ ६ भाग्यात केली नारी दुर्गा भग ननु
जन्मभो हो देव हमर जगाम ज सिद्ध राफल तदि भेल त हमर भवे
गमरि । भा दु चतचहु ७ गतेरु कौशल मेनय प्रथमा कालरुपर
छे दलीय भेनहु ८ कहु मुगैतय देव ९ नखल साजक
वृन्तिल मुद्राभा १० दुर्गा दीप भा ११ नादल स छि नखल रा
भा पुनरा होइत १२ तदन तदि १३ तिनहु १४

[illegible]

1. देखि दर्शने, 2. गंग, 3. देखि दुख भन्ना 4. पल्लवले।

22

1 लकड़ी 2 घरके 3 किचन 4 जहाँ

7

19

दि सम्पूर्ण गीतक भाव ज्ञा अर्थ समग्र अछि पाठ्य लिखति

2

१ मधु २ महत्तक भावे ३ मुरारी ४ मन्त्रावेधः।

राधा सखीस कहैत उरिये हमर देह कमलक गोदी सल
कोसल सोखे हम रद भाविमल मल्ल मलय २ पालन दाही दवाये
हमर नयनमय विपल अछि ३ के जल हमर प्राण वापन कि गोदे । ४
पुन्यक हृदय गिरु निरख दीया सोखे ५ भोकर सहेन स्वयं न शिख, ओ
हमर ननुक मग के लहल ६ गग दैन अछि ७ ८ मय, क दीन लोका
जि कहै महु भय होइत न मरि नहुन म ओकर मीन नानि मयूर
१५ है सखी तो कहहिही उह परदारिक हमरा एतए अतलह तो नै
हमरा मने तथ दनु दानि कप ने धरनि नेलह ६ विषाखी वदेन
जहि है पुनिसनि सखी सोखे विचारि के गिरनम ७ दाय बाण कलक
वाही

विरहकें भल विरहः सोमपत्रह दूध रहल भल कही
 दूध दुध घोर घीस सबे खालक संगी रहने सुख कही
 घोरत अबहु न रोह भयने
 भयनक कृपति नहने नहने भयन की उपरसन भले
 बरह गगनसु दानिध पकभोलह भयनस नेमक मझी
 लहि विरहघात्र मुखसुख खाल गति देवस दूध मझी
 मुन्दर पर मुन्दरविभ कानह मूस मनुस सबे छडी
 काटि संखारी गण्ड गण्ड कालक भव धन घालक गयो 14
 शीतल धनि पलीस घालह भइसने न पविनी
 पतगणी कही गण्ड गण्ड कालक मुखसुख मलक कही 5
 गोरह धनि घीस पर मलकह पकर सोन विनामे
 रात मिठासेह कालक नयिआदिह रमाते 5

1 रानी 2 घीस मनी 3 पतगणी 4 मझी

काये साशरी कलधक कृपतिगम देवघडे मूस आदिक कालके
 प्रतीक बलाय देवघडे लखे 1 तो दिलाहके रचने बलाय दूध पर
 सोधि देलह भी दही दूध भोज दल सभ विरु काल काल मगर लहि
 खाइत रहल गो न रोह भय मल भयन कही भयन लखने गि
 गेल 12 हे लेखन मलध आदह भयन गति भयन भयन दुखी न
 भयने लहि बुझल छह न भयन की 5 पट्टे देह 1) भने बटे के मनुस
 (1) बानि भलसाक घरक लेल दूध पकभोलह लखे ओ देवघडे रात
 राति दिन दूध साझ कृपतिगम खालक (1) तो मुहास (भयन) में
 सभ मनुष्य के (लीक भयनके) लखे मूस (1) के खलतली
 बलभोलह भी खलतली संखारी पली के घड गण्ड का कही सभ धन के
 गण्डे रखलक (5) तो गण्डे घोर सलकेरवा के बानि रखलह रोह
 एहने बानि छह ओ सलकेरवा पनगी (भयन) घन जका दुखी दुखी

का काटि देलक 16 तो घीसके गोरसे लहि 17 दुखभोलह पकर
 रुत भयनघर रात विनामेह

एकहि देरि अनुग वहाओल पकभोल भल मन्द
 अपर देवघन जति न पालका जति होअ दिवसक चन्दा 1
 गण्डे लुन गुने लुपति रहने
 दिव देवघन मराह न भयन लोह लख सच धावो 2
 दुह मल रहस लेसा लहि नाता का टण सलकेरवा ज जाई
 चिन्ताये घे न भयन घेसाक मनुष्य रहति शिर लखे
 भयन विघादने मल मधुरगति लोह बानि जाने लहि भले
 दिसवस देवघन रस कालक नयने वदुम सिंह जाने

1 न 2 लखे 3 रमसे 4 लोह

दूध कायक उपराय दल जति 1) तो प्रेमके लखे देर लखने
 जगो वहाए देलह ओ कालके मल भयन लोह पेम पशुधन भय
 गेल 1 भयन लोह लहि पशुधन पर रातक भयन में निनभोलक फल रहल
 वाली लोह रहल भयन लोह दलक चाल सल गहास भय मलक 1
 हे साधक शय लख मधुर मधुर लख विरह न विरह देह 1 तो
 मलक मल जति दुख लोह भयन तो सलके 1) लख पेममलक
 छह ले साधक दशाक सलभन क सलके 13) 1) दुख मल में जी
 रहस्य काल कालक पेममलक लख में लख दूध सली लोह लोह
 सलके लखि लख रहस्य भलका द्वारा सलके लोह काल लख सलके
 भलि चिन्तामें भी साधि बुधि दशा लखने लोह भयन लयावु लख
 लख गेल लख भय लोह लख भयने लख गेल लख 14 विघादने
 लख जति हे मधुरगति काय मुल लोह लख भयन भयन काल

गति (इन्द्रायक उपाय) नहि अति एक रस विश्वरूपदीक पनि रसमसल
रानी पदमिह जलन छथि।

कयहि मिलन रह मृदु नहि सुन्दर छिन नहि दिवसक उन्हा
प्रकृति न रह थिर नयन गलण थिर कमल अंग सकल
माधव मुअ गुन झमरि काम।
दिन दिन छिन तनु पेरुन कुसुमधनु हर हरि लभ ॥ नाज ॥
निलन चाबुल पोरि मृदुन धनद मातए नहि भारी
सं धरि दसम दसा भवे पाभोल नहि होयद वधकाल ॥ १ ॥
स्वसरे गेने एक तेर बहा सोद विधापनि काये भाद
राजा सिवसह राजा न लखिमा भवि रमाय ॥ ४ ॥

जति अवधिज देल २ ते ३ वधक होयद नहि भागी। नगुम।

नखी कृष्णक राधाक पोरिहदथा ग-दीर छथि राधाक मर
सज्जन हाथ पर रहन भवि। भोकर मुह ओहने इरास। लहेत डैर नल
दिलमे दान ओकर दिय निशा नहि रहै छैक नखिल नर अरुन छैक
जोत कमल स सकल ॥ २ ॥ है कान्ह राधा ना कयनी पामरि भ
गौर। भोकर देर दिन दिन दुयान ल मोहन छैक। कामकी भोकर सदा
रहल लखिन भो केवल मोहर नाम हरि हरि नयन रहैत भवि ॥ ३ ॥
धननक निरदा करैत अति उलल नहि मोहोदुन छैक। मरन नल
देलक। चर नारी सन लगीर छैक भो रसम दरा मर। कर निरुद
पहुँने गोवि अति ॥ ४ ॥ भोकर छिनु भोकर १ नो उचकली लखन
अपराधी होयद ॥ ५ ॥ अजग जेवल विनयार दम वल नारी कति
विधापनि कहैत छथि

२४
गए चरवा गोकुल जस गोवत सडन कर पवितास
मजलेह मोर मरुन श्री कज गोकुल होयद मोह वीदे नाज ॥ १ ॥
दल वलामे कन्ह मजो केहि नोपधू मजो नलिका मोले ॥ ३ ॥
गजहि जसने गोवि म नगर नगरेह नगर गोवि म जस ॥ ४ ॥
दसम पथान झण्ड दह दह। मे की दिवस नगरि पाए ॥ ५ ॥
आदे भन दुहु दलक नहि विधापनि भन दुहायि नुरि ॥ ६ ॥

१ चरवाह २ राइके जलेक ३ गोकुल मोलारे ४ दसथि ५ १।

राधा कृष्णक मसरल दूरी के सुनवेत छथि ॥ १ ॥ जे गए
चरवा गोकुल गोभरगाभा। मे दस गोभरि सभक मग हँसी ठटठा
कए भा ॥ २ ॥ अपनह गोभर होआ नकल लेल कोन कोन भारी
एकान्त मे कहैत छिनुहै। जो दस ठड नाज होइत भवि जे हम
नकलतें पत्र करल ॥ ३ ॥ है दूरी मे हम आर फादसं कलि कए
कहैत छह नकर गोभर सभसं लेल छैक ॥ ४ ॥ मसम असलहि लोक
गभर कहवैत अति किनु नगरहुमे वसतिहार नगर सभार छोड़ होइत
अति ॥ ५ ॥ जे जगल मे दस व नारा कही मे दूरा दूरा मे नगरी
नगरी के की नसर नल ॥ ६ ॥ राजा स द सन दूरी दिह
मोर दे। रहवैत ॥ ७ ॥ है न नगर मे फरि जल ॥ ८ ॥

२५
एक दूरा वर इन्द्रायक करि ॥ दसम नगरीव न नखल भवि
दसम नगरी नगरी ॥ १ ॥ विधा न नगरी रूप
है नगरी कए विधा नगरी दस चरवा नगरी नगरी ॥ २ ॥
सज्जन मजलेह कान पामर नल ॥ ३ ॥ है न ॥ ४ ॥
लेख नगरी नगरी ॥ ५ ॥ जे नगरी नगरी नगरी ॥ ६ ॥
विधापनि भन नगरी नगरी ॥ ७ ॥ विधापनि नगरी नगरी ॥ ८ ॥

1. धनलि

दूरी कृष्णके जनदेव अछि जे राधा भव युक्ती भए भए
राधाक स्तन दूनु मानू हाथीक मस्तक शिक स्तन ए भेल एक लखन
आकुस थिक 12 रोमाचली सूत शिक ने लक्ष्मणी रूपमे पाई पेटा
चमल अछि 1 4 कनक देखल भवन साज सिंदूर का धना राधा
यौवनरूपी हाथीपर नगर भलि 4 हाथीक पसारी- सिंदूर सदलरूपी
महाकुल कानक 1 तस्कर लोक कौक्युलक देखल चाहैत अछि 15
हाथीपर बढलि एहि बाल क इरे रीचरूपी राजा तक लेलक पुन मण्डिक
सीमाक भीतर पारर नहि दैलक 16 विद्याधने क

तुअ ननयन पयो मकल राति नगर नर नरे नरे नरे 1
भलकालिक धीरि कला दन भरे नरे नरे नरे नरे नरे 2
नल चल राधा वृद्धन सख सख दान नल कल अते 3
ने नहि कले विद्याधने नरे नरे नरे नरे नरे 4
न न नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 5

मोरी 2 गीत राधा ननयन

दूरी कृष्णके जनदेव देन छेने 1 कनक नर देन 2 राधा
राधा राधा राधा मगर रक्ति नरी गेहल नरे नरे नरे नरे नरे
नहि भेलैक नरे अपन पसारी के मोहि बला केशक दान पर नहि
नाम लिखि नरे 2 गह गह 4 मण्डल लोचन मग 3 हस दूये
गेलहुं वचन देन 3 हस नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे
आने 1 पद नल नहि कलक पाटी जहिसे नरे नरे नरे
करा, नहि कलक नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 4
विद्याधने कहे न छेने नरे नरे नरे नरे नरे

राधा राधा सुन्दरि कि कलि नरे नरे नरे नरे नरे नरे
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 1
पद 1 नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 2
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 3
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 4
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 5
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 6

1 भद्रमन पम जेसरी ननयन 2 ननयन सन्द 3 धरि 4 लोमक
5 धरि 6 धरि

राधा सखीके उपवास दैन छि 1 नरे नरे नरे नरे नरे
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 2
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 3
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 4
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 5
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 6
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 7
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 8
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 9
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 10

नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 1
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 2
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 3
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 4
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 5
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 6
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 7
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 8
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 9
नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे नरे 10

1. छोटे कण्टे काल 2. भेल अथ 3. रासधल दूरी 4. हात 5. पदावली 6. किदहु अधिक गुल

राधा कृष्णक गमरपन दूरीसं सुन्दरत छथि हम कपर काँ (कृष्ण कृष्ण) देखल मान काल आ कर कससं लोकरा देस ताके भोहि मानक समाधान छतिकार काल (2) राहुपर भो विमुखे भेल रहल हाए जाति नहि केहन परिणाम होएत 3. हे दूरी भोकर एहे उदासीलता (गमरपन पर हमरा कलक दुख भेल से तो की कहवहु 4) भाव साक्षरत दशबहुक अरस लखल आछे भयने कणठ मे भयजहि भुजपाश लखल छी (5) भाव हमहु गमरपे लखलक शीते सीधव ओएक स्त्री गुणधली थिक जकरा ऐसीक प्रीति पाम होइक (6) विद्यापति कहैत छथि की विद्वन्मन्य पुरुष भूट भो नारी रोसका।

कैतकि कुसुम अति विरहि विरहि वरि वरिसे न जल मन
धन मधु दुध दान जल वरि का लखिसे दलक विरहिन
भयन लखे लखे अरस भो
घर गुरुजल डो पुछिओ गुरुजल लखल काल मन राह
माने नखल जल वरिसे लखल भेल लखल काल निहा टोही
गमरपन लखे विरहिन विरहिन लखल लखल लखल

1. अडलुहु 2. गुल 3. भेल 4. सरादग

दूरी कृष्ण के कहैत छथि 1. हे काल राधा लोहर मिलत हेनु कैतकी कैतकीक फूल आनि आ भलेक प्रकारक वरि से गल, कएके अपन घर चारु द्विष सजसोनक धूल मधु आ दध दान लखलक वाली बलान चारु द्विष दीष माना देखल (2) हे माधव लोहर मिललक एत सभ व्यवस्था सम्पन्न का आनहु किन्तु राधा मज्जा घरमे गुरुजलक डो पुछिओ नहि सकलि जे कहल काल आ नोत 1. नैथे गुरु

मे लख सकैत कर देखल मूय इदलक चाल उगलाह राति ग्यु उगल भेल, मे देखि राधा आकारा मे लारा देखलक साथे अपना हाथ शर से मुक्त चाल लिखलक पर से गूचित कालक जे चाल जखन एतेक उपर भयल गइल कहल आवथु।

24

कल कल कुसुम कल रस लख लख एक लोहर अनुगण 1
मौलनि मञ्जरी न करण पाल लोहे माना राते दोसर परल 2
कैतकि भयल दे अघटन मधु मडलहुने मुह पडा परल 3
जकरा ने छिनु लहि पकरा से कैसे करण लख उरिहार 4
पकरा लोहे लहि भले मधि भोभा कि कहिये मने मोहिम लोहे 5

1. कल लहि कुसुम कल 2. लखि लोहर अडल 3. अजो

दूरी मालतीक लखल राधाक भोले भोले 1. हे मालती अनेक प्रकारक फूल भोले आ लोहेमे सकेक प्रकारक रस छिनु लकरा (भयल) कैल लोहर मे एम छि 12, ओ कुलाएल मञ्जरीक रसभन लहि लोहे भोले लोहर लोहर मानेन इह लोहर भोले लो दोसर प्राण होमहु 13) लोहर एसी भयल कैतकी के उपराण दे 1 अरि, जेकरा लिखल लोहर भोले मधु मडलहुने मुह पडा परल (परल) से भोले दल इह हमर भलादर करि 14) जेकरा विरह लख लिखल लोहे लो से नकरा लोहे लोहे सकैत भोले 5. हम बहुत गुल काल से दूरी आ जन्म लेल हमरा घर थोड दुष्टि भोले लोहर भोले भोले भोले की कहवहु।

25

परापर लख वरि अघटन लोहे लोहे सभ दिवस भयल 1
लेखल लख कैतकी लोहे देखल लखल लखल के कलक विरह 2
सजसोन कल लोहेभयल भयल लोहे लखल लखल लखल लखल 3

27

गुरुजन दुःखन हर कर दूर दिनु साहस भविष्यत नहि प
एहि ससार सार बंध एह' तिसा एक मिलन जाय निब नह

1 जगो हरिसभे सार 2 तही केउ 3 का न 4 मर

सखी राधा के अभिपार हेतु प्रिय कोत उचि (1) मय न
नल हरिसार रहल अछि तन्हेंस हिलहमे गति सन अन्तर परसर अछि
(2) लगहुमे केओ ककरहु नहि देखैत अछि रहतामे क दिज से के
देकछाए सकतहु 3 हे सखी अभिसारक बैस्यी करह। अइ दिनहिमे
समाज्य सफल होओ 4 गुरुजनक आ दुर्जन कर दूर करह। दिनु
साहस कएने आस नहि पुनैत छैक 5 एहि ससार मे सार लखु इह
थिक पल भरि मिलन आ जीवन भरि प्रेम

एहें पर धारन के नहि लख के नहि सदगक दस।
काहुक कोको कोह नहि सुनि। हन' पण उग्र हो
के नह कोको कोह नहि सुनि। हन' पण उग्र हो
1 2 3 4
गतन ओकर इय कुनहुन सिगिल कत। हन' लख
कपलक भाग्य कुनस गण नकलक नहि पण न बुझ विमल
गोचक नलदन गण चरबहुन रहलहु पसुन मभन
मागि नहि सखी सोले न गन 3.4 टच कलन 2 ने 4

1 कलभ 2 कलभ नहिदेकर 3 चरबहुन गति 4 लख

कृष्ण अधनपर लागल भागीक नन हैन लखी (1) एहि लखमे
के नहि बाट छाह चलैत अछि के नहि बाट छाह कलदेक दस
(कामवासना बाल) अछि 2) तैयो कल कलहु आन ककर कडिनी
मयवाह। मुनैत छैक हमरे 3) लखस किणक जाले नहि के
कुनकुली चुगिलाहि की कहां बनेत हमरा पर टाच लखैत अछि

कल राधाक धैर सन सन केच आ पुष्ट दूज स्तन आ कल हमरा
तहक लखीर (दूजमे कोलो समबन्ध नहि छैक राधा कटाह झाडमे पैसे
फूल लंदनक गए ओ नकोला की जवाब गेलि जे एहिसे कलक जोदल
जागत हम त गोभारक चेत थिकहु पशु समक बीच गए धरबैत रहलहु
कखनहु लखी समस हम छेम नहि कएलहु हम ननर किणक देवैक (ज
कलक लखैत अछि से लखैत रहओ)

की मिले कामकला मोय पाहि की अहे न बुझा समधिपाहि 1
की पर वचन कलने पद कल की दिछे कर मोर समय दिछान 2
ममर हन' किण कल मल्लस कल वसत न रह दुन दस 3
कटहु ममर रता नहि सार थिक पकल पुनि मधु न गद 4
की धनु धन मदन नहि सार की केषा नहि विरहि समन 5

1 ला छर 2 ने 3 वधान 4 वधान 5 लख विदेस 6 लख
विदेस

राधा भमर हन' लख पलवैत होय (1) हे भमर ली कलन के
कलवह) की हमर वन 1 वम किणु लख नहि अछि 3.4 लख रीति
नहि पुनैत मरि 2) लख जो 3 लख लख लख 4) लख लख
देनोले अछि विदेस हमर हन' लख लख लख लख 5) हे लख
हमर किणु समन ली कलन के कलहु गए हे लख लखमे दू दूमे
नलि लख (4) की लख भमर गुनगत नहि छै अछि की लख
कोकोन पलवस लख लख मधु धन नहि कोन लख (5) की लख
कलदेक कल वन नहि वनवैत छै की लख धन विरहि मल्लस विदे
नहि वनैत अछि

[illegible][illegible]

दमन कि नदि भा अग्नि अहि सिधिसा नैव अनुग्राह
मते धर्म दाहना गेलाई अति घोर ज्ञानि य
सा जने कि कष्ट आहे मरि अथवा वहाई न जाण
चो गे हाई घोर घातक सिधिसा नैव
अथवा मरि अथवा वहाई न जाण
अथवा मरि अथवा वहाई न जाण

$\frac{1}{2} \times 10^3 = 500$

राधा मधन राधना सखीके सुन्दरतन (उडि) दृश्यलाभक गायक
 किशोरीक आरि पर (वेडपर) हीरण मन्त्र भा गेल दम देख गेलहु न
 मानन जेता ओ दह के मोहि दुखलाक गल गल गलन हो। २ के मखी
 जो कर्कशहु, सो मझन दृश्य कहन नहि जाय। ३ कि मन्त्रे दश
 देखल एकटा खोब खलक नदरपर लहि धनर सो एक सोडा घेल प्रकटि
 लेलक युक्तता पर कहा जे ई न हमर छिक। ४ सखी उतर दैन

छथिन ह भयो तो अपन झरनाक फेरी पढाते छह स्थल में मां ने
हरिण छन तो यों ओ छल कान्ह भा तें छलह वनवना भयौ
(बेलक गच्छ) नौझमादवीक भण राजा बुझारगण छवर रतन छथे

पण आमु पाछु गेलि तज पण चवले विसावहुं अमन ॥
जमुन तीर सगी समटल कल कसल का की वृक्षन नल ॥
ए सावि आय वेलव की जाले कपटिहि निकल तुल मवद आले
निज पित्र देम देम सम हरि अहिंसांत नमन दज्जा कल गरी ॥१॥
पलटि जाइते एव बड मन हीन अवे सगी किछु भल गेर मरीन ॥
विशपति मन सुन वल्लभ पीजो वल्लभ पोरन गरी ॥

1 दीर्घ। 2 सकृत्। 3 ज्ञान। 4 वृद्धल समाने 5 नमो 6
आशुविमर्श कांक्षिते हृत् 7 उत्पन्न

[illegible]

१. अत्र रसतन्त्रेण सः प्रसारः पत्रात् सः सः प्रसारः
 अत्र च तत्र देवदत्तः तत्र तत्र प्रसारः तत्र प्रसारः
 राज्ञि तत्र तत्र सः प्रसारः तत्र प्रसारः
 तत्र तत्र सः प्रसारः तत्र प्रसारः
 तत्र तत्र सः प्रसारः तत्र प्रसारः
 तत्र तत्र सः प्रसारः तत्र प्रसारः

1. में अति लघुतर लक्ष्य 2. भरी 3. जड़भरी सोलह सदस्य; 4. प्रचार
बहुत हैं।

राधाके सखी कपड़ा टूट चुकी 1 तो राधा की लजगी थिक्क
भी रसमही दलाल पंमक दीवान पसम 2 अ योवनरूपी लगर हो
रूप बरहा कपड़ा 3 कपड़ा 22 तो संतरे मोलाइ मरिदह नतव चित
हं 4 सखी कलह नतव राधाही वणिक् थिक्क राधा श्रीकृष्ण मं
गमय नहि जहिह 5 लजगी अधिक मान नहि 6 देसह भी
कलह सोलह 7 नार गोपिक स्वामी सांड 8 अधिक मान फलह नें ती
हिहि देवह 9 लजगी लजगी दीव भण्डि मल्लह 10 हि रहतु नें अंतव
11 12 लजगी दीव सांड 13 14 हि के दीव 15 16 17

1. संस्कृत में संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 2. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 3. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 4. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 5. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 6. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 7. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 8. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 9. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।
 10. संज्ञा का अर्थ है वस्तु का नाम ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

दिए गए संक्षेप में नीचे दी गई अभिप्राय में उक्त 41 में
 भाषिक कानन धीरे धीरे मानू चन्द्रमा मुख के धर कमुद भवि
 राखल हो। (5) मानू कमल आ चन्द्र दल। कठाम भवि गेज। मानू
 यमुनाक जलमे विपरीत तरङ्ग उठल। धात्री तं धीन श्याम किन्तु एता
 धते धत भवि। (6) राधा लोहर पीतक उल्लेखक भा रत्नमे कतक
 कह सहेत शम्भु नदी धर कए आइले विवाधने कहै छथि
 लक्ष्मिमादलीक धरि शिवसिंह अभिप्राय कृष्ण धिक्कह

पहिले वक्रक तरङ्ग उठल कानन के 1 नदी भेल
 राधा पल्लव कुरंग वधपल लोहर धिस भवि गेल
 सवि है दुजल दुजल पाल
 मूर नदी मूरन शरी भवगत भवगत गेल नुब
 कुलक धमक पालनोह भवगत नदी टर गेल
 मी जलमे नदी गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 लोहर नदी गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 लोहर नदी गेल नदी टर गेल नदी टर गेल

1. शिवसिंह काव्य

राधा लोहर आनन गेल नदी टर गेल 1. जलनदी तरङ्ग नदी
 गेल कोनो नदी कारण नदी भवगत 2. नदी टर गेल
 राधा आनन गेल आनन भवगत लोहर नदी टर गेल 2. नदी
 है सखी दुजलक दुजल पालनोह नदी टर गेल नदी टर गेल
 असगदहिमे मूरन गेल 3. कुल भवगत नदी टर गेल नदी टर गेल
 कए देल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल

धर चाहत जइत छी तं लगीत भवि जेना भागि घरसि रहल हो
 दिवादिने कहैत छथि धीन धर रसक लोमे श्री शिवसिंह अपनहि
 असंगद

47

काँटे जाए चलि काँटेक पाले काम रहल वाञ्छल तिर जति
 भइसलई सुख छि करह नदी रंस पुरसक की दिअ एतएहि रंस 2
 दह दिअ भमर करनी मधुपल धिअ भव चाहत नदी गेजल
 जयकि केकधे माननि मय रमनी भा धिअ करह विह 4
 मधु नदी के धु मधुपल गेल नदी टर गेल नदी टर गेल 5
 धर भवगत नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल 6
 भवगत नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल 7

1. काँटेक पाले काँटे जा नदी 2. काम रहल गेल नदी लोहर 3
 नदी

सखी लोहर नदी के धुपल छथि 1. वाञ्छल गति काँटे
 भवगत नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल
 नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल नदी टर गेल

यमा नमन कुरत अमरम पुलक मुकुलं पून कचकुम्भी
नीले निचंड संसर ते वीरि सगुन सुचि हनु लङ्कामे लोचने
चल वच सुन्दरि ने का वंजत मदन मर्यादये कदाचि नञ
चिन्मय न कर अकुलति हि भस्मिन् इति का रूप अकम्पित पर ६
नहि नरुणिक कथात सरुण अकरी मदन मर्यादये सवग ६
विद्यापति कावे ऊहए विनयि पुनमन्त पाश गुनमन्ति तारी ६

दूरी राधाके अमिसर लेन प्रेरित करीन छथि है सखी
लंका वामा भाँडि पडकैत छहु सखीमे रोझण होइत छहु (२) चौक
कसती नेना सखि नख छहु जेना है लोभू सगुन सुचि का रहन सोछे
जे साहस काले मनोरथ सिद्ध होएव करहु ३ है सखी धार दा
नल कोनो नाथ तहि फरह अइ मरत मर्याद (सगुनक मर्याद)
एएवह (४) चिन्मय नहि ऊह हैअव भा नहि भस्मिन् लेन
आकम्पित मिलन कदाचि न करीन छहु ५ भाँडि सुनी के जेन
द्विचि नकरा भग राता कइएव राखन ६ विद्यापति इति राधा
विद्यापि के जेन छथि गुणवती नहु नरोजने मुकुल पुलक भस्मिन्
मडत छथि

पुनरि लव दूषित लीन विनय राखन है
कइएव नीलम देल नहि यलन भस्मिन् इति मर्याद २
भाँडे पावनी भोले हगए सब का राखन कचकुम्भी ३
धनु सान्ना गायन जथे भाँडे कचकुम्भी भाँडे हनु ४
सामु मर्याद कुलन वर नरुणिक मर्याद हनु ५
मर्याद विद्यापति राख मर्याद नरुणिक मर्याद ६
र न सपताजेन नन मर्याद विद्यापति इति मर्याद

१ इ दोसे हालत २ अइमन ३ मुकुल ४ गन्तव्य

नटिका दूरीके उपराग दैन अछि (१) भाँडे (नायक)
हमर दक्षिण देशक रेशमी चीर के अस्तव्यस्त का देखक दौराधार हीर
(गहना) एए टबक २ तो कहत चिन्मय पुरुष में हमर मिलान देनह
जे हाथ नमोदि के चूदि फोडि देखक (३) वर हमर खूब दुदेश भेल
कुलव प्रतिभा मर्याद मिलन ४) स्वामी वकुल भाँडसिरी) कुलक भाँड
आपता साथे गथि हमरा पहिराते रहथि (से दूदि गेल) (५) सामु जे
कस वलिह देन इति मे फूजे गेल नटदि ने हार गथि के देन छति से
दूदि गेल (६) विद्यापति विद्यापति मर्याद अतिथि काअदेवक प्रभाव
गथि छथि (७) राधा

न दइए नस लवि वरु उरिहस नहि मर्यादजन मर्याद विनय
सब नस नहि गले चरन लगे सगुन कचकुम्भी पाश हो थरि २
मर्याद नहि मर्याद मर्याद नस मर्याद जेव हगए मर्याद ३
मर्याद दूरीके नरुणिक मर्याद लोचन मर्याद कचकुम्भी ४
मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद ५
मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद ६
मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद ७
मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद ८

१ नहि २ नञ

सखी कृष्ण के धूलवैन छति १ नखन हमर सखी जे रस
पुनरि अछि जे न पछिस (मर्याद) ले मर्याद जलन अछि जे
भस्म तो मर्याद मर्याद सभ प्रभाव रस (सगुन मुख) पाव कच
मर्याद इति मे नहि मर्याद के पाव मर्याद कच कच मर्याद २ है
मर्याद हमर सखी खन मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद
भाँडे मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद मर्याद ४

विद्यापति भक्त न कर विराम नवतर जनि गुन गुन कन ६।

रूपनराज वृद्ध रसमन्त राग विरहिह लोचन भेदि कन ७।

१ असमय पोरिआ नवी पार २ कथिअ कहू न। ३ नाच गहि

यौवन बिलनपर कृष्णक उपकृत बंधन लयिक मधुन कहन छथि (१) आ वसन्त काल यौवन रहैत भडि नाचनहि कांकेन (नायक) असमय रसमे साने मधुर बोल बोलैत अछि। (२) अही कांकेनक पालू पोसू, सो असमय बाधि चेमी चंओ (कणकदु) धरि करत जे कणकदु नहि सोहोतीक (यौवन बिलनपर ऐली कहने कटुवचन बोलैत रहैत अछि)।

३ हे सखी भय तो हमरा कतेक अधामन टगर की हमरासँ विरक भेल कान्ह के। हमरा लग आयीन। (४) सुपुखक बोल सुनेह वदेनहसँ अधिक भारी अहता होइत अछि हमरा कुल मयादा छि यथे दूर गेल

५) दुःखीयवश छीते सेले दूरे गेल भय भागन जन्ममे वृद्धव ने छीते करवाक दुःख सि होइत अछि ई जन्ममे न लखन लीर लई भेल। ६) विद्यापति कहै। छापी छीनक अछि नहि करत भन्तर न लखन लीर भेल। ७) पूरि नहु सखीयायन

१४

११ विरहि १११ बाबा क मर वनम १-१११ १

जसल लोचन २ जो गन कलान गीनन ३-१११

सदधि समय बाधि चेमी रुप लल ३-१११ ४

दण्डिल पवन वर बलक हृदयक हय भुवदयक मय ३-१११ ५

विद्यापति कह माछी गुनने भन भन वर वर ३-१११ ६

रूपनराज साने विरहिह लखिम भन रसने ३-१११ ७

सङ्का २ हय विद्यापति १ राग विरहिह ४ ट

कवि लयिकक विरहदशक वर्णन करैत छथि ६ तरुणी

काअद्वैत शब्द प्रहार कतेक लहल २ अछि मे निरन्तर लीर रहैत छैक नल वामा राधक तरुणी पा रखने रहैत अछि ३ ऐसी जे अवधि (समय सीमा टा गेलथिन तक) लख करैत करैत शरीर क्षीण होइत गनैक आव रूप भावनि मात्र रहि गनैक अछि ४ वर (दासदास), दण्डेण पवन बहैत अछि ५ पीछे माघ जीवैत अछि ६ तरुणीके अपन हृदयक दारदुसे माघक शङ्का होइत छैक। ७) विद्यापति विरहिणीक व्यथाक वर्णन करैत छथि ८ युवा आन वंशधी सथे असाह ९) विरहिआ देखि नहि रूपनरायण

सपने देखल हरि गेलहुँ बुचकेँ गुने जगल कुलुसक मगसल १

रहि अगस्य गहि लेहल भाग विरहि गनैह मयित लेख वसल २

जे साधि नोचल मूर्खने जे सीलह मयहि सख ३-१११ ३

१

सख २-१११ ४

अनोर कल ३-१११ ५

सख २-१११ ६

वृद्ध नख ३-१११ ७

१४

अनर विद्यापति १-१११ ८

२-१११ ९

सख २-१११ १०

३-१११ ११

४-१११ १२

५-१११ १३

तो कोन एहन वस्तु पभोत्वह जे सुनतिके जगह टोलह सपनहुजे जे लह
 भए रहल छल तकरहु भग कए टोलह १ ग्यामसुन्दर कान्ह हमर
 किडिकणी मन्स (चीरके घुघरु बाबा हौरी) खोलैत ओर पकडि लेनक
 तखन ने रसक उदैक भेल स घेसी की कइह के कहैत भञ्जित कान्ह
 गोप थिक ४ तखन कृष्ण सेज पर अगि हमर रोक धर लेनक
 मुखसं मुख मिलल मान् भजर कृष्ण) तं कमल राधा) मिलल लभीए
 गुरल अलायास निशि नग आलल एहन निशि तहर दोखे देव जीने
 लेनक ५ विद्यापति कहैत जाये हे सुन्दरी पूरक ऐसक अनुसरण करैत
 रहह ६ लखिमा

कविनि कहल शोकन अनु कविह कहैत सौम ५ हौरी
 धावक ओरि मन्सहरस लालस भञ्जित हौ जायत गऊ
 सुन्दरी दुरत धलाये लखिमा
 अवाहे उठार लोसे लोम १ नय लोम उठार उठल चमरे १
 मधुर दान अरुम नीने चलाए सचमे जेन भोज
 रसमत उठार लोम ओरि मन्सहर लालस मन्स मन्स
 चर रसमन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स
 रस मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स

चदल मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स

कृष्णमन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स मन्स १
 नी मुह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 भञ्जित गुम लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 गपनेर नीने मुहके लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 अञ्जित करह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 कामदेवक पन्ना टोकात रसमे लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह

धोखहुसे मधुर लोम लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 गुम अञ्जित लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह
 लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह लोहे इराह से कान्ह

हरिने हरामनि केसरी धरि
 धर धरधर धर धरधर धर धरधर धर धरधर
 धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर
 धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर
 धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर धरधर

1 धावक

कवि धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर

धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर
 धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर धरधरधर

हरे रिपु तनुज रास गण रीतल दहण शरीर हल्लन
 खटपट बन्धु बन्धु मुअ अरि धनि शरार मुअ क धल्ल
 हांखे हे हरि न दूकन्या कोडे
 पायक रीख पदमकर साहुट हरे से गरजल फेडे
 दिमगिरी मुअ मुअ दाहत भोजन भोजन सनु सुने रे
 ल पिय वाक आ रिपु अलिखल हरि लिखि रजति हने रे

भनुज 2 कोगल दह 1 धरा 4 घर 5 ग

हरि कथा तनिक रिपु कम तनिक कल्या देखी रानेक वस
 मथु तनका जग कृष्ण रिझा गलाह अ रता हसर देह जोर रहने
 अछि धरपद भसर तकर बन्धु मुअ तनिक सोदर कृष्ण तनिक पुत्र
 कामदेव प्रयुम्न से हारा धावन कए रहल आडे सखी कथा के
 बुझा सोनिहार वसो तदि अछि पायक भजि तकर शेष मकर काखिहार
 जल ताहिमे उल्लिख कललक देखि काम होयल भा जाहुन अछि (1)
 हिमगिरी हिमालय पदेत तकर वरी धावन लोचन पुत्र काकोरु तनिक
 बहल मगुर तकर भोजन 2-3-4 साग नकर भोजन मु तनिक वर
 हनुमान तनिक प्रिय राम द तनिक गनक कुल 3-4-5 साग नकर
 तनिक मित्र बन्धु (गु)

दि हे गीत विहाली दिह 3-4-5 मरि नकर पयस
 काल किन्तु पूर्ण साफल तदि भेलाह

60

उवल मुभा जति अरि जे रसान हने न मु नकरिजे न व
 तनु तनका मुअ भन शरतिन दस न व देस दधि का रान
 न रति भन शरतिन दस न व देस दधि का रान
 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

61

रिपु सखिनि चलि सजल करण धुनि अलल वभा निहिरागे
 सखिनि सखिनि विपति भाइने सह सजल गेल परधारी 1
 हेम सलल गेल दिन गरवस भेल दिभा सअ न सजल लहे पास
 पदुमन अरि हरि न मुअ मने धरि भवे हने करव गणस 4
 दि विहाली थिक अछि नगर कठिल

62

पायक सिख लोच न धावा केच न न जनधारा
 नत से पा अरस करण जाकर जे वधवार
 मथुय मथुय भोजी गेरे
 निज मने गोट भगु न गुजरी गेरे वधवार भेरे
 कल रासर पायि आगे वारी न होइ रति
 धर टोस दह निरख कर कल दस जगत
 ओ लहे नगरि निरख नगरि मुअ भवधि गेल
 अह रिपु नरुन शरक उपसल नर भेरे 4

1 वहुने 1 दिध 2 ल

सखी भन भेलापर राधाके जहि देवक भनुय कृष्णस करेन छीथि
 1 सखिनि पधरा लोच दिम नहे साह 3-4-5 न नरि 1-2-3
 नर नहुन लोच तकर ने वहुन छीथि शिखर से 3-4-5 कये
 वचन 2 हे मथुय सोर भोजी साहुन दह नरु सजलसे सलोप
 लोहे रहु 1 अलल सजल हे लोच सखि जे सखा की परिणाम होत न
 हसर धावा करण दधि नाल (3) कलकरी दह केर केर अ गीत
 कलकरी केर केर होत न नगर करेतन रहवत नरु हल पुख
 देखल आडे ने दधि सलका दुखीक नगरा मथुय साधक दुखीक कल
 (उति वही 1) दधि कृष्ण अरि रति नर नाल भाव समझ भवधि
 दीने गेल सखिगत भनद पर विपुल लो कृष्ण दहल लो भेलाह

63

दिलमें नहि फुलाइछ कैंतकी कैंतहीं भरल भलि न सन्नहमें एहन
भान कोलों फूल नहि देखैत छी ते भ्रमर के अतुलित कण मकर ॥ १ ॥
भ्रमर सहजहि सभ गुणमें अग्रगण्य भलि ते नोहू भोकर भाग्य विकर
औ भाग्यवान ते नोरा पओनक ओ नोरा भएल भएल करण ते परमपिय
छहु आ नोहू भोकर प्रेमपूरेक अनुगत गऐत छह

दरसन संगिभूषि मधु सस टण्डि देखते हरण गेहने
कर धरि कैसपरा पियङ्गु भधर रस कटा मज्जिजिजन भनिः

सुन्दरि

लोके बोलनो पुनु जगत करह ननु मजे न अप्य ननु पसे

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

न हवन दण्डित नन न भइ असत नन न रसो नननन ननन

मन सज्जनन दीप नननन के धर्य नननन ननन

पओर कपल न पु नन नननन नननन ननन ननन

नननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

१ पाठ दिगदुल सखे पसर देखेके जो कुन भये चैतन देल

नारीयका अघन रंगभर सखीस सुखे ननन ॥ १ ॥
चल सल भुह देखि नहि हमार जग हलत भ ननन ननन ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
भए जाइत अछि ॥ २ ॥ ननन केर ननन ननन ननन ननन
नहि केवह हम भोकरा लग नहि जावह ॥ ३ ॥
देन्य देया केक नन दण्डिय शिपन न ननन ननन ननन
मन देखि नहि चनपुवक रमण ननन ननन ननन ननन
अछि दीप सही मन्द ननन ननन ननन ननन ननन
पोका परग जका घुटकेन छी ननन ननन ननन ननन

सखीयक करैत भलि नखलक दरा हार की कहिअहु पाप धाँचि गेल
भोभायय ते ननि कोनहुन जेति नन

नननन नननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

नननन नननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

१ ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

१ दहदाह कर २ गोशिन ३ केन ४ निवरा

नननन नननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
भमन नहि नननन नननन ननन ननन ननन ननन
देह झुकावा ननन ननन ॥ १ ॥ ननन काभदेव देहना न ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन
ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन ननन

गुणों, 2) तब 3) बरि सम हृदय हमारे देस कर गलस लगे
4 किछु दोष लहिक हमारे हृदयहु गड़ड़ विचारि

कृष्ण रसनि गंधके धौनेत छथि है लुटरी लारा मुझमें व
भमृत भरल छहु लखन ली विष सन वीर किन्क बनेत छहु 2) लखन
वरखा भए रहल अछि हमरा हृदय में आ साधव जे लोहर चने सन
मुह) गलल जड़ल छहु 3) ई दारुण मान छहु अछर अंधु पीछा देह
14 रोसत लोहर मुखछवि परम मतिन उहु लखन अछि गल छि सन
चात हो 5) लखन कमल के विकसित होय छथि लोहर लोहर
सुललित हास फता गति गलहु 6) जे लखन भूँ दोष सन सुनह ल
कनेक सीधे विचारि करि करह हमर न कोनो दोष लोह अछि। ली
भलमे विचार करह

आनन लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
सुनिनि गतिनि लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
सुनिनि गतिनि लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
सुनिनि गतिनि लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
सुनिनि गतिनि लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
सुनिनि गतिनि लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि

1 भाव 2 गति 3 गति 5 गति 6 गति

नायक लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि
हमरा लखल देस कमल हो कि चने लखि धरि आनन लखि धरि
कमल। 2) किन्क लखल रसनि अछि आ लखल रसनि लखल
दिनामे ई मुह लखल रसनि लखल रसनि लखल रसनि लखल
अछि लखल रसनि लखल रसनि लखल रसनि लखल रसनि लखल
3) विधाना ई अनुपम आकांक्षे रसनि लखल रसनि लखल रसनि लखल

चरन् छल स समता लखि गेल में जालि अ भन्धकारके वहीर लखि धरि
कोन सिनल

ए वेगच्छक लखल में भन्धकार दरम दल्य मानल गेल
अछि गतिन लखि धरि आनन लखि धरि आनन लखि धरि

पहिले लखि लोभहु अवे वीरधामे विधयचने कोहहु 1
कइसने मोने लख गेली आनन मधुर उरनामक नीत 2
के लोके लोभ सजली कण लखल आनन लखि धरि 3
निधुन लखल नहे वेम लुपध परिभयन चने 4
लखि लखल लखल आनन लखल लखल लखल लखल लखल
विधाना कह लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल

विधाना 2 धरि

सखी लखली लखल लखली लखली लखली लखली लखली लखली
अनन लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल 12) केहु लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल

लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल
लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल लखल

१. धूम्रान् २. सगन्धः ३. रसः

[illegible]

कवि मिलेनामं विधायन पण्डि दुखी रथासं कदैह छाये १) दूत
मिलन चाहैत उल्लसु। दूतमें अनेकहु मिलन नदि मेल एतैं विपत्तनमें
अपराध उल्लेख दूतीक १२) दूती कालक अल कालक सवेत देलक आ
राधाक अल कालक लीहैसं दूत भौति अगल दूतक मतौरथ अग भनैक
है तरुणी राधा राग की शिंहेभहु आभेसर सफल नदि मेल ३
रथाय अछि मध नकां झररा लजल आ अलन भूडी गोलन रहलाह
दूती अकल कनुरपन बलु होयक जनिहा) नमोलक ई बल चारैसर
कोला रुतल नाह ई न गम प्रेयस आधार उल ४ दूतक मत पाम
आकुल भण्डे भवत राधाक मत नेहने कृष्णक पीर दुनिहार गक
कभेटा दूतक उपर तीर चलोन छाये ५ होयनि कदैह छाये राधा
सबहुक बीर समन आशिक रक्षिक लखिमादेवीक जीव राजा शिवासेह है
रत जनिन लखि

1. संस्कृत 2. हिन्दी 3. उर्दू 4. अंग्रेजी 5. बंगाली 6. मराठी 7. गुजराती 8. तमिल 9. तेलुगु 10. कन्नड़ 11. मलयालम 12. सिंधी 13. पंजाबी 14. संथाली 15. कोङ्कणी 16. ओड़िया 17. नेपाली 18. भोजपुरी 19. मैथिली 20. संस्कृत

1. चीत 2. मिथिला 3. लखनऊ 4. झांझार 5. ग. उ. सदादि मोहन
होन

सखी राधाके अभिमान हेतु पोरैत करैत छथि १ हे सखी नरु
आ सखी कमरकस, छडि देह ओकर भगत गुननाक भग का देतहु
कादी रगत वस पहिरि लेह २) दिल्ख करवह नै चाल रति सख
लोक देखि जणतहु लोकमध्य) सखस होएतहु जलक लग भाए जेहे
सकवह ३ हे सखी प्रियतमक अंतर चलह तोहर मनोरथ पूरतहु
भा प्रेम सफल होएतहु ४ तो देखक प्रसाधन कुकुमसँ जेहे करह) दूरी
अखिमे कातरक रेखा काए लेह ५ हे सखी प्रियतमक अंतर चलह
तोहर मनोरथ पूरतहु आ प्रेम सफल होएतहु ६ एखसँ भन्धकारक
विधि चाल उगत न दुखैत गुम अभिमान देखि जणत भा निलट करए
लगतहु ७) विद्यापति कहैत छथि हे सुन्दरी दुनइ, काम अभिलष
नागर गहिक, थिकाह ८) नाथिमा

वसिष्ठ सखत धन देओ पुन भन विना गतेस हसत
प्रेमनि गदस गते पुरुष उगत जति धा, जेहे ९ सखी
सखी दूर कर दूरजल लगै
नोहरि सखी धरै भयन वरा गते ३ जेहे १० विना प्रेम
कमल हल वि ११ हे सखी जेहे १२ सखी अजो विना
महल कमलानु मे जेहे १३ सखी जेहे १४ सखी
विना प्रेम धन वल विना प्रेम धन वल
कदम जेहे १५ से जेहे १६ सखी जेहे १७ सखी

गुह २ मदल ३ विना प्रेम विना

राधा नखकलीन विह सखी सखी ३३ १ हे सखी मेध
जोरसँ धरि रहल अछि हमर मन प्रेमसँ भगत प्रेमनु सखि मदल
सजयमे हमर विना पाटेस अणरतो भो २ हे सखी माहे दुनैतक
(निषा पुरुष कणक लग जेहे लेह ना बुझैत ३) हमर सखत जेहे

मन प्रिय छह ते तोरहि य चित विश्राम करैत छी तोरहि अपन वैदल
कहि मतमे सन्तोष करैत छी ३ कमल फलगत केओ कहैत अछि
कामदेव हैमनाह लेह वत पर भमरा भमरासे विषाद बजरि गेल भमर
कहैत अछि कामदेव ते शोक काजिमे जति गेलाह ओ कैर जौवि
कोल सकैत छथि भमरी कहैत अछि की ई नहि कह सकैत छी जे
महादेव प्रसाद चूक कएलनि (कामदेव के लाग जेहे सकलाह, ४
भेद्यमे विनली चमकैत अछि विषधर सभ धूमैत अछि मधुर मुह उपर
का नचैत अछि जटायु धरत वहैत अछि स विविध युवतीके कोल
सह हारतक ओकर हृदय न बहुत दूरमे परदेसमे जेए पिआ गेल
छथैत नतए बीभटत अछि

मेरु रहैत न गह निहारक सोह कलकी गह निकलतक १
ममे जेहे २ भुवने गत भावे सखाक नख कल के पाह ३
४ सखि विना मेरु जेहे भगत जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
५ हे सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
६ सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
७ सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
८ सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
९ सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे
१० सखी मेरु जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे जेहे

१ सखी २ सखी ३ सखी ४ सखी ५ सखी ६ सखी ७ सखी ८ सखी ९ सखी १० सखी

रूपगोपनी अखिमे अपन मन्दरीक एगस लखीर कोत छथि
११) गहक राहुन रका भैरव छैक विना हमर मुह निराल अछि
गहमे कलक विनी दार लेह हमर मुह निराल चणक अछि १२
ने कभे हमर मुहके चाल गत कहैत अछि न से हमर सन्तुष्ट लगैत
अछि सखक परतर कलक काह पछा १ हे सखी हमर पद छह
अखली अछि कहैत अछि न हमर मुह गल मन भोछे १४) हमर कटाक्ष

1. जेहि क्षाप 2. मेल 3. दोलनिए

राति कृष्णक मर धिमा राधा औरसं तुनी मरेन इति ।
राति वीति मेल चान इयल निदि मगल मुखक एवे भेनक वर
झुझर तहि करह (2) मुरगक धरमं मुनेक हसर करेन कटन भोले
अव हम यगुल म्तात भव नरु 1. हे माधव हठ उदर मर
हमरा नाव देह गुम प्रेम छिग बाक नही (4) हमर हामधरक लोक
अगि जात नोर न चनाक हो नखनहि गरि फरित भोले 1.5 हम
एखल धी इयल दुडीन रहलहु जे हमर धिमाक हठय मेलन सन भोले
हम 1. दलुक बहाभोल धरमक हठ का उरठ मारन तहि वलवद 1.6
एहि तरहे राधा 1.8 राधि मद्रमपुके मद्रमपुके वलवमून वलव वलव
कृष्णके मद्रमपुके 1.9 राधा

मु 1.1. न वीट अति भेन मद्रमपुके 1.2 मद्रमपुके
क मद्रमपुके 1.3 मद्रमपुके 1.4 मद्रमपुके 1.5 मद्रमपुके
मद्रमपुके 1.6 मद्रमपुके 1.7 मद्रमपुके 1.8 मद्रमपुके
मद्रमपुके 1.9 मद्रमपुके 2.0 मद्रमपुके 2.1 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.2 मद्रमपुके 2.3 मद्रमपुके 2.4 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.5 मद्रमपुके 2.6 मद्रमपुके 2.7 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.8 मद्रमपुके 2.9 मद्रमपुके 3.0 मद्रमपुके

1. मेल 2. मेल

कवि राधाके मद्रमपुके का राधा मद्रमपुके मद्रमपुके 1.1 मद्रमपुके
मद्रमपुके 1.2 मद्रमपुके 1.3 मद्रमपुके 1.4 मद्रमपुके 1.5 मद्रमपुके
मद्रमपुके 1.6 मद्रमपुके 1.7 मद्रमपुके 1.8 मद्रमपुके 1.9 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.0 मद्रमपुके 2.1 मद्रमपुके 2.2 मद्रमपुके 2.3 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.4 मद्रमपुके 2.5 मद्रमपुके 2.6 मद्रमपुके 2.7 मद्रमपुके
मद्रमपुके 2.8 मद्रमपुके 2.9 मद्रमपुके 3.0 मद्रमपुके

पुनर मद्रमपुके मद्रमपुके 1.1 मद्रमपुके 1.2 मद्रमपुके 1.3 मद्रमपुके 1.4 मद्रमपुके 1.5 मद्रमपुके 1.6 मद्रमपुके 1.7 मद्रमपुके 1.8 मद्रमपुके 1.9 मद्रमपुके 2.0 मद्रमपुके 2.1 मद्रमपुके 2.2 मद्रमपुके 2.3 मद्रमपुके 2.4 मद्रमपुके 2.5 मद्रमपुके 2.6 मद्रमपुके 2.7 मद्रमपुके 2.8 मद्रमपुके 2.9 मद्रमपुके 3.0 मद्रमपुके

मद्रमपुके 1.1 मद्रमपुके 1.2 मद्रमपुके 1.3 मद्रमपुके 1.4 मद्रमपुके 1.5 मद्रमपुके 1.6 मद्रमपुके 1.7 मद्रमपुके 1.8 मद्रमपुके 1.9 मद्रमपुके 2.0 मद्रमपुके 2.1 मद्रमपुके 2.2 मद्रमपुके 2.3 मद्रमपुके 2.4 मद्रमपुके 2.5 मद्रमपुके 2.6 मद्रमपुके 2.7 मद्रमपुके 2.8 मद्रमपुके 2.9 मद्रमपुके 3.0 मद्रमपुके

1. मद्रमपुके 2. मद्रमपुके 3. मद्रमपुके 4. मद्रमपुके 5. मद्रमपुके 6. मद्रमपुके 7. मद्रमपुके 8. मद्रमपुके 9. मद्रमपुके 10. मद्रमपुके 11. मद्रमपुके 12. मद्रमपुके 13. मद्रमपुके 14. मद्रमपुके 15. मद्रमपुके 16. मद्रमपुके 17. मद्रमपुके 18. मद्रमपुके 19. मद्रमपुके 20. मद्रमपुके 21. मद्रमपुके 22. मद्रमपुके 23. मद्रमपुके 24. मद्रमपुके 25. मद्रमपुके 26. मद्रमपुके 27. मद्रमपुके 28. मद्रमपुके 29. मद्रमपुके 30. मद्रमपुके

मद्रमपुके 1.1 मद्रमपुके 1.2 मद्रमपुके 1.3 मद्रमपुके 1.4 मद्रमपुके 1.5 मद्रमपुके 1.6 मद्रमपुके 1.7 मद्रमपुके 1.8 मद्रमपुके 1.9 मद्रमपुके 2.0 मद्रमपुके 2.1 मद्रमपुके 2.2 मद्रमपुके 2.3 मद्रमपुके 2.4 मद्रमपुके 2.5 मद्रमपुके 2.6 मद्रमपुके 2.7 मद्रमपुके 2.8 मद्रमपुके 2.9 मद्रमपुके 3.0 मद्रमपुके

१. रूपा २. मा. नि. धर्म दूर भोजन नही पार ।

[illegible]

1. नैना 2. मधुसूत पात्र 3. लहि 4. हंगल चानर 5. तैरान।

[illegible]

जयते सकल धनविहं सखि लखन छन अन्धार
 भान्तर पान्तर बाट इति गत वन्द्य करम कदर १
 परम पैस परभव पओल दुखे गमनेरे वध
 रनिम धनल नहि विहुवर आनोशके अपराध २
 मानलि माहेंदर भेल कदार
 अपनि अपनि अशु न गुनहि भांगे गेल भोभनार ३
 सुखम हेतु कओले विचारम सबहु शिन्धु वीर
 भान दइए सुपुष वरुन दुखन लगन मार ४
 न पर पओलहु न पर मरिहें नु पूल भोव सार
 दिहि निवृत्तन दार टारन सब क करम नार ५

१ अनु भविष्यति २ इल ३ के

राधा अपन अभिसारक चिकनका भोजीके सुनौन अथ
 साजी लखन हम धामा भोजन स्थल गलबहु नखन भयकार रह
 की गते धामा कओलापडाल धरत डोग गेल १० गमलनी कथा होय हम
 भारी छम पराधन सकल मे जोड गेलन जालन ११ गमलनी १२
 लखन १३ पेलम हाथी भन भानुन न भयल कालमे १४
 आराम की १५ है सखी भानुन जाला के गेल नो १६
 लगीत ओरि १७ अपन अनुनाउर साधन की हान से छिनु भोजन है
 अभिसारमे सोये कलहु १८ मूहम हेतु के विचारन हम वेओ वीर
 बुद्धि लेन आन द पर पुरुष काल के राधा टन वकर लोष हमारे
 लागल १९ ने बहार जा २० भोजन ने धरति रोह सजन २१ दुह पुनमे
 केलक लगन २२ पछन धरने दार २३ विवेक २४ भोजन २५
 सोये आब की होल २६ ने सनहरन जा सकल २७ ने धर दुवि
 सकल की क मदेय गुनो समक विकनी भ गेलन ककना की कहल

१७, विद्यापति कहैत छथि हे यदवी सुनह लखिमा देवीक रमण राजा
 शिवमिह रूपनवायण गुणके खजान अथि

५६

जब नन लड़े कहलह मोह मे मये भेल सखा
 मधुर लड़ने भाते भजे देखल सुनहि कालक भव १
 लखनहि सखा छिउ वभाकुल भन थिर लहि ओर
 भन कर इति हवि न भेल है वड लगन मार २
 साजने लड़े मलोय ओर
 भयल घेडन जणै निवेदन तेमन मोहनि गोर ३
 हम लव बहु मे गेलन पद गणन धार ४
 पुनक धरम लणन चरिभ भेल लणन सजा ५
 से मये कओले नोह नह सम्भन हैन मार भोजन
 की लख मोह कल मरयव की मार लह परान ६
 भन विद्यापति सुन लख सुनौने विद्या भन अनुमान
 राजा लड़े जने भोजन १४ भोजन भन ६

उरल सु १ उरल श्री २ उरल सखी भनसिता ४ हमहु लव
 हु ५ भोजन ६ लड़े ७ न नार

राधा कछन जेवम दरोल १ अनुभव लखीके सुनौन अथि २
 सुनहि नो लख ने हमार ३ पछन रूपन विद्या मे कहलह से भन ४
 राधा भेल अह हम मथुरा नादन भन पणन रूप देगन ५
 लखन मे देखल लखनहि से भन खाकुल भन भन थिर लहि होहुन
 लहि ६ लखन लखने रहन जे कछन भन रा देओ लहि सकलहु ७
 है सखी हमर गति ललसा क सन लड़े भा रहल ओर ८ भयल है
 न हरा जेवम कदम रहन लीक छली जे लख भन ९ हम लखन
 छि हमर भो भयल पति सचन लखन राधा रहन लखि कलहुन लख
 वर वर लखी १० पुन भोजनक रहन करक जोही भ भोजि भिनन

के थिक जकर उतेसमें तो अभिसार कालमें अछि । ११) अछि छात्र
यमुनी लदी पड़ैत अछि से काला पार संग्रह । लगीन भइत अछि तौ
आहिम कूदि पड़ैत तौरा सग कामदेव छथि तौ गोर डर लोह होइत
उह हमरा तौ छली धुकधुक करैत अछि । १२) विद्यापाने कहैत छथे हे
श्रेष्ठ युवती लोहर सहसक धरैत अछि हो । कामदेविक पति कहुनए ने
युवती समक मनमें दसैत छथि युवती लौकिक भवभ्रम दिव्य ।

पथजि हाथ पथधार लागू पतक जमैत मल्लिकार्जुन ।
लौकीकलोक नलाक भव चैन न छै । X . X .
कि लोचन कहुन मज कहल न जाइ होइत छै । होइत छै ।
धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल । X . X .
हउत न मानिय तौ न जाइ । तौ न जाइ ।
भक्तियोग कहैत न कहैत न जाइ । X .
मनहु विद्यापाने कहैत छथि ।

१) धर्म काल तेरा ही दीप जहल ।

लौकीकलोक नलाक भव चैन न छै ।
हउत न मानिय तौ न जाइ । तौ न जाइ ।
भक्तियोग कहैत न कहैत न जाइ ।
धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल ।
हउत न मानिय तौ न जाइ । तौ न जाइ ।
भक्तियोग कहैत न कहैत न जाइ ।
धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल धम्मिल्ल ।
हउत न मानिय तौ न जाइ । तौ न जाइ ।
भक्तियोग कहैत न कहैत न जाइ ।

विधि विधिचर । भव भोग मूलकाल कालधर वीरु ११) जोर
लगत विधिचर विधिचर । भव भोग मूलकाल कालधर वीरु ११) जोर
सुन्दरी
वचन पुनः धर जे दोर हल न मन जाइ । उदर अभिसार
भोग न होइत तौ से विस कायद तौ जगति देव । जगति
नर भउ जगति ने लोह लोह हर गोर हउत हउत काम
भक्त विद्यापाने कहैत छथि ।
आहुत नृपति कहैत छथि ।

लौकीकलोक नलाक भव चैन न छै ।

सखी राधाक सखीचर अभिसारक प्रसा कहैत छथि
रतुक रतुक विधिचर जेनु मज धुवैत भवभ्रम साप भोग विजली नम्रकैत
धोर भवभ्रम राते । लो न उलैत जा रहति छै । सखी न वद साहसी
उह । हे सुन्दरी । लोहर सहसक धरैत अछि हो । कामदेविक पति कहुनए ने
युवती समक मनमें दसैत छथि युवती लौकिक भवभ्रम दिव्य ।
धोर भवभ्रम राते । लो न उलैत जा रहति छै । सखी न वद साहसी
उह । हे सुन्दरी । लोहर सहसक धरैत अछि हो । कामदेविक पति कहुनए ने
युवती समक मनमें दसैत छथि युवती लौकिक भवभ्रम दिव्य ।

(2) नेपाल-तालपत्रक मील

वरिष्ठ जाजोंसे कानूनी काजिनि ठाकन भनि सन्धि
 पथ जिस्सावर सहते मज्जर धन एक नवधर
 आधव ध्यम नई से भीति
 गा भपनहि से अन्नोक्त कंठ नैसि नि २
 भनि भयजुनि अन्नर नैसि कइसे ननुनि पण
 सुनर रस सुनन कान्ति ग पण सब अस
 एत गुनि भाने विमहि सुननि नई नई नई नई
 कनए दण्डन भय अन्नरहि गा भयुद मगा ३

अन्धकार : कैसे काटें

[illegible]

क. १५ सार पसर मरिअ कल्लु लंछि मं. १
क. १५ कल्लिअ पसर मरिअ कल्लु लंछि मं. १

कतहु भना भाने गनि जग मध्य मकरन्द पान
कतहु भर मरसन जल्ले कुणित कुसुमवान २
सुन्दर तहि नतोरथ भार
भयन बदन काहे जिवेदयो लडसन भेरिनि जे ३
चिअ टल्लेन दठभ आदुर पर दुखे समार
काज विपरीन बुझए के पार अपद हो नगद ४
पथिक दए समन्दर चहिअ वटे घटे तहि पाब
खने दिसरिअ खने सुगरीअ चिर न शकए भाउ ५

१. कलह सुख २. गन्तरी ३. सायस वासर ४. गुह्य ५. सत्य ६. आव

गिरिधारी स.वी.के. अपने बेटा सुन्दर को 1. कनहु सहकार
अथवा सौरभ दम्पति रहने सक्ति कनहु नव भोजन आदि रहने सक्ति
कनहु समयक अनुसार आये 2. यदि कनिका पञ्चम स्वरमे गये 3.
कनहु अथवा पुनि पुनि मधुर पुष्परसक पाव करेन अदि 4. कनहु सुपान
कनहु देव धनुष पर गण रहते 5. 6. सुन्दरी अथवा मल्लिका सौर अदि
तमि रहने अदि 7. आनन बेटा अथवा सुन्दरी नवने लोच समारोह दुनेम
अदि 8. 9. प्रियतम दूर अथवा दुनेम रिता अदि 10. 11. अथवा
म 12. लोचक दूर अथवा लोचक अदि 13. 14. अथवा लोच
प्रियतम (15. 16. अथवा लोचक अदि 17. 18. अथवा लोचक अदि
अथवा लोचक अदि 19. 20. अथवा लोचक अदि 21. 22. अथवा लोचक अदि
अथवा लोचक अदि 23. 24. अथवा लोचक अदि 25. 26. अथवा लोचक अदि
अथवा लोचक अदि 27. 28. अथवा लोचक अदि 29. 30. अथवा लोचक अदि

१. अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए
 २. अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए

काल्हा मुनि सुतमि अण

रूप देखइते नयन भुलन मरुप तोरि दोहाय 2

सैमय चापुर् हारि केटागल जीवने रहल अस

सो विछु धोने बिरह बोलन सोओ सुधासम मम 3

गैबन सैमय छंदन लखल छाई देह मर दम

एन दिन रस लोहे बिभल आवहु नहि विराम 4

निचर 2 चिन्तिका ना 3 बापु वहीरि

सखी कृष्णके राधाक वय सोन्धक वणन सुनवैत छति । पूर
समयमे (रैशव कालमे) जाहि अणके ना राधा निदिकार घुमैत छिनि
छनि ताहि भणके जकर नकर देखिनिहो झाँवे तैत आछे आकर छनि
लखहर हाव आय आइ बटलि गेलैक आछे । ई काल्ह तो झर टप
भावह भ सुनइ ओकर वणन भाकर रूप देखिनिहो हमर अछि भौहैत
भग गेल । तोहर सबल सत्य कहैत निडरहु । देवदर रैशव हारैत
पवातल पवित्र ओकर भग धामनक साथ भ रहने अ किछु निरुद्ध
(अधिवी) बसैत आछे ते सभ अमन सन मरुप नहि नहि । (4) याम
रैशवके बैलादा लागल अछि हमर नहि राधाक देह । छाई देह नहि
दिल तो रस सोबलह आवहु विराम नहि

गोहर बचन ओइस गेलन ते मरि भुलन ओ

काल्ह देखल भल मरुट सोम सप, न काल्ह देरि

सजलि अवे कि बोलच अओ

भागु गीने ते काज न काल पाछे होम वचन ओ

मजलि हारि कलक लखल विछु न गेलन ओ

रुत लखल बली लगलि भगो लखल ओ

जलते रतन के त बेमदम दूज के देह

पारक बधते कुंज धम होम बेसन के मीठीन 4

नागर अतर मर केओ दोर मजे छति लागल मोर

पाँदे गुनि हने मर विसरल दास नहि किछु तोर 5

1 जे कुल के 2 आओर 3 हमे 4 कलन 5 भमर

प्रेम का पछतदैत राधा सखीमे कहैत छति । ई सखी तोहर
योन (कृष्णसे प्रेम करवाक उपदेश) । हमरा अमन सन लागल ते हमर
मति भुले गेल कलहु नहि देखने रही ते हितकर उपदेश भहितकर भए
नाय साधके कलहु चोरि करन होइय । हम कृष्णस गुन प्रेम नहि निभाई
सकलहु । (2) ते सखी आय आओर की कहिअहु भाग्य की परिणाम
होएत से विनु सोचलहि ते कोनो राज कर नकर पछा पश्चात्ताप
होइलहैं ऐक । कहिअ ते अपन मति उपेक्षा सोचल ते कुलक
नहि । सतक मल्लोचन अछि ताहि गेल आ सभ विछु मभाए बुझलहु ।
(4) रत के लोहे यक्षपेय रसवैत सखी गुन लखल ओ केओ
कितन अछि । हम कृष्णके रत बूझल ठहरल गुन । आजक कहने ते
कृष्ण सुदा लखल सन भजली 3 । सभ कहैत आछे ते नागर (पुरुष
प्रैम भमर छिनि ते गेल ते पूवह तम भौहैत नहि) । पछनु हम
भजनी रहलहु जे कृष्ण हमर छिनि । हम छति गुन ते सभ विछु
विमरि गेलहु । ई सखी ते ते ते ते ते

सखी नयन मल्लोचन नहि नल विदु नहि के 1

वि सख मणय रहर कलौ कलौ न जविस नहि नहि 2

कुंज कुंज कलर आलन हैर चन्द्र राहुन गदल गुमेर 3

मजलि भलव चम मययन बीछ ते रत मीनल ओ भल बीछ 4

बल्ल मल्लोचन मजिहार गीत नहि गीत पकलन भल नीति 5

विछु मल्लोचन न लागल आर गे दमहि भविष्य इलाकन 6

1 सुन्दरि 2 दू 3 अशिक

सखी कृष्णके राधाके विरहदशा सुनवैत ओछे (1) चिरदेखे राधाके नयनमें निरन्तर नीर बहैत रहैत भछि, वषो कबुक लय भसा के चिरदेखी साहे सकत (2) हे कान्हू ओकर दश की कटिअहु, सहजे देखले नकर वर्णन नहि कर सकैत छी (3) मूडी दूनु नतन पर कुम्भमें सन्तापस मूडी सौतले) रहैत अछि जेना चान रहक डर सुमेरु फल पर चढ़ल हो (4) पवन अछि इगिलैत छैक चानन बीच दुअइ छैक मे सभ शैतल होइछ सहे सभ भोकर झरखीन छैक (5) चान सुदेके जीहि ओकरा सन्ताप दैत अछि पवन चलत आ गान लीनु मेन एकमत भए होत अछि एहना स्थितिमे प्राण बंधव होइत (6) ओकर सन्तापके दूर करवासे अल कोल इधर अमजद सहे ककटेय भोदे ज्यादाके तेज करैत छथि (7) ओ सुन्दरी ज भग्न दीकत लीन नीर दशैलक दिला छनो अरि जीये नहि सकत

कणक साँझ कुसुम पारणम भसर दिखल गेहे गयो ज
रसमोहे झलकेने लु पुन होये गोवा नर मयु नीर सखी
भसर दिखल भसा मय लाम नहि चित मल्लो नहि विमरम
भा गरीबी रसे मयु मे लीने धरि लोचन न चलेक
भा नहि मने गुणि बुझ अवगाहे रस वध दूना लज्जा कहि
अनहु विद्यानि लगे जा जीव अरु नहि म मरी म दीप

अपने मन धरि 2 तोहर दुखन वध लाम

भारिली राधाके सखी अनवैत ओछे (1) हे मूडी देखत काक कीच (पतल कड़ा पहनाये) मरा फूल खिलैत कुचल (2) रसम भवन ओहि फलये वेरि वेरि लिहैत भसर ओकर मधु जीवाक दूनु चिह्न अछि किन्तु लब नहि सवि पवैत भोके (3) ओ भसर दिखल भेल वर दौआएत फिरैत अछि हे सखी नीर धिनु ओकरा कल नहि छैक (4)

ओ भसर लधु नीची (3) सरसहि पर जिलिहार शिव भा नी मधक खाना चिह्न, तेना नी मधुके भाचे रखने छह से लगे नहि होइत छहु (4) नी भवनहु मतमे साँचे विचारके देखत ओ ओ मधु चिला मरि जयत न ओकर वध नोहि लगतहु (5) विद्यापति कहैत छथि ओ भसर लखलहे रोदि सकैत अछि जखन तोहर अधरामन पीअत

मने लुधि पुरव दम भरे भोरि भल अछल गिरा साइने भोरि
जखन पुछबलि भल ओ ने मन्द मन वसि मरिह बढ मोलनि दन 2
ए सखि सखि नवमेक गेला जेवहु अरुधले अपन न भेल 3
सपुख गति कहि रसु मरी गालन पासव भुभुध वेर 4
तिला लक लवि रहव जउ मोवे मेस गिरिह धरु जोने दीव 5
लख वदलि धनि झोषक नद लम गुन लुधि भसीन पुन कान्हू 6
भनहु विद्यापति 7 रस जले सेवारेह लाइत दोंव रमने 8

नुम 2 मे नेह नु 3 से

राधा कृष्णके इषवतनय लयभा भवैत कहैत छथि (1) हे मूडी भरलहुदय हम पुवेक धमका लुध आरौनमे रही लगी छल जे पियनमे हमरा वर मे छथि (2) किन्तु न चर भल भल वा मन्द किछु नहि कहबलि हमरे मतमे पते नीची भगमे यथ बडा गेलाह (3) हे मूडी हम विजय सन्तक नहि देलाह हम लखना पाषाणम भारधन कर रहलहु मूडी रसी ओ हमर भजन नहि भोलाह (4) सपुख वृद्धि हम हुक ररण धाम विनु भगम भोलापर पराह (5) पाकीन 5 प्राण छल ओ गोवाय अछि नेन नेन ममम भोला पर दीप (6) ओ भोरि, होत भोके (7) विद्यापति कहैत छथि हे चन्द्रवदली मोहन नहि ऊर तोहर गुण पर लोका ओ पुन सखीयन लोखेम (8)

अमरास नदि देल जाए सकैत अछि ठीक समान होएत बान्कल इतिहास ले
कखनहु अपन धातु नदि छांटे सकैत अछि ४ दिशाएत कसैत छथि

कौकिल कुल का कलाव काल बहा जने
अधुन कुल अजगर गुल्लर से जाने कुलजर न जे
मन मलान दासत दिगन्तर भज न काल काल
दिगदिदि जन मन कानन धेकन भज दिगन्तर
सुन्दरि अधुन नजिअ रास
नये वर कांक्षति इ अधुन नजिअ अपर न दिन दोस
काल चात्रि कानधर कांक्षति वेदन सह न पर
चान्द चान्दल पुअ नन्द गदण भज न मल्लोम हर
शिरिस कुसुम सेज न शिखर नै न मल्लोम से
आकुल धिक्कु गौर न समर सुन्दर न मल्लोम

। कल कलरदा । मन्त्रिकुल मन्त्रिक गणान् मे सन्ते इति रागात् तम
नृपराज्ये तान् कलरदा । कलरदा मन्त्रिक गणान् तान्

सभी कमलि राधाके पक्षधर छथि । जोवन सभ समय जेना ओठे से मालू कहल जातै वनै हो न-नहि पर मधुकरक दुई गजवन करैत अछि से मालू हाजी मजहरी पसारीसैत । अमर जोके क. हजवन गेल हो । १२ गहन समयमे रहिते लोहर मल कलक छह आ धारा प्रवाह छहु । ते प्रान ते का वैभव से हो । लोक अत नहि जानक । देखै विरहिणी सभके मारवाक हेतु कपुराज ठगल । सैना सति छ-यश उपस्थित छथि । १) है सुन्दरी अछह नामस कहल गे श्रेष्ठ माली थिकर भा ई पसन्नक रागे थिकर तारी इलाज दीख नहि देखल । १) लोहर देह कमलहुं में अधिक कमल यह देखल यह सतनहु । ललन आ चन्द्रमा लोहर देह जरयेत छहु मोयेक हर नहि लखै । छहु । १५ विविधक

पूजक से नहु पर तैल नहि दीइते छहु केस छिडिआराल छहु भा यल
समकारन नहि छहु गोविन्ददेवक ध्यान लगओते रहैत छहु

वे मोर कडू दूदक दूर महसूस होनेसे बस मधुपुर 1 11
 सयली हय आइने सख तीन्थी नुर दस जपाल आने भोजी सीधि /
 माल भाल माल ह कुटिअस मेल चाल्ट कुमुद नु टरमल भेल 4
 कतर दानादर टैव वनमणि कलाक हमे जाने नीर गांअर 4
 आने सकामिक दुइ दिठि मेदि टैव गहेल भेल हटय रवोने 5
 भतइ विषयणि मुन दानाणि कुटिअस रहल दिवस दुइ चारे 6

1. જાન 2. પત્રિકા.

कृष्ण राधा की मित्रा मथुरा में आजाद कर जन्मास १९११ एकादश
 कौत उचि १) हमरा राम द ला दू स भे दू मथुरा के नव न जतर
 हमर हनरक हनर सौ गति रहैत आये आइ निरि सखी कृष्ण
 स्वयं हमरा हाथ में साधि गेल भदि दस युग ने नपुण्या क ल से अइ
 सिद्ध फलदायक भोवा २) मन भेल दुखिल धीनल चाल पद कृष्ण मा
 सुगतिनी राधा दुखक मिलल भेल ४ कला सी राजा जलवाली कृष्ण
 मा कला हम राधे मथुरा ५ मंड मथुरागत दू क भौखने आये
 मिलल रिधाना हृदय राधे सा हेल भनह ६ विधाना हेल राधे
 ६ श्रम लता ने सुनह भवन ह लख्य दू पाँच दल रहैत म ३

ਸਭਕ ਜਾਨੀਓਂ ਫੁਲ ਸਾਥੀਏ ਧਰਮੀ ਨ ਸੀਰੀਏ
 ਰਾਹੀਂ ਨ ਹਿੰਦੂ ਆਦਿ ਭੇਦੀਓਂ ਕੁਝ ਭਾਈਓਂ ਨ
 ਜਾਨੀਓਂ ਸ੍ਰੀਓਂ ਕਾਨੀਓਂ ਬਾਨੀਓਂ
 ਹਿੰਦੂ ਭੇਦੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ ਕਾਨੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ
 ਕਾਨੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ ਭੇਦੀਓਂ

१. दल से त = किं। विद्युत्

सखी राधाके कृष्णक निरह-दर्श सुखवैत छथि । ११) हे सखी कृष्णके भीकले पुरैतिक धन पर सुतवैत छिअने त हुनक देखक मरिअमे भो भौआए नइत आंछे चल्तत हिनकर तहि होइत छनि । जानइ सन्ताप दैत छनि कोन उणय कर १२) हे सखी एकका एकका अति लोह जे कृष्ण नाग विरहमे विभिन्न छथि । हुनक शरीर तोर दिला दैत दिनि क्षीण भेल नइत छनि । १३) मानह ते दैत ऊपरली सखी के निरश भाग छांडे दैत्य आसुर कोनो छनिअर दोखे नहि नइत अछि । एहि विरह व्याधिक जीवध एकभाय आंछे तहि मथुराक ममन धार

मध्य जलमन्त्रालय सचिव महोदय को भेजने के लिए प्रार्थना है।
 यदि आवश्यक है कि धीरे-धीरे साफ़ करने के लिए प्रार्थना है।
 शेषा रात्रि में सुखी नहीं है। भले ही रात्रि में जल नहीं है।
 हलवा कर रहे हैं। मन्त्रालय के भीतर प्रार्थना है।
 जो दृष्टि में प्रार्थना है। भले ही प्रार्थना है।
 मन्त्रालय प्रार्थना है। भले ही प्रार्थना है।

[illegible]

कृष्ण फेर अस्मिताह एहि गौतक रस नमतिहार धिकाह लखिजा टेंदीक
एति राजा हिंसासेह रूपनारायण

टि. ३. मसं. नं. १०। ऊर शेष भाग दिक्.

कृष्णसे शक्ति सेज दीप चरले नञ्जु परिमल भगव चन्दने।
जये नये तुम मेरा निकले रहति वेरा लगे नये पोछति मदन ॥ १ ॥
हे भाग्य लारे गहो वासकसञ्जया।
संगल सबद भाने रहिसं आपण काले पिअ लगे परिमल नञ्जु
सुलेख सुजन लागे अघपि ल चूक लागे नलि हिंद वसास रेह नी।
मे तुम गमन भसि निन्द न पावत जासे लाघन लागल हैरी ॥ २ ॥
कावे भन भगवन्ति महाप दमनन रहति गमन न परिभ चित्तभये
दुर्गिहदो सुन सब गुन गजन विरि सिधोमिह अपलभये ॥ ३ ॥

1. शरीर 2. शक्ति 3. पश्चिमी 4. वन पर्वत, नदी 5. मध्य भाग।

[illegible]

राति वड सहज होइत अछि भाङ्गमे दिलम्ब नहि कह्य देवनिहय पुन
स गुरुपुण्ड्रयुक्त श्री श्रीसिंह जयलम्ब छथि

भासाचे मन्दिर निमि गमयण वृद्ध न मुने सकल
सखत नल्ल अहि निहारण नहि गहि तुम्ह भाव
मल्लति मफल जीवन तर
नाहो विरहे भुवन भरण भन मधुकर भीर ॥२॥
शलाक केतकी कलन भरण मयके रस समान
हण्डाहु नाहे कह्य निहारण मधु कि करल पद ॥३॥
वज उपवन कुञ्ज कुल्लोहि सखि नहि निरन
तोहे दिनु पनु पनु मुखण भइसत पेस सर ॥४॥
साहर न रह भोरभ न मह गजलो नीर न गज
धन न धनुर धिक्कले वेत कुन हवाय सहे सोख ॥५॥
नाथ इदय जगज रजत न धोम राने न
नरसी जलने गहि भरणे न सम न गेव ॥६॥
है हन हन विवर्ण न उग न विवर्ण न
राति लोचन नहि न न न न न न न न

१. दैस निमि २. गज ३. भीर ४. न न न न न न न न
५. ७. समान ८. न न न

सगरी मल्लिक मय्यानिभो राधके कय न पेस लठ मु दै उये
हे सगरी कृष्ण लोचन भवमलक भवमे नर नीर सखी दैस
राति विना दैन छथि कय ह मय्याक भवप सुने नहि छथि
नखल जखल जन कय ह कय ह देव छथि भोक्कमे लो भव भव
नाहुन छथि ॥२॥ हे मालनी लोचन नील धन धिक्क ॥३॥ विरहे
दयाकुल भव भव सख भुवन वीमल धिक्क अछि ॥४॥ सगरी
है केतकी के भोला, इयाटे कय न न न अछि सममे ललले न

छेक तथापि श्री भव सखतहुमे कय ह दिस नकिन्हु नहि अछि
मय्याक वरवाक कोन कथा ॥५॥ जन उपवन कुञ्ज कुल्लोहि सखे लो
भाव होइत छेक परन्तु नहि नहि पावि देर वरि मूछे भव जइत
अछि एहल पयक प्रेम छेक जीकरा ॥६॥ सहकन (समक गाछ) पर
नहि नहैत अछि भोजन सोभ असख नही छेक गुनगुन का गिर
नहि गयेत अछि अजो देवक हास नहि दैन छेक धिक्कमे व्याकुल
रैन अछि सम विरु लखनहि सोदाइत छेक जखन चित इधित हो ॥७॥
अकर इदय नकिन्हु रतन सनुरक दैन छेक से हउत भोचि चोले
माइत छेक कय यज कय ज पालि नहि राखी तैसी पालि निक्क
स्थलनिमे जग भवक विधापने जइत छथि गरी लांछमादेवीक पनि
नदेगुण सम्पन्न राव शिवोसिह इ रस जैन छथि

पुन लोचन दिमुन गुरु जमिने भव भव
कय ह छि हरे वल्ले नय न न न न न न न न
ने नय हन नल्लो नल्लो न न न न न न न न
निमि न न न न न न न न न न न न न न
माइत न न न न न न न न न न न न
नल्लो नल्लो नल्लो नल्लो नल्लो नल्लो नल्लो नल्लो
न न न न न न न न न न न न न न
कय ह मय्याक न न न न न न न न न न
जखन कय न न न न न न न न न न
नकि नुन न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
निमि न न न न न न न न न न न न
इ रस राति लोचन नल्लो न न न न न न

पुनः 2 के ज्ञापन अति हीन 3 मलादः 4 अति 5 कथं
6 निकृष्ट 7 नई छछ मन्त्र में

राधा रानि भरि चिन्तास कर भारमे कष्टासं विदा भंडैर छति
नगरमे परिजन आ पिशुन भवत अछि। रात्रिमे अन्धन आधा भए गेल
(भोर होएवापर भक्ति) राईहसं हलि केर यमुनाक ओढ़े पार छी नगरी।
२ एक दिस कुल कलबकक डर तँ दोसर दिस लँहर भएते प्रेतिज
कारणे पाराभव सह्याक शिक ते अब हमरा भजुनाते देह ॥ १ ॥ हे माधव
आब गलवाही छोड़ह जँ छति तातल तँ कलह भरि नएत एह उरदास
होएत, ४) एतेक संधि दमर पश्येन स्वीकार करह दुनूक नाम वचाएह
मुह कनेको मलान नाहे करवाह, विवास करह फेर मिलन होएत। ५
भारतमे बहुत युद्धक युवनी अछि बहुत प्रेम करैत भछि ताहमे दुचितन
मे शिक जँ लौह आ शील चीन्हा ॥ ६ ॥ चन्द्रवदनी राधा एह एका
प्रियतममे विदा लए घर चलतीह विद्याधाने कहेत छति ई राम राती
लखिमाक छति राजा शिखिमिह तबीन छति नगरी राम प्रेम छती भरि
ही तँ बहुत बुझन जा ई बात मकर अछिमे ज्ञान अछि

[illegible]

अदि साने भभासाले दोसर जाले शीम २ कर घाव नजहि ३ कवि
भन गिराधने

सबसे कष्टान्ते विरहिणी राधा कहैत छनि । (१) हमसारे
जतेक ने अविनय अपराध सेल से सम क्षमा कर दिअ । चितमे हमर
नम दा मन रखने रह्य भगवान्से प्रार्थना कैत छी जे हमरा मन
अमर गाने केओ टांकरि लगि नहि हो भ । अहाँ मन पिआ सभके यथेच्छ
भेटौक । (२) हे माधव हमर सखी राधा ई सदाद भद्रक सेवामे
पठओलक भक्ति । जहाँ सहस्र युवक सग यथेच्छ कलि विनास करैत
रहै । हमरा तिलाजनि देवे करय । हम लखवाहस परिचर छी । (३) पूर्वमे
जतेक प्रम उत से मन पाईत रहय । जे शरीर रह्य । ते की की ने
भोगी बहुत बहुत रमणी इलख अंक । व सखीक मुह देखी राधाक
पल्लव सभाद मुनिवहि कछा विहसत भए । सकल प्रस्थान कर गेलह
दिवधनि कहैत छथि । लोचनदेहि स भव्य मधन धरा रसनि । (४)

[illegible]

मछी रसनि राधाके वीरित छति । सखादो आछ लाख लता
अछि कोटि कोटि लख कलेक से गनय अलम्बय सभ कृपामे मधुर मधु
अछि पखनु मधुआ मधुमे किछु भन्नर होइत नहि २ दे मुदरी
आइहु हमर बान सुनह कृष्ण सभके छांदे तोरिने कहैत उथल, तौ सपन
पुण्यके समकह (तौ बड भागमल्लि छह ३) ओह मधु सखादो सेबेबह
दिक बकरा अमर निद्रहुमे (सखहुमे) सुमिरैत रहैत अछि, जकरा सखहु
बिसरि जाइ छयैत अछि होइ होइ जकरा पर कोइ कोइ सपन अछि
कृष्ण सतन तोर उशला तोर विन्ता कोर रहैत छथि संगह पर तोर
ठाम धरैत छथि सपनहुम तोर टोछैत छथि ४ कोर बरि तोर नास न
रहैत छथि, ५ स्वयंसे कोर उतिस लखैत छथि गहु गिहारैत छथि
न तोर विन्ता सपन तोरके मूल पडैत छथि एतक बात मन पडैत अछि
तैं मणिलोय लखल होइत अछि लख तोर रि बरि होइ ६) बकर
मुहस राध राधा के नाम सुनिन ओर नकर पडैत कहल जाइ ७) उरि
सिनिदिह

[illegible]

1 पठान, 2 कर्दम, 3 नीर टडा

शशा कदम्बके रूपवन्म दैत अथि १) आदर तं अधिक दैदवैत
उह मुट से जाली कालक लहि है मध्य वृद्धि गलहुं लोहर प्रेम २
नी नयनसे बहुरा हमरा भाव में लटकभले रहलह चलाकोस कतंक काल
अपत रूपत प्रचकपत छिपावहु ३ है कान्द लोह की कहै महु ली त
भाजाहे दुधिभर उह लकरा वला पदत ने अपन कतंक लहै ब्रह्मण
४) कनौरी घर कांसके नान गीन्हल नाइत अथि भलसाधुसक प्रेम त
ओकर रंगे ह्वसं पकट भण जइत छैक ५ कूलमे पराग छैक से जे
सौरभसे पुझर नाइत छैक तहिना हृदयमे लव अनुगण्य उदय आंखिष
नलण दैत छैक ६ विधापति कहैत अथि सोझा भेलापर लंसारय
मृतभवेक न आदर करण ७ पुझक लहि ने भागी काज सिद्ध होखत

[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

आमेलाहून राखी बांधक यथा खल गरीब उरी न लीई
जाण्ड न पेशने हाकि अ न जाण्ड न पुन मर्यादा न भान्ना हणिनी
गिन्नाहणी घज्जने मीश गरीब २१ टम्बु न ई दुप घाल गीता हमार
आमेला मे बांधक मल गीत मीह हमार उरी न नात मगर भकासमे पमरि
उरी गीत अच हमार न लीई ना मल्ल नखल हमार प्रियनगके के वीसि
भक्त १२ अमल न्याक रावे खल गरीब कने वार न गार देव ई

पूर्णिमा अथवा तृय्यमा कृष्ण पक्ष प्रसौक हेतु अभिषार काल आ
 कामदेव अंदोलन करते रहता है। मुदा एहि कृष्ण पक्ष के दोहन के दोहन।

पथक प्रेम हरि कल दौलत सदन भार न केन।
 भूझल जलम अति से रहत जेते दिते दुःखेन।
 किंदहु मोर अखिल पल की मोर दिखत सन।
 की परमभक्ति विस्तृत काल लकी निरुद्ध देन कल।
 राजनि मध्य लहि मलय।
 पति परमभव नहुन प मोर काल दोस दिन।
 धव धनि एरे जलते मेमोय सुखकलम माने।
 भुजव भेल कष्ट अतिर भावे कि जय लाने।
 सुपहु वधन पञ्चनक रस लोके से सुख न।
 भयल भासा धनि विन। ५०० वि० दोहन ५००

१. जल। २. दौलत। ३. ४. लाने। ५. अतिर। ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

राधा न पाल प्रेम न भजन पदपथ सहीर।
 रोमाक भक्तमर्म के लोके नही व।
 राधा, गहि से सुखल नो मो काल अति तेजस रहत।
 दित हर होइत मोर की हलक से उठते मोर।
 उठते मोर दसी भजन का विसर।
 नादे पर विधवा कल देलति है भागी कृष्ण मया।
 प्रेमसे एतेक परमभव पाओन लहिमे दुलक दीव।
 होख महान बुद्धि हम कृष्णके कल्प रुक ममान।
 किन्तु मनुष्य मार मोल से मो तें बाधत चउक।
 जलिके की होएत १५, हलक विचार।

रेखा थिक से बाँटे सपन बाजल वचन बिसरि जाए।
 वचन

रादे परदम परजखित रामेभा हके धनि कुबजति लोरे।
 लजि पनु कुरसी आसंघ जिन माना हम जीव मोलक मारे।
 कलप रवि क विभा मन दा २ मोलन बने वनि न।
 जलो आयित नही अद्वय भावये जलो विनयी विनुर जे।
 भवधि जलन है रहत लोके जीवत पलाट न होत समान ३।
 मोल लो विरोधक को फल भवसर दहका टाल।
 नही जलो लोके जलिके न भन न पृथक भाव ४।

१. नही

विद्विषी पथक द्वारा विद्वज्जने समाद पालन लोरे।
 उदेनमे पथक सजक रमिन वल लोरे।
 लो ओ पुरलक सन २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००।

१५ हके कलक दीव लो लोमोने क लोने कलक।
 कलक लो लोमोने विपु पाली मोर सुखक मारे।
 मलय नुन गुरु लोमोने लोने

जगु सं.

[illegible]

विष्णु तं हर २ जीति

सखी भागेली राधा कृष्णक विरहदशा मुनवीत राखि
चन्दमा तलिक रिपु राहु राखन जे देखिहार ब्रह्मा तनिक बूझ कर्मल
तकर शत्रु छोरी तकर भेल भगल तकर भयकर छोटि हाथक गलेन
विहङ्गयाकूल राधाक हृदय के विहङ्ग स्त्रिय भडि: २ हे सुन्दरी सुन्द
भल नखीन मुलन गमल भय ब्रह्मक शरीर पाता पहल गमल जका
द्विर दित भोग भेल नइछ ३ हडि चन्दमा तलिक रिपु राहु तनिक
शेखन भजत ४ हाथ पर गल राखि सुन्दरी राखि सखि
भाल

$$2 \quad 2^2 \quad 2^3 \quad 2^4 \quad 2^5 \quad 2^6 \quad 2^7 \quad 2^8 \quad 2^9 \quad 2^{10}$$
[illegible]

दुहि १ भा १ बरु २ ३ जरी ४ नारे ५ दुरी ६ ७ नारी ८

कृष्णभित्तिका राधाके सखी कहैत छथि १ चन्द्रचन्दनी
 ललना जखन चान उगि जाएत तँ चान भा लोहा मुख दुनू प्रकाशमे
 सभ केओ लोग देखि जानहु २ ते हे गजराजिनी रा गण्ड मन्दकर
 अछि अगिहार करत नहि तँ भाभिसा छाने देह ३ हे चन्द्रचन्दनी ई
 इजोरिआ रात्रि थिक चान उगि जाएत तँ लोहा भित्तिसर कोना होएतहु
 ४ लोहा परिजन सौरभ जहाँ दुँवो छै दुँवेल दूरहमे लोहा अँकिसा
 लँकित कर लेतहु ५ लोहा देह पर चक्र दिस सभक लखी नीकल
 रहैत अछि लोहा लए नखामे हम धँस सभक रहैत छी ६ पराएत
 काज गछि अखनहुँ राहमे जँ विकल भेलहुँ तँ बर लजित होएतहुँ

जलभा जलधि नल मन्द १ वह वन दुखल गन्त
 वचनक लोहे गगनमे सभार तँ रहैत यव २
 कोकिलि विभा छिगिनी कवन रहैत कहैत ३
 नवारी सगरीयन केन कहैत हरे वचन भुलैत ४
 नीपु पुरुष विरहीन विव दान मलय कुलमे ५
 नील न मल ककार दूधिय दूधिय पल लोहा ६
 ल धारि गन हँस हँसि विभा गेल मदीरो वनमे
 विभायो कहैत गन पुन्य मे सुख छै गन ७

वचन लोहे के ८ पुन्य १ गगन रहैत २ लो लोहे वन

कवि राधाके विरह वचन कोन छथि १ अगि नखमी भोहि
 दुह समुद्रक जलमे लोहमे चान रहैत (रही) भावै २ ललन मे लोही
 ठेकान नहि काजदेव तँ काल हिलस लोहे सदि सकेन राखी ३
 कासिनी विरहिणी भेलि छथि हुनक काल लोहे रहै गेल अछि मनु न
 छथि छथि सदि लखी ४ अगि वीति गेल अछि लोहे कोन वचन
 अपन वचन विरहि गेलहुँ ५ विमुर पुरुषमे दूधिय वर काल वर

होइत भछि युवनी प्रणां गगन एकर निवोह करैत छथि १६ भुल्यो
 बर लोहे तालि काल जेहैत छथि प्रियतम अवधि विरहि गेलथिन ७
 विरहवति कहैत छथि पुण्यक प्रतापहंसे कामिलो सुपुत्र जाम करैत छथि

पुरुष नत नखक भेल समय छरे मेवमे दुर गेल
 काहे विरहमे कुरान गँ कुहैत हे परचनमे लहु २
 लोहे भावने मे सजिगती पर गलाओव सभय गली ३
 हृदय देहा राखिअ गेल जँ विरु करिअ भुविअ संग ४
 लोहे भावने पराअ भर सभस का कवि कण्ठपर

परम २ सप्त विन १ लोहे मे

विरहणी विभाव करैत छथि १ पदमे नतेक मरुपे सुख भेल
 मे सभ सगयवरा सुगमयमे दू भा गेल २ प्रियतमक कृपावे
 लोहा सुखविभीक दिव छलन पर वीरमे लोह भा गहुत भोहि ई
 सदि सखी रहैत लखी लो भावनी लह भा भा वरुण होतो
 सजिगती छथि अचन ज लोहे दुनूक हाँसि १४ ते हृदयक वेदना
 हृदयमे (कल) राखवक उछी अचन वसव वल लोहे लोहे गीत
 जोडि हे सखी गगन मे गनु थिक लोहे सभस कवि कण्ठपर १० वापस
 ई कहैत छथि

प्रोक्त सार १ ललन लोहा भाव लोहा लोहा विरहमे १
 २ ललन विरह ललन लोहा लोहा लोहा ललन २
 ललन ललन ललन कि कहैत ललन ललन ललन ललन ३
 ललन ललन ललन ललन ललन ललन ललन ललन ४
 ललन ललन ललन ललन ललन ललन ललन ललन ५

ललन १ ललन २

गद्या कृष्णकं कर्तव्यं चिन्तितं कर्तव्यं ह्यस्य एक दिवस
 वृक्ष नर शरणा त्वं इ वृक्षिके जे त्वं त्वं प्राण वृक्षिके प्राणवाम है धेत जे
 द्वारि द्वारि कक्षपर पर वृक्षिके पवतः ॥ राह जाह दे जयय आर जतिव
 की कहिन्ह जे अथाह समुद्र छन नकर धनि आर यक्ष भय गेल ॥
 हमरा जे अनओनह त्वं त्वं कान काज भनह आर गुरुन भ
 परिजतक अथय लोका टा हययहु तै सो न त्वं उ वेगाम
 अवबन्ध छह केकलो टप काहु ठाम गदिर जाडन अछि

अथयय सचहि नयन न आस भयजंहे अछि ॥ १ ॥
 सोने न कहय हृदय अनुमान पंथ अथिक लघु कर्तव्य ॥ २ ॥
 सत्तति कि कहय ताह गेजान गले प्राण सीकर भेल कह ॥ ३ ॥
 वृक्षिके लोह कहिन्ह समुद्र होनह सन्धि केन गेजान ॥ ४ ॥
 नओ लज्जिके गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ५ ॥
 नओ लज्जिके गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ६ ॥
 नओ लज्जिके गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ७ ॥
 नओ लज्जिके गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ८ ॥
 नओ लज्जिके गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ९ ॥

गजे २ लोह गेजान

सचहि कृष्णक छह राह के कर्तव्य ॥ १ ॥
 अथयय कृष्णक लघुमे भवेन दित ओके भा त्वं गेजान गेजान गेजान
 गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ २ ॥
 हृदयक भाय अनुमानह सन्धिमे भवेन अछि वृक्षिके लोह गेजान
 छह जे हृदयक गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ३ ॥
 लोह गेजान की कहिन्ह गेजान कृष्णक छह गेजान गेजान गेजान
 गेजान ॥ ४ ॥
 गेजान ॥ ५ ॥
 गेजान ॥ ६ ॥
 गेजान ॥ ७ ॥
 गेजान ॥ ८ ॥
 गेजान ॥ ९ ॥

कृष्णकं एक छह एक दिन सत लगीन छति दिन सत सत या मास
 बरख सत ॥

१६

हम धने कृष्णक प्रांतति त्वं वास जस त्वं कहओ विचरि
 काह द्विज पत काहु द्विज भेल कतन हकरी कविअ अपमान ॥ १ ॥
 काह वास कता वनि गेल छह इपगप लछि मोहि भेल
 भयगत कागल भयक भयि साहु सदकुचल लोचन कागल ओहु ॥ २ ॥
 धन केन कृष्णक कर वास अधिक सिद्धि अधिक अपमान ॥ ३ ॥
 धन केन धन दुहु भेल गेजान विचरि होह भय दुहु गेल ॥ ४ ॥
 लोचन सस गुरुगल सदग लोचन वाहु द्विज कतन अपमान ॥ ५ ॥
 छतन छत पण्डित कतन समान छत छत आर हकरीने लोचन ॥ ६ ॥
 भयत विचरति तस ताह विचरि हकरीने छति वनि देवसेह देओ ॥ ७ ॥

काहु केन लोचन भाति कतन लोचन भाति ॥ ८ ॥

कृष्णक अपत गेजान लोचन कतन भाति ॥ ९ ॥
 कृष्णक विचरि कतन वास भा कतन वास भा लोचन वृक्षिके कतन
 लोचन वनदित छि ॥ १० ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ ११ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १२ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १३ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १४ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १५ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १६ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १७ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १८ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ १९ ॥
 लोचन गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान गेजान ॥ २० ॥

नॉर ४८३ कुंजस कठिन वचन मंभेय चर
पाहेनाहे लंसे वृद्धा पावल कपट के वेवधय
जत जन मन छल मज्जाय विपरीत सवे शल
अखि देखइने कर्ज घसलहुँ भगति गौरव हन २
मथरा हने कि वल्लभ भाजी
अगु गुनै जई काज न करए पाछ होम पासा भी ३
चलैम जन जसो वेवध छाप भगत कथा सूक
कैसे का से गूढ़ देखवाय कैसे पलवान कू ४
अबे हमे गुअ सिनेइ जलन कज्जल सधज देव
ए हनि चोरक खान्धा एसन किछु नार भाजी छव ५
कु १ २ मंजलि १ जने देखइ ४ जिन देव,

५
 राखने पदार्थों नहीं विद्यमान हैं बल्कि संज्ञाओं के रूप में
 बनकर वह सुघटित नहीं उनके कर्तव्य के रूप में
 इ रूप हमारे जैसे भाग में दृष्टि बहुत दिनों से
 अंतर्गत इ रूप में पण होकर हमारे इ अंतर्गत का
 मानने लगे कि पृथक् संसार
 अंतर्गत पर रखने रखने न भाव फलतः हमारे । ३

चित्रचिह्नी राधा मञ्जुसँ कहैत छथि 1) ओहि विधाताके (जे हमरा रूप गहनक धरितहुँ ते राखतहि धार्मिके अन्धकूपमे खसल दितहुँ जकर पाँते तुंगल (रसिक पेसी) छहि हो तकरा विधाता विरक्त रूप दैत छथिन 2) ई रूप हमरा घेरी भए गेल सखिमे बहुत गहँत सखि भवति भवति ई रूप दितअ होइक हमरा लेल ते ई फाल भए गेल 3) हे सखी अथ यथाथे कथा की दुनैत उह हमरा लेल ते परदेस जाए पर गवाणी मे रति गेल

[illegible]

1. सतत 2. अनुभव 3. दही दूध सभी

सखी राधा के उपदेश दैत अछि जे कछपामें बसिके रहैत रहै है
सखी हमर बात सुनह। तौ अहि बिलइक कछपामें नम तहि नदर
ताहमे गतिमे तें कयमणि नहि अइहक ओ बिलाव पडल गुन मया
(राणवती राधा केँ ध्यान जातल सभ दिस नकतिनि , हाथ २ है
भलुरि आगु हमर उपदेश मन राखत नीक दूर बिलइक नम सुनह
तहि समसँ दूरे हटल रहह (3) भएल अखिसँ देखिबहुँ मे मगल दिहै
आने बाइकेँ संगे देलक ओ बाइ ओकर नाम साइदेसँ धीनि धीने
खालक केवल पाछि छहि देलक 4 ओ बिअद धुमे धुमिमे सभकेँ
बिहारेत अछि डरे छहि आशकामें जे केम नहि नहि करै उकारेँ ओ
नहि कौन अछि दही दूध घर तौ सभ किछु धाम नयक सुख
राधाक छनि उपासल रहै गलाह

सबसे कुदरतके गिराईणी राखतक दशा मन् देन १९५१ १ नीक लोक
अथन मानक पालन राखतक देन १९५१ कुदरतके नीक राखत
वैराग्य १९५१ परत १९५१ १ नीक लोक १९५१ १ नीक लोक १९५१ १

[illegible]

કોઈ ન જાણે, તોયે મને પાછો વાળી નાખવા પડે છે.

[illegible]

राममहि हरि हैरानि मुख कर्त्तन पुनर्जित लहु धर धर कत भांजित
आनन्दे नीर नयन भरी गेल पैर ३ अङ्कुर पल्लव भेल
मेदल मधुरपनि सखल मो भाग्य सखनुक काहंकी कहइने नान
अखने हाल हरि अंचर नीर। तसो ससार कर्मिनी की ॥ ४
करे कुलमण्डल रहिहुं मो कलन कलकलैरुं झरि न हो ॥
तह दोलनकि २ कत धर ३ पेस भांजुर भरपुर ४ भौर।

राधा स्वप्न सगरास सखीस सुन्दर छथि । कथ्य अलखि न
सहसा मुखक शोभा निहार। लगल। लला तरहे हमर देह छुवा
लगल। देहस पुनरु भरी गेल। २। आनन्दक १२सं भण्डि अरि गेल
प्रेमक अदकुरमे मान पल्लव आवे गेल ॥ ३ भइ सखनामे हमरा
मधुरपनि कृष्णस मिलन भेल तख [य] कथा रहै न लल होइत भवि
४। तखन ओ हमरा अंगर दीपि लेखनि तखन जामोवेदलपथर हमरा
धीरक नीरी ससार गेल ॥ होइत स्तन मृगत लख मुहु कलवसे
कतहु रसकी ३ झरल होभा

पहरि नान गेल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
हसल भइत मुनिल लीन सखनक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
मनोनि निहार कलने सख आनन्दक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
लीन सगारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
कलन सारि सारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
अनल पिय गेल न कर रहने ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

१. सार २. अधि सुपास ३. लला ४. रसने नलि

राधा अपन सखसक वल्लभ सखीके सुन्दर छथि । ११ ॥ १२ ॥
रस छनने भा सखन भले मा धीर धरि आनन्दित कलपनि ॥ २ ॥

अमररसक भास मधुर दण्ड करलनि रकक हाथमे रख पडए त रसने
चोष्ट करत ॥ १ ॥ २ ॥ मधी की कहयहु कहयामे लाल होइत भवि भइ
दम कान्दक वरामे पडि गेयहु ॥ ४ ॥ लोदी (पौरव करनी) सराववे कना
हत चले गेल अपना देह भएन सक नहि रहल ॥ ५ ॥ तरहेथीस स्तनके
जहि बुझा राखल विलु व्यथ पवन कतहु कमलस झागल होभा।
विद्यापति कहैर छथि अतो शङ्का नहि करह ऐस मधुमसुस अधिक
मधुर होइत भवि

गगन भएन दूर भएन एवम उग घट
मा चकरी, सखस पिया कलनि स्तन ॥ १ ॥
मल्लि कलि करि न ॥ २ ॥
एवम भएन दूर भएन एवम उग घट
मा चकरी, सखस पिया कलनि स्तन ॥ १ ॥
मल्लि कलि करि न ॥ २ ॥
एवम भएन दूर भएन एवम उग घट
मा चकरी, सखस पिया कलनि स्तन ॥ १ ॥
मल्लि कलि करि न ॥ २ ॥

मनोनि निहार कलने सख आनन्दक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
लीन सगारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
कलन सारि सारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
अनल पिय गेल न कर रहने ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
मनोनि निहार कलने सख आनन्दक ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
लीन सगारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
कलन सारि सारि कल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
अनल पिय गेल न कर रहने ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

विद्वान् हि ज्ञानं तर्हि त्वैकं विद्यायां कथं त्रयं अथैकं विद्वान् कथं त्रयं
(समर्थं समस्तं प्रेम कान्तिः ।) कथं सत्यं अथैकं त्रयं तर्हि भवेत् ।

अदि द्वादि गदि वक्तु छहदि छमं एमं वरं गाम
हमे एकमदि विना देसल्लर नदि दुगलन नाम
अथिक एभा नंद विमराम
मल बेनालय किछु न मरघ मथे मित गदि लल
साम नदि वर दु परिलन नल न मर न भादि
एल्ह एथिक विभुल गाम न मल वरने मने १
भल छिवादि सु नम द्वादि ३ पु प क म

□□ 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

[illegible]

पञ्चमः अथ भगवत्पुत्रो न कृष्णः स विद्वान् स विद्वान्
न कृष्णः अथ भगवत्पुत्रो न कृष्णः स विद्वान् स विद्वान्
भगवत्पुत्रो न कृष्णः स विद्वान् स विद्वान्
भगवत्पुत्रो न कृष्णः स विद्वान् स विद्वान्

ਵਿਲਕ ਕਾਸ਼ਨ ਸਥਾ ਮਧਾ ਨੀਰਿਸ ਸੁਖ ਏਵ ਨ ਸਥਿਤੁ ਬਿਸਾਖ
 ਹੁਦੁ ਮਸਰਿਨੁ ਜਨੁ ਨ ਦੇਖਿਸੁ ਜਾਂਨੇ ਫਲੁ ਨਾਨੇ ਘਨੁ ਸਭਰੁ ਅਧਾਰੁ

1. नदीक, 2. विधु

सजी भावनोंक अन्तर्जालमें राधाके कहैत छथि (१) हे मालती
भरर उद्विग्न भेल जग भरि यत्र तत्र वँ जाइत अछि, सोनहु पूनस
आकाश लहि होइत अछि ओकर लहरमें कात रहैत अछि ते नकरामे
अनुत्क रहैत अछि तकरा सोकर बिना शक्ति जाहि भेटैत छैक प्रेम अपन
लक्ष्य समुक्त गुणग्रभुषक विचार लहि करैत अछि प्रेम अन्ध होइत
अछि । (२, हे मालती भरर मोह बिल निकल अछि वलमे बहुत कूल
अछि ओकर मल समसँ घिरत छैक सन्ह रस पान लहि करैत अछि
३) निमित्त ककलमे अमृतक समान शब्द मधु रहैत अछि। मिलितु भरर
तहक सन्हक विमोह जाहि अछि ३ न पाँर की सोल हृदयक अनुकूल
पावै लहि देखैत अछि त पाँर सोकरा सम लोहार सन्हाय नगैत छैक

[illegible]

• खेपाने १ इगल्लिरे वेधा ३ अनुमिन पाठः ४ मंगरि ५ पसरला
भाषा तथा नगु सं।

विरहिणी राधा विनाप करैत छथि १ विरहित कृष्ण विरहयुक्त
काहे गेलाह जे वसन्तक राति रङ्गगहि रङ्ग रम्यमे चिता २ कांडली
पंचम म्भारमे कुहकल मुदा तेओ वन्धु नहि आलाह भावये भदवाकक
वधन में विघटन नहि होणवाक चाहे ३ हा हुनक देल वान
(व्यवस्था) दिजि गेल। राधा की भेलाह, मधि पर
प्रियतम नहि भएलाह नीक परिणाम नहि भेल हमरा लेख सुये लखिनमें
उजि गेलाह ४ भासमें टिशन सुरमित भेल, चानस राति चक्रमक भेल।
तर तर पर भजर पसरि गेल कृष्ण हटयने ई तस राखिओक लोके
आलाह, के जाला पूरक पेम दिशारि गेल हएल ५) हनुक निरन
करैत वृद्धि पवैत अछि जे शिष्टक नयनान्तमे दग्ध काभटवक लोभ
हुन नष्ट छैले अथवा ओ गमर भए गेलाह। मोहय लोभ मन मुग्ध
(निराश्रित) भए गेल ते भजवश हमा हुनक सबल पछि देल ६
विषादनि जरी लखि ई पूरकी सुनल नहि जायत ७) ८) ९)
मारी पुनः पामे कल्पक के समान श्री गान्धर्वदेवक १०) ११) १२)
सेवा नी ले छैथि

पूज भव भम कर आन भेट १ ललाह
पूज न भव भम करि किये कहु भोवद २
भा नो हुन कहु नीहि
गम ३ देल नगर नो विहि छविहु मोहि
काम कर ४ कन दिव नहि पूव नहि न न
भन वर विनई वभावन विनु न कहु वभावन

संस्कृतभाषा तथा कृष्णक अस्मिता पर दुख प्रकट करैत
सखीके कहैत छथि १) हे सखी हमर गमर छिभा गुण भा अयगुण
दूनुके एक का मतेत भएत दूनुमे कोनो अन्तर नहि बुझाइन छैक हम
भयन चतुरता ओकरा कतेक सिखान ओकरा भगा न हमर छोटे (लघु)
भए गेलहु २ हे सखी नीरा जनक दान पवैत छिअहु सत्तामे कतेक
न लोभर, सिक छैले भवत भडि, विधानके एको नहि गुझलनि एकटा
गमर ३) हमरा लोके देलनि। ४ ओकरा सरस कामकला कतेक सिखाउ
ओ त पूव कि पछिम सेहो लोके जेवत अछि रङ्ग रम्यक वरमे ओ
निद्रासे द्योतल भए नइल अछि ओकरा विनुओ जाल लोके छैक,

सेनाय सखि सब तन आभर मलय मंदिर जग
पद सखि सब रस रस निद्रा भए सन्दर
पुनः वचन १) अभावन
पुनः वचन २) अभावन
नहि दिखि ३) अभावन
समय आस नहि पूरव हम गेल द काही

१ नद सब २ सखी

राधा कहु १ इगल्लिरे वेधा ३ अनुमिन पाठः ४ मंगरि ५ पसरला
अगम्य दयान् तथा दह दम वान ललाह मेग कल आन राधा
नवनः पदक सेवा १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)
निद्रासे सन्दर १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)
सत्तामे पवन नीर नहि वर रस भडि जे भलक गेल वर नी
वाग लख नरिद ललाही छै १३) हमर एहन कस हित ओ लोके नहि
अछि जे लोका बुझाओत। तो समक साग पुनः वचन १४) लखत हमरा कियेक
विमल नद

सूच्य न मुनसि कमुम मयन नदने मुचने चाने
 तहो की धरय दुरुय दुरुय जहो भसहने तारी
 गरी हठे सोलिम लेन
 कान्द सगौर दिने दिने द्या तागदु नीद स २२
 पाक वगल दिन न मयसि वृद्धने न रतिमन
 मयन का जहो मीन करिअ वीले नता कन
 किहु किहु पिअ अम दिहह अति न कय लय
 अधिक अतने वचन वीन सवगम काय गोप ४
 नय अनुपम जे किहु होअए गे दिने दुह लोप
 प्रथम वम भौन धरि राग्य सदे कलागने तारी ५

१ सुनलि २ मने लजो ३ चोपि.

सखी मानवनी राधाक वीसिन छायी तो कयनय विहारी
 फूलक सेतहपर मुखसं सनेन लोहे छे अतिवत जो दुनिन छे जका
 नारी असदलशील वरोपी। जो लोहा दुखके चिक दूख दुख १ २ है
 राधिका तो एला हठाल सितह लोह है मृजल ३४ दिन १३१ मृजल
 भेल आहत छीने। तो हु राधा मयन रदियन १५ १२ मयन १३३
 हैन जोहे मयन छे तो रति लोह जो मयन ३४ हो गयो १
 भग होडुनहीं अछि मान कय न नारी मीन राधा कीन भाउ न पय
 ओकर वीसि भौन छाय (४) मयन कान्द पर राधाके कनक भाग्य दिन
 रीहह जे पीले दूग नहि १ अधिक कोन लोह कयनय छे १ वरु
 प्रयास करिये तं सवगय मुन वीन कयनय मयन ३४ मयन कयनय
 ५ नय अनुपम जे किहु होअए गे दिने दुह लोप
 दुहा गे दिने रहै न कय प्रथम प्रयास किह न मयन जो कय सदे
 नारी कलागने थिक

१ वम निहय अद अगला ३ से राखे सांगे डालो
 नयने रति धन वीसिन २ कजल सवि मने लोह
 वगल मयन सुन कान्द १ वीसिन न वीसिन दैत
 नकर भरे घन लोहने ३ से कसे जला दिनेस
 लोह गुन आग्य लोह ३ मयन मुखदु हगय
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 सोन वीसिन धर सुलेजा ३ वीसिन लोह नय
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१ निहय आग्य २ पराजो ३ मयो ४ गेद

राधा वीसि के मयनोपिन क मयन विरहवयथा सूच्य छथि १
 अय राधा कनु लोह आगल से देखि ह पदु हम कराइने जो नयन मेष
 मयन मयने वीसिन मयन नयन हम ककर वरणम ज ५ २ है
 मयन हमर वगल मुखदु जो कान्द सयन दैम लेलि राधन लोह
 जगल थिक ककर मयनय घरमे मुखनी ली रहए नहि मयि से लोहा
 दिनेस सवग अति ३४ जो मयनय लोह रतिव छे हमर मुखदु
 थिक छे ४

दिने १२१ कदा मुखदु ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४
 ३ कय मयन लोह ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४
 विरहवयन जो लोह मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४
 पुन मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४
 मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४
 मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४ मयन ३४

न ३४ ३ मयि

राधा सखीकें आपन प्रणय हस्तिक यथा मृगतैल इति (१) सुतैल छत्रहुँ भद्र पुरयक प्रेम दिन दिन अहिना बढ़ैत अछि जेना घनक कला प्रति दिन कलक कलक बढ़ैत भण्डि। (२) परन्तु स्वयं पाने पड़ुक जनका आदर छल आब तकरा संधे रहि गेल अछि भाजोर बढ़त तकर भाग नहि पड़ेह जे छल तकरा दास होइन गेल ३ तँ देवत अनुमान मे करहु बुद्धि होइत छैक तँ सुमुख ओकरा अपराध नहि मतैत छाये १४ बहुत भाग छल जे सब मनोरथ पूरत परन्तु हे सखी आब की बुद्धि छह सब भाग विचार गेल (१) अमृतकल जादूक जाशस कल्पवृक्ष सेवान (परन्तु कोना फल नहि भेल) तहिमे हुनक दाख नहि हमरी अभागनि छी। (६) दिवापति कहैत छथि घेर धरत सोर गुण स्मरण कर मधुरपति कृष्ण अवश्य पुरि अओताह।

यानि विचारनि नहि मतैत रगत शरण रहि
जो मधुका कुसुम त नील मधु विष मरिषि
मधुकर कर नहि मे
विषु हजरीओ रस निकलत जायत देसी मे
विषु कुसुम जायत जो नहि रहै अमल जानै
होइत रस केने मे काय मे
रिजे दिन दुनो देह दह जाय तेन बह विषु सखी
कोइहुँ किनु यम न बचै तकर नहि रहै ॥ १॥

मुद्रिकेतन २ मे

सखी कृष्णक उच्छेद दैत छथि (१) जे जीवग रमणीके छत्रक
तोरो नग अलनिमहु भाँडे तो चकर मल राखैत एकरा सब रमण करिह
ओहिना तेना अमर कलके लोहैत नहि अछि कउन मुह मज्जा मधु
पीयैत ओछे। २ हे माधव नहि नहि रसरस करिह जहिमे भी छिनु

बज्रकोटु दोसर घर लोहर घर भावर ३) मे राधा सिरीसक फूल सज
कोमल भाँडे भा लोह तेहने कोमल व्यवहारवाला छह सगिनीक इजिह
(अनुत्तिमक स्केन, अछि केचित्तेवास करदह नाहिमे भाँकरा कष्ट नहि
होइक ४) प्रेम दिन दिन दुनो बढ़ैत तँ बह जेना कालचन्द्र बढ़ैत
भण्डि 'येनोदहुँमे कोना अछि कथा लोके वज्रिह प्रमत्त मुद्रामे भाँकरा
लग नइह

रगत होना अनु नको रहि होइ स्वामी मे जनमा अनु कोइ
होइह मुवाँडे अनु होम रसमन्ती रसओ दुखा अनु हो कुलभोजनी २
निधन माइयतो विह एक पा लोही विगत दिह अभागतहु मोही ३
निधिर शरीर लागत रसधरा परबस अनु होम हमर विभर ४
होइह परबस दुखि विवरी राग विधाय हार कपोल लोही ५
भक्त विषयपति भड पार ६ दह सगुन होम विष दह गरी ७

हो न।

विचारी राधा विषक दसम दसम दसम भौन छथि १ लीक
विह जे रगत मे नहि होइत जे नम होआ तँ कैसी बुझी भल
नहि नमसो २ तँ बुझी होइत तँ रसिक नगरी लोह होइत जे
रस बुझिहोइत होआ तँ बुझिहोइत लोह होइत ३ विषयता अथ
नीलन ४ के ल परन्तु मईत भईह विषय भाँकरा मे गु भाँकरा जे
भाँकरा कालमे हमरा विषयत (स्वीये) दिह (ने वाकरी पति वीली
निधिर नहि नहि भाँकरा ५ परन्तुमे रसिक नगर सगरी भेला
हमर भी भाँकरा ६ भाँकरा नगरीमे भाँकरा लोह लोकर ७ जे
नगरी होआ तँ हमरा विषयक दुखे रह किन्तु तँ विचाररामना
रहला धर कोना लोही परभामे लोह दहि सकैत अछि। ८ दिवापति

कहेत छथि हु-हुक गहे समुदके पाणें टा पाव जाए लगेत छह, ऐसी
पेसिकाक बीच ई हुन्द जौन अरि चलैत रहत

पञ्चदश हर भगवत धवला जेते जेते एक पाव जलने
दुखे बोला भवानी जगत सिद्धि मिलत रह सही १
विष्णु भूषण दिग गिरधर विनु बिने कुमार नाम डगल
भलड़ विष्णुपति सुहा भवानी हर नाइ निरधन अरत गसाई २

गौरी महादेव सन पनि पायि दिनाय कौन छथि १, हाके पा इत
मुह छनि आ देह भस्मसँ उज्जर दपटप सीले २। सोते एकमे भौं
धधकैत। ३ भवानी दुखसँ दिनाय कौन छथि। हा हा हा हा हा हा
मिथारि स्वामी भोलादा ४ विष्णु भूषण छनि ना दिगो रस। विन
विष्णु नाइ आ नाम ईश्वर नाइ पर नाम डगल ५। विष्णुपति कहेत
छथि ६ भवानी सुहा महादेव निधन नहि लोय भे न सभार भोरक
स्वामी दिनाय

नहि ७ नगरी नीग पावने रह सीर
सोवकन आन गजान अरि रजित भइ भव
भगवत नगरी छिनि भौंने गौरी नीग पावने रह सीर १
कौन भवि रहवह दीने कौन सीर पुन चले राव २
कौन कर मासक भास भइ पावने रह पुन राव ३
विष्णुपति कथि बाते एत मुनि सारगणिक ४
हरवि नगरी दिग रह सुधीन सुहा सीर

१ नदी २ तीर ३ मुनि ४ गेय ५ भाव ६ री

सही नायाक दिगदश कलाके सुचैत छथि १ भौतिक लोक
नदी ब्रह्म नगरी अरि ना विरोधी राधा कल नरपा पदवि रहत

मुह २ ओकर कल सदा भवनी रहत छैक पुरायक किछु त कहत
केछु भले ३ दे माधव राधा दिगदश चतुर्दशीक चालहुसँ अधिक
भौंन हाइत गेते अरि ४ कौन सही भोकरा पयवेहाण कर रहति
अरि त वैभो ओकर भगवत दक्षि सिर धुनैत अरि ५ पैओ रासक
भास का रहले नाइ हस लौकीने दौवनि सोहर लग अगलहु ६ ७
विष्णुपति कहेत छथि राधा गचन मुनि शङ्खगणपति वृष्ण पदेक पैम
सुमार भवत पर पुन्दारन चोले दलति

यहनि १ पावने रजित भौंने अगलहु नका गत रजित १
पाव पावने राधा नहि सभे सोट कालह हाइत वीसक २
अने जवति भवनीन राधा सीर पार रहति हुन्द ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
निरहत अरि काल लुकावत गचन राधा सोह जलन भव ४
सबलहु भौं कालह गेन दुख पावने वनमा ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
निरहत अरि काल लुकावत राधा ५ पावने लुकावत पाव ६

सीर ८ सीर ९ हुन्द सग १० जलत

राधा वृष्णदे ३००० तन हाइ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सी पावने रहत १ स भव सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर
रजित भौंने राधा नहि हाइ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
वेमलहु १३ लोचन सीर क राधा १४ सीर सीर सीर सीर सीर सीर
जलक बीरत हाइ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
हाइ केरके हुन नगरी छल हस भवक लोहर अगलहु सीर पुडीन नदी
स दिगम काल नै नाइ राधा प्रेम अरत सीर हुन्द सग ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०
६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०
८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

दुलहन कहना पर तो दोल बनावन सर-रह ६ दियापति कहै उरि
तकर जीवन श्रेष्ठ दिख जे आनक दोखके छिपाए सका ।

पर-रह परदेस परदेस जात निनुय न करि म अयस दिन पास
१ १ १ एतहें लोकेन सखे विभाजन कथा २
भाल भन्द नलन्द हं नले मनुष्याने पाँदिके न जेनेन दुलहे बाँते ३
चरन पावनन भासत राग मधुरहु वचन कोरि म समधान ४
ए सखि जगदेन एते दु जाइ लोको कोरि न नयेक छह ५

द्विरहिणी बरादीमें काजुसिक इच्छा जेन लोके के दुलहेन
छवि १ बरादी न बयस सभ दिन धरतीमें रहै न भँडे न कर
आके भास रहै छैक ते बरादीके धमक जहे को लोका वस सखे
दिना २ ३ सखी पातेक उपदेश हम जेन जेन की
हे सखी ४ की लीक (कलक) की लोका न लेने ५ से भाले
दिपारि बरादीके दूदन गेल लहि कलक ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
सैनक आ मधुर वचन गेह मधुरसे ओके मन्का जेन १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
सखी एतहें लोको कोरि न नयेक छह ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

जगत परिम रन जेन मन्का कोरि म जेन मन्का कोरि
पाँदिके को म सफल भेल कोरि न नयेक छह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१ मन्का २ कुलुम रन ३ लोको ४ सखी ५ सखी

दुली पञ्चमिसारका टिकाभेसारिका राधाके कहत छाथे १ मेघ
जोरसे धरमि रहल आछे। दिनहुमे अन्धकार पसरि गेल आछे हम भाले
पटि गेलहुं जे राति थिय आ ते लोकर अन्धकार मज्जाओला २ पूर्वक
पुण्यसे का न (भञ्जिसार सफल भेल मेघ दुल दिस लाज रखलख खूब
अन्धकार कए) ३ हे सखी हम भाल जल (अजान) की कदि महु
दित देखार हम हथीक चोरि कएल गेह कृष्णक ओला पहुंचाओल
(४) हम दुली शिकहुं हमर बुद्धि भाँसे गेल। दिन देखार के कामिनी
पिआक लग जाए सकैत आछे ५ एक दिस लोकर भ दुल आ दोसर
दिस कामदेवक सहकार जनेक जीवी लतम रग देखी ६ दुलिक वचन
हुने सुन्दरी लनाए गेलीह जे लोका लोके भले दिन देखार पियनके
समीप भएलहुं।

वह भुवकम जेन एते दुल कुन मन्का मन्काओलहुं भाँव
पारिधि हरन साहस १ के जल कोरि गोरे करव लो २
गह जेन दुल तेनन विज मेघ जिय राखी लोका मन्का कोरि ३
लहुं जेन लोका मन्का कोरि मन्का कोरि ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१ अपनस २ जेन ३ रजले

राधा दुलिके उपदेश है १ छवि १ लोका सापदि २ म
आर पाति जेन ३ लोका सखी लो लोका कृष्णक लग गेलहुं दुल दुलिके
कलक लोको ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

लखी राधकं कृष्णक विरहदशा सुनवैत छथि । १ कर्षिनी
 मन्थ बात करैत छिअहु सुनइ हे शान मनकी अछिअं जनु यावह । २
 बडि निमुर छइ आ ओ कृष्ण तोहरार पेमसम्भा भए गेल छथिअ ओ
 तोहर विरहमे सगर रानि जागल रहैत छथि ३ राध तो स ज्ञानभो के
 अन तात बनलि छइ अ कृष्ण लोग विरहमे टिकल छथि ४ ओ मदी
 तोरे दयाल करैत रहैत छथि तोरे जग रहैत रहैत छथि आ तां गप सक
 ठाम करैत रहैत छथि ५ तोरा प्रानि कतक पेम छनि ने इसो की
 कहिअहु। तोहर स्मरण करा का ओ तोर दारैत रहैत छथि। ६ ओ नित्य
 तोरा लग अवैत छथि आ लग दण जाइत छथि सरा देखैत आ हँसैत
 लखी लहि होहस छति ७ ने फूलक मावा एहिरेत छथि ने केस बन्दैत
 छथि। अकर लकासै तोहर उठैत दुखैत रहैत छथि

भाषा में लिखिए कि आपने इस विषय पर क्या सोचा है।
आपने इस विषय पर क्या सोचा है।
आपने इस विषय पर क्या सोचा है।

सोचिए कि यह किताब किसे पढ़नी चाहिए और क्यों।

1. धुरा 2. कर्जा/कि।

महिला सन्निवेश योजना का लक्ष्य किन्हीं एक पक्ष में ही न
 भक्ति (आत्म धर्म के प्रति ही) मात्र होना है जो कि (अन्य
 तत्त्वों से) एक ही पक्ष में। सन्निवेश का अर्थ सामान्य भा. में ही
 लागू है। १) सन्निवेश का अर्थ है कि जिस मम की
 दानत वहने वालों में सम्मिलित होना है। इस पर कतक लागू है।

4

असुर ओटि गेलेंक १) कक्षा की ऊपर देवैक। इसर वन के पशिआएन।
कासदेव तें अमान से गिटिन उथि।

1. दूरस्थ घरत लहए तब ठाक वसन्त न रात नवे गिरताम ।
 2. तबहिं दूर जा नहि विचार की दले घर न रहं अन्धार ।
 3. मधुर बचने मति कह्य सुनी सुपहु रास जर दोस विचारी ।
 4. मे लागी कह गुरुक निधान अन्धहि भाने बहुत अभिमान ।
 5. कहे बिसरिनि न गुरुम गिराने लखनि लोके की फलपाटी ।
 6. अन्ध विचारनि गए रास जा सिद्धिनिह नहिंम देखि गान ॥

१. अतदि २. तदि रद गग ३. सुणतिधत्त नः सँ

[illegible]

कुछों को सख्त होकर कहें कि मैंने तुम्हें छोड़ा है, मैंने तुम्हें छोड़ा है।
उन्हें बतला दें कि मैंने तुम्हें छोड़ा है, मैंने तुम्हें छोड़ा है।
मैंने तुम्हें छोड़ा है, मैंने तुम्हें छोड़ा है।
उन्हें बतला दें कि मैंने तुम्हें छोड़ा है, मैंने तुम्हें छोड़ा है।

ने जरे तक कर भी पनहार कुम बांने अनु होन चिज १
हमरे बचने सधि दु क रस हटय कनि कर इति गिरास ६
अति २ अहविमि ३ उच भो ४ करनु ५ भाये दोले दुरा ६
फुजी।

सखी कमलि राधाके सौम्य छवि १ उपजला पर कृष्ण पाने
आभोर बढैत अछि (कलक नसाफूली भेलापर धीति दैत छैक १ नागरिक
चतुर नायकक गुण (लीक प्रेमो भेलने नागरिक प्रीति बढैत छैक, २,
वसन्त कलुमे कोकिल काजलके सुन्दर बन्देन भोडे ३ लखी क-ने बंद
बिहार करैत अछि ४) ५ राधा के असहज छह लोभमे सहजसेन एक
अभाव छहु, लजस छडह, लोभ भयता दुखयस नहि भौत छहु, वास्तव
मे दोष लोभ छहु ॥४॥ लाग सभ कलुमे सतल ॥ ग रभस धाटैत अछि
नी तकर धोकेपर परिह तेला कर साहसे दिवत द्युतक क-न
विकार (रभ भग लोभ हो ५) हमर वल अगले लजस हर छह हटय
छोलेके कान्हके विनुप करह

अशिशुन ले लजे कर भूम राग १ लजस कर २ ल होना ३ ४
गुरु जेत गो बल ५ कर ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
विनु नाच विनु के को न बच वि १ जेले २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
औ कलक नसाफूली भेलापर १६० एना अछि दुनो हिसा करै १६०
नहि हुनो टासत पर कर लज १६० एना अछि दुनो हिसा करै १६०
भालक जानी म के अछ भालस भाल भाल सब केनी म ६
भालहु विनयली दुली रोह दुन अछि क-वा हो १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
भालहु विनयली दुली रोह २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

१ सुभ क- स- २ विमो आम न ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
हम ५ सुभयो ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

सखी राधाके भक्तिभासक हेनु प्रेरित करैत छाथे १ हे
अशिशुनि भक्तिभासक हेनु समुचेन सान सिद्ध करै। ततमत कएने
काज लोके होयहु ॥१॥ गुरुजलक आ पडो सी सभक दर नहि करह
दितु सादस कलने मतोरथ पूर नहि होइन अछि ३ विनु रूप नच जएने
सिद्ध नहि भेटैत छैक विनु गेने लक्ष्मी रूपय नहि भेटैत अछि ४
औ कृष्ण पापुष्य धिकाह आ लो छल्ली शेकह दुख भेलन
काओनिहारी मध्यस्थ भेलि हम दूनु दिससे गारि दुखयन। सुनैत ५।
॥५॥ हमरा तं इष्ट इ-छा रहैत भलि जे दुनके परस्पर दर्शन मिलन
हो ॥ लोहर बढत भाग्य होयहु ॥६॥ भातक कारणे आन के भाग्य
अछैत अछि। सभ भात सधने भेल गइत अछि ७ विद्यापति कहैत
छाथे ॥८॥ इम दूनु स शिक ॥ दुनक मतमे मेल करवा ॥ विद्यापति कहैत
अछि ॥ ललक मुनह ॥ गी ३ ललह लज भय ग-वि लोके ब्रह्म

५॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
६॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
७॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
८॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
९॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१०॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
११॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१२॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१३॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१४॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१५॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१६॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१७॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१८॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
१९॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
२०॥ विमो आम न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

१ मे १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

दुखी विरहणी हर पर भाग्य धराहीने भैत अछि १ ॥
पथिक हसग रूप डोले लखन वास भेल काँच पबल भा लेन अछि
का ६६ दासी भगवत स ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
पारदस गेवह ललक गेल खोरे बरख भा गेल ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

वास मंडवामे लाज होइत छैक सरस नै लसु रहैत भण्डि नै नल्लहि ॥ ५ ॥
 गिआ पाँच सात गौत घर बागलै देवलि स पदस गलि होइत ॥ ६ ॥
 पड़ोसी सब योजन भरि दूरमे बसैत भण्डि ॥ ७ ॥
 साँझहि अन्तराक साँझमे नुकाय रहैत छी पल्लविले कंदब भेकाय दैत
 भण्डि ॥ ८ ॥ हमर मन छन छन उठैत रहैत भण्डि गौतनक रस काँत
 करब कामदेव जाइत रहैत छथि ॥ ९ ॥

[illegible]

5. इतिहास 2 संयुक्त संघीय राज्यों में

राज्य के राजधानी में एक नए मंडल में राज्य की स्थापना होगी

• हमारा दुर्लभ अमूल्य ज्ञान के लिए हमें अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।

जैसा आशयसं नोमानाल भिन्नानि वक्ष्यामि वक्ष्यामि तर्हि तत्रैतन् भवति । २
 हुतकं सप्तजं मूलतः मूलमेव कर्तव्यमिति भावः । तत्रैतन् जैसा कमलकं मधु
 पिष्टि मम उदकात् तत्रैव तस्मिन् पल्लवते इति । ३ आइ राधाके जाइन देखल
 न हुतकं रूपपर मन आसक भए गेल आ तस्मिन्नुहिसे अपन गुण गोरख
 भा घैटे सभ पढाए गेल । ४ ए पर आकृष्ट मन हुतकं स्तनरूपी
 पदतक छात्रमे दैने तर्हि अपराधे कमदेव हमर मनके मान्नु ततर्हि
 वदति राखल । ५ हुतकं डाँदेगतयुक्त नयन तरंगित धञ्जल छल आ
 भौहमे भवति उवाते तस्मिन्नुहिसे गुण कमदेव जे लीला फल से जान
 तर्हि नाले सवेकु । ६ हुतकं स्तन पर चढने लेख भा शरामे भौहके
 धर छल । से लख जैसा भस्मित । ७ तत्रैव देह वाला गीतक साथ पर
 गगाक धार हो । ८ राधाके पायाक हेतु राम पाए तें भागी बढाउने
 गेलनु दक्षिण पापर पदार्थ लख भए गेल तस्मिन्नुहिसे कमदेव बाणसे मगर
 देह गोर देखति । ९ तत्रैव राधामें गङ्गा हो गेल । १० जे देखति । ११
 हुतकं तस्मिन्नुहिसे राम गुण युक्त हो तस्मिन्नुहिसे लख

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम्
 ॐ कृष्णं श्यामाङ्गं वन्दे
 ॐ कृष्णं श्यामाङ्गं वन्दे

चर की लंबाई २ मीटर से अधिक है, १ मीटर से कम है

[illegible]

प्रसन्न करल तो तू दिन दिन हमर आशा भरा करैत रहलह (4) मतलबसे बहुतो सरस फल अछि किन्तु हमर केवल मातृताक अधुपर मरिहल होइत अछि तौ हमरा नहि चीन्हि आल आल ताकि पाछाँ वीआईत छह (5) जे समय गति जाइत अछि से फेर हुनिके लोह भेटैत अछि भवन्तर जेति गेलपर पधातय रहि जाइत छैक।

विद्वन्मणि अछि तन्मिति भवेति जति जेठकरा दुवरी छति गति ।
 नीचांसि हो केच घन जग सौख्य भुवि गेल दहल (1)
 मधुम सुन्दरि नयनक बनि दुवल पौन खोपर झार (2)
 रह जाहे सवक वरमस पैस पावक भविष्य पगल (3)
 तेहरि विमिति गति दूर गति, कल भवि कलमति कुल भवेति (4)

1 उपर 2 लेभा 3 कलक 4 पौन खोपर दुवल झार

दुनी कृष्णके जन्म दैत छति (1) विद्वन्मणि राधाक भविष्य
 लोके नीर झरल जे भोके विद्वन्मणि गति नहि भग गेल भाउर नी नदी
 छति छति दुवरी भग (2) जग सहेन दहल पगल छति पगल (3)
 विद्वन्मणि भवि दिस होइत दहल पगल (4) सवक वरमस पैस
 पावक भविष्य पगल (5) तेहरि विमिति गति दूर गति, कल भवि
 कलमति कुल भवेति (6)

अथ जगत दहल पगल (1) कल भवि कलमति कुल भवेति (2)
 को नहि सुन्दरि दहल भवेति नहि जग सहेन दहल पगल (3)
 हरि होइ कलमति कलमति दहल पगल जे सवक वरमस पैस
 पावक भविष्य पगल (4) तेहरि विमिति गति दूर गति, कल भवि
 कलमति कुल भवेति (5)

कलमति कलमति से थोड़ सिद्ध सिद्ध छति जगत भवेति 5

राधाक प्रथम दहल पगल प्रथम कलमति दहल पगल (1)
 1) राधाक अथ दहल पगल कलमति दहल पगल (2)
 कलमति दहल पगल (3) कलमति दहल पगल (4)
 कलमति दहल पगल (5) कलमति दहल पगल (6)
 कलमति दहल पगल (7) कलमति दहल पगल (8)
 कलमति दहल पगल (9) कलमति दहल पगल (10)
 कलमति दहल पगल (11) कलमति दहल पगल (12)
 कलमति दहल पगल (13) कलमति दहल पगल (14)
 कलमति दहल पगल (15) कलमति दहल पगल (16)
 कलमति दहल पगल (17) कलमति दहल पगल (18)
 कलमति दहल पगल (19) कलमति दहल पगल (20)

अथ कलमति दहल पगल (1) कलमति दहल पगल (2)
 कलमति दहल पगल (3) कलमति दहल पगल (4)
 कलमति दहल पगल (5) कलमति दहल पगल (6)
 कलमति दहल पगल (7) कलमति दहल पगल (8)
 कलमति दहल पगल (9) कलमति दहल पगल (10)
 कलमति दहल पगल (11) कलमति दहल पगल (12)
 कलमति दहल पगल (13) कलमति दहल पगल (14)
 कलमति दहल पगल (15) कलमति दहल पगल (16)
 कलमति दहल पगल (17) कलमति दहल पगल (18)
 कलमति दहल पगल (19) कलमति दहल पगल (20)

सखी राधा के अविभाज्य दहल पगल (1) कलमति दहल पगल (2)
 कलमति दहल पगल (3) कलमति दहल पगल (4)
 कलमति दहल पगल (5) कलमति दहल पगल (6)
 कलमति दहल पगल (7) कलमति दहल पगल (8)
 कलमति दहल पगल (9) कलमति दहल पगल (10)
 कलमति दहल पगल (11) कलमति दहल पगल (12)
 कलमति दहल पगल (13) कलमति दहल पगल (14)
 कलमति दहल पगल (15) कलमति दहल पगल (16)
 कलमति दहल पगल (17) कलमति दहल पगल (18)
 कलमति दहल पगल (19) कलमति दहल पगल (20)

द्विजु हटयइ अरथ दिहुन नैसन हाटक मोह ।
अथ पय पंरचय भेले बसि दित दुइ धारि
सुरत रस खनएक जाइअ नय जीव रह गारि ॥ ३

1 परमि।

शतयौवन नायिका सखीके अपन जथा सुनवैत छथि । 1) पूर्वमे
सुनैत रही जे पटरानी बनए बोपा बोरा सोन नाम २) नगद नादि
आओत पाय तँ आकाश भरि पसरल आँखे मुदा ओकरा सुपम भरिके के
भाँले सकल ३) हे सुन्दरी आब हमर देख की देखैत छई देख आब
तेहन लगेत अछि जेहन माख आ आँखेमे रहैत हाटक घर ४)
कुछाहमे अनुचित रीति ५) दुइ धारि दितक सियनज प्रसीम परिचय आ
गेल। सगळक रस तँ धने भरि भाँगल पान्तु कलक सोन भरि नखल
रहल

दि अथे धूव पैसैत नहि भनि

हाट दूहने भाइगल देखत हाट सरावट ॥ १

दसा शरक बाँध जखी बेसल गायु अरुम ॥ २

३ अति नैजहि कल ॥ ३

हाकु मन पहि सँझ करई मातादे' हाडक विरल ॥ ४

देना घटक बरहल' टावल अटिअ जेसल अति ॥ ५

आबे दिते दिश नैसन कएलए बाप मरिअ कहे ॥ ६

1 परदा। 2 नैजहि। 3 कल। 4 मातहि। 5 घटल। 6 बरहल।

सखी रुमलि शरक के बीसैत छथि । हाट दूहलए भाइ
नखल (चोट) भरि जखन अछि सस केओ मल भजन कुलमछैटाक रस
करैत अछि दुना नामक पक्षी कलहु शान तखिरे देन क र नहा नहि
बा नह २ हे सुन्दरी मुह फुलाएछ छोकई अपन हृदय हाकुनल मोझ

का लेह ई बाँध मानह जे वक्र रहने विरोध होथे करनहु । 1 देना
नामक पक्षीक बजहुल नामक गण्डपर देखल अन्है साप आनिके पोसन
आब तँ दित दित तेहन नीला करैत छह जेना बाप आ मरिअक बीच
कानि रहैत अछि

दि सम्पूर्ण जीवनक भाव अस्पष्ट

हेम सस चान्दल अनी चरम धेरि उपचरिअ सजनी

तदअभा न जा नसु आषी बाहू भौखध भितर देसाधी ॥ २

अबहु हरह धरि भोई तिरति युवति नम पाउब मोह ॥ ३

भबधि अधिक दिन लंगी मून्त नयन मुख चानल उपधी ॥ ४

कलक नखल मोह धरि नहाए निझाएल दीव ॥ ५

उपर। २ मोह, ३ नयनि ४ निझाएल।

मर्वा सधाक विरह दश कृष्णके सुनवैत छथि । 1) बरफ मन
शीतल चानल अछि सधाक हाटपर लेदि सोन शीतोषणार कणन गेल २)
तैमी ओकर व्यथा जनत दूहि भौखल खाये भौख आ ओषध बाहर
नखल गण्डा कलहु करी ३) हे कलह ली अखहु भावि ओकर देखह
नखलहि युवती सधा सौंति आ ली ओकर पाण बग बाक अस धर वह
४) अर्वाधि विरहा बहुत दिन भए गेल से लेब क सधा उरीछे मूजे
लेबक आ मूमे बाँध अई देखक ५) ओकर पाण कलहल आ गेल
छेक (कलहु) कण पाणान्त भए सकैत छैक । मानह दीप केवल घनी
नदणके सिद्धाए गेल

हृदयक कषट भेल नहि जनि घर पैसैसि हे दीने हम अगले

मुपुख वनत मझाई चेउहव गुन खरिअ दूरा गीचणर खान ॥ २

आबे हमे कलह बोलव की बोल हसक गलत हवणन मी ॥ ३

कके परमाणि लक्ष्मी तदि वचन कौशलं पुनः ॥ १ ॥
 पलायं गतायह तदिहके लक्ष्मी केने तदि सधय भवत कुमान ॥ २ ॥
 तदि अनुमाने लक्ष्मी ब्राह्म ते भवे भवत लक्ष्मी चय ॥ ३ ॥
 तद्यु कर्हिनी भन कहइते आन दो गदम के लक्ष्मी ॥ ४ ॥

१ ममथ २ अनु ३ हरी

सखी दूती कृष्णके गजन कौत लौंये ॥ १ ॥ कृष्ण हम लौंये
 हृदयक कण्ट नदि जनि सकलहु लौंये हम परतारी आने टोकाहु ॥ २ ॥
 भद्र पुरुषक वचन भा व्यवहार दूरे समान होइत भडि ॥ ३ ॥ तो ते हः
 धाउने कए ओहि पर लौंये छिहैत छहा ॥ ४ ॥ हे कृष्ण भव हम नया की
 कहिआहु हमर ते हयक वचन हाग गेल भेल काउ छिहोद गेल ॥ ५ ॥
 हे देव मुगारि तो वचन कौशलक एले नागरी तपि वचनक शिष्टक
 परतारलह ॥ ६ ॥ कृष्ण काके ओकर भवता पर पण्डित दहक एतए केओ
 कुगममे लौंये रहैत भडि एतए सभ शिष्ट सागर लखर भडि ॥ ७ ॥ भद्र
 अभद्र व्यवहार नदि कह ॥ ८ ॥ तो तो गदम ओकरासे भेल कौन कह ते
 ओकरा ओकरा लख ओकरासे मिलत भवत ॥ ९ ॥ लौंये भवत ॥ १० ॥
 भी मल ६ ७ मलमथ रहैत भडि ॥ ११ ॥ हे कृष्ण के लौंये
 नी भडि ॥ १२ ॥ दिगीत कहते देम द ॥ १३ ॥

वचन भजिअ मम भले लक्ष्मीके दिगीत ॥ १४ ॥ भवत मम लक्ष्मी ॥ १५ ॥
 हे पुरिनि किहु काह म हाग ओने रहत दह टोकाहु ॥ १६ ॥
 सखि पद भवतेय लक्ष्मी कृष्ण केम ॥ १७ ॥ पद लक्ष्मी ॥ १८ ॥
 जगदी पगीत जग लौंये भवत लक्ष्मी ॥ १९ ॥ पद लक्ष्मी ॥ २० ॥
 हरा सागर रहत मृद गगन लखल लौंये गेल ॥ २१ ॥ पद लक्ष्मी ॥ २२ ॥

१ ममथ २ अनु ३ हरी

लौंये ॥ २३ ॥ लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २४ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २५ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २६ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २७ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २८ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ २९ ॥
 भवत मम लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३० ॥

लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३१ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३२ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३३ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३४ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३५ ॥

१ ममथ २ अनु ३ हरी

लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३६ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३७ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३८ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ३९ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ४० ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ४१ ॥
 लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये लौंये ॥ ४२ ॥

१ अक्षर

1. कक्षा 2. विषय 3. कक्षागत क

10

भक्तकर्म ? इति । अथानुदण

चतुर्थ दिवस दिनांक २०/०५/२०२० को. प्रत्यक्ष पालन मार्ग
 दुध निर्यात लक्षाद्वारे वृद्धि होईल असे अंदाजित
 आहे. या बाबतही असे निष्कर्ष लागू होईल असेही
 मान्य आहे. असेही अंदाजित आहे की, या दिवसास २०/०५/२०२० रोजी
 या- दिवस असेही अंदाजित आहे की, या दिवसास २०/०५/२०२० रोजी
 दिले जाईल असेही अंदाजित आहे की, या दिवसास २०/०५/२०२० रोजी

- 1 छात्रलि हति 2 कुच 3 पूर्ण 4 मने 5 हृदि 6 तव
7 भास 8 ठाट

सखी कृष्ण के गंधक रूपक वर्णन सुनवत छात्रे (1) ब्रह्मा
कुम्हारसे घैल दयाक विधि पाद्वेष्टा जलिके कोन सौत सखि (2)
तकरा दुइ बेलक सांगमे दारि सलधर खभाजे कुम्हरी दुइ जूनी
धलाओल। रूपक वर्ण अधिक की करवहु है काव्य कवदर जल सधलहि
देखि तेह बदन मुउ कमल मन निकसेत छैक चार मने विहद धम
न्यागि देव कमल भा चान दुक कस एक लम लई परन्तु पल्लु द्वी
एक ठाम अछि राधा साट दल सँ छिजुवाले हरिणी सकल दिन रात
गहर बाट नहिँत गैल सखे

भास काव्य द्वा विरचन के जग होय कहिने ज म
आल के दाने जल जल जल जल जल जल जल
मेरे गुरुदेव कि गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव
मुकल देव देव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव
आलो गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव
मुकल देव देव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

- 1 मरुतव कुच 2 मरुतव कुच

राधा कृष्ण के उल्लास छैक छवि न छिजल सखि
भासभास करै न जल जल जल जल जल जल जल
सा वरध कीये सकैल सखि 2 सात न दल जल जल जल जल
आछि न ओ गुरुदेव कहैल अछि पहर ते सहन चरहरा पुन
अनुक जल साट मने छहु 1 जो दलुत दल जल जल जल जल
गुरु ते दलुत स मरुतव छहु 1 जल जल जल जल जल जल जल
छहु 4 भइलोकक प्रेम सौल मन होइ सखि भइलोकक सखि भइलोकक

हास नहिँ होइत अछि 5 श्रीमते कलक दानु बजवहु मे लाज होइत
साखि लोक जेवन कान करैत आछे केहन कल पदैन सखि 6 राधाक
हन दान मुनि कृष्णक सल्लाप भेलनि 1 1 1 1 1

8

के जल प्रेम भइल सखि अनुभावे वृद्धाव ग लक सर 1
खाने दिव्य सखि हो परकर नम मरुतव ओ देखितहि सखि 2
जल सब सल्लाप सखि जल जल जल जल जल जल जल
नम मरुतव सखि देखितहि सखि बल कए कृष्ण चलभास सखि 4
गुरु करम धरम पा साखे सखि सखि सखि सखि सखि 5

- 1 भासभास के धार 2 गुरुदेव उदगार 3 अथ 4 सन्दिह

राधा कृष्णसँ मिलनोपहारि दूकी के उल्लास दैत छवि 1 2
कहैत अछि जे प्रेम भइल सखि धार धिक भासभास पानी भेल ते
सखि नहिँ मरुतव सखि दिव्य 2 विषय सखि कोनो परिहार भास
सकैत अछि किन्तु प्रेम दल सखि होइत अछि ओ न देखितहि सखि
दैत अछि 3 ई सख कल जल जल जल जल जल जल जल
काव्य परन्तु काव्यमे तो सखि सखि के लुगले लुगले सखि धरम
छसि देखि तो सखि सखि 3 सखि सखि सखि सखि सखि सखि
ते सखि की कहैल तो सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि
एकर सखि अछि केवल सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि
सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि

8

होइ सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि
सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि
सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि
सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि सखि

• बंगाल का विद्रोह

5

27

अज्ञां खेत्ताः ।

4

कहति ८ धृष्टि ३ मिमि ५ गी खल ४ सुप्रभा ७ र ६ ७ १५ १०३
५ १ २३ ७ ४

कवि विवेकिणी गीतिकांशः ॥ १ ॥ चोदयतीत्युक्त्वा
आयनं गानं सन्तु मुहं नरहन्तरीं परं गीतं ॥ १ ॥
कलत्रं गायन्तं हो ॥ २ ॥ चोदयतीत्युक्त्वा गीतं गायन्तं सन्तु

की कहल से फुरत नहि छैक कृष्ण खेनु मगराथेहि विमुख भए गेलसिन
 १ दिनगते अखिसे नोर झहरैत छैक मानू छञ्जन पड़ैत मरिचि हल
 सजिलि रहल हा ॥ ४ ॥ देहमे नल दिखिन्न छैक भए देह दुवरा गेलैक
 अंगे मानू फूल मुखए गेल केवल लौख रहि गेल हो ॥ ५ ॥ झुकिन
 झुकिन पाणसकले सपस्थित भए गेल छव विधाएनि कहैत छथि
 दूरी ॥ दिनु सहने ॥ भानक हित करय सम्भव नहि
 विरागति कहैत छथि हे श्रेष्ठ ललक राधा मुज्जा धीये जने रहि कृष्णसँ
 मिलन होएबे करतहु

५५

अथ न भानति हो मगराथे न भए न विनल
 लोभ परेहनि मुगहि नइय धके कि जेकर दुख ॥ ५६ ॥
 नि मधुकर ॥ अनुकथि मगराथे न भए न मज
 एहने झरिस लमन सज्ज भो भो सैली न भइ ॥ ५७ ॥
 कर मधुकर दिह गेलन जयने भानि न भो न भान

कर ॥ २ ॥ न लो चरि मगप ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

सखी भकर याने कलकें वृत्ति ॥ १ ॥ न छी माली
 कुमाल ॥ २ ॥ भनि न ॥ ३ ॥ भकर न भान म मज्ज नहि जय
 हे रकेसल गान्धु भकर लोभ छैक हल नल नुनद रहल ॥ ४ ॥
 न ॥ ५ ॥ लोभ छुडि रहल वल सुन रहल नुनद ॥ ६ ॥
 १) हे भकर ई भान छैक कोन व कलकें मकरन्द नहि हल न छै
 २) नलहि लो भान मज्ज के नल रह हो लोभ नल नहि भो
 मज्ज वदल छथि भनि मज्ज के शिक म नहि नल भनि ॥ ३ ॥
 हे भकर नल (मज) के रद कह भानि मज्ज उह न मली भनि
 म मज्ज म भनि मिलनहु से भान नहि नहि

५५

जबो छिनि नहि ई भनि नहि एतु हरसि किल ॥ १ ॥ भनि
 मल के कल धा नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ २ ॥
 भानल मुकुछि करि न केन हल मज कि नहि नहि नहि नहि ॥ ३ ॥
 अइसने भनि नहि ई देवहल पर पीन जोन थिय ॥ ४ ॥
 भनि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ५ ॥
 भनि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ६ ॥

१) हो भानि मगप ॥ २) मज्ज ॥ ३) न

सखी शयन सदा कलकें प्रेममे फेरव न रोहल छथि ॥ १ ॥ यदि
 भोला भनि नहि देखि नहि ललक हल मज्ज भनि नहि नहि नहि नहि
 भनि भान दिह नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ २ ॥
 भनि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ३ ॥
 सखी नो कोन किलक कीन नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 एहने देह दशमे ई नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 शिक मज्ज भनि धाम मज्ज नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 भानि मज्ज नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ४ ॥
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
 नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

५५

१ आभार २ परचा ३ १ चुन ४ लेंच ५ पा ६ सनहि दूरी
बचने जाहि जे फल पावन हीरा लाग नहुं ते

सखी साथ के पण्यक हेतु इन्सुक कण्ठके दुखवैत छाये
चन्द्रमा अकासमे छाये तथा सभ सही लताहे छाये। मुय छकट रूपमे
उदित होइत छथि। शोकक पथक सुमरु अचन छथि। पहिल सभके
पानपिके (पसन्न कएके, के आनि सकैत अछि) यहुन अनुपम स्तु
अछि किन्तु जे वस्तु उपभोग हेतु उपलब्ध नहि हो सकरा तिस टकरकी
समझावे कोन फल। अर्थात् तथा तोरा हेतु दुखैत छथि जे अपन पुरुष
नर समुहके सोखि सकैत अछि। सुभा असुके मागे विशय ज्ञान का
सकैत अछि तथा जे जल भा स्थल दुनोमे लागी समाप्त होइ जल
सकए सेह एहि नारीके पाम कर सकैत। विद्यापति कहैत छथि ई राधा
भ्रममे नहि पड़ै पथरमे हीराक भ्रम भा सफल दूरीक पथक रिजकर
बूझत एका विस्मिद भावना होइ।

४१

पहिलहि वाम जो गुण कृष्ण भोजन कर भावभ्रम
सखीहि गढ़न पुलक अरे कहे सखीहि नदिये वीर कहे
ए गणेश नाम कह्यो हो लखे जो हक जग दुख ननु लखे
श्रीकृष्ण भव भव भव भव भव भव भव भव भव भव
बहुलवत्त नवकम अरे भव भव भव भव भव भव भव भव

विद्या के कर २ पुनके भवि ३ कवच ४ कला

राधा कृष्णक सम्भोगक वर्णन सखीके सुनवैत छथि १ ई सखी
कृष्ण पहिले इला रूप। छुपति तखन भवि राज भव भव भव २
एकदंतेमे काजदेव हमरा शोभा लें सगर देह भवि देवलि भा हीर वन्द
विनु फलवलिहि कृति गेल। ३। ई सखी तोरा की कहवहु लखे हल
अछि वाक्यक कथा हमरा लहि पूछह। ४। योगी हव भवभ्रम सोखे।

एविपन्न स्तनसे नह गढ़ाए दूरी ५। आनंदगत तलेक जोरस का लखि
जे दहिक कदना फुटि गेल अपनो ऊर अपन राशमे लहि रहल

४२

नके सिद्धेन जे मोतेमान अलखी गुन फल के लहि जान १
तोहि बचने कएल गच्छे कोन भुन लहि भविनेन देह २
तोहि बहुवन्तम हजिह भवनेन वफाहु कुलक धरम भवि होने ३
कलक गलगत गहरा लागि सखीहि लखि भवनेन जहि ४
धन्य वन्त सकल भव काज माहि अरे गच्छेक कहैति यदि लख ५
दूरी कलक सखि भव सार विद्यापति कह कवि कलकहार ६

अदं नहि की कहिती

दूरी कृष्णके उपराग देन अछि १। तोरा की कहवहु कोहिक
नकल बकरा बखवाक शक्ति हो। नलहिसे फल भवैत छैक (नेहन ज्ञान
नेहन फल) ई वान के लहि जनेत अछि २। तोरे वान पर विश्वास
कएल कोभाक भवने वान देह वदरा। ती गुनसे वदलह ती बहुवन्तम
(वदने लखीसे दम भविनेन १५६। हमही वकलेनि श्री ने ई वान जहि
बुद्धि सखलहु श्री देखी यथ कल पम गमसोलक हम तोरे लेख दूरी
दिस दूरी रहवहु भा सगल सखि जहिने गभाओहु कलक धन्य जल
३। सल कल सखि भव आनर वदली लखवहु अख हवर लख
होइत अछि कवि कलकहार विद्यापति कहैत छथि दूरीक गहरा सोइ
४। न इल।

४३

आनन भवन बानन तीर सखिहि भवन गान्धारी
विद्या भवने न विद्यास सखि जहिने वल तेजने वल २
॥ १ ॥ न कर लख अछिने वल दूरी कर ३
कुचसिखिल करन सिरी फेनु शिकरीत कलकहार ४

५ सं ३ गुण धर्म ३ मरुत ४ अमर ५ अमर

सखी राधाक रमणीय दशाक वर्णन हनकरि सुतबत छांये है
सखी नोहर अगोखि लसणल आ लज्जाओउ छहु मंगल चाल (मह) आ
चकोर अगोखि। भगत विवि मातन हो। (२) तिखल ओह रिखाम ला रहल
अछि। मानू रणम विजय पाछि काउदय धनुष लट्ठा टेन द्योदि। ३ द
राधा ली लाथ लदि करह लोहर गट्ट वल्लोदेस मंगल चाल रमण। ललक
भर गेलहु (४) लाल पर लखलाल शंखधमन छहु मंगल भक्तक पवनप
पलाश फुला ल हो। ५ पसरोल मंगल आ भेल रमल छहु क मंगल
अपन मज्जेश हंसिके प्रकट का देली

रक्षा कायदा का तहत आगार अधिकार कानून के

संज्ञांते संज्ञां न संज्ञां अ संज्ञा

[illegible]

क.क. $\int_0^1 x^n + \sin x \cdot x^2 dx$ का मान ज्ञात करें

ਮੀ ਜਗਦੀਪ ਸਿੰਘ ੨੭% ਮੁਨਾਫ਼ਾ ਦਰਜ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿ

डा. सुनील कुमार शर्मा

[illegible]

1. अति 2. मित्र 3. कवि 4. गान्धर्व 5. अति

[illegible]

मैंने मेरी भगिनीन टैरेक कामवासना से ही इस इतिहास का पथ थिक्का है

कौत्स वसन्त पीये सौमह कोहुना भूख मेलबहि एहैं छनि । सरस
कवि षष्ठ्यापवि कष्टर छवि । सक कोतहु अन्न नहि भठि राजा ।

ਸੋ ਕੁਝ ਨਾਸਰ ਸਾਧੂ ਨੇ ਚੀਲ ਨਾਸਰ ਨਾਸਰਿ ਲੀਓਨਿ ਸਭੈ ਚਾਤ ।

जन वैरि सजले कह्य भुझाए। कान्त धन्य धरम दीये गए ।

सुन्दरी २५ गुल्फ सभ सा आदि भान्न रा' भइय पसर ३

सह्य तन्वन्ति वृद्धास्तेषां तं ह स्तु प्रतापं पश्यसि मां ह ५

प्रियता के कारण ब्रह्म रत्न के रूप में प्रियता के लक्षणों के कारण

आते २ का-ह ५ की कहव ६ नह

[illegible]

3.4.2. 2007. 2008. 2009. 2010. 2011. 2012. 2013. 2014. 2015. 2016. 2017. 2018. 2019. 2020. 2021. 2022. 2023. 2024. 2025. 2026. 2027. 2028. 2029. 2030. 2031. 2032. 2033. 2034. 2035. 2036. 2037. 2038. 2039. 2040. 2041. 2042. 2043. 2044. 2045. 2046. 2047. 2048. 2049. 2050. 2051. 2052. 2053. 2054. 2055. 2056. 2057. 2058. 2059. 2060. 2061. 2062. 2063. 2064. 2065. 2066. 2067. 2068. 2069. 2070. 2071. 2072. 2073. 2074. 2075. 2076. 2077. 2078. 2079. 2080. 2081. 2082. 2083. 2084. 2085. 2086. 2087. 2088. 2089. 2090. 2091. 2092. 2093. 2094. 2095. 2096. 2097. 2098. 2099. 2100. 2101. 2102. 2103. 2104. 2105. 2106. 2107. 2108. 2109. 2110. 2111. 2112. 2113. 2114. 2115. 2116. 2117. 2118. 2119. 2120. 2121. 2122. 2123. 2124. 2125. 2126. 2127. 2128. 2129. 2130. 2131. 2132. 2133. 2134. 2135. 2136. 2137. 2138. 2139. 2140. 2141. 2142. 2143. 2144. 2145. 2146. 2147. 2148. 2149. 2150. 2151. 2152. 2153. 2154. 2155. 2156. 2157. 2158. 2159. 2160. 2161. 2162. 2163. 2164. 2165. 2166. 2167. 2168. 2169. 2170. 2171. 2172. 2173. 2174. 2175. 2176. 2177. 2178. 2179. 2180. 2181. 2182. 2183. 2184. 2185. 2186. 2187. 2188. 2189. 2190. 2191. 2192. 2193. 2194. 2195. 2196. 2197. 2198. 2199. 2200. 2201. 2202. 2203. 2204. 2205. 2206. 2207. 2208. 2209. 2210. 2211. 2212. 2213. 2214. 2215. 2216. 2217. 2218. 2219. 2220. 2221. 2222. 2223. 2224. 2225. 2226. 2227. 2228. 2229. 2230. 2231. 2232. 2233. 2234. 2235. 2236. 2237. 2238. 2239. 2240. 2241. 2242. 2243. 2244. 2245. 2246. 2247. 2248. 2249. 2250. 2251. 2252. 2253. 2254. 2255. 2256. 2257. 2258. 2259. 2260. 2261. 2262. 2263. 2264. 2265. 2266. 2267. 2268. 2269. 2270. 2271. 2272. 2273. 2274. 2275. 2276. 2277. 2278. 2279. 2280. 2281. 2282. 2283. 2284. 2285. 2286. 2287. 2288. 2289. 2290. 2291. 2292. 2293. 2294. 2295. 2296. 2297. 2298. 2299. 2300. 2301. 2302. 2303. 2304. 2305. 2306. 2307. 2308. 2309. 2310. 2311. 2312. 2313. 2314. 2315. 2316. 2317. 2318. 2319. 2320. 2321. 2322. 2323. 2324. 2325. 2326. 2327. 2328. 2329. 2330. 2331. 2332. 2333. 2334. 2335. 2336. 2337. 2338. 2339. 2340. 2341. 2342. 2343. 2344. 2345. 2346. 2347. 2348. 2349. 2350. 2351. 2352. 2353. 2354. 2355. 2356. 2357. 2358. 2359. 2360. 2361. 2362. 2363. 2364. 2365. 2366. 2367. 2368. 2369. 2370. 2371. 2372. 2373. 2374. 2375. 2376. 2377. 2378. 2379. 2380. 2381. 2382. 2383. 2384. 2385. 2386. 2387. 2388. 2389. 2390. 2391. 2392. 2393. 2394. 2395. 2396. 2397. 2398. 2399. 2400. 2401. 2402. 2403. 2404. 2405. 2406. 2407. 2408. 2409. 2410. 2411. 2412. 2413. 2414. 2415. 2416. 2417. 2418. 2419. 2420. 2421. 2422. 2423. 2424. 2425. 2426. 2427. 2428. 2429. 2430. 2431. 2432. 2433. 2434. 2435. 2436. 2437. 2438. 2439. 2440. 2441. 2442. 2443. 2444. 2445. 2446. 2447. 2448. 2449. 2450. 2451. 2452. 2453. 2454. 2455. 2456. 2457. 2458. 2459. 2460. 2461. 2462. 2463. 2464. 2465. 2466. 2467. 2468. 2469. 2470. 2471. 2472. 2473. 2474. 2475. 2476. 2477. 2478. 2479. 2480. 2481. 2482. 2483. 2484. 2485. 2486. 2487. 2488. 2489. 2490. 2491. 2492. 2493. 2494. 2495. 2496. 2497. 2498. 2499. 2500. 2501. 2502. 2503. 2504. 2505. 2506. 2507. 2508. 2509. 2510. 2511. 2512. 2513. 2514. 2515. 2516. 2517. 2518. 2519. 2520. 2521. 2522. 2523. 2524. 2525. 2526. 2527. 2528. 2529. 2530. 2531. 2532. 2533. 2534. 2535. 2536. 2537. 2538. 2539. 2540. 2541. 2542. 2543. 2544. 2545. 2546. 2547. 2548. 2549. 2550. 2551. 2552. 2553. 2554. 2555. 2556. 2557. 2558. 2559. 2560. 2561. 2562. 2563. 2564. 2565. 2566. 2567. 2568. 2569. 2570. 2571. 2572. 2573. 2574. 2575. 2576. 2577. 2578. 2579. 2580. 2581. 2582. 2583. 2584. 2585. 2586. 2587. 2588. 2589. 2590. 2591. 2592. 2593. 2594. 2595. 2596. 2597. 2598. 2599. 2600. 2601. 2602. 2603. 2604. 2605. 2606. 2607. 2608. 2609. 2610. 2611. 2612. 2613. 2614. 2615. 2616. 2617. 2618. 2619. 2620. 2621. 2622. 2623. 2624. 2625. 2626. 2627. 2628. 2629. 2630. 2631. 2632. 2633. 2634. 2635. 2636. 2637. 2638. 2639. 2640. 2641. 2642. 2643. 2644. 2645. 2646. 2647. 2648. 2649. 2650. 2651. 2652. 2653. 2654. 2655. 2656. 2657. 2658. 2659. 2660. 2661. 2662. 2663. 2664. 2665. 2666. 2667. 2668. 2669. 2670. 2671. 2672. 2673. 2674. 2675. 2676. 2677. 2678. 2679. 2680. 2681. 2682. 2683. 2684. 2685. 2686. 2687. 2

[illegible][illegible]

ਲਗ ਲਗ ਸੌ ਭਰ ਗੋਬਿੰਦ ਸਾਂ ॥੧੦॥ ਸਿਰ ਹੀਨੀ ਸੇਧ ਗੋਬਿੰਦ ॥੧੧॥

[illegible]

कथं? यद्यपि एक ही प्रतीति है, तब भी यह अर्थों में भिन्न है।

कृष्ण विमुख भवि राधे के चालचल छाये है राधा के लोखने
 अछिने अछिने मिलिओनह भा हँसि के आशा देखे २ ले भइ हउ नीरा
 लग अछिहउ। परन्तु तो न मूढ़ दनवहुअ कदासीन भा मोचन ३ है
 मखी अदुत भेल लोहर स्नेह पावेने दुखलसे से दूर गए गेल ४। लाज
 छादि आबहु रसरङ्ग गाने करे गछन केजे भइ गुणवह ५। अपन
 बचलसे बिचोलेन होयबक कोनो उपाय नहि ६ गछि लेलह से द-दिपर
 निस्तार पावह

तोही अधर अमित्र लख बार भव नत विमानह टा विरह भ
 अमर होइभ से कण्ठे गल कि मोहन लखे अछिहउ भाव
 लागै करण कर राय दाय दिवसक भवत कायन अछि
 बधु रूपजाण करत भव काय जे लोह देभा सका लो ४
 कल लोह कहैगे लख भव परायण कोन होत न ५

१ छटि २ ३ ४ काय

कृष्ण राधासे न भय नहि १ राधा है राधा लोख २
 अछि बोलि नन गछे न विधवा होत न भइ दुखलसे ननो न
 मल न नहु मम दुःख को नन ३ लोख ४ लोख ५ लोख ६
 भव जा ७ लोख ८ लोख ९ लोख १० लोख ११ लोख १२
 एक दिज भू जे लोख १३ लोख १४ लोख १५ लोख १६ लोख १७
 उचलैत छह न ओकर सिद्ध सदायोग करत से अपन मोह दिये न
 होयबक कोनो ५ कोनो भव भइ हु नन लोख १८ लोख १९ लोख २०
 अकल कल परत पुण्य शिक

लोख २१ लोख २२ लोख २३ लोख २४ लोख २५ लोख २६
 लोख २७ लोख २८ लोख २९ लोख ३० लोख ३१ लोख ३२

भावेने कि कण्ठ भवत मोहन पर अनुरोध कल न भव ३
 विनु रनोले तले दुःख बा दुहु दिम पाव भवताप नन ४
 पलीलेहु अमर होत दुहु को लोख काठ कोठन भविसद नद हो

१ सब रस संर २ लख ३ लख ४ लख

कृष्ण पणयदाचलक भस्मीकृति पर अपन वेदना सखीके सुलदैत
 छथि १ समुद्र ककरहुसे रत्नभण्डार नहि मझैत भवि राधा सगर
 मसारके अमर दिल्दैत अछि २ राधे उदाहरण से इ वहराइत अछि ३
 अकर जे वस्तु स्या रहैत छैक से अलखसे नहि मझैत अछि ४ जेना
 समुद्र तथा अकरा जे रहैत छैक से दिल्दैत अछि जेना चाल ५ है
 सखी अपन भाव की कहवह अलखसे जे यागता करी न भाव कना
 रहत ६ ७ विनु पसोने वा दं ८ भो वस्तु निरर्थक भा गड़न अछि ९ तथा
 दुहु पल पछावेत अछि १० पसालहु पर देखो मसर त नहि भव नद्वर
 भवि काठ वज्रहुसे भवो होइत अछि ११ लोख राधा कृष्णक १२ १३ १४
 एकसतिवारी लोह

लख १५ लख १६ लख १७ लख १८ लख १९ लख २० लख २१
 लख २२ लख २३ लख २४ लख २५ लख २६ लख २७ लख २८
 लख २९ लख ३० लख ३१ लख ३२ लख ३३ लख ३४ लख ३५
 लख ३६ लख ३७ लख ३८ लख ३९ लख ४० लख ४१ लख ४२
 लख ४३ लख ४४ लख ४५ लख ४६ लख ४७ लख ४८ लख ४९ लख ५०

१ रद २ लोख ३ लोख ४ लोख ५ लोख ६ लोख ७ लोख ८ लोख ९ लोख १०

कृष्ण राधा के पुराने लोख ११ लोख १२ लोख १३ लोख १४ लोख १५
 लोख १६ लोख १७ लोख १८ लोख १९ लोख २० लोख २१ लोख २२ लोख २३
 लोख २४ लोख २५ लोख २६ लोख २७ लोख २८ लोख २९ लोख ३० लोख ३१
 लोख ३२ लोख ३३ लोख ३४ लोख ३५ लोख ३६ लोख ३७ लोख ३८ लोख ३९ लोख ४०

छिपा के राखत छथि ओहिना मेला लिधन लोक छिपि पाठिक जैत
अछि १) अभिसरिका नावे अछि आ पाहेन मिलन थिक रतिरगक
स्मरण कर के पुनर्कृत होइत अछि ॥ ४ ॥ गुलजल जे पदसौ मभक
अछिसँ चेतन दर्पण हाथमे लए अपन मुह देखैत अछि ॥ ५ ॥ मूडी गोत्रते
अछि जाहिसँ केसो चीन्हा नहि अछि गङ्गा अधरक दन्तधन देखैत
अछि।

५५

तोहें कुलठाकुर हमे कुलतवि आधेपक अनुनि किछु न कहै ॥
पिशुने हैसब पुनू साथ होलाए बहाक कहिते यदि दूर जाए ॥ १ ॥
सुन मुन सज्जन बगल हमार अउर न भडिगारिअ अपनस भए ॥ २ ॥
परनह परनिनि अछिउ पास उड बोलि हमहु कएल चिसवाए ॥ ३ ॥
अबे से गुनिअ जन भन लहि के जे वड तन राखी भडिअ लाग ॥ ४ ॥

साजोनी २ से आबे मन गुनि ३ बाजू।

राधा कृष्णक उलहन देन छथि ॥ १ ॥ कुलक ठाकुर जेवन
पुरुष थिकह हम कुलतारे थिकहुँ आधेप कम भविक, न मरुवेनी
करए तँ तकए सुनवाई कएहुँ लोह दह ॥ १ ॥ २ ॥ भेलु दुःख मम
मम होलाए होलाए अउराने तँ कवे क कह छै लोकक गप उरुन दे
थरि पटुवेन अछि ॥ ३ ॥ हे सज्जन हमर बल सुनह। तबो अपन साथ
पर मनस छिटनासी नहि लेह ॥ ४ ॥ पनयेक दिन विवास जा लोग लग
अवेन छी हम पैध लोक बुझि लोग उर विवास कएल। अउ मनमे
बुझाइत अछि जे से लोक नहि कएल भद्रलोक भविक लाग रहैत अछि
अधलाह का वसँ दिरन रहैत अछि ते लोकक लोग मुह देखैवाक लाग
नहि हो

५६

५६

एवं सखनु कह मइले सही न जिव जगो ननले जोर मोले रही ॥
परनि हलह ननु पिशुनक वान सुपुत्र पैम जीव रह आन ॥ १ ॥
मने सखनु नहि चिसरवा सेसो ॥ केसल पैम नहि हल अनु केसो ॥ २ ॥
गहिम लुकलोल अपना गेह खन जौसने दाह नयन मिलह ॥ ३ ॥
पिसुन बुझाए करिअ नहि घाल मुखमुँ पंङ्गुर काट पटाय ॥ ४ ॥

समिरनो दोओ २ खद १ पिशुन ४ घोल

राधा अपन प्रेमक दर्शन सखोंसँ कहैत छथि — (१) हे सखी सभ
सभ ठाम कहैत अछि प्रेम सहने (सहलशील चलन) भेटैत छैक प्रेमक
एग जकाँ लोगभने सखबाक थिक ॥ २ ॥ दुनै सभक बात पर कान नहि
देह भलमनुसक प्रेम कीहतक सल्ल धरि चलन रहैत छैक ॥ ३ ॥ ई बात
हम सखनुमे नहि चिसरेत छी। हमर एहन प्रेमके केसो अनु लोडओ ॥ ४ ॥
ते प्रेमके अपन घामे लुकभाने रहैत छी। नाशक रहैत अछि जे दुनै
सभक जौसने हमर प्रेम दूटि ने ॥ ५ ॥ पिशुनके बुझाए घाल नहि
वरक थिक किअक न पिशुन अवगण भोकरा जाहि देन जेता धेगुर
(मलजिहवा मज्जीकीद लेखक) पटायके घोल मुह लाइवाक लुलुकसँ
कहैत अछि प्रेम मरवाक अनु नहि

५७

पयस जीवन किये गयो गमभाने ते मुने गहक भव
मेल जौवत पूनू बलोह न अवा केसल रह पनाय ॥ १ ॥
सुन्दरी बाल कए अचधाने
लोह राते लहि दिवस दल अछिनेह पैसल उषसु मदि मान ॥ २ ॥
कचन गिरी लव रह सुन्दरी ते मइले लोकरा
हिन दग गोरे सभ उरि पदमन सकल जग पर गरी ॥ ३ ॥
विषयक कह मुनेने लाग लह पछल नमोथर तुने
हिन हिन आवे लोह लडमनि होएथ पसिनि पोरक मुने ॥ ४ ॥

दि भक्तिमार्ग परीत होइत आछे जे हे गीत सुन्दर नामक
कोनो भात कविक थिक विद्यापतिनक नहि। जे विद्यापतिनक न भन्दा
विद्यापति धरज सार एहन पाठ होएवाक चाही।

सोलह सहरा गाये महराति जात महराये काये हे भक्ति १
कोलि पदभोलनिये जत भक्तिनक उचिन्हु न रहल नहिहक भक्ति २
सातलि कि कदम काहने गरीय छैन न करिभ वदको गरीय ३
अब चित मति जदि हारलनिह मोये रहल चोर करम की गरीय ४
पुरुषार नभार जत भोल दुजे मति पवए गए भोल ५

१ गह रावि २ कोलि ३ लिन ४ का, ५ पारलिन।

विरहिणी राधा साक्षिक विरहव्यथा सुनबैत छथि (१) २) कृष्ण यान
बढाय बढाय कहा पठसौलोज महरा हल्लाय गोपी महराजो लोकनिक योय
महोके जाहि गहदमहारी (वहारी) बलाय धरनु रविनी कनय
पालन करवाक धिक्क हुनक नहि कहलौ ३) हे राखी कानक १) गहमे
हुनक सिकारन की कोहलौ पैद लोक लोक छैन लोक कहलौ नहि
(४) आब न ओ हसर सुषिबुधे मेही चोरा लेलौन, सो न जान
(विनहरी) लख हो हो सोकरा नोय कहलौ कहलौ दोहालहिन नभार
लोकीने कहैत आ लख भोके न दुखी भानमे नभार बुझि होलौ लोक

घरित गानर गित वञ्चकन और मौर मनुवन्धे
भूत कलन महरा गानधर सहर दस सब पदो
ए हर गोशरी नारा श्री मनु रत न गीत
जहा भग्न भूह वीन न भागीन नवी भूहा भोज वीह
भजय पद घरत लखन भक्ति लो न देव
पर धन छति मान्य न होल जन्म विजय नैन

कपट लवि लु कलयर गिळल मदन गेहे
भन मन्द हमे केहु न गुनल नतम वहत मोहे ४
काल रचित होल अतुल्य नयन मन प्रचताय
आय कि करय मिर पण धुनव गेल दिल लवि नद ५
भन विद्यापति मुनह मन्कर कइले गहरि सेवा
एला जे बन मे वर करय जौन सल देव ६
भन विद्यापति मुन महरा जौनक आन न केय
चन्दनदंड पति पैदनाथ गति पवन सरल देव ७

१ सिद्धा जतम दु २ काल मजे उचित, ३ देव ४ सरन
मोहि देव लखु स

कवि महादेवस पांचन्य करैत छथि घरित धर १) मे मन
रयाकुल (व्यस्त) रहल ई हमर ई हमर एहन आसकि बतल रहल। वेदा
स्त्री भाए बन्धु ई सभ भन कानमे कहटायके होइत अछि २) हे
महादेव हमर अछि कहल नहि यम जखन पद पुण्यक लेखा देखि श्री नखन
मुनह वकार नहि कृत ३) कुमारीति घर पापर रहल नहि भक्ति दिह
मन नहि देव अलक धर आ सीमे मन लोभान रहल। श्रीजन व्यथे
गेल ४) देह कलकली नहीमे भक्ति गेल सोकरा मदनकी गीह
खाल ५) लोक वदना ६) नहि मानल अना गहमे श्रीजन वीर
मन कानन रविन भक्ति भन न गीत। मौर पदल हल छी महरा मय
छोव छीह मर वदना की सकैत छी ७) विद्यापति कहैत छथि हे
रखत सुनह। लोहर सेवा कवन पण जे होमा से होमा भोका शरण
देवह, ८) विद्यापति कहैत छथि हे महादेव सुनह तीनु लोकमे (द्वार
शरण देवद्वार, आन केओ नहि अछि चन्दन देवक पति पैदनाथक
शरणमे छी (अन्त मे लो अल जखन शरण देवह

नल लल्लर फूलन भविष्य भुवन भला विष भक्तान्द
 चिपल लखन लभनजल ३ ॥ स गति कोकिल भन पन हस २ ॥
 ए १ भविष्य लल्लि विहार अरुन पोरा नलन अधकार
 भविष्य मल सवध धन लर वारवण भल्लाह भविष्य ल १ ॥
 न अपरध मर पञ्चगव धनि धरहरि कण रण्ड पान ५

१. अविलखतलख भन,

कृष्ण भविष्यी राधक भनयन छथि ॥ इगल १ ॥ सोर गिरा मे
 भा पोखीमे कमल कुशा गन भन भन गेल ॥ भुवन भन भन २ ॥
 पुष्पगस विषय भविष्य २ ॥ मे गति भविष्य हनी लखन ३ ॥ मे भविष्यी
 भाव कोला भन कल्लि ३ ॥ हे भविष्यी धनि मे सामने भा देख
 भविष्य भविष्य के पोख लखन ४ ॥ हे भविष्यी हन गिरा लुभन
 भन लुभनी धन लोखन भन हन ५ ॥ भविष्य कल भन भन ६ ॥
 ५ ॥ ले एकर सभा देख कल कोलदेव हन भविष्य लख ७ ॥
 भुवन ली लोख भन कण हन गण भन ८ ॥

कल लल्लर फूलन भविष्य भुवन भला विष भक्तान्द
 चिपल लखन लभनजल ३ ॥ स गति कोकिल भन पन हस २ ॥
 ए १ भविष्य लल्लि विहार अरुन पोरा नलन अधकार
 भविष्य मल सवध धन लर वारवण भल्लाह भविष्य ल १ ॥
 न अपरध मर पञ्चगव धनि धरहरि कण रण्ड पान ५

१. भन चलिदे २ ॥ धिने गति ३ ॥ हन लख ४ ॥ भविष्य

भविष्य भविष्यी गति लख ५ ॥ भविष्यी लख ६ ॥
 भविष्य भविष्यी लख ७ ॥ भविष्यी लख ८ ॥
 भविष्यी लख ९ ॥ भविष्यी लख १० ॥

भविष्य लीदे लखन लल्लर फूलन भविष्य भुवन भला विष भक्तान्द
 चिपल लखन लभनजल ३ ॥ स गति कोकिल भन पन हस २ ॥
 ए १ भविष्य लल्लि विहार अरुन पोरा नलन अधकार
 भविष्य मल सवध धन लर वारवण भल्लाह भविष्य ल १ ॥
 न अपरध मर पञ्चगव धनि धरहरि कण रण्ड पान ५

लल्लर फूलन भविष्य भुवन भला विष भक्तान्द
 चिपल लखन लभनजल ३ ॥ स गति कोकिल भन पन हस २ ॥
 ए १ भविष्य लल्लि विहार अरुन पोरा नलन अधकार
 भविष्य मल सवध धन लर वारवण भल्लाह भविष्य ल १ ॥
 न अपरध मर पञ्चगव धनि धरहरि कण रण्ड पान ५

१. हन २ ॥ भन ३ ॥ भविष्य भन ४ ॥

भविष्यी राधक भविष्यी गति मे भविष्यी लख ५ ॥
 हे भविष्यी हे भविष्यी लख ६ ॥ भविष्यी लख ७ ॥
 भविष्यी लख ८ ॥ भविष्यी लख ९ ॥
 भविष्यी लख १० ॥ भविष्यी लख ११ ॥
 भविष्यी लख १२ ॥ भविष्यी लख १३ ॥
 भविष्यी लख १४ ॥ भविष्यी लख १५ ॥
 भविष्यी लख १६ ॥ भविष्यी लख १७ ॥
 भविष्यी लख १८ ॥ भविष्यी लख १९ ॥
 भविष्यी लख २० ॥ भविष्यी लख २१ ॥
 भविष्यी लख २२ ॥ भविष्यी लख २३ ॥
 भविष्यी लख २४ ॥ भविष्यी लख २५ ॥

नौद सन बहु गुन निकालन काल मोर निकर
 सवहु लागरि हरे किंकरि भवु कर ॥ ३ ॥
 कलन लागरि सुनिअ नगरं सबे म पुनक गेह
 नौद सन नहि जमान टोहार न मरे लागेल नेह ॥ ४ ॥
 केले कुलहल दुरहि रहो दासगुरु मन्दर
 जामिलि चारिम पहर पंभोल आवे राजा निज रह ॥ ५ ॥
 मारी सबे सहयगि ज्ञानि रहति इति साने
 द्विदि निकारुन परम टारुन मन्त्रो कट ॥ ६ ॥
 भन भव्यापति सुनह जुवावे आसा तहि भवसाज
 सुनिवे जीवउते राण सिवामिह लखिमदोवे रह ॥ ७ ॥

भदि मही वसि हसहु लागरि सवे ॥ ४ ॥ गुलन लागर ॥ ५ ॥ जग दोसर
 नही ॥ ६ ॥ मोरिओ मही ॥ ७ ॥ त ॥ तरी स ॥

राधा कृष्णसि उपेक्ष पावे हलका अपन दया सुन्दर ॥ ३ ॥
 हे सुन्दर हम वयोक राखी नोहर घर लीये भवु पुनधर ॥ ४ ॥
 पत्नी धा सनरिह कलको माणक नेह पावले गिर ॥ ५ ॥ भवन मध्ये
 शिलिधक भुने नोहर राखे प्रेमक भव ॥ ६ ॥ नोहर हम भवता कलमदोवे
 प्रहार लहे सहे मरुलहे ॥ ७ ॥ नोहर हम मन्त्रो पदमदोवे हरे ॥ ८ ॥
 ने हरे मन्त्रो धिक्क करल केहेन सन हम ॥ ९ ॥ गुलन मन्त्रो ने मन्त्रो
 कलमदोवे ॥ १० ॥ भवही शिष्ट जहि भेल ॥ ११ ॥ नोहर सन गुलन ॥ १२ ॥
 भवतादा का देखके भव हम लागी मन्त्रो दुहे शिष्ट ॥ १३ ॥
 अभिसार जहि करी ॥ १४ ॥ नगरमे सुनेन छे ॥ १५ ॥ नगर मोरि किल्लु
 मन्त्रो नोहर सन ॥ १६ ॥ गुलन कहे भदि ॥ १७ ॥ हम नेह लखमदोवे ॥ १८ ॥
 रसरभा तें दूर जाओ नोहर पावामे सन्दर ॥ १९ ॥ रसक चारिम पहर
 आवि गेल ॥ २० ॥ हम अपन घर लखलहे ॥ २१ ॥ भवता हम लागी ॥ २२ ॥
 जनि जागत तें धर जामय होत ॥ २३ ॥ हमर हेनु लिये ॥ २४ ॥ वर दू

छथि लखि नीर अ हृदय दिदीये भा गण भा मारी गाड़ ॥ ८ ॥
 दिवापति कहैत छथि हे युवती सुनह आशक भल नहि होइन छि
 आशा करैत रहत लखिमदोवेक पावे राजा शिवामिह चिरजीवी होयु ॥

दहादिस बुलि बुलि भवने करल कर भाइ देओ ई की भेल
 कोर सुनल पिआ लागल न देल देहा के जात कलोल दिग गेल
 अवे कैस लंडावे मन्त्रो ॥ १ ॥ सुमारी बाजमु नय नेह ॥

११ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १२ ॥
 लखी मन्त्रिह लोखे पिआ न पुछल हसि मार देय समुद्रक पार
 ई दुह नउवा लखन लखे लख से आवे वरस मन्त्रो ॥ १ ॥
 घट सुन बुलि बुलि भवनेमारी पिआ कोले पिआ लेल ॥ २ ॥
 लख लेखि हमर हवा गलन से आवे लोखल मन्त्रो ॥ ३ ॥
 अरे ॥ ४ ॥ शिक्क मीआ जहि हम वस पिआ हवा मन्त्रो नो नोह
 हमर मे दहसुव नहि पिआ कहेलह सुन्दर पडलि मन्त्रो ॥ ५ ॥
 भवह पिआमारी अरे वर लोखि अरे पिआ कर उवाह
 राजा शिवामिह लखमदोवे लागल लोख वर नोह ॥ ६ ॥

दहा बुलि बुलि ॥ १ ॥ मोर पिआ ॥ २ ॥ नो ॥ ३ ॥ पडलि मन्त्रो ॥ ४ ॥
 लखलह लोखि देह वर मोर नोह ॥ ५ ॥ लखलहे वर ॥ ६ ॥ मोर ॥ ७ ॥

१० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

लाख लाख खर्च कर हम जे हें हार गोटल से सब गमन पहिले
 5) हे भैया बटोही जहि देसमे घिभा भछि तूरा हमर सम्राट लेने
 जाह हमर दख मुख रिआके कहिहइ अ सोर कहिहइ जे राधा अथाह
 समुद्रमे पवनि अछे 16 दियोगनि कहैत छवि भरी न युवत नय
 मनमे खुसी मलावह राज ।

[illegible]

शेखर 2 लिफ्ट 3 विभाग 4 मजदूर 5 माली 6

1. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
2. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
3. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
4. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
5. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
6. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
7. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
8. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
9. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।
10. नदीक घाट पर एक छोटी सी झील है।

सन्तानरहित पितृश्रम का लक्षण चाही देखते विवेचन में आये तो इस 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835

[illegible]
$$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} m v^2 \right) = \frac{1}{2} m \frac{dv^2}{dt} = \frac{1}{2} m \cdot 2v \frac{dv}{dt} = mv \frac{dv}{dt}$$
[illegible]

सहजहि भावत आशुन अमृत नालक नितक भोज ससंधर तल
 का लागि अइसन पसकन टम न अरु रूप सेहो दुन गेल
 अइसन सोहको की भण १५ भुवन कान देखन भेल
 दरसि अरुविष मुने नत भणि न गका होम सहज देखि ५
 लिहले ५खल अमाछा मर भेलन सेहन भए परकार ५

तिलकें ससंधर २ अरुण

रूपगर्भिता शायिका सखीस कहैत छथि (१) ई माछी हजर मुख
 तैं सहजहि स्वत, अपुर्ब सुंदर छल, अनकनितक (पसकन) का तामें
 ई चान मत दाग युक्त भए गेल २) एहन पसकन कि क क देखा
 जे रूप स्वत छल भेहो गहि पसकनस चल गेल ३) कहन मोहाभत न
 छले तो ई की कण देनह कणनह भूषण भा भए गेल दूषण (४) हम
 अपन रूप देख्या मुने भा सभक मतमे भाकुनता जगण दैत ही सामान्य
 नागर (शिक) सभक हजर रूप सह जोर दखाये भा महुन छने ५
 लिखलाम पसकन (अपनामे) जे जे कुरागत उखल चर भेल म
 तखनहि भेटाए मछन निगत भे होत

केस कुसुम पिडो काल कुरा तं म ते आइ हलु री
 हरे पसकन अलाइन भाषि सभ भवगत धाल तं गे
 विपरीत रमन १५० दा तं १५० मलावले मुने मुने १
 युमवनी करन कसवी कौर मर देहोलेन जे न ह ५
 ल हलु रूप लहि परगन उदरगत हलु तेला सभय ५

लोचन नाइ लिखिल होइ

कहि विपरीत रहि न गौन करै छथि केस (खेप) मे
 लगभग फूलक सोला फुजिक छिड़का गेल। से लगे अछि गेल केओ

अन्धकार दिह के गर फूलक स पजि छवि देले दो २ स्तन
 देखि के कामदेवके लगेत छनि नत निगम्वरूप शिख नूडी भीची काने
 ससंधि लगभग होथि ३ श्रेष्ठ रहणी राधा विपरीत रति कर १५लीह
 जाछे भा कृष्ण ससंधि अलसक नानसासे मुग्ध छथि ४
 कलावती राधा कैलिपूके मुग्धन लौन छथि भा कृष्ण अधिनेमीनित
 लवस न मुग्धनकोने देखि रहन छथि (५)

नागर हो से हरेवि भात नौनह कलक जाहि भोजन
 श्रेष्ठ लिखिअ क अमृतन काहेकी स दे जग वन्धि
 केसा बीच मधव केसी बीच क ह मने अनुभाषन लेख छ पापान ३
 परख होआतस तमु अनुभाष दूतो पण लकरा मन जग ४

१ तुला २ तह

प्रीतम उद्विगता राधा कृष्णके उद्विगन दैत छथि १) से वीरहि
 कलाक जाल जाना लग्न होअन से देखिअहि जाणि साधन नो ई कहन
 लोक १ (२) राधे छीन न जेअके क लोह पर होदत (क ३) ३०
 कलक कलक रम वरुण सौ मीउ किन्तु कृष्णम लो १५ ३०
 हिलक मर पहेन १५० न केसा वीर अरुन देअर अरुन स
 भावे न ई लिखि जा शि ५ वरह वरह धरि देनकन स
 पम पहेन रहवहु १५० देका मरन दु १५ मरन ली १५०

हलु कुसुम रम सवि ५१० १५० भात दु तन १५०
 चल न हलु १५० लोचन नत फ ५१० सीधर १५० ५१०
 अउ उके सन वरह छि कजि ५१० १५० लोचन ५१०
 लखन परदरी कलक नरु मरन मरन जाल कपड़े ५
 किन कल ५१० मर विपरीत गेल सविदि कपड़ ५१०
 अन्ध विपरीत मुने सवली लख लोचन ल करि म चली ६

विरहि वध बेलायत पञ्चमर गति न हः हृदय

कज्जल कुलपुत्र पञ्चमर सः जयमे कालक वस

1 2 3 4 5

1 परिमल 2 सहस्र स्त्री मधु मधुमुख 3 निद्रि 4 वेद 5
वान हो भवदग

कृष्णसं रश् राधा राखीस अपन सदा कहैत छथि 1 अस
जैत अति ने वनसे पसरत कोटि कोटि कुलक मीम कोला भोजन न
मधुमुखी गोपी न हजार हजार छथि किन्तु मधुमुख का निहार एकमात्र
कृष्ण छथि 2 असर जेना चम्पक लग लहि भवैत आरे नटिन
कान्हके हमराम कोप निरकि छैक 3 वत गमने बुझल भवि ने
गोविन्द गोप गज्जर थिक भा हमरे जय लख हठय सरी छैक 4
सखी आबहु कान्हके बुझाबहु 5 रहैत ने कान्हका दिखी मज्जक वध
कान्हिसार ग्राध थिअथि क इ कृष्णक दमक बुझाबहु नहि 6 विरहस
वाम गनीयन ला कोन कुलपुत्र काशरे नहि सरी भो 7

दास कल विदुषा हिम 1 सदि 2 3 4 5 6 7 8 9 10

कओ नहि हिन वर गता 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

ए मधि हीर परिहारे गेन 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

करम निवृत्ति जनि पदुम 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

मोहि एत विने दिने वादन 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

मद निम मने अवधारन 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

रहन् 2 मयु 3 कह कुलस 4 विरहि गति मय 5 6 कायो
रोस 6 ठा हरि

विरहिणी राधा सखीस विरहवध मूचैत छथि 1 2 सखी
हमर विआ वद निधु हठय दाल छथि 3 4 हमर रवि भवैत बल

गोवाह केओ हिन मित्र टार छारस नहि चनीन अति ने हुनक छैस
कहए 21 2 सखी कृष्ण उगड़ेके चल गोवाह जनि लहि हमर कोन
अपराध ने दश भगवमे लिखल गैत छैक मे भोगहि एवैत छैक 3 तमस
ककरा पर करय 4 हमरा वेधाम छल जे कृष्णस प्रेम दिन दिन बढ़ैत
जाएत जाय मनमे पक्का धारण भ 5 गेल ने पिआ महाकपटी छथि

पयसहि नेह बढाओल ने विधि उपना

मे भाव हने विधत सोन दूखत कमीन वर

ए मधि हीर समझाओव का मोर परथाव

नहि के दिने मरि जगद निरिध कमीन वर

जैवत थिर नहि मधिक जैवत नहु थक

वचन अपन विरहिनि जरी करिअर भो 4

रोनेद 2 दुखत कमीन मोर पाण 3 भाव

उपेक्षित राधा सखीस मूने कृष्णक सदा पतवैत छथि 1
कान्ह नहि प्रजारे एवैत एम सारम का मोकरा वमश वदवैत गेल
साहे वेगवे धाव लोड देनक जाये नहि हमर कोन अपराध पओलक
2 3 सखी हमर चली के ली ओकर बुझाबहु 4 हम ओकर विरहते
3 मोरे साणवे 4 स्त्री थ ककरा जगदिस 5 नील विरर रहजिहार नहि
थिक ताहुमे यैवत न थोडे माल रहैत अति अपन उगड़ पवन ककर
थिक ओकर सनत नहि मरय क थिक

लोडे नवध सत नहि सनम 2 हमे सावक नवधि नव का न

धरजो गलन आस का ली मयस न हरिजोदे मयसय मोर 2

सन दए जवद रोव मोर राव आसारे देल मयस हो लाव 3

जगने कलनिधि निम नु पाव नहिजो राह विआयल भाव 4

मीहमो टेम नर से कर धन है भा मीहमो न होय मीहमो न
हैममो गेलो रहत विप्रेयक नैसत मुरख गाय मीहमो न
भानइ विहममो नै दूतो मेट दूह मर मंलि कान्हा नर

समय बलधर राज 2 दत्ते मन्त्र नरसर नि नारद २०५ २१

[illegible]

१. नमो भगवते वासुदेवाय
 २. नमो भगवते वासुदेवाय
 ३. नमो भगवते वासुदेवाय
 ४. नमो भगवते वासुदेवाय
 ५. नमो भगवते वासुदेवाय
 ६. नमो भगवते वासुदेवाय
 ७. नमो भगवते वासुदेवाय
 ८. नमो भगवते वासुदेवाय
 ९. नमो भगवते वासुदेवाय
 १०. नमो भगवते वासुदेवाय

नरु मे

नाशिका ५०वेसारे विष्णू काशीदा चन्द्रमच भगवता नरे ५१०

1. लोक मनोरथ छत्र ने सह राति कान्तराँ मिले। ताँ ८ घरमे गुरुनन्दन नील पदवाक (नीला) करैत परैत गुरुनन्दन उदुद भा गेल २. हे चान तोहर धाँमे कह दुखदायी छहु। यही धाँमे पर तोरा कलङक लगलहु तँ भा तो मोहि कलङकसँ बचलहु। तबनालहु तहि ३. संसार भरिऊ नगरीनाकनिक मुखरु दितर। चलतहु भा तारिके भाकशमे पडलहु ततहु गहक मासमे दबलहु तोरा कलङ गरि दिअहु ४. तोरा विधाता कतक अल क। एक मासमे मिरसैत अहु। किन्तु तो दोसर दिन (तकरा पर) ताहि पापक परिणाम स्वस्थ रहि के नहि पवैत कह आण होसा लगैत छहु। ५. विधाति कहैत इथि हे दुहुती तो सुनहु। चानक कंसहु नहि तेजस लोबहु दिनु। चानक हारमे तँकरा नकरा बाद ते भल (बल) हुन। तँकरा भयि करहु।

מ' תמוז ה'תשנ"ח

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ (Probability of getting 2 heads in 2 tosses)

[illegible]

$\frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

दस्तावेज 'F.203' में 4(1) की विलोमता का उल्लेख है।

2020-2021 年 12 月 12 日 星期一

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय । इत्येतत्तु अथ सप्तमः प्रश्नः ।
॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय । इत्येतत्तु अथ सप्तमः प्रश्नः ।

है मुल्तदरी नखल तो आतन्तपूक डूय न दश उर उरलत न तोहर केश
सगिः सेमार ज हा इ तीन् अपनक अङ्गण गेल अनु सुपक सुपक
चान उमि गेल हो। १२, हे मानेनी तोहर रचन (उमि) अये नहि।
हमरा एहन मन नहीन अछि जेना कामटे भयन सेना सनअने हथि
३ दिधाना पूर्णिमाक चान अति आअर नवणगिण्डके कसे कति कति
छाँटे। तोहर मुह वनभलनि तोहमे जे फजिन अश काटिके तहा।
(छिडिआण) देन सेह सभ मानू तारा भा गेल १४, ताईस जे अश उवरल
तकरा आँटे दिधाना वनुबाकार ज्ञान तोहर दूनु स्तनक निमेषा कानन,
ससिक शीतल अयाक छाँटेक छाँडे देन सभ दम्भ छाँडे गेल (अशय
अस्पष्ट अपानसिक)।

मध्य रात्रि सत्रागच्छे ध्यायेत् काले काले ध्यायेत् आस
विधिं विधीयते शयने उपरतम् गुरुं विदुः कालम्
हं गुरुं विदुः कालम् न गुरुं विदुः
विदुः कालम् न गुरुं विदुः कालम् न गुरुं विदुः
कालम् गुरुं कालम् न गुरुं कालम् न गुरुं
न गुरुं कालम् न गुरुं कालम् न गुरुं कालम्

कृष्णम लोको ग १५५ सखि ३०० यत्न कर्तुं नुह्येन १०१
बद बक्ष मूस लोकोने छनहु ज वसन्त न नि कालक सग दिन ज
विन्नु दिधाना दिधीन भ गीत सभ वसन्त गत काल तब शत्रु दष्ट
समये उपहासक भवन्त भेटलेक २ ६ सुन्दरी कृष्ण यथाये भवन्ति
रुम्बर दिव्य नर तदि दृष्टवान्ते दुष्ट लोकक धान मोनक भवन्त उपभक्त
कतेन्य (सके गद्यन पर भा व छिनरि अन्ते जियदक्ष नदानीत दिनुज
भा गेलाह ११) बहो ग मृजन्त बहो ग रिजन्त भा बहु ग पही तभ
जमैत छल लोको हस साहस कल चीले भावहु गहन १२५ दमर पैग।

ऐसियों ने नृप सदागम तैजस्य दूरस्थ ३०२ साथ
सन्ध्य बसे मधु न मिला सारथ के कर बंध ।
राघव काँठन लोहर लहे

३३ दिनेह वेंअणि सुखछांने जीवत तामु सज्जह ?
जगत न मरि कतव दुल्लहि वद्धु गुप्प पन्न
सं रस बाणस पुत्त न पाइअ टेल्ल महस हेम ॥

સાગરિ ૨ ધુન્ન દાંદો ૪૧

सखी कृष्णसे कहैत छवि । राधाके दुर्भाग्यवश नोहर संग
छोड़ा पवनेक तैसो दशेनक नानसा न नराल रहनेक दिनक दोखे मधु
नहि भेटा त तौं भटभा सौख्य के रोकत । १२ है माधव नोहरसे प्रेम
करय मोझ तौं राधा नोहर दिख रहयथासं मूर्छित अछि प्राणी बचनेक
कि नहि । १) एक नै समास लागी रमणी ललता दुनेम अछि आ
तकरा संग दुम प्रेम ते अओरी दुनेम तदुमे सरस य म त सहस
स्वणमुदा देखधर जाई पावेल जाए सखी सखी

[illegible]

आत्मक दुख दर्द नहीं बूझेंगे अछि (तो मुँह नहीं छेद, ते बुझैत होयच)
 पुण्य निष्कलण दयाहीन आ चयल विन धाना होइत अछि राधा ने
 कालो लेहन बात रागरभसमे पाजोले तकरी तो सत्य धुँके वनसाय गेल
 आव ओ की करत विद्वानामे पदलि अछि।

अछलि भामे रादि पिनाचे नय कहे कोय कहुन लेख गेल
 काजि उठले धागे दधि से न सुते होरी हरि बुझैत भेल
 भाषव है तोर कजंन गेअले
 सबे सबनह बेल ज सह से बड पर वसयहि आगले
 भल न कणल नहि राखि अन्य कोइ दुः काम उडयत गेल
 ओछा सजो होर न वीर अ सोणारे न क बड अनुचरी ।

छलि 2 हरि बोलवने निन्द होय 3 पनसो 4 कर 5 भजिराजो,

राधाके मृतलि छाँदे चल गेल कछाके सखी कहैत छथि
 कान्ह राधा एहि भमजो लोले जे तो जे सायब न वरके भजयत छि
 भमजो पाँउ सो आय का विद्रुत आ गति जगज्ज ५ न सेज नल
 देखि होरि हरि कए भुँडैत अग लेलि । हे कान्ह तो क जने न
 लाल २ सभा सभा लख है। भौंउ जे लाल लाल सभा सोह भवत
 शिवा अचल कोण भवत लग धकत करत भवत लाल ।
 तो जे रसिक नलके शिरालिक छदि अलपल ५ पनो नलके
 ले सलह से लीक लीह कएलह है कान्ह ओउ लोकस साजोये (भामे)
 लहि करी ओहल लोक बड अनुचेल कहैत लोउ लखे अरु नलके
 रहैत भलि ।

नयनक ओल होय होय भाने विह होय नहि रहै न
 से भाव देसलार अ न शेषा मनलव सदन रसलव गेल

कलंत देह बतान रतन कजंत नारी रूपनहु न देखा निवुर मुरारी
 ललित विनलि सनि बोलनहि बाली मत रतेलाल मधुरपति लाली 4
 हम छल दुलत न है नय नहा दिन दिन बुझय मयट गिनह 5

होत 2 सपन 3 समृत 4 जाणत 5 बुझयत

राधा लखीके आन विह लयथा सुनवैत छथि 1) पाँहले एहन
 धारणा छल जे कान्ह जखनहि अछि परोउ आ जाणत लखनहि पाण
 छदि जाणत 12) परन्तु ओ कान्ह भाव देशान्तर जाए हमरासे दूर भए
 गेल तँओ हम सोचैत छि (नाहसे लगैत अछि जे मनके मथनिहार
 कामदेव रसातल छलि गेलह 13) जाले गंहे कान्ह कोन देसमे टिकल
 आ कोन लारीमे अलुल भेल आव लगीत ओउ जे सो विवुर सनह
 हमरा सपनहमे लहि देखैत होत 4) सो समृत सीधल बोल चल
 मथुरापति बुझि मनमे विधास भेल 15) हमरा धारणा छल जे हे नय नह
 कहिनी लह दूत 1 मुँह न न दिखि विनैत गेल तँ ते बुझइत गेल जे सो
 नह बचना छल

भजन जेवन भूत दयाभाव लीन रागाल गगन ओल
 भवत विह्व भाल झर जने भव नद गगन
 भाव 1 कहुने नहुने चरन गेह सखीवन होय न सो
 कृप नयनमे गेह केवल अलल कोय के हो नल न 4
 पुनोये लोले सो भजयते लोले गुरगुरे कर गेह 5
 कछि विह ली कहुने भालोव है मस राम हो गेह गगन 6

1 लख दूत दैपल कय 2 सुनवैत भने वेध 3

दूरी राधाक सम्मेलनोदर दरा कृपावै सुनवैत लशि
 बाल भौंले होहसे पृणीये 1 अछि केन लाल कजलये वसान लागल हो
 2) छिदिआय केस मुँके झुल्ले अछि नेल धनके अलधकार लचओले

हो ॥ हे कान्ह श्या भोत घर कोल भगवत भोकर दन्त ॥ १ ॥
 सखी सभ उपवास करैक ॥ २ ॥ तब पर के नखलन डेक लवरा ॥
 हाथसँ झपटाक प्रयास है कोल भोछे कि ॥ ३ ॥ साँपदंत ॥ ४ ॥
 कलहु कमल (हाथ) सँ झपल हो ॥ ५ ॥ तबक कमल के भी उधा-
 भलि सरिभोलक भला गगन छत्र दिस चर्चो हो ॥ ६ ॥ विद्यापति कोट
 कामबीलाक धर्षण काल कर रस पभोवाले राग विरसिह ॥

सावित्री जोरि कहि कि होनि जग पसाहीने ओवर केनि
 भाव स भोले गल फल ॥ १ ॥ का' भए भइनि ॥ २ ॥
 सो कन्ह स हरी स दनि गन ॥ ३ ॥ इस न कोरि वध
 लालनि गही भूई कदना ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥
 सरस निरस के बुझ भाव ॥ ७ ॥ का' न वृत्त भोले विमल
 सरस कोटि विमल ॥ ८ ॥ भाव नैद पुनः ॥ ९ ॥

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

सखी उपवास करैक ॥ १ ॥ तब पर के नखलन डेक लवरा ॥
 हाथसँ झपटाक प्रयास है कोल भोछे कि ॥ २ ॥ साँपदंत ॥ ३ ॥
 कलहु कमल (हाथ) सँ झपल हो ॥ ४ ॥ तबक कमल के भी उधा-
 भलि सरिभोलक भला गगन छत्र दिस चर्चो हो ॥ ५ ॥ विद्यापति कोट
 कामबीलाक धर्षण काल कर रस पभोवाले राग विरसिह ॥ ६ ॥
 सावित्री जोरि कहि कि होनि जग पसाहीने ओवर केनि
 भाव स भोले गल फल ॥ ७ ॥ का' भए भइनि ॥ ८ ॥
 सो कन्ह स हरी स दनि गन ॥ ९ ॥ इस न कोरि वध
 लालनि गही भूई कदना ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥
 सरस निरस के बुझ भाव ॥ १३ ॥ का' न वृत्त भोले विमल
 सरस कोटि विमल ॥ १४ ॥ भाव नैद पुनः ॥ १५ ॥

हिलकर होरे जलन कर भजन कर कल ॥ १ ॥
 नयन केनर लए निद्रा विह्वल कए रह ताहि होरे
 माधव काँते हल म गयली ॥ २ ॥
 तुम वैभक्ति मज देखि भक्ति अग्र पलटि ॥ ३ ॥
 भजनकल भवे निद्रा सिव सिव का धरि लटायन देह
 कर पडकन लए कुच सिंहाल ॥ ४ ॥
 दाहिन गधन वह ते कैसं भुवति सह का कयलित लस अवग
 गेल धरत आस दा रोचन धर नख निद्रा ॥ ५ ॥
 दुतर पदधि कर लोह मन्तर विद्या ॥ ६ ॥
 राज सिवमिह कए नयन चरिमा हेवि गजने ॥ ७ ॥

का २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

सखी कछपक उपवास विरहवर्षन सुनवत ॥ १ ॥ राधा लोहर
 विरहम चानक देखि मुही गोपे लैत भोले ॥ २ ॥
 कलपन रति भक्ति अधिक काजसँ गह लिखैत भक्ति ॥ ३ ॥
 गोपनी भा नख माधव च न रति भक्ति ॥ ४ ॥
 हृदय नद वतीर हलत भोले ॥ ५ ॥
 माधव ता हीरे घर लह ॥ ६ ॥
 भोले देवक दर ह हा भोले भक्ति
 भोले देवक भक्ति धरि हाथ सही कलक फल दए भा ॥ ७ ॥
 भोले चरण विद्या का करि भक्ति ॥ ८ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ ९ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ १० ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ ११ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ १२ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ १३ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ १४ ॥
 भोले भक्ति भक्ति ॥ १५ ॥

पक्षमांहे १७ ग रमस उप नाए ऐमक भाङ्कुर जगद वदना १
 आवे सं तरभरे मिमिफल भास लो तर वने मलमय लेन वास २
 भाधव कके विरापांले बरतारे वड पाँहर गुन दाख विचरि ३
 नखन मरीज दुःखी बह नीर कानर एदरि पडरि रक्त वीर ४
 नेदि निमिन भेल उरत सुयंस मृगजट पालन कतक मरेस ५
 धान्द पवन पिक मदन मरुत सर गदगद पन कड निमि ६
 कानर गहु खग लिख काक घिस मज्जा पति मनयन केक ७
 भनइ विषापति सुग पर तापी धन मन वीर न मिलन मुगि ८

हृदय ऐस १ नदि तल २ दुह ३ विस अवधान पुनु ४ नगर

सखी कृष्णके रक्षाक उपाय कावन्त नचल देन छोये ५
 काहे तो जाँहेले तरभस मरम विनास ऊपरह आ पार ६ नगर पक्षक
 अदकुर वडओलह ७ भाव भोदि गाछम श्रीफल देखाहु ८ ताँडे आ भोदि
 गाछक एहारिमे काभयेव बेग योहना देननि भोदि ९ पवन विचरिमे तो
 लागरी राधके किमारे निमल गेबहुन भेस पुरुष गुन दाख विचार का
 पवरो नयन करीन भोदि तो से नदि कालह १० अकर दुहु भाँखी
 दही बही नीर चकै छैक ११ कानर धाँडो धाँडि नीर १२ रैन केक १३
 नहिमो सोकर मन भोदि गेल केक १४ वीर भोदि बेग १५ तो
 सरणा इन्धमय विचारेमक पूजा केक १६ तो से कत मलय
 पवन कोकिल आ मदनन वस्तु ओरि लो गदगद भा गेल केक १७ तो
 लोकास ओरि नैन भोदि १८ तो पालक दरे कानर गहु निमिन भोदि
 पालक दरे साव १९ कोकिल डी केश ममल पवन ओकर विचर मन
 लोत केक २० विषापति कानर उरी दे सेन नयन मुगि भोदि २१
 धरह मुगि भोदि मिलन

कुम्भ रचित संज्ञ मलयल परिमल पंभसि २४ वि समां
 कने नपुमाम धिनासे गमाओव कने पर कहइने लाने
 मधव काहु ननु टिल भवगद
 सुनरु ल सुय ननम गम जौन पुनु न निराह २
 टखिल पदन नीरभ उपभोगन पिडल भोदि रम सा
 कोकिल कनरवे उपदन पवन लह कन काल विहार ३
 लोह सेन कुल भमर अगोरन तेकर नीर निचमे
 से फल कादि कीट उपभोगन भमर गेल उदास ४
 भाङ्कुर विषापति कालेजग पविनति भोदि ननु कर पाँड
 भजन करम भोदि ५ भुजिजम रजो ननमानर होइ ६

१ पडकन २ काँहनु पर ३ विचरि ४ ननु स

कवि कृष्णके मन्दीरागत का भयल वैराग्य भाव व्यक्त करैत छोये
 १ पुरुष शयन वातावरण सौख्य भिय सुन्दरीय मग कतक वसल
 केविदेनास तरभस मे विरासाव भाव से सभ कहिन्है २ नदि ममक
 चली करिन्है लान होइत भोदि ३ हे माधव ककरो दिज सखि
 दुखद नहि होसओ कलहल तर मुखयेक भोजन विनासाव ४
 भाव पुत्रक गाछि ल विचरि क रहल ओ ५ एक दिन
 मलयगत ननु मुगि भोजन समारक पीन्है कोकिल कनरवे उपवन
 मुखनि लन सा लोह लाम छै विचर रसर काल ६ नदि भ
 नी पवन नीर लही टिलख भमर फलके अगोरन भोदि गहु तर वास
 करैत रहल परन्तु ओ पवन कीरा छान गेल वेपार भमर उदास ७
 गेल ८ विषापति भोदि छोये हे कलियुगक परिणाम शिक केओ
 विना नदि मरओ ९ पुन ननम सत्य चिक न अपल वजोक रल आपलहि
 भोदि १०

हम एकदम दिभक्त नहीं बने न लज्जा में हैं देखने के
 अलाह कतल करेगा बास दोस न देखि पड़ने पर
 चल चल पवित्र करिअ हमें कइ बास लग्न भाई अलग राह १
 साग पय घर लहि मजि दल पिआ टमालर लाली भेल २
 धरह धरह अवाये का गेल धरि धरह लहि रंग भेल ३
 मोर भेल है खलक खल आदम मन गणय कर भलक ४
 भुलत भुलत मझम धीर पा घर बाँके म नत डोरे हरि ५
 धीर पओधर जर्मिने भेल जे कायद न कर पर धर ६
 भलक विखलति लज्जा रीति धरि धरि धरि ७

अछड़ने लहे २ गमन गीत नरु म

विरोधणी बास बाहनिहार पवित्रक कहै न लहि हम एकदम
 (१) विधनम गमन लहे लहि न मोर लहे ठाम बास टमाले दम
 नारतक्य सड़त भुलि (२) मने ठाम कलह संग वस टमाल १२
 परन्तु दोसर कोती पणमभुके नमने लहे टमाल की ३ पवित्र
 अजो बढक हम की कर नमन धुनि कइ बा ठाम टमाल ४
 ओ बास भात टा धा बाहिर टमाल बा बाहिर का दूर भा गेबन ५
 बाहिर धरह मधुपि का गेलार टिका गेल लो धरि म गेबन ६
 हजर मन हल हल टमालेन भा दुल्लि भुलि म के कलह टमाल ७
 काकटि नहि टमाले लो टमाले टमाले लो टमाले ८
 कीचमे पातर पडैत भाउ स भास गेबन टमाले लो टमाले ९
 बास लेभए पडैत भुलि १० घन मोर भेल नमन भाई लो टमाले ११
 भेद भुलि न कनका हाभहु से लिकेन कर टमाले लो टमाले १२
 लो टमाले काकिनीक दुह मिने थिक धरि वि वि न लहना १३
 वचनक भलनिक लो टमाले लो टमाले १४

रमिक सरदर लाली बास भल पातर लहि भुलि मनि
 इदयक कलह टमाले पकर भुलि रम कल लो टमाले २
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ३
 धर पडलने रमन लो टमाले लो टमाले लो टमाले ४
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ५
 भुलि लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ६
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ७

१ गमन लहे लहे का ३ लल भा

सखी रघुवंश गमन लहे लहे लो टमाले लो टमाले
 रमिक सरदर लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले २
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ३
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ४
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ५
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ६
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ७
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ८
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ९
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले १०
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ११
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले १२
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले १३
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले १४
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले १५

लल लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले २
 लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले लो टमाले ३

कुचतुण कञ्चन कलम समाप्त मलिमल दक्षिणे दक्षिणे दक्षिणे 4।
नये वरणागरे अपवर्णं गृह कञ्चनके देवो हो वद पुनः ५

गुणिअ अधिक 2 भस्म गजो सजो आये 3 दंड 4 उग्रा

कृष्ण राधाके जोन्वयैत छवि 1। समुद्र आ सुमेरु महा-पूजा
वस्तु शिक। समस्त महा-पूजा मानल जाइत अछि व्यवहार 12 है
मालती राधा, जो यदि भस्मके अधिक उदास करवत तें नो कञ्चनके
लग छवि जायत 3। मिलनके भवभर सुयोग्य नानदुपार नो लय आ
छिटकि जाइत रहै जे एखन वाम सहि भेल अछि। जेछान्तिर स्तन
के कओ हाथसँ झुपि सकैत अछि? जो पुण्ययोग्य भा गेवत 4।
नोहर दूनु स्तन मळू सलोक कलश विष्णु देविके गुणयोग्य लोचनके
मलि दखा लगेत छवि 5। जो भूत नाहि शिकर भस्मके वरणा
जे हु सुपोकलश ककरा दल देनो भाषे पुण्य हो रहै

सकर मूठ दूथे पौखल सलल ओझक शो
मोह बटल गोर पौखल मल्ल मौर पौखल मल्ल 1।
समोने पौखल मल्ल देव कल
दह विभीन पौखल मल्ल मौर मल्ल पौखल
ओझु समोने पौखल मल्ल मौर मल्ल पौखल
नोहर बटल गोर पौखल मल्ल मौर मल्ल पौखल
मल्ल मौर पौखल मल्ल मौर मल्ल पौखल
नोहर मूठ मल्ल पौखल मल्ल मौर मल्ल पौखल 4

खारे पुण जोरणा छवि 2 काहुका

कृष्ण राधाके जोन्वयैत छवि 1। नोहर नो मुण्ड भेसरी मल्ल
दुर्धर्म मल्ल भा भस्मरससँ मानल छहु मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल
धामे पर शार वरिमाण रहल भस्म 12 है मल्लमली नो दह लोचक

वचन पौखल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल
विधानक हाथसँ छाने किन्तु पाण एक अछि 13 यदि तामसदुसँ किछु
समय पठावत तें अधिकांश वचन मुद्रसँ जहि बहार करत। नोहर वदत नोरे
वदत सन छहु (एकर कोनो रूपमा जहि हो) चान कतहु क्षा वदण करत
4। जो चेहाइले जहां गारु दिस लशङ्क तकर छह जे राहु नो गरसा
पान्त तकर कोनो अधिकांश जहि नोहर मुद्र नोरे मुद्र सन छहु चान
सन लहै। विधाना चान भा लोपा मुद्रमे भेद करवाक हेतु चानमे जरी
दाम लगा देलनि।

आपल गरुस निविड लच्छर पन लोप जोरणा लच्छर 1।
पल्लल देवियम लोपत लच्छर 2। यय वच्छर पौखल मल्ल मल्ल
कञ्चन पौखल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल
गुरुज लोपे मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल
लोपे लोपे मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल

1 सधल लोप 2 मोर 3 दायि 4 लच्छर लोप मल्ल 5 पन
लच्छर 6।

विधाना लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर
एकर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर
दक्षि रहल लच्छर 2 मोर विष्णुजी 3 देवदेव 4 देवदेव 5
जह लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर
मल्लमल्लमली मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल मल्ल
वदत पौखल लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर
सकल 15 लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर लच्छर
पुनि लच्छर लच्छर

कृष्ण दूरी के कौन कौन १२ राशियाँ हमारे समान हैं और वे
पुनरावृत्ति के हैं वह हमें वद पुण्य वद लक्ष्य के लिए पता चलेगा
हमारी कामनाएँ हमें कौन कौन १२ राशियाँ हमारे समान हैं वह हमें
हमारे विकास के लिए तो मुख्य रूप से हमारे समान हैं हमारे
रहस्य हैं और हमारे लिए तो १२ राशियाँ हमारे लिए हैं हमारे
राशियों के एक और एक राशि के लिए हमारे १२ राशियों के लिए
देखें हमारे समान राशियों के लिए हमारे १२ राशियों के लिए
विद्यार्थी और दूर लक्ष्य के लिए हमारे १२ राशियों के लिए हमारे १२ राशियों के लिए

अतः किन्ति गह, ३ फी . यम २-१ गह ३-४ ५ कर्म

नमः, सशक्तता प्रदान करे, सी.सी. कोल प्रकाशक संपादन वित्तिक २

की या घड़ने कलें देल काज की मन पकलि कचरनि भाल
की दिन लेसे दैध भेल बास कजने करने विहा नहि जेन नम
प सखि १ सखि देह कन्देस एक नुर काह वस मो उमे देहेन २
भरण पाहो मदन कर धन्य जेहनुने जुहने से तेन अनुदय ३
अवधि दियस नहि पवित्र न भलिजन जीवन जीयन ४ ५

जीवन जीवन

क्षणसे सपक्षिता राधा सखीके कहैत छथि जहि नहि विभा
आजक धात गर काज देलनि केमो चुगलियेको का नव अकि भान
कलावती कामकलामे घनुर रमणी मन दहलाते १२ नमो दिनक देखे
विधाता नाम भग गेलाइ जाते जाहे कात कारण विभ इतर नामो लोहे
लेत छथि १३ हे सखी हनुक धड़वहुन काज एकहि नगरमे छथे
किन्तु हमरा लेखे मानू विदहामे छथि १४ कामदेव भाग पाउमे पातेह
रखने छथि जा पाण रहलैक ता सुता प्रेम साह जाह सजेत भलि
१५ अवधिक दिनक अन्त नहि रहैत छी जीवन हजारी लोहे विभ
साहमे योजन न थोड़य दिन रहैत आछे

काह दिन सहर जोकेन राधे भागमे नमो कल दिन जाय १
केमो नहि छुमर धाल धा आत भोजि अमे लुन पानुमन भान
वि कहियो अमे सखि अछतेने भान दिनु क ले मलमय पद धाला २
विपत्तरा सोझित नच नव चुन धाते मदन नाम देखिअ जाले ३
क से कलि अलख कुसुममर बेड़ प्री न हण निह ४ ५
दोहल पयन काबल ६ नाम भवसा जा गेन नो मेल वस
गजध समीर निरहि के लकी केरुन अम पाण न हारै

१ काहज २ दह दिन ३ भानिस्तित ४ ध्यजका धोरणि ५ रडग
६ अनुधय ७ मन्द ८ परग

राधा सखीके विरह दयया सुनदैन छथि कोनो दिन मद्रका
उक्षपर काइली कुरकत आछे न कोनो दिस मातल भमरा मडराइत भछि
१२) जोमणके राखल अच अच धन ३ केमो नाह छबैत आछि किन्तु
कामदेव चुनै घुमिके भान धन लुटत जाण रहल आछे १३) हे सखी
अपन भाग्य की कहिअहु दिनु कारणहें कामदेव घाइल का टेलनि १४
आमक आउ तय तय किसलयसं शोझित आछि जेना धरती पर कामदेवक
वहन राम ध्यजा फड़इत हो १५ कामदेव कभे मसि कुसुमक सर
छलवैत छथि जे पाण नहि होत आछि वेचन विरह यथा है आछि १६
मलमयलेलक नाम दक्षिण पवन के रखलक भवसा पण्ये दुहेन
आवापर) भोहा नाम भग गेला १७ ओ मलय घन विरहीन पाण
हरदावेल पलायक फूल बेड़ी आगीके जगैत आछे

काहिये विरहमे हजारे दु जल रकस काह गण गण भान
ने मज्जा दे कचरिअ भान देह अकसमर सन वदने १२) ३४
म जाले भावे वि वृद्धि मोह मज्जा देह ३५ ३६ विम नहि
मने जल ३७ ३८ ३९ लख काह ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
विहल लख जाल ५१ ५२ ५३ टाटीले लोके लख मज्जा देह ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

अवधिदेव २ जोकेन ३ नहि

उपेक्षा राधा सखीके म यथा सुनदैन छथि घटल पैम
भकस्मान समाम भग गेल १ नाह लखन देह गनि जेन भाव भो
प्रेम खड हजरा सन वृद्धि दिन सहे २ हे सखी कुन नो रम
जि ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
न हे लिख्य करी २१ हे पैम नल नहि जानए न हे वन हमर हठवमे

काँट लकड़ों में रहने। विरहाग्नेय हमरा नरक लोइला कल देवक भय
जल दह (हठि) पर धाँसे नहि आइ।

138

तोह हनि लागल उठिह सिद्ध हम अपमानि इतनीह गेह
होइहो जाले भपटहि वाले गाले दुःख माझि दुःख भोइ 2
माधव कि कह्य है भल भेल हमर मनमन है दुःख गेल
परिवर्ति वोरनह मरुतिम धानि गोहहि सुनिने गेहहि भोइने 4
भोइ काँट बुझा मोइह गम काहे कि बुझा माय आपन दान 5

दुनो राधाके नहि आनि सकलि ने कृष्ण भाकसमें महु भोइह। नकर
इतर मे दुःखी कृष्णके कहैह अछि । 1 है कलह तो दुनोमे नं कछि
भेल भए गेलहु तखन भनरे हमरा अपमानिह काँट पर धुएह दलह ।
हमरा मति भासि गेल ते बीचमे ललह दुनो राधा माझि भए गेलि
(1) है कलह भेल भए गेलहु से नीक बात हमरहु खन एकरा खन
सोइह। दीहखमें पुटहि भोइ गेल। 14 पछिने तो मधु राधा मे
कौन इतर से वरिध चहुँ छडि पाइसि। 15 गेलहु तखन कल
राधाके सल भए गेलहु तखन ऊँह हमरा हठि 3 गेलहु 5 तो
सबहु दण को हेल हमर भनने लखि थक ने लाग दलह से मे
पललहु

कौनोले 3 लख कलकि गेल है सौम 4 5
कलह के कलहु कलध है मरु माझ 6
अवे सखि भमर विरह भोइ है मरु मरु ललह
1 2 3 4 5 6
परिलख के लोभे धाँसे है उभोर नहि 7
सखि पुन दिनि मो न देखल है भावे 8 पलह है
भल भन भोइ उभो कलह है पाह मो मे 9

10

कलह दुख न बुझा है भन देसन भेट 4

1 भमरा भेल 2 भोइ 3 भाव्य 4 पाव्य

राधा मधुकरक यात्रे कृष्णक लज्जतक उठल कौन छधि
भमर भोइनेके उठि कलकी लख गेल श्रीधर सौभ पर मुग्ध
भए भोइ है न दलह, जो जखन कलकीन सल ते भए भगम काँट गहर
लज्जक 1 है सखी कामकीनेमे चहुँ ओ भमरा विकल भए
गेल 13 दौल ते सौभक लोभे मुदा लग
पहुँचि तोह सकल मधुक ते दलहो नहि कए पओलक केवल
लोकि बीच उपहास 4) भन भेल एहिना कलह सेहो लभ ठामसँ बीभा
मधु 3 विधाट पटल रहहु 4 लोभो रंझल पुरय गुणदायक विवचन
नहि काँट सकल ओउ

नरपति विपु ललह 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

धरम गीत 3 ललह 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

12 पलह मो भोइ मरु ललह मो भोइ

2

ललह दलह पाव्य दलह 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

समयमें तथा दूसरा अथाह यत्न मदीं धारित इति स्तैरस्थान
आइति। एतेक प्रयत्न भोकर ऐस एक। 12
आव है कान्हा तो ईसके पासल आ भोकरा दिस नाकद मम्मदुद भए
चाहे मग भी अमलक धार बरस भी । कान्हा अनेकालेक दुष्ट लोकसभ
अनेकालेक पहरे सभ आ कनेको घरक लोक लागल छल ते भी एकरा
ककरो कोनो डर नहि भेनेक।

अबो पहु क ह जलन हम लेव सोने मुल्ल होयगदुन दउ
मुझ ही सर्गि कहव की १० पातल तेल लए हम दय ना १।
अइसाओ जगन चुवाने के सन्ध हाँके मसोकेन कर होयगदु
दिन दस चतर हँवम विवाहि नत हयन जग विहल कस ३ ३

५३३ हम पाण पेटा २ आइने

विहल दशम दशम मणायमशा ११ पहुँचले गल कृष्ण स पाँचला
कौन छथि १) हे पहु न हम भवहु नम लेउ न हुन को हम
कोनो मुहुय लोभाराका होय २ हे मग भी खुँ हो हम जग
वल नय कति जग की कल कल हिन हम निव ल
गला गले देव ३ जग भी जग के साँहार चुनो होय न होयभीक
हुनहुन गुनीम कथ कह ४) जल लो हो न नय
वपारमे लिखल हो

दुष्ट मग सोनि विहलक मल्लूर होय १२ न
साव पालल कुनो होसावन सीक होय १३ न
सोनि हे भाव कि माँके मल्लूर
ऐस भोजय होय होय १४ नय जगभर के जगभर
अबो सुपहु नहि भाने मग भाव भान मल्लूर होय

कैवल कञ्चल कान्हा विधान कुभदने छाडलि जाती ।

१ विधान भोवलि २ अथ ३ कयहु कान्हा मोंलि

रथा अपन सेवा सखीसँ कहेत छथि । द मलक मेलस
सकुरित ऐस होयत नयन मेल कमल इरि जान आ फूल गाम मेल
सौरम दसो दिशमे पसरि गेल २ हे सखी एहो अ स्थामे ऐसमे
विहल भए गेल । भाव की कान्हा आओत भो न हयन ऐसक मल्लूर
भए कए देलक। ओहि काली पर के विधान काल ३ तो ते कान्हाके
मुपहु आदर्श ऐसी बुझे हमारासँ मित्रगोवह होलमे माने गयन
परलु विधान सोई सँके लकली वलाए देलक छौँनदि सोय सोने
विधान गेलक।

दस सूरिअ दलत धीर हो कयक्य लागल नय
के जल कनेके मित्रगोव गल ते लोके हय विहल कोय
० सदि ऐसत मग भोजन गरक क ह कल नय
नय दिन कल नय १ मग हम छोड़े नय नय ४
नय मग मग छोड़े नय नय ५
दिवस दुख नय उरान विनय नय नय ६

सुनिदुरनत १ कलकल २ न ३ ४ दिवस मयल ५ नय
सलमे भनले लोके ६ नय ७ नय ८ नय

रथा सखीक मसम मयन तथा लक वरैत छथि सुनीन की
दुवलक कोन पर दुवला होय ओई नय कोल कय नय ललल ओई
१२) नय नय कोल कय नय के मित्रगोव ते लोके हय विहल कोय
१३) नय नय कोल कय नय १ हे मग की कल दस भोजन भेल ते कान्हा
भालक कथ पर विधान कल लेलक ४) नय दिन हमरा ललल कल ते
कान्हाके हमरा छोड़े मग कोनो दयरी लहे कय १५ हे सखी मे ससार

भरि घूमि घूमि सुपुखक खोज कएन्ह आइतबूके साँस कर नी सुपुख
हमरा सोचन्ह। दिनक दोख नी हमरासँ डिमुख भए गेल विशुक्त
वचनसँ । नीको लोक भाँसे जड़त भएँ।

तानकी केतकि कुन्द सहर पुन ताहरि भवे साँह तिरा
सब कुजो परिमल सब मेकरन्द अलुभय किनु न दूँओ भल नन्द ।
तुम सखि वचनअभिज अबगए भसर दमन बुझानीद नह ।
एतवा दिनति सुनइधि भोरि जिंस कुलम लहे राँहम नारी ४
दोभ गेल भलाहु भति मास अपन पाँह ५ उपहस ५

भरुअ ताहरि पुन जाहि तिरा । मनाइनि

रधा सखीस कहैत छथि । १) तानकी केतकी हृन्द लभकर
इत्यादि अनेक प्रकारक फूल अछि । तँ ह मय भसर भारा तिरा
नकरा पुण्यदारी बुझ । २) सभ फूलमे सभ ठीक समयमे मधू ऐक
ताहिमे कान नीक कौन बेला से भएँओ दूर रहैत जा सकेत अछि
। हे सखी मोहर गोल अङ्गुली बेलन नीक रहूँ ना भसरक दाँते
पिस काकड़के बुझाइत । ४) हमर गवा दिनरो हुनक भूलथहुन न
रसहीन फूलकेँ मगोबल नहि रहैत । ५) पैरुन चल गेल नीकी लोकक
मरि भाँसे जाइत छैक अपन दगभ । ६) नीकी मरि भल १५ स
सेही सहए पडैत छैक

कोसल गनु पगबल गयोद भिजे न हावो क
शहर भरे कि साँहति भवता गेलन काँह के
मनव वचन धरव मो
नहि नहि रधा । नीकीसब अपन नारी ३
अथर जिनि धूसर काव भव पदकन भव
इन खल गति रमस अधिक दिने दिने सोमे कला ३।

। कर

सखी कण्ठकेँ सगम रिति काकराव जठरैन छथि । हे
कान्ह ई सोचि ने राधाक काभल शरीरमे पीडा होएतक भाँकरा छडि
नहि देहक। भसरक साँस भजरीकेँ टूटैत कि कनहु केँसो देखैतक भति
(१) हे माधव हमर बल मन रखिहए ओ जँ नहि नहि करा तँ से
गतिभर नहि । २) भममे यदि जाइत ३) धूमिल हरा अधरक रसक
निशेय कर अधिक धूसर काँ दिहह एतेसँ नीक भाव रसवश
भगतकेँ। कामकेँसे । इन छल (कमल) बडैत जानहु नेता दिन दिन
धानक कला बढैत भएँ।

एतमे मरमर करि पाएत भनक पाँह देह जाल
भति कमजिनि गगर रूँ पेस पनथ काल दू
कोन कर न कराह रधा । पुर केँसोमे पदुन वम
एत जिनि केहु कहीमे मटा नम न जाल नमो नम ४
रहि मोरुन म पथ रजाँ रमर जिनिदि हलत नम
काँह सलल हलत जलत जलन पथन विह सखी ६
सखी सुनहि सहर भव नहि नीके कवच पद ७
मयन भक्तिमर विदुषक सखी सखी कुलम लयव ८
रधा जिनिदि नम भवरी सल कद काल पालव ९

राधा । पिसवम

सखी राधा । नमजकला सिवदे । छथि । १) हे
राधा । बडैत पेसी नीक मन सकुष्ट कनहु पदो दे
नही मोकरा । २) नहि रधा । ३) कमजिनी भूमि ४) रधि आ
अकर पेसी मुदे आकरा से पैसक साँसे दूर-द राधाव नहि होइत अछि।
। हे रधा केँसो वच नहि करिहए दिनमिनी सखी कक कामला

अथर्व्य पुरातन छवि 4) रथाक मुह वश में कर मंगल कल टैबलु
द्विहं चाल लाने लग जहि आओत 5) जें लग आ लोन वें गहमें डूब
गए जाएत सोहर गहन तें भन्दरहिमें लम्भय 6) जें लो मयल हृदयके
बक करबह तें काज धिगाडन्हु चिरह होवाक सम्भजन बहुत स
अथनहु 7 दे सुन्दरी सादस मभसे अवश्यक रस्तु से सादस नंग
छवि आत के कर सकत 189 कटि कण्ठहार कहेत छवि रसक
आधार गाना शिरगिह जे सगले अङ्गिन्द कासदेवक सदा छवि सभक
मतोरथ दुरजोतिहार थिकह

1. अक्ष नास्तह 2. अक्ष 3. अक्षान्ति 4. अक्षान्ति 5. अक्षान्ति

छद्म स्वयं भक्त - शरीर रहनहु यौवन बिनहा पर आ मग्न घटनाधर
केश नंद पुछनहु रहि नसारन सोचन मग्न मस्थिर बदन तहूँ यौवन
न बढ थोड काल रहैत सोछे गहन स्थितिमें ज थपूपक बिनहा तहि
करी न हृदयमें पछल्य रहि जाएत स हे सुन्दरी - गहर धन तोरहि
रहि जातहु निष्ठुर आन होत कवि विद्यापति कहैत छथि टाकत पुण्य
तोमरे शैलनहु

$$1 \quad \overline{01}^+ \quad 4^{10} \quad 4^{10} \quad 3 \quad 4 \quad 4 \quad 1^+$$

स्तन देखि तैलनि कठोर हृदय चीरि नहि भेल लामन भ्रम लागै पतौल
पसि जाइ १५ इन्दमें आखि नईल से भ गुरुवसं एहि जे तन्दन
नन्दनके देखि मनक साध पूरावै

सगरि हे इन्द्रा नीर देह कह कह का संगी नाथीन न
तौलै भरल सख लोदन नीर लोचन गदन कमल हलि रंग २
कजोने लुल्लस सखि गदन भण्डार निरंसे धुसा कर भण्डा प्रया
कजोने कुसुमि कुच लखलख देन ह ह सम्म भगन भा गन ३
दमनलता सम तजु सुकुमार फूल वलय दुल विमल ४
कस कुसुम झल सि क सिन्दूर प्रजक निख दे हेली गन दू ५
भनइ विद्यापति रति आसन राज सिधसिंह ६ रस गन ७

१ की कह कइसे नायलि २ भेज ३ रसमनि तरि करण देस पुने
पलटि निगमि लगु में

सही सगम ८ भइनि गधारे कहैत छथि १) हे श्यामा गहर
देह झामा लगी २) उहु कर कहर गजगर्भ देह लख मोल ३) गहर
आखि आध्यात्म १५ लोचन अलस कमलक गोमा लो पत अखि १६ के
गहर मृगा सज भण्डार १७ गहर निरं कर देवदर १८ गहर भद्र
भण्डार लुल्लस १९ के कुशवारी गहर स्तन २० गहर लोचन २१
लगीछ जेता शम्भु विमलित भल भा गन हो २२ गहर कमल देह
दओनाक लती जका भलसाय लगीछ जगत कृति गहर हर हर
गेलहु २३ केसमे खोसल पूल आ सिरक सि दू झोड गेलहु चमकित
सेही भेटाए गेलहु २४ विद्यापति कहैत छथि ५ सरसोत्तर दणक छान
थिज ६ रस राजा शरणिह जलैत छथि

कलिके करण सनेल हैइत हृदय कला प्रथम गान
विष्णु लो लल्लाग मुनिसिंह डी अलि गेला अन्तरा १
निच दसन तनु न मुनिहुन ननम मनन्य रंग
कृष्ण चक चक निर कृत शिरन आनि कचन देह २
ने हनकाय भुजपास बांधि धारण दू इत नकरो ३
धेख्योते जाये गयो गुनमानि धोने पुनमत नन गये ४

गहर २ उइ तरासे लगु में

कति सख स्तन लयिकक छान जलैत छथि (१) काँतेली
स्तन करैत छथि देखिनिह कामदेव हृदय पर प्रहार करैत लगीत छथि
२) केशराजसे बन्ध्या गौन भण्डि जेना मुखचन्दक डरे अन्धकार
गहु) कलैत हो ३) लोचन वस देहमे सटल छैक। से देखि कथिओ
मुनिक मनमे कामदेव जागि उठैत छथि। (४) दू स्तन भानू मनोहर
चकवा चकवी थिज न इ दू लालसं डोड गहरा सभक अपन दलमे
झिनि जा न केर अने के देह १५ गही आशकासे दूके भयन
बाहुपाशमे बाँधे रखने छथि ज केर अकासमे डडि ने जाए (६) विद्यापति
कहैत छथि पुण्डरीत प्रथम गुलबलि नारी पाँच सगेत छथि

भनइ भौदो गहरा भल सख लोचन लोचन लोचन ३४
भाव लोचन हृदय चीर ला के कृष्ण लल सख पर गो ३५
रि हल मल्लिकार्जुन सख लोचन जगैत लुकि अघ भल ३६
भधुर ह से मुख सखिभ भल कामेन कलीन कृष्ण गेल ३७
नखि लुकिने भय तरसा लल लोचन मुनारे सखिनी छत ३८
पत देल रीसये लोचन गन भाव गये भइत ज सखि जग ३९

१ भद्र भुजा २ भौमिक लोचन कुशवच ३ छटाडिनि

नतिकामे भनुरक्त होइतहि छथि (कृष्ण सुनगर छथि तँ राधा भेटव
करथित)। हासिनि देवीक धति देवसिह पर कृष्ण प्रसन्न होथु

हृदयक हार भुभङ्गम भेल दास्य दाद मदन विषय देल
नयनिय लहरि पसर विषय धरि नुन पावे मने अङ्गरेहुं कल दन्ति १
केओ सखि जल दौ परत उबार केओ सखि चिकुर चीर मङ्गल
केओ सखि कुठि निहारण तँस मने धान अङ्गरेहुं कल दन्ति २
ए हरि चलहि तजे करहि गोहारि मनेन जवनि प्रथम दारतहि ३

१ मदनरे स। २ पर धडकज। ३ मने। ४ सखि अएलाहु

सखी कृष्णक राधाक विरहदशा सूचित करैत छथि (१) राधाक
छातीक हार साध भए गेल, ओ दास्य दाद का मदन विषय भरि देबक
(२) ओहि विषय लहरि सगर देह पसरि जेबक हम कल जौंते न जग
अएलहुं अछि। (३) केओ सखि जल नए एकर पोवन ओहि केओ केन
आ धीर सम्भरैत अछि। (४) केओ सखी दधिक मने विहारैत जौंते हम
दीदलि तोरा मने अएलहुं। (५) हे हरि उबर तँ गहरि कर म नरो
पाप-संकटमे पडलि अछि

भग्न सती धनु देखिअ कठोर न जने पति सखि मने नैन
सायक तोर नयन अति घोर राधा मदन कल दन्ति १
सुन्दरि सुनह बघन मन लाए मदन हार मने नैन २
एत के पार काम परहार कल अभिभव की हो ३
कृष्ण जुग सम्भु सरन मोहि देह। एहि जग तिरेहुं दिकल नैन लोह

१ घड २ फांसि। ३ तीथ मदन, ४ युग

कृष्ण राधाक सन्तुल्य करैत छथि (१) हे सुन्दरी, तोहर
भुलतरुपी धनुष कदम्बर लखैत ओछे तहि पर तँ ओछिमे काजर लगाए
जनु गुन (पायचा डरी) सँ जौंते देनह २) तोहर नयनरुपी घाण
बाछ ओछे सँ मभ तँ देत पदनु ओछे धनुष-बाणसँ मदनरुपी व्याघ
हम मारैत अछि से लोक नहि ३) हे सुन्दरी हमर निवेदन मन दए
सुनह एहि मदनक हाथसँ हमस उचारि लेह। (४) कामदेवक प्रलय के
सहि सवैत अछि। भारी पराभवमे छि कोनो धतिकार नहि फुरैत अछि
५) तँ अपन दूनु स्वरुपी शिष्ट नम (जे कामकें भारि सकैत छथि)
हमरा शरण देह आ तौनु लोकमे धिक्कन यशक भागी बनह

नयन मदन किरी धनि राधा जनु लागल तहि धान्दक धरि १
कल नुकाओय चान्दक धर जतहि नुकाओय ततहि उजौय २
छाँटे रहत जनु देह कहु मन्द भासै मुख नम ३
धनुष नयन तोर कदम्बर काय नैय परत ४
विचल सौंते कल गुन नैन नयन हारन सँ ५
सगर मने नैन नयन घोर तँ लहरि राह मने ६
मने १०० जौंते हो तेसक चान्दक धरि किनु नैन लोह

नम लहरि मोहि १ हरि हार २ तिहरी ३ लोह

कृष्ण राधाक सन्तुल्य करैत छथि (१) हे राधा, तोहर मुखक
गोभा धर दिव इह कलमिने नरो पर धन मदनक अरुप ले लागह
(२) नयन तोर अमान मने कल नुका नहि स्वीक अछि। जतहि
नुक मने मति दुनो म जएतक। (३) तँ हे सुन्दरी तँ घरहिमे रह
कलमिने नैन लोह नहि। कदापित राह धान बड़ि तोहर मुखकें गरमि
लेतहु। ४) कारी कातर थाला तोहर कदम्बर अछि तेन न चंचल
खजल सन लखैत छहु (५) जँ अछि (आखटक) देखि लेतहु तँ खजल

वैदिक फाँसमें बड़ा" लेतहु 6) शङ्ख अन्निक रहितह दिनाक तें राज
समुद्रमथलमें समुद्र घोराए लेतक तें चानक रहसं उड रिगध 17)
विद्यापति सहेन छाथी जि शङ्ख रहल: चानहुके किउ कलक कासी अग
लागत छैक तें तोरा मुखमें चानक मम सहि भा संकेत छैक

१. एकान्तिकी जयिहत्तं ह्यर सत्सु खल्ल कुर लोप ह्य
 २. तद्वत् भवति भाषण कुर कुरा को ड्रापय निधेयुक्त अन्त २
 ३. कि कतय सुन्तरि कः पुन भवत पदु राखल भौर नाइन् ल'अ
 ४. भल भावभरे सिंधेल सरित कतय जन्त वने गडिभ लोप २
 ५. धसमस करिभ ररिभ कुरा लोपि लोप ह्यो पापत कुर ३
 ६. गपदि न पारिभ ह्यभ ह्यम मूलान भ'धिभ वेकल ह्य ह्य

सकल 2 कर 3 धन 4 काल

राधा कृष्णमं अर्चयिष्यामि भेटक गण साक्षीमं करिष्ये (श्री १)
सखी हम् एकस्मिन् हरे मण्डित सख्यु सख्युगणसु हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
लक्ष्मि पदल (२) नाडी मण्डित सख्युगणसु हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
की साधन हम् साक्षीमं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
कनकलक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके हम् मं ज्ञान लक्ष्मीके
शरी के लक्षण पदल (३) लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके
लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके
लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके लक्ष्मीके

ਪੰਨਾ 10 ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ ਸਾਰੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਨੂੰ ਲਿਖੋ।
ਜਿਹਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਕੋਈ ਵੀ ਸ਼ਬਦ ਨਿਰਨਾਮੇ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਲਿਖੋ।

[illegible]

हीडन 7 पेज

मधो कणिके उदर दैन ह्यि हं काल्ह हन मजक
पेगसोके चौरा अलि देखिहु गंरा वड भाने देखल ३ हं कष्ट (खतरा)
उठायोस। १२ ने तोरा डर उहु ने ओकरा राधाके, लजवीज हँक तो
दूतू सगर गाने मगम करा गटेन उह की ३ हं माधव तीं हमरा
बचावह ओकरा नुरार अण्ड पर पराण दवः ४, तीं हमर मता
वज्रंत लहि मानेर उह पला कपले फेर ओकरा देखवा केल मल लाले
शिष्टि जानहु १५ जेहने तीं उह ओहो लहने भदुश भँड चीचारे राधामे
पहल सोने हमर प्रण नोदु लखर भा मरम गमार भा गेलह
पतयो लहि वृत्तिन उह ने हवान समुद्र पार लहि कलल ना सरील गले

[illegible]

1. $\frac{1}{2} \log \frac{1}{2}$ 2. $\frac{1}{2} \log \frac{1}{2}$ 3. $\frac{1}{2} \log \frac{1}{2}$ 4. $\frac{1}{2} \log \frac{1}{2}$

1. एक लड़का अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था।
2. वह बहुत तेजी से दौड़ रहा था।
3. उसने एक बड़े पेड़ के नीचे रुक गया।
4. वहाँ पर एक बड़ा सा कबूतर बैठा था।
5. लड़के ने कबूतर को पकड़ लिया।
6. वह कबूतर को अपने हाथ में ले रहा था।
7. कबूतर ने लड़के की ओर देखा।
8. लड़के ने कबूतर को छोड़ दिया।
9. कबूतर ने उड़ान भरी।
10. लड़के ने उसे देखते-देखते हँसने लगे।

दूनी धरणा पठवा चहैत छह वं रहैत बात नहि जायह, 4 ती हदयहीन
मुख छह, ओकरा आनेके घुसा कोना टिपेक भरी निरुत्तर छहु तोहर
मन। (5) कोपयश हाथ आएल रत्नके लपकैत छह मरम तोरा के मरम
(मदपुरुष) कहैत छहु

184

कामिनि लोहे उपदेश धरब हे मुनि अरु दिन बानी
नागरिपन किछु कहब चरबी कहलैभो बुझा सयली
कुन्द भस्म सहस्रम जसो भाष्य नयने जगाम भनवली
भस्म दए अनुगम बडाओब बडगिम भडम शिभरने
कैनव कए कानरता दरसवि गढ अविदमान दान
कोप कहुन पावभन मनव अधिक न करव माने
कोकिल कजित कण्ठ पैसाजव अनुरन नहि रितुअ
मधुर हासे मुकुमपदन मणव निल एक रज्ज नार
मम पलेद नीसह ननु दरसो मुकुमन लोचने हर
नखे हलि पिभा मनिधाम एवओय मुन द नय न
मुकुन मनमय पुनु न बुझाव कान मरम पदारी
गल भाव जे पुनु पलनय हरे कलानी नय न
रस सिनार स स कवि गालीन र वृद्ध मरम
राजा सिनार र हरे गाय लविजगल क

जे मुन मुन सुतावे 2 मरमपन 3 नहिम 4 कुन्द भस्म
सहस्रम सम्भार। 5 लङ्गिम 6 दरमय 7 कलता पर गिय न, 8
बडाओब। 9 समय से भानि मह 10 हरे मन उम। 11 पुनु
नृङ्गाओब 12 मुखमभोज सरस कोरी गव बुझे ममय प नार 4
विषपति कवि भाने।

सखी नायिकाके रमणक रीति सिखवैत भये 1 हे मुन्दरी
पिआसे तेन बजबह (मिलबह) जेव कुन्दम भस्म नहि सयली

कामगसल जगयव रमणक भरोस दए द 1 ललित भस्म अहिम द्वारा
पिआक भस्मपन वदलव 2 जखन पिआ जसिके आविगल करथि
लखन व्याजपुके कानरता कृषिम भव देखावह कोप करवह मुदा
वसिथि 3 अनुगम भस्म जगयव अधिक मान नहि करवह 4 हे
कामिनि हित वचन सुते सुते हकर 5 नदर मन रखने हदिर तोर हम
मारी नाशिक किछु लक्षण कह चहैत छिअहु किरक ते किछु बात
चतुरी नारी कहलै पर बुझि सकैत अछि 14 वीकिनक कूजल कण्डमे
भाते अनुराज गमन्तक अनुराजल वरवह जेना कोकिल वसन्तके सरस
वलवैत अछि नहिछा ता पिआक अपन मधुर दोहरे सरस बजबह
मधुर हाससे अणन मुह मुकुमन करवह 15 अरि (रोनाकेवाक भस्मय
लाज, शांति देव 15) रविमम पदरद घम) सयनह ते देह निरुत्तर
(सयारहीन) का भस्मपन हिस निमयवहना सहस्रमय वाद पिआक नह
मदम मरम हुनक मरम मरम म म शोकिम मरम मरम मरम
(6) ते एव वर रति मर याजल पिआक मरमम द्वारा पुन रति मरम
हेनु तेमम मर मरमम मर व मरमम पुन वलटाव लेह गी
कलानी कामकलानी थि मरम मरम मरम मरम मरम मरम
मर मरम, एक मर लविजग देव मर मरम मरम मरम मरम
मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम

185

कामग मुन 1 मरम मरम मरम मरम मरम मरम
ते पुनु मरम मरम मरम मरम मरम मरम
मर मरम मरम मरम मरम मरम मरम
मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम
मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम
मरम मरम मरम मरम मरम मरम मरम

1 कतर गुला कतर 2 कतर गुला 3 न माग 4 धीक 5
सयन भय

राधा आत गोपीसे नमक कृष्णक मन्त्रेण कहै छथि ।
दहुनी गुता अछि आ बहुनी कृष्ण दहुनी काग रत मल भरीन बहै ।
किन्तु जे वास्तव मर्मे (अन्तर) मर्मे अछि स रत छदि काच मोर
किन्तु अछि। (3) हे श्यामसुन्दर उतर देह केलस कोन गुण छैक से
परखिके कीनह। (4) हम धरत दिन धरि मान काने रहलहुँ तेनी तो
पसिजलह तकि।। तौ मधुकें छदि आन धनक टान (भीख) मई। छह
(5) हे माधव, तौ कहन बकनेल छह जे अमन छदि निषि वाडन ॥३६॥

अथने नमः सगल पासे मुख रोख टगारे हासे
नखने उपजु ऐसन मान जगत मान हनुम
के सखि कह्य कोस बिलासे गोप मन्त्रनि गोप हनुम
केही विषय गह हो गोप साधन मन विजय ॥
कोह जल बलायण जय। सङ्गाह गुण गधर हो
सखि हृदय हरण हो पस अयस हो ॥३७॥
नखने उपजु ऐसन साधन न दिअ सगल न दिअ साधन
मन विषयनि तो नखनी नखन नखन नखनी पारि ॥

बदव ८ गह ओह

राधा सगभक अनुमय सखीके सुनबैत छथि ।
लग दहुनी भा पद हास देखाए हमर मुह निहारण लागी ॥ १ ॥
गहन भगत होमए जेना सगर ससार कामदेव भरल होथि ॥ २ ॥
अनि होलाग की कोहअहु हम विजय ॥ ३ ॥
अन्तरमे ॥ ४ ॥ सो सखन की श्रुतये आ हा सखन धरये लखन
हमर मनके विचार कहर सता सीमा रवि सग ॥ ५ ॥ ऐसके सखमे

हमर छान उझार चाथे भा सगर सगदि सधनमून पीवण लागथि ॥ ६ ॥
अखन दखित भग स्तनसँ भांगर दरायथि तँ हलक स्पर्शसँ शरीर विविधित
भग नख ॥ ७ ॥ तखन मन्त्रेण रहत दुखी नखण जे जे हलमाने व्यक्त करी
ते रोक्खे करिसति ते हे ऊही न तदि।। (8) विषयनि कहैत छथि तौ
मुपिमांरे छह। नगरीक वाणी अमलमिथित रहैत अछि

कुटिल दिलोक तल तदि जत मधुहु परने टेड तदि का ॥ १ ॥
मन्त्रिने मन्त्र रतिम नखे तेनी हलि- बुझाए बुझाए तदि सखी
को सखि वराय कजान परकार गेलल कतर गोदि गोप गमाय ॥ २ ॥
छहर मन्त्र सखी के का पद बहमान दखन हँसि होय ॥ ३ ॥
सुपन बगन सङ्गाह जेहु देल नखनी न खन नखीनर हरि भोज ॥ ४ ॥
विनुय होहु काय पर नखन नखिनि सङ्गाह जेहु सङ्गाह ॥ ५ ॥
वि सग कस्य पल कइदर का कीहु सखी तदि विजय राधा ॥

1 पल २ हटय ३ हो ४ कसो ५ क ६ नखे ७ नखनी

राधा कहरण गहरण सगभक सखीक सुनबैत छथि — (1) हे
सखी वरत कुटिल दिलोक मने तदि सखी अछि। मधुरी होल ॥ २ ॥
पल ॥ ३ ॥ सखि ॥ ४ ॥ मन्त्रिने मन्त्र ॥ ५ ॥ जे भगी इति को ॥ ६ ॥
दुखीनर ॥ ७ ॥ सो ॥ ८ ॥ सो ॥ ९ ॥ सो ॥ १० ॥ सो ॥ ११ ॥ सो ॥ १२ ॥
सखि कह्य कोस बिलासे गोप मन्त्रनि गोप हनुम ॥ १३ ॥
कोह जल बलायण जय। सङ्गाह गुण गधर हो ॥ १४ ॥
सखि हृदय हरण हो पस अयस हो ॥ १५ ॥
नखने उपजु ऐसन साधन न दिअ सगल न दिअ साधन ॥ १६ ॥
मन विषयनि तो नखनी नखन नखन नखनी पारि ॥ १७ ॥
विजय राधा ॥ १८ ॥

झोंझत झीलत जाए रहल अछि ३ सखी कहल अछि नीयत कौन कौन ३ होएत?

जीवन धरि रूप नहि छल। धनि तुम बिछार देखिअ सब गुन
एक पार भेल विधाता भोर। सम कर साजि न फिरजत तोर।
कि कह्य सुन्दरि कहइते लाज। स कहले किनु तोर अकज ३
मन्दाहु काज अपुति भलि भेलि। तँ मने किछु अकजि नहि ४
जो तोह मोनह करजो इथि अकज। चोरि केन गेली गुन रज ५
दुर कर अने सखि अइसनि बानि। अमिअ वं अइसि साइकरे सानि ६
ऐनक उकति कहइते नहि नै। अथक गरम चयन के थोळ ७
नीयत सार जीवन जेजो रजग। जीवन नै जेजो सुपुरुष सङ्ग। ८
सुपुरुष पैस कयहु नाह छाड दिने दिने चान्द ९

१. तोह हो काज। २. जग

दूती साधक पर-पुरुषसँ संगम हेतु भोजन करि आ १, २
सखी, तोर रूप यौवनसँ दब जाह छहु (जेहने यौवन आकर्षक, तेहने
सौन्दर्य)। तोरमे अथक गुण गुण देखल ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९।
विधाता भान्त (अपुन) भए गेल अने रजग न्यासीक रजग नै। सम न
नहि कएलनि। (३) ई सुन्दरी, की कह्यहु ४। ५। ६। ७। ८। ९।
अपन तुल्य दोसर पुरुषक गहर १०। ११। १२। १३। १४। १५।
(हानि) होएतहु। (४) काज अपलाह थिक तथापि ओकर घात (प्रत्याघ)
भल भेलैक (जे ओ पर-पुरुष तोर प्रीति चाहैत अछि)। इएह साचि हम
तोरा ई विचार दोलेअहु। (५) जे तो सखीकेन १६। १७। १८। १९। २०।
गुन पैसमे घारि गुन २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०।
नहि काजग (जे ई कुकर्म थिक)। हम ३। तोरा जेजोमे ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०।
अमृत पिअबैत छिअहु (प्रेम अमृत आ ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०।
साधु)। (७) रसिकक उक्ति कतेक कएहु ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०।

योह ८ जीवन तखनहि सफल होइउ चंदन यौवनमे रनिरइग हो आ
यौवन तखनहि सफल जखन सुपुरुषसँ संग हो ९। सुपुरुष कहिओ
जोहने नहि छोड़ैत अछि। ओकर प्रीति दिनदिन बढ़ते जाइत अछि जेन
चानक कला

२८९

सुन सुन सुन्दरि हित उपदेश। सपनेहु जनु होअ विषय कलेस १।
अमर बदन इषाक मोरि। आज सुनहु छिअ चान्दक घोरि २।
घरे घरे पहरि मोल अछ जोह। अबही दूखन लागत तोहि ३।
कएल मुकाओत चान्दा चोर। जतहि मुकाओत ततहि इजोर ४।
बाहर होइए हेरह जनु काहु। चान्द भरमे मुख गरमत राहु ५।
निहारि निहारि कसि नुन लेनि। बनिषि हलत तोहि छपजन बोले ६।
अधर समीप दसन कब जोति। सौन्दर रीप बैसाउलि मति ७।
हम सपनस न कर इजोर। रसिक बनेके धन लेख मोर ८।
भरहि विधाते होहु निमइक चान्दहु कां किछु सागु कलइक ९।

१. राज। २. सीमा। ३. राग/नगुसँ

तखन तखनहि सफल होइउ चंदन यौवनमे रनिरइग हो आ
यौवन तखनहि सफल जखन सुपुरुषसँ संग हो ९। सुपुरुष कहिओ
जोहने नहि छोड़ैत अछि। ओकर प्रीति दिनदिन बढ़ते जाइत अछि जेन
चानक कला

नाहरा लग आरन, कृत नैं बहुत भेटनैक भुदा रुतह तमि लोंदें भैलैक ,
आव मधुपान हेतु तृषेत ओ कसर मोहरा नम भुओत २ हे सारन
नो हृदयके धुल्लित करह अकर भ सोर कनेक देन परकव पयैत रहत
ओकरा माओर अधिक उदास निरास करह लोक नहि ॥ १ ॥ हे सारन
देखैत छी जे सातक दुःखक एते पाणी दा लाइ करैत भछि जे वेर पर
सौवन कालमे, केलेचिल्लन नहि कर सें अपन नीचन ओ सीटन गव
की करत ॥ ४ ॥ रिवायते कहैत छाये अमर तें स्वभाव सभ सुमुख
रस लेवे करत ॥ १ ॥

अधर हते पटावए चाहोम उखल बोलोम हेसो,
भानहि आनहि धैर रहत तरे सवि राख लो
सुन्दर देहा के गुँगे रहा गगन मालम लो
अबने इतना ते नहि जावेअ न कके करव नहि
सुन्दरि ओके सोचनो पुन पु
जे एक गोरहासे सब खोजल ते खोज खोज नत
कथा अमी करइ खुशी पावयो आँखन नम
ते रिवाज ॥ कथा पावो न कके रिवाज भासा ॥
इतनाते सुनक चरम निजने केस ओकरा ग
सुख सुख भोजन धैर नये नीज नये

१ अधर २ अर लहि।

शिलन हेतु १ काकत लपके दूरी सुजवैत छी २ सगी ने
घनिष्ठ नहि भए सकैत भछि लेकाहि ते ह नहि कर राखैत छह न
हिसि हिलके नवैत रहत ३ अमरमे सुख देखक
सुन्दर अवधि सभैत भछि किन्तु ते सब एक कालहुए धल जाई भ
सकैत भछि तकरा जावक लोभ कहे करैत नहि ३ हे सुन्दरि मे

हरि हरि कहैत विभु रक घेर जे कहलह मकरा हम परिहास ॥ मनाक
द्वि लहि लेव ओ बात फेर नहि जातह ॥ बात है छल जे राधा सखी पर
अरोप लगसोने रहिये जे नो स्वयं कृष्णसे अन्दरुत छह सखी तकर उत्तर
कहैत भछि कतर हल न कतर तें ॥ अर्थान हम केवल दूती थिरहुं
भोक्त्री नैं जोई थिकह ॥ १ ॥ जे निमाहि पूरा कएव नहि
हो नकर आण किएक देव जण ॥ जे काभिली कल धमेके गहत भछि से
सदग ॥ सदगम काय काता स्वीकर करत ॥ रति सुख छन भरी भेटनैक
कलक जीवन भार लागल रहै जलैक

माधव भग कवाळ उयेकावे नहि गतिर हम राधा,
भावसे कोषे आष हमि हेरावोई चरम राख जौने आष ॥
माधव विलोपे बचन बोल राही
सौदन रूप उल मुन अगोरे के गगन हम राही ॥
खीर केधूर वन हम गिनेल गगन भसी बकसीनो
सगरी राजाते हउ लोके राजाते खोजेन भेल मोर भागो ॥
मरुत पर देव ॥ हम बचन उके पन गेवह दूरे
नह दूरे लो वीर ॥ हम नो नतमोरे रहबहु मेरी ॥
पुन उल्लेख नहि नहि छल ॥ भोजन कर न धीर
होएन के उल्लेख नहि दूरे ॥ भोजन कर न धीर
भोजन ॥ भोजन नहि नहि ॥ भोजन कर न धीर
भोजन ॥ भोजन नहि नहि ॥ भोजन कर न धीर

१ शीर २ भु ३ अलस ४ धीर ५ हेरवहि ॥ लंगू स

कहे राधा कृष्णक पद पणर लीनन गोन वीर ॥ १ ॥ जे
धामे राधा लीन कृष्ण अविन नकन वैवाह खोलवति ॥ राधा एक दिस
मिलनक लालन ॥ २ ॥ दूरे दिस कर नो कलैव आदिस कएक दिस

तकैत अथ हंती हंतीह से जानू भाधा बाह उगगाह (१) राधा चिंछेन
 भाए कृष्णके वहनयेन ह माधव बाधन का कला एवं सब माधव के
 ललना हमसम से उपर इथि न लाकर बड़ाए रखलधुन । १ गेहरा लेन
 हम दूध रूपूर पान खीर आ एकमात तैभार का रखल कल। ती
 अएनह नहि। हम मगर राति जागेके चिनाओल हमरा न नसिमात
 छन, जे ओ हमर वशसे छह से भाइ दूटि गेल कृष्ण जल दैत कथेन

4) मथुरापुरी में हमरा बिलम्ब जावाल तें तो दुती किछु तबि
पठभोजन अंगर दह चारि गोट बाजम सभसं भट भा रत। तबि
रहलहैं। राधा एकर प्रतिपाद कौन छथिन । 5) गहर बिना उज्ज्वल बर
(खन एहि सुन्दरीपर) भाँटे सुन्दरीपर दौन उठु। तबि रात
स्थिरता नहि लहु। 6) कुँआरा जहल भट मन्द
विहसैत हमरा तिस लकल उह गहर शरीर तबि अंतर हटय मेरी कही
उहु। (6, विराहो कही। उच्य ह सुंदरी भलमे मरपय। तबि मा-
(कृष्ण तोरे थिकथन) ।

सुनि शिरिषण्ड तर त मने मग मने वि मने
मागत माताहं मग माताहं मने मने मने मने
मागत तम मने मने मने मने मने मने
देवि देवि आदिना उ मने मने मने मने मने मने
कलह मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

१ रस २ जलधि ३ शर्करा

राधा कृष्णके उपराग है। यह १) ८ गमक हय सन्तान २) ३
सुं भे चालवहुं जे घिरह सन्ताप दूर होन ३) ४ गमक न ५) ६ गमक
नहि पूर्वमे कोन राग कएल, ताथ दूर की होएत ७) ८ गमक पुनः रागा

मैंने हं माथा तोहर मुह देखक तैल बँर-बँर अवैत रहलहुँ उतरी
नहि पावि विरह-व्यथा पवैत रहलहुँ। (3) तोहर प्रेम मन पाडि जहाँ घरसँ
विदा भेलहुँ कि मुकुन्द कहर भाषाय जानि गेल गता दे हरे तोहू निधुर
भा गेलक अय छोरके घरी जाला जालि? ओतहुँ उ दयचन सुनव

246]

गुञ्जा अंगरे सङ्गत नीचे गान्धर्व वृद्धांगे पुन परिचरी
कञ्चन पांटे ज्योतिर कल कलल कण्ठ नर भोज पादो
द्वी भङ्गन नरर वेवहार
सम्पन्न नगर अंगरे चङ्कल नगर भेटल निरुद्ध गङ्गा
बड सपुस्य बोले अंगरे बड नरर जिन पादो नङ्गावे वगड
नैतिक बलद भान भल देखेअ पालय नरि उज्जिन
सय गुन आगर भवतह सुनिअ तें मग्रे लाजोस नरें
फल कण्ठ नरर अवलम्ब्य छानि भेल सन्दरे ॥१॥

1. हड्डि। 2. तारि। 3. जगह समर। 4. तेली।

कृष्णसे उपेक्षित तथा दूतीके उपराग दैन छवि । तं गता
(करजनी) अनिके मोतिक सग गोये देवह। धूमि गेलह तोर धानि त
सोदुस भयि स यव । ककलह, वि तु भेल बाघहस बीन। १ २ ३ ४
नैर भले यज्ज। सगर नगर धूमि धूमि नागर योजनह । ५ ६ ७
भेदनु तिकर गमार (३) सुतागर धूमि कान्हसे प्रीति बढाअल। आश
छल जे दिन दिन ह प्रीति बढ होएत (बढत)। यिन्तु ओ सिद्ध भेल तेलिक
(कोल्हक) लट धान पर देवह तें बह नीक बुझा। मुदा पालोने नहि
सकत । ककलह तेस कान्हसे कान्ह मिलाए दोसरक सग बाह नहि
सकत । ८ भवेर सुने रही ९ सन्त सग लम्पल अछि, सेह धूमि
औकरासे लेह लग्गल फलक आशसे गहक भन्सरा धान गिन्तु
फलक कोन कथा । १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

ਸੇ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿ ਜਿਹੇ ਸਮੇਂ ਆਸਾਨ ਭਾਂਚ ਮੰਨੇ।

$\pi^0 \rightarrow \gamma^* \rightarrow e^+e^-$

कि सखि कलह नहीत राख छोट दे सखि जेना १५

अपय पक्ष परिचय भेल जेना अंतर घडा देल ४

गमने कलह कलह ओज पर ओ पक्ष कलह राख ५

अच्छ ओ गमने जेना जेना ओज धरि नहि बनए सेना

देखल मुनल कहब लोहि पुन कि बालि पठाउते मणि

सहजहि गमन सरस जान डे रस रूपनराजन जान १६

हि सम्पूर्ण गीतक मूल आय अस्पष्ट। रा आ पारघट अपन असाधारण बुद्धिक बनें जे अर्थ देल अछि तकर मैथिली रूपान्तर देल जाए

(१) कृष्ण घर आ' बाहर दूर दिसि गेलह। (हुनक) सुन्दर शरीर, माटिमे मिलि गेल। (२) आय कोन-कोनमे लोहर बोल दहन रहि। कामदेव अपन तौल पछि गेलह। (३) हे सखी की कहि नहु कलहमे लाज होइत अछि। नेहोरा कएने अन्त नहि मीन सखि ४। (५) तौल लोरा) अधलाह घाटमे परिचय भेलहु, तौ लो हुनक बेल नरम ५। (६) देलह। (५) बलाग बनाए जएयामे (लो) ओज करैत छह सखी भ-कर खोज करैत अछि। (६) जेलह जे ओछ जति थिक, सेहो सखि नहि बिनैत अछि। (७) हम जे किछु देखल रहल ३। (८) हमर समेट लए पठभेला ७। (९) हमर सखि नहि ८। (१०) माएब (उचित थिक)। रूपनारायण ६।

हुनक ओजो जे कलह भेल केहु सखि कलह १५

राख जेना नहु कलह जेना जेना नहु आइते मा

माएब जे १५ १६ १७

नहु सखि जे १५ १६ १७

सखि जे १५ १६ १७

सखि जे १५ १६ १७

तुअ अधीनि २ कर। ३ ही निरवाहे

राधा कृष्णसँ कहैत छथि — (१) हम कुलकामिनी छलहुँ, किन्तु लोहर प्रेममे पडि कुलटा भए गेलहुँ। आगों की हाल होएत से नहि सांगलहुँ, सबकें छडि लोहर पाछु लगलहुँ। आब तँ लोहर आइति (वश) मे पडि गेलि छी। (२) हे माधव, प्रेम पुरान नहि होअओ। एहि सब प्रेमके अन्त धरि सुहृद रखिहक जाहिसँ हमर मान मर्यादा बँचल रहए। (३) कृष्ण राधाक एतना वचन सुनि आ' मनमे सोच-विचार कए अपन अपराध सबधि लेगीनि। विषादित कहैत छथि, सुपुरुषसँ कएल प्रेम अन्त धरि निवाछ रहैत अछि।

की कलह निरवाह भबुह विभङ्ग। धनु मोहि सीधि गेल अपन अनङ्ग। १।

कलहने कामे गदस कुपकुम्भ। आइत सखि देइते परिरम्भ। २।

धनु सखीजन सखिण' नेह। देनि' घमाहि बाइक सखिरेह। ३।

राहु सखि कलह सखी आनि। अधर सुधा मनमय धर जानि। ४।

सखि जेना सखी रहजो अंगरि। पिबि जनु कलह लगल मोहि धरि। ५।

६ १३ १ १४ ३ १५ १६ १७ गुनगावक धनु बुझि विचारि। ६।

१ भगइत मतव। २ सखीयै। ३ आमे

राधा कृष्णसँ कौतुकालाप करैत छथि — (१) हे कलह तौ हमर भउह की देखैत छह। ई भउह नहि ई थिक कामदेवक अपन धनुष जे ओ हमर ६। (२) सखिदेव लोचन हमर स्तनरूपी घैल बनभोवनि आनिङ्गल करचह तँ ई घैल फूटि जाएत। (३) धनु सखी लोकनि हमरासँ बड प्रेम करैत छथि ओ सब बाँक चान-सन घसगहिन कए देखनि अछि। (४) कामदेव, राहु पिबि ने जाए तहि करै, चानसँ अमृत आनि हमरा अधरमे रखलनि। हम ओकरा अपन पाण जकाँ ओगरने रहैत छी। (५) तौ सखि नहि लेह। जे से करचह तँ घोरिक आरोप हमरहि लागल। (६) एहि

पकारे कलाकुशले कार्यमें ली। राजा को नुक करैत छथि ३७ गुणक गुणक
पिआ ओकर आशय बुझैत छथि।

१०

प्रथमहि विरिहम गौरव भेल। इदय पर आन्तर नहि देख
सुपुरुष बचन कएल अवधान। भेल मन्द दुअओ दयन ॥ ३७ ॥
यल बल माधव भलि तुअ रीति। चिखन बचन रंगरंग ॥ ३८ ॥
परक बचने तोहें आपन कान जानल तखने समय भेल आल ॥ ३९ ॥
आबे अपद हरि तेज अनुराध। कहूँ जनु हो विदिक विरोध ॥ ४० ॥
नहि भेल रङ्ग रभस दूर गेल। इयि हमे खट एकओ नहि भेल ॥ ४१ ॥
एके पण खट जे मन्दा समाज। मनेहु तेजल आब अखिक साज ॥ ४२ ॥
भनइ विषापति हरि मन लाज। कहूँ जनु हो मन्दा समाज ॥ ४३ ॥

बुझा। २. पहु। ३. समय समान। ४. अपदहु। ५. न भेल

राधा कृष्णकें उपराग दैत छथि — (१) पूर्वमे पर्यंत समान गौरव
भेल (जे तोरा सन पिआ भेटल), इदय पर हारहुक व्यवधान नहि होअ
दिएक। (२) सुपुरुषक बचनमे आस्था राखल। भेल कि अतभल से अन्तमे
बुझल। (३) जाह ई माधव खूब छहु तोहर रीति। तौ दुइ समक
पतिअए नेह तोड़ि लेलह। (४) जखनहि तो सज्जन केर कल देल
नखनहि बुझल जे दिन बदलि गेल। (५) अल है तय सज्जनसभ भनय
(मंसयाक प्रयास) छोडह। कपती विधाए जल नम नहि देल ॥ ३७ ॥
नहि भेल, रभस नहि भेल, ताहिसे हमरा विदुषे केर को नहि
खेट एके बातक अछि जे अधम पुरुषसँ सग भेल मन्द नीओ लोक
अधिक लाज छडि देलक (लोक सज्जन नहि रहलक),

रचति समपति कुलल सरोज। भमि भमि भमरी भमर ॥ ३८ ॥
दीप नन्दसोम भरवर ॥ ३९ ॥
अबहु तेजह पहु जौहे न रीति ॥ ४० ॥
इ सन हो मन्दन टहर ॥ ४१ ॥

तय राख नहि सने रङ्ग हन कौनै यह हो रस भङ्ग ॥ ४२ ॥
नन जौहे नन कल चरि पर धन नए नहि रङ्ग ॥ ४३ ॥

१. जानल भए गेल। २. होत मोहि मदन

राधा भोर भेला पर छुट्टी देवाक अनुरोध कृष्णसे करैत छथि
(१) राति बीतल। कमल फुलाएल। भमर घूमि-घूमि भमरीय खोज करैत
अछि। (२) दीपक प्रकाश मन्द भेल। आकाशमे लाली पसरल एहि युक्ति
(लक्षण) सभसँ जानइ जे परल भए गेल। (३) ई पहु आपहु हमरा
छोडह। आब हमरा ई रंगरभस नीक नहि लगैत अछि। कैर भेट होअओ
दोहाड़ कामदेवक। (४) नागर (रसज्ञ पुरुष) नारीक मन रखैत (सहमति
पवैत) रमण करैत अछि। ई पहु, हठ कएने रगमे भग भए जाइत अछि
(५) चारि ततवे करी जतवा फाएल। आनक धन लएके ओकरा ओगदने
नहि रही (नहि तँ पकडल जाय)

अधर सीगुने अजोध कर माध सख न पार पयोधर हाथ ॥ १ ॥
विपटते नीगी करे धर जन्ति। अकारल मदन धरए कल भन्ति ॥ २ ॥
जोसोने कामिनि नागर जाह कजाने परि होगत केसि निरयाह ॥ ३ ॥
कृष्ण कपक जय कर गौरे लेल काँच बटर अरोलेम हाथि भेल ॥ ४ ॥
नय पाइ जय नखर धिंसख अश्रु न आटए चान्दक देख ॥ ५ ॥
धनि मुखसोभ मोमे रह हैरि। चान्द बदन फाधए कति धरि ॥ ६ ॥

१. लबी। २. अरुण। ३. चाहिआ। ४. तुअ। ५. चान्द झपाय बसन

कयि मृधा नायिकाक सगमक वर्णन करैत छथि ॥ १ ॥
अधर-पानक बाधला करैत छथि तँ राधा भूडी गौति लेल छथि स्नान पर
हाथ देब राधाकें असख भए जाइत छति। (२) खुजल नीचीकें हाथसँ जोति
रखैत छथि जागल काम नाना लीला देखैत अछि। (३) कामिनी राधा
नव-यौवना (बाला) छथि तँ कृष्ण कामकेलिमे परायण नागर छथि ॥ ४ ॥

कान्ह पोछलह रहि उजरी लखल रहलहु। 15 विद्यापति कहैत छथि र
सुन्दरी सुनह, लखिमादेवीक पाने राक शिवसिद्ध प्रत्यक्ष कर्मण दिवसह

रमयि काजर वज भोज भुजदमन भोज पुर्वस पड़ल दुख

गणजे तस भल गेने बरिस घन समय पड़ल अभिसार

सखी बचन छडैने गोहि लज

मे भोज सौं होम यह सब दमे अङ्गोकर साहस भन देल भोज

ठासाह रहि भ भुमि पास निजिह भुमि दिगमज का न कह

हरि हरि सिध सिध लख गड़ल निच राख न पड़ल निजह

अपन अहित लेख कहइने पतौइ न पाइल पञ्चक भोज

कान्ह हरि न यह रहकयन मह पम परअप थर 16

घन घटल फनि हिन साहस चलि नपूर न कल री

मुमुक्षु पुछओ तीरि सख कहसि साहस पमक कन एक भोज

भनहु विद्यापति सुनह सखीस 17 18 19 20 21 22 23

गजा सिधसिद्ध कनारणन सकल कल भोज 24

भुजदमन 2 से जति न 3 मदे अजिह 4 सिधसिद्ध 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24

राग भ

अभिसारमे शरति गण विद्यापति कहैत छथि र

(1) राति काजर वोकेउ मयल साह पुर्वस पड़ल दुख
सखी, बचन छडैने गोहि लज होखत न होखत न यह होखत न यह मय
सहै लेख। भनहु सखीस कहैत छथि र 16
ठासाह रहि भ भुमि पास निजिह भुमि दिगमज का न कह
हरि हरि सिध सिध लख गड़ल निच राख न पड़ल निजह
अपन अहित लेख कहइने पतौइ न पाइल पञ्चक भोज
कान्ह हरि न यह रहकयन मह पम परअप थर 16
घन घटल फनि हिन साहस चलि नपूर न कल री
मुमुक्षु पुछओ तीरि सख कहसि साहस पमक कन एक भोज
भनहु विद्यापति सुनह सखीस 17 18 19 20 21 22 23
गजा सिधसिद्ध कनारणन सकल कल भोज 24

गढ़ल रास सहेन भलि प्रेममे कतवी परभव हो थोड़े बड़ाक चाही। (5,
साप पापरमे लपटाए मल लकरा नो नीक बड़ाह, नपूर ध्वनि नहि करतहु
हे सुन्दरी नारा पुछैत छिभहु सत्य सत्य कहैत प्रेमक कलहु अल्ल छैक
16 विद्यापति कहैत छथि हे मुमुक्षु सुनह गमनमे विलम्ब नहि
करह, राजा सिधसिद्ध कनारणन सकल कल भोज 24

सुख सिद्ध सिद्ध चान्दने निजिह इन्द्र काहे गति निधि तिलक

विद्यापति अभिसार गला मंगेअधर अङ्गुस फलक सखी

गणध भेलि सखन घरी

अदर हरक पुर्वस न पुर्वक चन सखी नन गरी 1

कन के दल लख चनक कुल दल कलरी गलक भानी

चान्दने कलकुल लखसिद्ध कलक सखी निजिह सखी 2

भनहु विद्यापति मुनू वर जीवने रह निकट पासने

राग सिधसिद्ध कनारणन सकल कल भोज 24

1 गिरी कहि गोवि 2 लखसिद्ध गलक धर 3 कल 4 दल 5 नरी
सखी

सखी पुर्वक नन छथि न नन अपन पल्लव हो मिलल
मयल न नन मुनू वर जीवने रह निकट पासने
चान्दने कलकुल लखसिद्ध कलक सखी निजिह सखी 2
भनहु विद्यापति मुनू वर जीवने रह निकट पासने
राग सिधसिद्ध कनारणन सकल कल भोज 24

चम्पाक गण्ड तर अन्धकारमे मिलन चानन भ' कुकूम अ' मे जीवनक
(पहिल सङ्काक समय, (४) विद्यापाने कहैत छथि हे सुन्दरी सुन्दर
अमावास्या सूर्य कृष्ण भा चन्द्र राधा दूतक मिलन निकट अछि।
लखिमा

प्रथमहि कानन हृदयक द्वार बोलनह गने मर' जैव' अधा
हठे 'विघटऔलह' ऐसजओ पैम' जइसे' वगुनिआ हारक देस २
न हरि नहि सजो नेह बढा' जन अन्धकार' न करहि न नर
दुखनि दूनी ते इ भेल विरिसस नीध' सँको दूर गेल ३
मये कि कहब हीं दूखत मोग' चिन्दन चटइब' योनि पन ४

१. ऐसनेओ हठे विघटऔलह पैम। २. जइसना। ३. जे शरदति सजो कि मे
बढाप। ४. नगु स

राधा कृष्णके उपराग दैत छथिन्ह - (१) पहिने तौ हमरा ॥ तबक
हार बनऔलह आ' कहलह 'तौं हमर जीवनक आधार थिकह २) पहिने
पैम तौं भरसा विलुप्त कए देलह, जेना जादगर हाथक सोन गायब करैत
अछि। (३) हे कान्हू, तीसरी पैम बढओने कतक परिनाप होइत छै' से
कहब कहिन। (४) दूनी दुजेन छोले, इ तकर प'णाम भेल 'तौं न भेल' से
गौरव छल, सँको समाप्त भए गेल। (५) हे कान्हू, आब तौ' जे 'नर' से
हमर अपने दोख थिक। हम पठैलकें पडार यूँझि भेलह

रिपु पञ्चसर जनि अवसर मन गुने कुसुम' सरासन सा'न
हेरि मूल पथ विघट' मनोरथ के जल कि होएत आजे।।।
नोफल भनि जुगुली
हरि हरि हरि रति सख धरि पलटनि नहि ओ दूनी
साजु अभिसारा पडु अन्धकार' नहि नर' जे न भेल
भारति बग न गे' हो मोग लखह दूर हो' न भ

मो २ घटी १ नहि दूनी ४ जा ले ५ नो सुअ।

राधा विद्याप ज्यैत छथि (१) हमर शत्रु कामदेव जेना मनमे
अप्युक्त मयसर हाथि कलक टाण सगए लेल (प्रहार कए रहल छथि)
मन्त्रक वाट हूँ देखि देखि निर' होइत छी जानि नहि आइ मिलन
होएत कि नहि (२) युक्ति (दूनी पठाएब) विफल भए गेल। हाए, रति
हीति गेल तौओ हमर दूनी (कोनो सवाद लए) घूरनि नहि। (३) अन्धकार
छल तँ अभिसारक तैआरी कएल। आब कहूँ अजानी चान उमि तँ जाए।
अनुराग कणमे जँ मिलन होइछ तँ लाखो युग थोड युझाइछ

झाँझि झाँझि छित न करह ननु भगर ज रा' क'नति थनू
नहि नहि रति' बाइति धनु। दूतल वधन बोलह ननु २
एहे राधे धरज धर। बानभुँ आओत' इच्छा कर
विमुक्त' जनि बाइल' रस' बाग' न करि' नहि स' ट'स ३
दूरल' पडल' दूर न जल' हाय मोग' मोट' पडल' र' ४

न छित कर २ रिति ३. अओतह ४ बाइल। ५ बाए। ६. सुजन,
७. न।

मो १ राधे के सान्त्वनी दैत छथि (१) हे राधी झाँझि-झाँझि दौ
झीन' नहि नर' भगर' अन्धकार' नहि नर' जे न भेल' अछि। (२) पैम
नारा दूतक बीच छीने बढतहु। दूतल विर'सा य'न' ज'न' नहि ब'न'ह
(३) हे राधा, धैर्य धरहु। पिआ असौधुन' भेल' प'न'न' प'न' ४ दूतल
चुगिलपनीसँ ओ जे लमसाए गेल शरद' तिलक' दीख' यूँझ' कर' के
रोकि नहि'न सो ५। ६। दूरलक बान धर' पैम' दूरे नहि स'व' सो ७ राध
घसने पाथर धरक रेखा मेटाए नहि सकैत आछि।

जे छल से नहि रहले भाद धोमल धोन पल्ले लोहे भोले ।

रोस छडाए बढ भोल हाम स्फुल बजोसब बढ पोरभर ।

कजोले धोर से हरे बहुत मड हं क रोल गि ।

तहि सोभम कमान हज गान बुख विरोधन के तहि मर ।

आदरे भोर हजि एा सेन वचनक टंस पैम दुनि रोल ।

अनुतए मरि बुझाउचि राए वचनक कोमले की मरि हं ।

नागर नागो होएन मेलि पञ्चबाग बल बहुत कोले ।

कृष्णसे उपाख्यान राधा लखीसे कहैल छथि परिन जे भाव
(नामस) छल से भाव नहि रहल मुहसे ने कटुवचन बहराए गेल से भाव
धुरि नहि आवि सकैल अछि । 2 हम रोष (नामस) के त्यागि मुहसे
होसी अनलहु जे कृष्ण पसल होथि किन्तु हमनके रोसिय बड प्रयत्न
साधय । (3) हम कहय भाव कोला धुरावह 4 मान जाय लखि
स्वभाव धिक, ते हम मान काल से भोजन पुरुषके मजस्य नतवकि
चाही । (5) हम आदरभाव देब अल मुदा लोहसे लाम नहि हजि भोल
मुहसे जे वचन बहराए गेल लकर कयको पैम दूर गेल । 6 हे सखी
हमर हे निवेदन कृष्णके कलावे कोवे बुझावह राए, वचनक कोमलम
कोन पान नहि शिष्ट भा सकैल अछि । 7 सखी आवासन देल छथि
पैय छवह लो लखी छह भो नागर कोवे नखन दुलही मेल किनह लोह
होएन कामदेवक कपास रगरभस पुन धुरि भोली ।

नहि किछ पुछल रहलि धोले बैसने लग गेल कोले गहर

परम विरहि भोल लहे तहि नहि ऊन गोविंद पुन काल को

साधव भे कके कोवे रसली

काले जलने पैसो कोलेलि लहे भोले विरह को भले ।

भोर कलेवर लहु मुँह मसध रंस अरुन रुदि भोला

भय हरसन छले नलि लह रतोपले काजे कलक बैलि टेंबा ।

नयन लोर जे जाल हलन हं कुच सिने कपर चढ़ल

कलक कलम कर मटने अमित्र भर अमित्र कि उगरे पडला ।

1 पुछनि । 2 रोस 3 आदरि बहार 4 न 5 कुच सिने हपहरि
पल्लो

मर्या कृष्णके पूछि छथि हम जखन रुसलि राधाक लग
गेलहुं तखन लो वचन नहि पुछनक चुपे बैसलि छलि । हमरा लगसे
बहार गलि गेलि बहुत रोसाइलि नहि-नहि करि हाथ झुमरि दूर भए
गलि । (2) हे कान्ह कहह राधा किनक रुसलि हम तोहर पैयसी राधाके
करक जयले रोसिय किन्तु ओकरा रोहर लग आनन नहि भेल । (3)
ओकर गौर देह आ गान सन भूह कोधसे नान भए गेल छल भान
कामदेव रूप देखबाक हेतु कलक नलाओ नल कमल पल्ला देने होथि
(4) लखि लोरक पल्लो हार दूरि हलन धर खसल । जेता पल्लो
सोनाक पैलम अमृत भरलि ने लोह मटवैक से हार रुचयो टर प
गेल

भोर लोह कोले मेलन गेल मजस्य मजस्य लखि बहार ।

बहर भोले लोह देह रोस लोली रोल कोले ।

सादरि कि कहे पुरुषके नन गोरन कोले लोह लोह ।

नहि नहि लोह कोले रोस कोले न न कोले पुरुषके कोले ।

खन एक मटन लोह मट भोले न न कोले कोले ।

भलहु विरह कोले लोह कोले मजस्य मजस्य लोह लोह कोले ।

लोह 2 पुछनि 3 न 4 लोह 5 लोह

राधा कृष्णक: चानेक जेन्दा सञ्जीक मुनवैत छथि । सञ्जी
कान्ह धाँहने इतने भावत अगके सञ्जी अगाईमे चुकवैत चौराछने । एत
जहाँ) हमरा नरा आएत तं १२ बाहर भेल ३ नीकर देह होइएत जेना
समागस्याक चीत । भनि छैल हो ३ है सञ्जी पुरुषक केली नाग की
कहिअहु। ओकरा चलथी करवामे लान जहि होइत होइत ४) एत
पुरुषहुने अधिक पापिनी ओ लारी शिक जे १२ पुरुषक भागे चुकमे। सहे
लैत ओछे १५) एक छलक मिलनमे सभा एकदिक रग (अस जा नैतहु
जकर जे जति से रदनुसए व ज काव कान १६) विंछणोने कहैत छथि
हे राधा एहि कारणे कृष्णक प्रेम्त होइत जाइ होअत भइअन नील ३
तोहर मनोरथ २ हातहु कृष्ण चो जकां सहे एहु जकां सञ्जीक

[illegible]
$$r_{11} = 2 \quad r_{12} = 3 \quad r_{13} = 4$$

कृष्णा रात्रिके चन्द्रमा चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते ।
लोहर मुह दृष्टि साक्षात् प्रत्यक्षम् । अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते ।
उगल सति चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते ।
गहल सति चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते ।
अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते । अत्र चन्द्रमा दृश्यते ।

4. लोहर हाथ पर राखल मुख लगीत भडि लैला भरझीकोक फूल
हाथ पर कमल (मुह) दैसा जौन हो ताहिपर दू गोद नीच कमल
सीधे आ कमलक बीचमे तिलक फूल तक से देखिके असर (भाव)
दौंदे आगल ही 14 लोह हाथरपी पंचलव लग अधररपी विगवल
(निलकोरक फल आ दौनरपी दादिसक दाका देखैतहु संगी दू रहैछ
लग लहि नदौछ विगल न ओकरा लोहर भरझमे धनुषक भलि लहिन
छैक

अकार लयन तर्हि अकार लयनं निश्चितं भवेत्
 अकार रूप सारूप विभक्त्या कालं दृष्टि तर्हि भवेत्
 अकार लयनं तर्हि
 अकार लयनं पूरा समादेश सारूपि विभक्त्या अकार
 अकार लयनं विभक्त्या विभक्त्या अकार लयनं दृष्टि
 अकार लयनं तर्हि अकार लयनं तर्हि अकार लयनं

ਟੀਆ ੨ ਚਮਚਾਂ

[illegible]

२-सदरी याने राशि अपन विरह राक करैत ३-ये १- सौंदर्य
खन कमलाली भवन के राज भवनद पिमाण भवन कोरने तुजान
रखतक। (२) भदरी घुमि-घुमि अपन पिआ भनराक खोज करैत रहलि

आ भस्मरा मधु सिंगे कलामेरीक कोरसे सुनने रहन । अजरी गिलाप
करीत अछि। रात बनि गेल परत भा गेल (4) लभारुपी लभारी
पलेहा कर निराश (खण्डिता) भए गेलि। सम्पूर्ण राति जागर रहिमे कीने
गेल। (5) हाए, आचहु ने कमल फुलाइत अछि आ ने सुवे उठैत छथि
(जे पिआ परतारीक भुजपाशसे भुक्त होइक। एम जघासे दूर नहि जाए
सकैत अछि। जा' प्राण रहत ता' प्रेम रहबे करत भनहि भिन्न नहि हो
(6) विद्यापति कहैत छथि हे भगरी मुनह। गंदर पिआ होइत अछि
नगरमे छहु (खोजह, भेटि गएहु)

भाते अकस्मिक आगन भेदधारा, भेदि मुनिने ला वनवि रुझी
झिझि भा न लड़ बदराए दिसी बदरा निहारए चिहने विदुषी ।
ए उमा सखि सड़गे निकारे सकली ओह गोजि न दीये मु'ति जातने
दूर कर गुणपन अरि भेदधारी न' दिखैत भोजन गनकुन गी ।
कैओ बोल देखाए दैत ननु कह केसो बोल लोइत अछि चह ।
कैओ बोल लोइत अछि दैत नहु भोजी होइत अछि आ वर नैव न भोजी ।
भनइ विद्यापति अभिमत सेवा। भनइदोषी गी वर न दैत ।

विदुषी हली ३ आनि (न)

कवि शिवलीलाक वर्णन करैत छथि । अइ लक्ष्मणन कहत ।
भेदधारी (बहुरिपिआ भिद्यारि) आएल। कुमारी उमा ओह । लभ भोज ल
चललीह। (2) ओ भोज नहि लभ कीने बदरा लभन । ओह से विदुषी
उमाक मुह निहारए लागल। ओह से ओ भा गेल । (3) उमा ने सखी
सभक सड़गे केहन दिव छनि कोल भदि गोजिभाके होइ गुरछि रहनि
(कैओ सखी कहए)। (4) 'अरि बहुरिपिआ' तो भयन रूपधन नदूनी
हटाए ले। हमर राजकुमारीके किरक भोजन लगभोजी । (5) कैओ कह
एहि रूपधनी कन्याके नकु ह देखा लई दिखैक दुष्ट नजरे वगैर

रखिनीक । ६ कैओ कहर भोजिगुनीके वजरायक चह । ७, कैओ
कहा कुमारीके अति नहि गोजिभाके दए दैनीक वर हुनका (रुंदेणी
भा मयानी जीवसे विद्यापति कहैत छथि जे भोजनी दए दैत नहि
गोजिभाक समुचित सेवा होएत। कविक आश्वयदोता शिखर चन्दन
दोरीक प्रति दै नव दै ।

३-५

प्रथममे सड़कर सागर गला चित् जोरिपा पधोस पड़ल ।
पु'डिओ न पु'डलक बैसलक जहाँ निधन आदर के कर कह ।
दिशारेण मण्डप ओइत अछि होइत अछि वर न दैत ।
मे सुने गोजि रहनि सिर जाए के कहत भाके लोहर जमाण ।
सख सखि सख कोख कोखने प्रकाश ओइत कहहु जानै ।
भनइ विद्यापति मदन कह भोजधर भोजी हो भोजनह ।

रति मदनपुत्र नीलाक वर्णन करैत छथि — (1) पहिले पहिल
महादेव सागर गेला। कैओ दिखैत कहि ते उपवासमे पड़ि गेलाह
(2) जहाँ बैसलक केसो किछु पुछी नहि कएलक। निधनक आदर कहो
केसो करैत भोज । (3) इमनयक मण्डप पर जतेक गीतकरासिक लोग
उने से सभ गहि वर न दैत होइ होइ इसा ठठठ करए लागल ।
से गोजि गोजि लोने भाव दूख लोली न भोजि मने कहलनि कमर
भा के के कर लोने ने लोहर नमान भावन लोली । (5) देखने सग 130
भा कोख लर भावक अरि पड़ोय लोहर कैओ नहि जलैत अछि
(नकर जे चले छैक मे जूट लोह सजैत अछि । 6) विदुषी कहैत
छथि इ बात सहन नगैत अछि थिऊ न गोज भोजधरिमे भोज होइत
नैक

३-५

केहु देखल नगना, भिखिआ मङ्गलते बूल अङ्गुली अङ्गुली॥१॥
नगन उमल केहु देखल बिधाना; तैलोक नाह अमर घर दाला ॥२॥
बिभूति भूषन पर बीख अहार। कण्ठ बासुकि सिर सुरसरि धारे॥३॥
केलि भूल सङ्गी रहए मसाने। तैलोक इसर हर के नहि जाने॥४॥

पार्वती शिवक अन्वेषण करैत छथि — (१) केओ एकटा नगना (नगन व्यक्ति) के कतहु देखलहुँ अछि? ओ अङ्गुली अङ्गुली भीख मगैत फिरैत छथि। (२) केओ नगन आ' उमल बिधाना के देखल अछि? ओ बिलोकक स्वामी आओर अमर घर देखिहार बिधान। (३) हुनक भूषण छनि अमर आ' आहार छनि बिष। कण्ठमे बासुकी नाग आ' सिर पर गङ्गाक धार छनि। (४) भूल-प्रेतक संग क्रीडा करैत शमशानमे रहैत छथि। तीनू लोकक स्वामी हरकें के नहि जनैत अछि।

टि.— ई गीत राघव मे नहि अछि। सुभ (गीत स. 255) देखू।

मोर बडरा देखल केहु कतहु जाइत। बसल घटल घिस भाइग खाइत
ओखि निहार मुह धुअइ नार। पणक कमल बडरा विसम्भार॥१॥
बाट जाइते केहु हमर ठेलि। अब ओकि बडरा' धिनु मने अकलि॥३॥
हाथ ईधर कर लौअ लौक'। जोग जुगति गिअ गमल भाख'॥४॥
[अरगज घड़ा आठहुँ अङ्गुली सिर सुरसरि जटा बोलहुँ गाइग॥॥५॥

१. जात। २. जान खात। ३. गीरे। ४. सख। ५. भरल माथ। [] पाठ गड़बड़

गौरी महादेवक चिन्ता करैत छथि — (१) केओ हमर बडरा (पागल पति) के कतहु जाइत देखलहुँ? ओ बसल पर घटल बिख आ' भाख खाए कतहु घौआइत छथि। (२) ओखि निहारल छनि। मुहसे लेर चुपैत छनि। (३) बाटमे जाइते हमर बडराह विश्वम्भरके कतहु देखलहुँ? (४) बाट चलैत

हुनका केओ ठेलि देने होएतनि। आब तँ ओहि बौराहाक बिना हम एकसरि भर गेलहुँ। (५) हुनक एक हाथमे कमरू आ' दोसर हाथमे लौका (कमण्डलु) छनि। ओ आखी पहर अरगज घटओने रहैत छथि। सिर पर जटाजूटमे गंगा विराजमान छथि।

कुवलय कुमुदिनि चाँदिस फूल। कर रव कोकिल दह दिस बूल।
खने कर साद खनकि कर खेद। बैसल बिखधर पद जनि पैद।
आएल रे वसन्त रितुराज। अमर बिफल धनु अमरि समाज
उरि उरि परेबासरे कोषि मेलि। कान्ह पैसल बन जनि कर केनि।
गोपी इसलि अपन मुख हेरि। चान्द पछाएल हरिनक सेरि।

१. विरहे

कवि वसन्तक वर्णन करैत छथि — (१) चारु दिस कमल आ' कुमुद फुलएल अछि। कू-कू शब्द कए-कए कोकिल एम्हर-ओम्हर बुनैत अछि। (२) कखनहु शब्द करैत अछि आ' कखनहु खेद (?) जेना बैसल बिखधर पैदपाठ करैत हो। (३) चतुराज वसन्त आवि गेल व्याकुल अमर धमरीसँ मिलए चलल। (?)। कृष्ण यनमे पैसल जेना केनि करैत होथि। (४) गोपी अपन मुख निहारि हँसि उठलि। चान्द हरिणक आश्रयमे पछाएल।

टि. - आशय स्पष्ट नहि

भीतएक ललत उदन्त ने जनिअ एतए अरल बस
सीरअ सर भर अरुआएल दुइ पङ्कज मिलु मन्दो। १।
कोकिल, कजि सन्तानवह काह
ताई लौह' जनु पङ्कज गायह जाब दिगन्तर लाह। २।
मदनक ललत अन्त धरि पदि कह' बुझितहु होनि अजानी

कज्ज कानि कानि नहि दसमि जेवन बन्धि छुट गेली
 तोहें' अनुरागी मजें' अनुरागिनि दुहु दिस बाहु दुरन्त
 मजे बर दसमि दस गण अडिगिरिअ कुसलें बसयु' मोर कन्ता ॥१॥
 पोंडि परिमल आसा पूराओ' मधुकर गावओ' गीते

१. ताओ धरि। २. चलदए। ३. पिआ। ४. तजे। ५. आवयु। ६. पूरयु। ७. गवयु।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि —(१) ओहि लमक हाल-काल
 जानि नहि एतए तैं घान आगि बरसाए रहल अछि। (१)। (२)
 हे कोकिल, तौ ककरहु किएक सतबैत छह' तौ ता धरि पचम स्वरमे
 फुहकह नहि, जाधरि कन्त परदेसमे छथि। (३) राधा कृष्णसँ करैत
 छथि—तौ सदनक तन्त्र (कामकला) अन्त धरि (पूर्णत) पढने छह, तेओ
 अज्ञानी बनैत छह। आजुक बाद कान्हि आ' कलन्हि बाद पुन कान्हि
 की थिकेक (काल कोना बीतल जाइत अछि) से तौ नहि बुझैत छह।
 यावन रूपी धान्हसँ नित्य धानि बदैत रहैत अछि। (४) तौ अनुरागी छह।
 हमहूँ अनुरागिनी छी, दूनु दिस सकट चढल जाए रहल अछि। हे भगवान
 हम तैं धिरहक दशम दशा (मृत्यु)के अगीपर कए मस, हमर कन्त कतहु
 रहय, कुशल रहय। (५) पोंडि फूलक सौरभ दिविदगन्तमे भ
 गीत गवओ, घान आ' राति दूनु अधिकाधिक सोहओन होअओ
 हमरा लेखें तैं सभ छिपरीले (सतओलिहारे)।

३१०

कतन झोरी सिन्दूर भरि भस्म भरि बोकान
 वसक केसरि मजूर गुसा धारहु पक्षु पमान ॥१॥
 डिमिकि डिमिकि इमर बाजए इसर खनए फामु
 भस्मी सिन्दूर दुअओ खेछ एकहि दिवसे लागु ॥२॥
 लज्जाअ सिन्दूर भरि सरसति लाछीके भरति गौरी

२५५

इसरे भस्मी भरि नरायण धिअर घसम बोरी ॥३॥
 एके रत्न नाइगट अओके उमल इसर धुधुर खाए
 नसोकें उगने छेडि खेलाबए किछु न बोलल जाए ।
 गल्लवाहन देव नराएन बसह चहु महस।
 बाये विषाधति कौनुके गाओन सङुगकि किरधि देस

१. पीत। २. बोलए। ३. भजे

कवि होरीक वर्णन करैत छथि (१) कतेको झोरी सिन्दूरसँ
 भरल अछि तैं कतेको बोरा भस्मसँ। बसहा, सिंह, मयूर आ' मूस चारु पर
 पमान (जिन) धडल। (२) डिमिक डिमिक इमर बजैत अछि। महादेव
 फामु (होरी) खेलाइत छथि। भस्म-क्रीडा (जे पडिब दिन होइत अछि)
 आओर सिन्दूर क्रीडा (जे पूर्णिमा दिन होइछ) दूनु एकहि दिन चलल। (३)
 भगवती सन्ध्या सरस्वतीके सिन्दूरसँ भरि देलनि तैं गौरी लक्ष्मीके
 महादेव नारायणके भस्मसँ तोषि देल आ' पीअर पखके भस्ममे घोरि देल
 (४) एक नाइट, ताहि पर धुधुर खाए मातल आ' ताहू पर उन्मति
 (मातलि) गौरी खेल खेलैत छथिन। लखन कहले की जाए (५) नारायण
 गल्ल पर चढल छथे तैं महादेव बसहा पर। सभ एकत्र भए देश भरि घूमि
 रहल छथि। विषाधति एहि कौतुकक (खेल-तमासाक) वर्णन करैत छथि।

३११

नरअर बल्ली धर झरे जणि। सवि गढ आलिङ्गन नेकि भनि। १
 मजे नीन्टे निन्दारथि करओ काह। सगवि रयनि कन्ह केनि चह २।
 मातलि रस धिलसए भसर जान तेहि भनि कान्ह कर अधर पान ॥३॥
 कतन फूलि गेल कुन्द फूल। मधुकर मातलि मधु पीथि जूळ ४
 विजय सदा करि कादराय मधुगदन राधा वन ॥५॥

१. बाये २. जानाये मधु मधुकर ३. जूळ ४.

२५६

राधा कृष्णक संग उन विहंगम वर्णन करी। अर्थ १. जेन
गाछ सताके अपन झरिमे अँठिके रखने रहैत अछि, हे सखी कृष्ण
तहिना गाछ अलिङ्गन कएबनि। (२) हम निद्रासँ जातलि (औघाड़लि) रही
करितहुँ की कृष्ण राति भवि कैलि करए चाहैत छथि ॥ जेन भस्म
मातलीक रस विलासपूर्वक चूसए जनैत अछि तहिना कवच वस्त्र सभ
एन कएल। (४) यनमे कुन्द फूल फुलए गेल, भस्म मातलीक रस छैथि
जुड़ाएल। (५) मारस कवि कण्ठहार राधाकवचक वन विहंगम वर्णन
कएल।

आईए टेंस कार्डिज आईए यू नए कुरांगे २ १६ क. लल

ॐ रित् मास भेद नाहे ब्रह्मण लह नहि भयान नर

साथि है सहे देस दिया यत्न मोरा

समष्टि धानी जलए न जानिअ सुनिअ परा वर "हा

हस्तिभौ कर्द्विनि जतण रात्रि ५५... पृ. ७. ५५... ५५...

कोन परि ततए रतस अछ बालस भुनि अए निज सभ ३

श्री अग्रणी के लघु कथा मासिक की कवर १११३, ५५३

॥ श्री गुरुयि नमः ॥

1. थिफ मध्येकर नहि गूजर अ. १७, १८, २१, २४

दोहरा ५ (१०५ कण मात्र)

राधा सखीरूप विरहव्यथा सुनयित छवि - जाहि देशमें कोकिल
पंचम स्वरमें गयित नहि अछि, वन कुसुमिन नहि होइत अछि, छाँई रहत
आ धारक मासक भेद लोक नहि जनैत अछि आ स्वभावतः मदन दुख
होइत छवि, है सखी, हमर पिआ तेहने देश चल गेलाह। जाहि देशमें
रसमय बाणी (प्रीतिवचन) नहि जानल जाइत अछि प्रेमक नाम बड थोड
सुनल जाइत अछि, जतए रसगर कथा कहलहु पर केओ नहि बुझैत अछि
इगित तँ सहजहि निरर्थक, तेहन देशमें है सखी गुणवान है नहि गुणहीन

समाजमें रति रमि गेलाहा (4) की हम अपनाकें छोट (हीन उपेक्षणीय) बूझि लिअ कि आकि ओएह हमरा लेल बहुत पैघ छवि? की हम गभारि छी कि कएसे सनराज हीन भए गेलाह?

47

पीन पर्याधर दूर गता। मेर उपजल कनकलता।
 ए कान्ह ए कन्ह तोरि दोसाइ। अति अपुरुष देखति साइ।
 मुख मनोहर अधर रह्यो। कुलति मधुरि कमल तइयो।
 लोचनजुगल भुङ्ग अकरे। मधुक मातल उडा। म २२। ४।
 भजुहरे कथा पूछि जनु। मदन सजल कान्ह धनु। 5
 जन विद्यापति दूति बचने। एत सुनि कान्ह कठ गमने। 6

1 साइ, 2 जोडति

दूती कृष्णकै राधाक सौन्दर्यक वर्णन सुनवैत अछि। (1) पुष्ट स्तन आ पातल देह लगीछ जेना सोनक लता (देह) मे मंरु पवैत फइल हो। (2) हे कान्ह कथाइ, यथाइ तोरा। राधाक अपूर्व रूप देखल। (3) सुन्दर मुख आ तास दुहदुह अधर जेना कमल आ मधुरी दनू समस्त कुलाणम हो। (4) दनू अछि भमर-सन, जेना मधु (कमलक रस) पीछि मन्त्र हो तैं उडि नहि होइत छैक। (5) भहुक कथा नाके पूछि, जेना कमलसँ हन कामदेवक धनुष हो। (6) विद्यापति कहैत छैक दूतीक मन्त्र कान सुनितहि कृष्ण राधासँ मिलए बलि पडलाह।

कि अरे नय जोधत अभिराम

न। देखल तन कहाँ न पावैत छओ अनुपम क नय।
 होयेन इन्दु अरविन्द करिनि ह्य। पिक सुडात क नय।
 नयन बचन परिमल गति लनरवि जओ अति सुनीय क नय।
 कुन नय पिकुन कहै कनकल त नय।
 गति हे सुमेरु उपर नय कनकल नय।
 लोल कपोल ललित नय कुनकल भव नय।

भरि धन्य नयनपूर सुन्दर सौ रति नीर नजइ 4
 भलइ विद्यापति से बरनगदि आन न पावै लोइ
 कलदलन नयन सुन्दर तनु रतिगति छ सौइ

1 हिमा 2 जोड 3 भमर

कावे राधाक रूपवर्णन करैत छथि -- (1) अहा राधाक नय यौवन कनेक सुन्दर अछि। जेतेक देखल तेतेक कहल नहि जाए। एतए छओ गोट अनुपम वस्तु एक ठाम उपस्थित अछि। (2) हरिण चन्द्रमा, कमल हाथी आ कोकिल। अनुमान सँ बूझल जे ई थिक क्रमशः राधाक नयन मुख, देहसौरभ, गति, देहक वर्ण आओर परम ललित बचन। (3) छोपा फूजि छातीपर पसरल अछि आ ताहिमे मुक्ताहार ओझराएल अछि। से लगीछ जेना सुमेरु (स्तन) पर बिनु चन्द्रमाक (अन्धरिआ रतिमे) तारासभ (मोति) उगल हो। (4) गालपर सुन्दर कुण्डल डोलैत अछि। अपर विम्बकलहुसँ अधिक सुन्दर अछि। सूर्य चम्बकल पर लोइत न लोइ किन्तु भहिरूपी धनुषकें देखि डराइत अछि, आ नाकक सुन्दरता देखि लजाइत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि एहन श्रेष्ठ नारी आन केओ नहि पावै सकैत अछि। ई कलदलन नारायणक रङ्गिणी थिकीह।

135

भरि सुसंमित बदन सुखन्द। मधुरि कूल विकसित अरविन्द। 1।
 ए देह सुनीयत नयन सामरा। विमल कमल दल बइसल भमरा। 2।
 चिमेछि न देखबिनि निरगलि रम्पनी। सरपर सजो आइलि ग. २२। १।
 गिरि सजो लम्बित मुकुता हरे। कुचजुग शक्य घर गइगो धारे। 4
 भलइ विद्यापति कावेकण्ठहार। रसधुन सिंगलिह नृप मण्दहार। 5।

मधुरी फूले पूजू अरविन्द। 2. नायक

कावे राधाक सौन्दर्यक वर्णन करैत छथि। (1) नायिकक सुन्दर बदन पर अपर सुनीयत नयन सामरा। विमल कमल मुख। मधुरी कूल

अधर फुलावत हो २ भोंदे मुदमण्डल पर दुइ करी करी तरत
सुशोभित अछि जेना स्वच्छ कमल (मुखमण्डल पर दुइ गोट भ्रूज
(नयन) बैसल हो। (३) एहि नायिकासँ बढि कोनो भान रक्षण करि
गेलि हो से कहहु नहि देखल। मानू ई राजमण्डली लपेटेका मन्दीर
आइलि हो। (४) कंठ में मीनिक हार लटकल छैक मानु सनसरी
घकबाक जोडा गडगाक धारमे घरेल हो। ५ हाँदे कण्ठकर विद्यापति
रचैत छथि आ' परम उदार राजा शिवसिंह एक रस बुझैत छथि।

चान्द सार सर मुख घटना कर मांचन चाँकत घकर
अमिअ धोए आँचर धनि पोछन दरदिस भेल ऊँची
काँजनि कनोने गढली

रूप सरूप मोहि कहइते असमय लखन लखि १
गुरु नितम्ब भर धरए न धरए २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
भौंरेग जाइते मनोरंज धर राखनि विद्यापति १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
मण्ड विद्यापति अदुत बैलाइ ई सव २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
रामनारायण ई रह जाइथि शिवसिंह विद्यापति ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

अनि। २ तानि। ३ खीनिम निमाई

कवि नायिकाक रूपक वर्णन करैत छथि - (१) चान्द सार सर मुख घटना कर मांचन चाँकत घकर
अमिअ धोए आँचर धनि पोछन दरदिस भेल ऊँची
(२) जनि नहि एहि काँजनि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
(छीक-छीक) वर्णन करब हमर सवय लख देसलहुँ त भेल ई हमर
अखिमे लगल रहि गेलीह विद्यापति २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
(३) नितम्ब तनेक भारी छनि जे लोखन घनि लखि पवेल छथि को
तनेक घातर छनि जे कामदेवक आशका मिलति कलावेन दुनि ते नख ते

विद्यापति लतामे बझाए (बाँन्हे) रखलनि। (४) विद्यापति कहैत छथि
भदुत हरथ अछि। जे कहलहुँ अछि से सभ बात सत्य बूझ। विद्यापति
राजा शिवसिंह रामनारायण एकर रस बुझैत छथि

भेल भेल शिवसिंह सँसय गेल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

दुअओ' लएन कर दूतक काज भूखन भर पछिअ भेलि लख १

आबे सलखन देउ आँचर हाथ बाज सखी सखी लख २

हमे अखिअन गुन गुन काज नगर करधु अखन अधात ३ ४

भ भुए धरिनि गुन काजरीख मरनि रहत न जिध' मरसिख ५

रसमय विद्यापति जयि गय ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

दम्पति। २. चरन घणलता। ३. दुअओ, ४. पोख

कवि रधाक वय सन्धिक वर्णन करैत छथि - (१) लौक भेल जे
राधा रीराध पार कएल। चरणक घणलता अछि लेखन (पहिने चरण
घणल छल, आब अछि)। (२) दूअ ओखि दूतक काज करैछ (तुल आनय
नगर नएने बझाए)। ताज भूषणक काज करैत अछि (ताज शोभा बढ़वैत
छैक - (३) आब सतल आँचर पर हाथ दैत अछि (स्नान कएवैत रहैत
अछि) सखीसभक संग रसलख काल माथ झुकाए लैत अछि। (४) ई
काल सलख हमरा बुझावने आबि गेल। आब नगर (रसिकसभ) सतक
दिय १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
शरी, विद्यापति परम पदार करत तँ घण नहि बँचत। (६) रससँ भरल
गीत विद्यापति रखलनि। एकर रस आ' भाव राजा शिवसिंह बुझैत छथि

विद्यापति तन आतन सलखन पछिअ सखी

नभल पछिअ के धनिआओव एक लख १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

लुपध लखल घालक मदन कर कि जकय

सहज सुन्दर गौर कलक गीत घटायो शिरो
कलकलको अति विपरीत कलक गुनगुन गीत
भन विद्युत्ति विद्रिक्त घटत के न सत्सुत नन
राग निवर्तिन रूपनराग लोकेन्द्रदेवि भन ५

१ सप्त पुनः अनन

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि ॥ केत शिरो मन्दक
मुख थिक पूर्णमाक चान भ अँखि थिक कमल के चनेमाणन ने
राधाक रूप मे हूँ सीनू एक ठम टिकन भठि ॥ कलकल ते चान लोह
चान ते कमल नाहे ॥ (२) आइ हम सुन्दरी राधा के देखत मन लोभागत
मदन पेरक भेल। आब कोन उपाय करैत जाय ॥ भोजन सहन सुन्दर
देहमे पृष्ठ पृष्ठ स्तन सुशोभित आइ सोनकर नवमे मङ्गल गीत ने दूना
कहाइ कडि गेल। (४) विषाणते कडे हँसि के गीत नही आँखे ने
विधाताक निमोन महुँत होइत भ ॥ नहि के तरेक रस ॥ ५ ॥
रूपनारायण धरैत रस बुझैत छथि

अशेषक लहरी कम अरवि ॥ १ ॥
निळि निळि मँध्र पुनपुन हँस रहल लला या रहल लला
हाथ कदली मँध्र मँध्र अलख चानके भोजन नही ॥ २ ॥
कैसेन केला केलाहुँ ॥ ३ ॥
पठोह ने परिभ अण्डर पोरे ॥ ४ ॥
भगव विद्यावति कलक दूजत ॥ ५ ॥

निरधि निरधि २ धमुना

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि ॥ केत शिरो मन्दक
भमून लहरी लमपुर वणी उगलैत अँखि भुजक पलक होय मे हँस
हँस कलकल (२) हम अँखि पसारि-पसारि धीरे-धीरे देखत। दमनत ॥

देह, मे सुन्दर चनेन लहरे पडत देखत ॥ हम लय कहैत छी
कामदेव लहरी छथि चन्द्रमण्डलक कणरक उपर चमूनाक धार (कैस
बोले लोके १४ के अंगुलीक कोमल पात रदर पर मदन मोमि ला
अधत धातक लख (विजली काशीने ५ आ १५-१७ पंक्ति) (रोमावली
पठव कोन देखितहि देह दिहैत रहत ६ विजली कहैत छथि, सुनू
बुझावके कहैत छी। (नहि ते) असम्भव (अनटोटल) भन के पातेआएत

१५
नोयन वपन ददन सजल लीन नोयन दल पूजन चन्द
पौन पल्लव रुचि दली। सिर्फत फलनि फलक भवनी
गुलमणि लीने मज्जमज्जती। देखलै भावे जड़त वा सुनै ॥
रक्त सितम्भ उपर कचभर भाङ्गिगल गल गीत के ॥ ४ ॥
लपु गेसलै लोके भन मोन विन दनु सलसल देखल ॥ ५ ॥
भोजन भक्त सज्जन जरी वेस वरागलक पालि लोके ॥ ६ ॥
भोजन भक्त सज्जन जरी वेस वरागलक पालि लोके ॥ ७ ॥
वज्रति सजी चनेन ॥ ८ ॥

रसानी ॥ भोजन ॥ १ ॥
रसानी ॥ भोजन ॥ २ ॥

कृष्ण राधाक रूपक वर्णन करैत छथि ॥ भोजन धसन मुखमे
पचल लोचन लमीछ जेना दानक पुजा नील कमलस कात गेल ही। (२)
पृष्ठ मलक गौर गीत लोके नेन देखी सोनकर गौर भागल ही। (५)
आइ हम राधा मिली राधा ली यही राधा के सदन देखल ॥ भारी
नितम्भ उपरस पडैत स्तनक शरस दूटा चाहैत ही। (चिन्ता भेल जे) के
भवनचल (नही) दल सकल (५) परन्तु लखन देहमे रोमावली
देखितके लखन बुझल ने कमेटे भान धनुषक मरभञ्जल देखल दल
देले छथि ॥ ६ ॥ अण्डक सप्त सजीभ कात जाए राधा दमर भाँचिमे

आँखि मिलाए सहसा नुकाए रहति (अलङ्कित भए रहति) १) मुखन्दिसं
हमरा नै चान सोहाइत अछि नै चन्दन। विउश मेल आँखि डेर कर ओही
ठाम दौडत अछि (जलएसँ ओ अलङ्कित भेलि),

१५

अलङ्किते हम हेरि विहसति थोर। अनि' रजनी मेल चन्द २
कुटिल कटाख लाट पाँडे मेल अम्बर मधुकर दम्बर ३
काहेके सुन्दरि के तहि जान। भाकुल कर गेनि हमर पारन ४
लीला कमल भसर दल रागि वसने के मलनि गोरि धाँकल निहारी ५
ते भेल धैकत पयोधर सोभ कलस कमल हरि काँटे न लोभ ६
आधा नुकाएल आधा शमास' कुशकुम्भ कहि गेलि भबलुस आस ७
से मये भमिल निधि दान गेनि गन्देस किछु नहि राखल देह समरिस ८
भनइ विवाहति दुहु मन जग दिसन कुनुमस कहि न बा ९

१. रयनि २. मधुकर हम्बर अम्बर ३. धर ४. उद'स

राधाके देखि कृष्ण मनहि मन सोचेत छथे १) राग दौडत
हमरा देखि कनक विहसि देलक। मानु गेलिसे इमोतिअ उमरि रहल। २)
कुटिल कटाख चलाए लागल मनु अकल भसक सुन पसो गेल। ३)
जनि लहि ओ सुन्दरी कलक थिउ भोकरा के विहसत भोरे ओ हमर
आधाके भाकुल कर देलक ४) हाथक लीलाकमलसँ ओ भसरक झलक
भगाए, घचल नयने हमरा दिस तकि धमकि के चलि गेलि ५) तहि
कमसे ओकर स्तन उघार भए गेलक। सीताक कमल देखिके ककरा लोभ
नहि होएतक। ६) आधा झोपल आ' आधा उघार स्तन देखाए भा भपन
आस (मिलनक आभिलाषा) सूचित कर गेलि। ७) ओ मानु भान सभ
दुर्लभ निधि अर्पित कर गेलि किछु रस बाँकी नाइ रखलक विवाहति
कहत छथि। कृष्णओ राधा दुनूक मन मे काजपायला, लागल कामदेवक
विषम राण ककरा नहि लगीत छैक।

१५३

१५१

भन्वर विचटु भयमिक काजोले कर कुच झण्डु सुखन्दा
कलक मरभ पर मनस मन्दर दुहु भयकन देस पन्दा
कल रूप काहू बुझइ
सत भोर राखने लोचन नहिअल ओरहि भनबनि जाई
अड पटन कर भधुर हम दान सुन्दरि रह सिर लाई
अउरि कमल कलित नहि दान हैरतने चुन छति जई १
भनइ विवाहति सन वरनोवनि पृथ्वी नय उचलल
राज सिवसि रघुनाथ लखिमहरि रमाने ४

सम: २ विचले सोओ भनबने, ३ लाई

कृष्ण राधाक सचक गणल शिवके सुनघन इति १) कर्मिलक
(राधाक) सोर अचलक छति पटल ओ आन सुनलिन स्तनके दूधसँ
झरि लेलक बुझा न गेल मोरक शिवासेग (स्तन) पर दुहु गोट
कमलक फूल १५३) भा दस गोट चान (हाथक नहि राखल हो २)
राधाक सचक गणल करि कल ओकर देखि हमर मन पचल आ गेल
भा लखन सोकर सग पर दिअ भा भनयार (विचर) भा होर वीर
चल नाइ ३) नु टरी भइ न भ मधुर मुखनी १५४) गुरी दुहुना
बनव गोटन पवन लटल नील दुहु के मर पुराण नहि लखन देखा
नरलह न लखल ते दखत दखन दुग धेन हो ४) विवाहति ५) हो
छथि ई श्रेष्ठ सुखी सुख, लखिम टरीछ जो राजा विहसत गोट
एनोकर नय समरिअ सभे सुखक सज्जे अवतार लेलनी गेलि

१५२

माने कलक १) गेट भासोव बुझा न पजले बला
छिछक पवन भन अकलिक रोचने लोचने गेला
नय कबल लिज पहिअव छन भन बिनु काज
दरसन रस रस लोचन लोचने गरुनि नार २

१५५

1) यद्यपि कभी काल साकल्य चर्चा एवं चर्चित हम चर्चा उभय
सखीसमक मधुलीसे कृति रंगरु 2 गगन चर्चा भोजन होकर
नजर एक प्रसार प्रमाण में हम चर्चा गौतम चर्चा भोजन चर्चा दिक्कत
करने से एता होइत छैक। काल में चर्चा भोजन चर्चा भोजन चर्चा भोजन
होइतहि हमर मन हरि लीनक, 4 कृति के चर्चा भोजन चर्चा भोजन

राधा कृष्णक दर्श भवन, १२९ एफ, ५२ मिडल प्रोबल, २ गीत संगीत के
मुलक १३३३ (१) कृष्णक देखत तै (राजी) भूई गोति लैल है। दुन
अखिके रोकर, मुदा ओ रोक नहि भनि कृष्णक मुखक शोभा पीयाक हनु
टोडि रोल जेना ओ मुख चान हो आ' हमार नयन धकोर। (२) अंतर्गत
नयन के चले के दृष्टि भवत भ' धार पर भाँसे नयन नयन नयन
दृष्टि पर दिखत वार लेल तैसी लयन लेनि लेनि कृष्ण के निहारवाक
प्रधान करत भानु प्रेमरूप अथु पीति मातल (मादकतावश शिथिल भेल

नयनरूपी भ्रमर उड़ि नहि सकैत हो, तैओ पाँखि पसरए। (4) कृष्ण जे मधुर वचन बजलाह से सुनि हम दून् कान मूनि गेल। ताही अवसरमे ठामहि कामदेव घाम (शत्रु) भए गेलाह (घरर कनए लगलाह)। (5) देख्मे ततेक घाम चलल जे पसाहिन दहाए गेल। रीमाच ततेक भेल जे चोली भसकि गेल आ हायक कैमना फूटि गेल। हाथ कपए लागल। बकार बन्द भए गेल। विधापति कहैत छथि, ई श्याम सुन्दर आन नहि, राजा रूपनारायण थिकाह।

346

विकल्प गेलिहुँ मधुरपुर' मधुरिपु मेटल मा'।
तखिने पछसर लागल विधेयसँ के फर बाध।।
हार भार भेल तखिने चान्द' चान्दन भेल आगी
दखिनओ पवन दुसह भेल मोकि पापिलि बध लागी।।2।
कतने जतने घर अएलहुँ के कर दीह दुष काज
मनाहु' न मधुरिपु बिसरिअ तेजस गुरुजन साज।।3।
भनइ विधापति सुषदनि दुइ दिठि होएल समाज
मनक मनोरथ पूरत मधुरिपु आओव आजे।।4।

1. विधिलए गेलिहुँ मधुरपुर। 2. धीर 3. मनहु।

कृष्णके देखि मुख भेलि राधा मनक भाव व्यक्त करैत छथि।
दही दूध बेचए मधुरा नगर गेलहुँ। कान्हू लगमे भेटि गेल। तखिने
मदन पाछु लागि गेलाह। विधाताक इच्छामे के बाधा कए सकैत अछि।
(2) तखनसे हार भार भए गेल, चान आ' चानन आगि भए गेल। दक्षिण
पवन (जे सुखद होइछ) सेहो हमरा धरि पापिलीकेँ मतएबाक हेतु दुसह
भए गेल। (3) कतेक यत्न (सतक भए) घर अएलहुँ। दही-दूधक काज के
करओ (काजसेँ मन उछटि गेल), एकी रती (मनाहु) कान्हू नहि बिसरैत
अछि। गुरुजनक साज त्यागि देल। (4) विधापति कहैत छथि, हे सुमुखी

फेर दून्क ओखि मिलत आ मनक मनोरथ पूर होएत। आइए कान्हू फेर
आओत।

347

कतन बँदन मोहि देखि मरना। हर बाल मन्त्रे जुवनि जला।।
विभूति मुखन नहि चान्दनक रेनु। बाघछाल नहि मोर नेतक बसनु।।2।
नहि मोर जटाजूट चिकुरक केनो। सुरसरि नहि मोर कुसुमक सेनो।।3।
चान्दनक बिन्दु मोरा नहि कुन्दु छेटा। सलाट पावक नहि सिन्दुरक
फेटा।
नहि मोरा कालकूट भूमद पाह। कनिपति नहि मोरा मुकुता हाह।।5।
भनइ विधापति सुन देब काम। एक एव दूखन अछ नाम मोर' काम।।6।

1. मोटा। 2. ओहिनामक।

विरहिणी नायिक कामदेवसेँ सिकाइत करैत छथि -- 1) हे
कामदेव, तौ हमरा कतेक पेदना दैत छह। हम (तोहर शत्रु) महादेव नहि
थिकहु, हम थिकहुँ एक बोकसी युवती। (2) हमरा देखि विभूतिक लेप
नहि, ई थिक चान्दनक बुकनी। ई बाघछाल नहि, नेतक (रेसमी) धीर
थिक। (3) जटाजूट नहि, केसक जुटटी (वेणी) थिक। सुरसरि धार नहि
फूलक माला थिक। (4) बालचन्द नहि, चाननक ठोप थिक, कपार पर
आगि नहि, सिन्दूर-बिन्दु थिक। (5) कालकूट (थिब) नहि, कस्तूरीक लेप
थिक। साध नहि, मोतिक हार थिक। (6) हे कामदेव सुनह (कुलक्षणा
शिवसेँ समानता) एकेटा अछि--ओ घाम (देव) आ' हम घाम।

348

नहि आ' साधव गेल रे। मोकि किछु पुछिओ न भेल रे।।1।
मधुर जाइते नहि तीर रे। अन्तर मेटल अहीर रे।।2।
नयनकि नयन जुझए रे। हृदय न भेल बुझए रे।।3।
कइसे होएत रतिरडग रे। मधुर मधुर पति सकुग रे।।4।
भइयस' न भेल सीमारि रे। बुझलि कान्हू गोआरि रे।।5।

माथुर जाइते जमुना तीर रे १ २ जे चन्द ३ मोहिजन ४ चिकर

प्रेमविह्वल राधा मनाभाव व्यक्त करेन जाये १ काहू मही बटे गेल देखितहि हम ततेक मोहित (विह्वल) भए गेलहुँ ते किछु दुखेनो नहि सकलहुँ (२) यमुना नदीक रस धारै जाइ रही जे दोषाहमे कान्ह भेटि गेल। (३) ओहिसे ओहि तँ मिलल किन्तु हृदयक बुझासल (सम्हारल) नहि भेल। (४) जानि नहि सरस कान्हक रस रतिरस काल सम्भारि सकब। (५) ओधरो सम्भारक रस नहि रदय काहू हमरा गोआरि-गमारी (रसबोधहीन) धुझि सेलक, (किएक तँ हम कोनो मजकिया नहि देखाए सकलहुँ)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

१ मोझाएन। २ चेतन चेतन रूपाने धिपार। ३ समादल। ४ मोहितहल। ५ पतय। ६ पुराबओ। ७ सरी।

काये राधा आओर कृष्ण दुनूक कैलिकलह अन्य धिरह-दशक वषेन करैत छथि -- (१) जखनहि दुनूक हटि दू दिस भए गेल तखनहिसें दुनूक मन दुखी रहा लागल। दुनूक मिलनक लक्ष्मी दीप मिझाए गेल आ काम वेदना अकुरित होए लागल। (२) विरहवेदनासें दुनू सन्तप्त दुनू मेल चाहथि पर १ धरक हृदयक भाव दोसर नहि बुझथि तँ मेल तहि होए। [तुलसीदास --- दुहुमन भेलि, कजोने बेकताओब दारुन प्रथम निवेदन रे]। (३) याम नयन (राधाक नयन) जे दुनू भए मेलक हेतु आगा पटए तँ दक्षिण नयन (कृष्णक आँखि) लजाए पाछु हटि जाए। गुम (अवध) पीतिके घतुर लोक छिपए चाहैत अछि, तँ अन्का कहि मिलानक उपाए करब सेहो सम्भव नहि। (४) दुनू सोचैत अछि दशम लक्षणक अनुकूल जाए नर दारुन विनय मेलनो पौक जाइ। (५) कामदेव अवल पावो शयन से मोहन नामक शर छोडल। दुनूक देखि मानू आँखि जाइ गेल। छिनु अवसरहि सखीक कोला कहत जे केर दर्शन कराए देख ६ ते जे शीतल भेल ते जे बुके कान्ह कहलक से सभ अन्यथा (दिकल) शर मेल नखन राधा कृष्णकें बुझनुक (अनुकूल) जाइ भए तयारी देन। १ दशममे जेना मुख सफ-सफ देखाइत अछि तेहेना दुनूक दिकार कामविह्वल मनाभाव) व्यक्त भए गेल। कामदेव दुनूक कामला पुराईल। ८ काये राधाक कहै छथि ई सभाव हरि स्वरूप थिक आ रूपलराज रक्षण अतिशय लसाइ स्वामी) धिपारह। लोचिमा देखी पावे राज विजयिह धिरही ते होय।

कहथि धिपार जाइ पावे सदन सट्टे टिट बान्धि दरसिल केर।
सयन ममल धरि धलटि पाछु हरि अछि टिटि दए गेलि सन्देस ।।
भाओ कि करति सखि धरितत ससिमृगि कान्ह जदि न बुझ विसेस

(१) है कमल मुखी, कहह कोन पुरुष महादेवक भाराधन कनक
जकरा नेल ली एना क्षीण भेलि छह ॥ १४ ॥ तोहर केव भा पट्ट स्तन पर
अधरक छाया लाली देखि पडैत अछि, मन सनाक एतेन स्तन पर
प्रवाल (मृंगा) उपलब्ध भेल हो कामदेवक साया चड पैध भेलि ॥ १५ ॥
चेरि-चेरि सांस लैत छह आ विरहसँ झुझति भए गेलि छह भस्मर वेणी
(चोटी) उतरि के छाती पर अछि गेल छहु जेना कारि नरिनी तोहर
सोसक बसात पीदि रहलि हो

ए राकि ए सखि न वैनह भान तेज गुन नदधन सिने आव कान ॥
निने निने निज भाव विनु कान केकरी हटय नुकाया लान ॥ १६ ॥
भतरहु जडते गजह निहारि नृपस नभन हटय के पार ॥ १७ ॥
ने अते नाराय लोभ तसु तूल एक मत मन्दथन जने दू कुल ॥ १८ ॥
भतरहु विद्यापति कवि कवि हार एक एव मन्दथन दू निद मार ॥ १९ ॥

गार्थ दुइ जसि फूल,

सखी राधा के कृष्णक अनुरक्ति सुतवैत छारी ॥ १६ ॥ है सखी ॥ १७ ॥
अन्यथा जने वा नह ॥ तोहर लोभपर लोभल कथा हो ॥ १८ ॥ जेना लोभ
भरीत छथि ॥ (२) निन्द्य दिन विनु काली काजह नदधन लग चहुँ सङ्ग
छथि अपन ध्यकी मनीमय ओ लज नुकायत छथि ॥ (३) अहं सभ
जडत काल तोरहि दिस जेना जडत छथि लोभल सखि के लोभ
सकैत अछि ॥ (४) ओ श्रेष्ठ लोभ ॥ शि भा लोह नलिक नृपस ओ लोभ
एक राट मे जेना दू गोट फूल रोशन हो ॥ १५ ॥ कवि कवि हार विद्यापति
कहेत छथि कामदेव एक सभसँ दू प्रणीके भ ॥ १६ ॥ छथि हो लोभ
पेम छहु तहिना हुनकहु ॥

अपन कान कजारे लोभ धन के न करण निज छति अनुबन्ध ॥
अपन भाव विनु रस के लोभ से सुख ॥ १७ ॥ पराई निहार ॥ १८ ॥
सखि लोक लोभ विनु सार ॥ १९ ॥ मन न कर ॥ २० ॥ उपकार ॥ २१ ॥
अपनि भाव न भाव एव ॥ २२ ॥ अछि न दधु नहि करिअ नदधन ॥ २३ ॥
अच्छ विद्यापति दैत न भय पर अन्तर ॥ २४ ॥ जे वा राख ॥ २५ ॥

१ वन्ध २ कर निरहार ३ वद

सखी राधा के उपदेश दैत छथि ॥ १६ ॥ है सखी अपन कानक
वन्धन ॥ ककरा नहि दैत छैक अपन निसँ अनुराग के नहि करैत
अपन ॥ २ ॥ सभ अपन अपन दैत जाइत अछि सुपुरुष भलमानुस, से
शिर जे मन ॥ निहार ॥ ३ ॥ लोभ लोभ सकल शिर जे भ ॥ दू
आतक उपकार करए ॥ (४) जे केओ खगल लोक कोनी बेगारतसँ ककरो
भीतर आब तँ ओ वस्तु रहना पर ओकरा निराश नहि करबाक चाही
॥ १६ ॥ ओ न भन्वरो गेल पर इह वस्तु पावि सकल परन्तु लोभ मनमे हो
बाधक निराश करबाक पथात्ताप रहि अछतहु ॥ (५) विद्यापति कहैत
छथि होन एक बात सुनल नहि वदत ॥ उचल चाही भलमानुस अपन
सुगुण ॥ १६ ॥ वैन अछि

॥ १७ ॥
एव नहि दैत विन्धसि हसि मोरी ॥ चान्द किरन जइसे सुपुधि बोकरी ॥
हो जे नहि नहि दैत कव ॥ १८ ॥ जेना नहि नहि जेना मोरी ॥
मोरी ॥ १९ ॥ जेना नहि नहि दैत कव ॥ २० ॥ जेना नहि नहि जेना मोरी ॥
मोरी ॥ २१ ॥ जेना नहि नहि दैत कव ॥ २२ ॥ जेना नहि नहि जेना मोरी ॥
मोरी ॥ २३ ॥ जेना नहि नहि दैत कव ॥ २४ ॥ जेना नहि नहि जेना मोरी ॥
मोरी ॥ २५ ॥ जेना नहि नहि दैत कव ॥ २६ ॥ जेना नहि नहि जेना मोरी ॥

१ विन्धसि दैत

सखी राधाके कृष्णसे प्रेम करैत देखे अहेन छनि । हे सखी
 तौ कृष्णके देखितहि हंसिके हृन्का अपन। दृष्टिमें विद कर लगेन ३४
 ओहिना जेना नोदड़नि वकांग चन्द कैरणके। (2) कृष्ण बड़ छनि जयि
 आ तोरहु बड़ कना (कौशल) छहु ते तांग दूनुक मनक मेल तेरा ताह
 जानि सकैत अछि। (3) । कामदेव लेह
 चलाओल। (4) जीवनमें जीवन दुइए-चारि दिन रहैत अछि। ताहिमे जेरी
 सख रस भोगि लैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि एकए भाव
 कमलादेवीक पति राए अजुन बुझैत छथि

नदि अवकास रहल नदि राह का लखि राए परसिय सखे
 तोहरा इतय पचल नहि थी। सखेनै छल बहुमत बड़ लेह
 अथ कि कहय सखे कहहुने राह। भोगिय मय सख ताह काह
 भासा लागे सकल का साह गहने ल हो भोगिय कल
 तोह लागि पूरा सख गेह। अछिने बुझैत छल
 नदिके सकल तोहर पाथय। सखे ते छल मन केतय न सख
 वेदव्यास कह्ये छे स गव अर वे लख के लखे

कह २ अकाज। ३ भेल सग। ४ म ड दि। ५ २।

राधा राधाके कृष्णक ओतए नोह गेलोह लखे नेल सखी हन्का
 उपरान दैत छनि - (1) हे सखी न नोह फुसलैत नदि बड़ ते हसरा
 किएक कृष्णक लग पतसातह। (2) तोहर ते मल छि। छहु ते राग
 कमलक पाल पर जेना पालि सहेन नोह मल सख भोगिय रहैत रहैत
 छहु। (3) हे सखी आब की कहय गेह छे नाम होहुन नोह। सखिय
 चितबालाक मध्यस्थ होइ। आन मे साधनग विग भोग। ४ अरामे
 छि। कृष्ण कलेक शठय। (कहेन) सखनह भगवतक कात कह्ये गह
 (भारी) नदि होहुन अछि। नोही कात सल हन्का छह लो। (५) नो लाग

(भद्रसहिता) छह गुणवती आ स्वपती छह परन्तु दिने दिने दुइसामे
 भवि गन जे सोरासे प्रेम करय बड़ कहैत। (६) हन्का कृष्णक) दयालमे
 मतल नोही रहैत छहुन अछिने सल विधिलक मन औलाइन रहैत छैक
 विद्यापति छे सख गीत रचलैत याचना करनए के नहि लाघव। शोका
 पचैत अछि

भरहु मेरवि गम बलाय। रोरि कहिनी दिन गमाब। १
 सखेनु तार सखस पण कहने की साह की विमला। २
 कि सखि पुरमि नदर कल नहि रह भलि रोरि अवका। ३
 दोन नुन सख सखि जोहि जहि गीत ली ले हल लोह। ४
 सख कोविदग। नदने का। नदहु पाथोले लोहल टास। ५

साह नदि होम सख। मरी चोखि नोचन घडिस हेरि।

सखी कृष्णक विहारा हथिये सुनय। (३) हे सखी कृष्ण
 गीत नय अछिने। सलगे तोरहि लाजे 'राधा' कहि-कहि सम्बोधित
 करत लोह। (४) तोह अराम राग दिने। सख रहैत छथि। २
 सखेनुमे तोरलैत लख लोह। सखे सा की ल। लोह लख। सखमे
 पचैत रहैत छथि। हे सखी हन्का हल। लोह। सख।
 कवकथार लोह। तोर अराम। छहु। लोह। लोह। लोह। लोह।
 देखैत छथि। लोह। लोह। लोह। लोह। लोह। लोह। लोह। लोह।
 छि। छि। सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख।
 (भद्रसहिता) सखेनु पर लोह। लोह। लोह। लोह। लोह।

सख सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख।
 सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख। सख।
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

नायक नायिकाओं और रूपवर्णन सुनवत उथि (1) है सुन्दर
तोहर विचार-विवेक महान छद्म तहें ने बिन् परिचरहि दोमक अङ्कुरमे
अनेक पात भर गेल। (2) जानि नहि कछु २५ दिन हानत जे गहर
मुह देखब। बहुत दिनसँ भूखन भरा (तोहर मुखरूपी) चन्द्रमा केर किरण। पीतल
विद्यापति कहैत छथि है रमापति कृष्ण लुन दशवधन (तेन
बुद्धिवाला) दामोदर राय दीघीयु होथु।

कुल गुन गौरव सीत सोभाओ। सय दहि चउकहुँ केलि कनो
हमे अवला कल कलव अनेक। आइनि गहरा कलन विवेक
आइनि सखि जल साध रमार। से सय मति निकारि कहि १
हठ न उठैत हार का भोरे पर सवय २५ दिन पर उठय २
पराश भोले कान्ह तहार आस। से न उठय ने से ३
तोहँ पर नागर हमे पर नारि हठय भाव ३५ तोहँ विचार ४
भय मन्द जानि कोरम पोरि ४५ भय भय ५५ भय ६५
भय विद्यापति तोहँ गुनमान ६५ भय ७५ भय ८५

१ सोहे लर २ सय ३ ६५

नायिक कृष्णसँ सधा अनुनय कहैत छथि (1) है गुण गौरव
आ भयन शील स्वभाव सभ छेड़ न। तोहर ललित चउवट। २ हमे
अवला गिरहुँ बेसी की कल ह तारमे उठयारे ३ विवेक देखन नदन
ऊँक (3) हमरा सग ने ने लोभम मानुरि ४ मे सभ निकटिन कर
भर गेलि। (4) है कान्ह हन कवट, हमरा पा क है ५ उपयय नभम
पैध जसु अधिक (5) हमरा भाव तोर जल गहि तेल भोरे ६ तल कान
नहि करह जाहिसँ उपहास होम ७ ने १२ दस्य थिकह म हम पर
नारि। तँ तोहर रंग-रुम देखि हमर कलेन करैत भलि। ८ पियाम

नोक होएत कि सधनह सँ सांति काज करक थिक। मन्तत जस कि
मजस नह रा टिकल रहि मजस ऊँक १८ विद्यापति कहैत छथि तो
गुणवान उठ के तहि जतैन भलि जे हाथी महाउतक आगौं भुक्तिह
आँछे

कथनय जगन गखिरन देख कइसे नुकल शिर सतिरेह। १।
भारने अधिक करि नहि लोभ सय राख पादेनहि मुखसोभ। २
न ह न ह हरे हृदयक हार दू कुल अपजस पादेन ३
भय का छथि नेर लोभ दार नमक पर राख रसिकतल मन। ४
नह नदुख हन कुलिन मोलने जालियत बाट ५ कय वतयावे। ६
भय विद्यापति भोरे मोलने दरे ७ सवय आदर मा ८
राज भयलपन नय सिद्धि ९ सुखगोपी रमार १०

१ शिरि अइसे ललत लय २ ३ कवि ४ भय ५ भोरेन ६
यदुन

राय कृष्णसँ सङ्ग करैत छथि (1) है गुण गौरव
नह गहि जाय ने महीम सय २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

सुखसादेवीक पति राजा विष्णुमित्र स्थलाशयन कर रत जलनिहार
विकाह।

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाख। जिब ओंखि जागर देव ८५५ ॥
केओ देखे इस सुपासम नीक। जइसन परहाक लइसन बीक ॥२॥
सुनहि सुन्दरि नय मदन पसार। अनु गोपह आओव वतिजा ॥
गोम दासि रस शिखर ओप। धरने जल अधिक मुन होए ॥४॥
भलहि न हृदय बुझाओव थाह। आतुर गाहक मरग बसाह ॥
मनइ विधापति मुनह सयनि। सुकित बरान राख्य हैअ भाँसे ॥६॥

दे २ दे। ३. सुनु सुन्दरि है। ४ नाह ५ सागरी।

कवि गोरस बेधए गालने रथके राउतश टिन छायै ॥ सुन्दरी
पहिले कुटिल कटाक्षस गालके लिहाए ॥ गोरस गालक भाँसे छायै ॥
नीले दस लाग्य दाग दण देलहु ॥ (२) गोरस गाल सन सनस हस देहु
नेहन धोदनी लेख्य विकरी ॥ (३) है सुन्दरी मुख है नोहर नय भटल
पसार ॥ कामरूप मासक टोकानदारी ॥ शिरह है माल विहाए ॥
धमारम राख्यह ॥ जखन देखतह लाग्य ले राख्य भोजन ॥ (४) रीष राख्य
भीह देह क ॥ भजन रस लइए दही ॥ राख्य बजाओव विकरी रोक्कल ॥
गहक ओगाए है ॥ (दवाए है) ॥ रखने दवाक नयम बडैत ओ ॥ (५) आग
हृदयक थाह ॥ (आशय) ॥ सहनहि जकर जोह करिहह ॥ राख्य रनेऊ साव
॥ (आतुर) ॥ रहत बेसाह लतक मरग होन ॥ राख्यक आतुर बसमोने ॥ (६)
॥ (६) विधापति कहैत छायै है ॥ विधापति गोरस मुनह रस न है ॥
उपदेश होले भइ नकर मन विहिरह ॥

कने अनुनय अनुनय अनुनय ॥ जेकर जेकर जेकर ॥
विमुक्ति मुक्ति धोने सांठे न हो ॥ भाइगत दन बालकक कने ॥

जाने ॥ वसने विचाराते ॥ कने ॥ जेकर ॥ देवहु ॥ कने ॥
बसत उपपा वसत धर ओ ॥ वसत ॥ जेकर ॥ देवत न हो ॥ ४ ॥
मुन जे वसने नय नय सों ॥ कने कने कने कने कने ॥ ५ ॥
नय नय सन कने कने ॥ कने कने कने कने कने ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

कने ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कने नययोजनाक रीतिभयक वर्णन करैत छथे -- (१) सखी लोकाने
कनेक अनुनय विनय कण, बुझए-सुझाए के पतिक घरमे सुनओलनि। (२)
देखी विमुख भए (मूक घमाए) सुनि रहति। प्रयास कएनहु सम्मुख नहि
होला ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

कने वरन वरन वरन ॥ कने वरन वरन वरन ॥
कने वरन वरन वरन ॥ कने वरन वरन वरन ॥
कने वरन वरन वरन ॥ कने वरन वरन वरन ॥

राधा माधव प्रथमक सेलि न पुन काम करीय केले 4
भनइ विद्यापति प्रथमक सीने दिने दिने बला बहने परीय 5

कवि चतुर्भुज कृष्णक सर नवयौवन राधाके समझक लयेन अने
छवि -- (1) राधा मुख दाम चिपरीन देस कामे छाये अखिस सीर
बैल छनि। जेना सिद्ध कोर मे हरिणी जेना केने छवि 2) चतुर्भुज
कृष्ण एक हायसें ओषा एकहने छवि, सोमर से गदनि नेतरसें टाढ़ी अ
चारिमसें स्तन। (3) घीर खोलका उपाय नहि भेटत छनि तें नचनो दध
शेषाक समझा करैत छवि। (4) राधा भा कृष्णक ई पादनुक नचन
थिक तें काम केलि करवाक मनोरथ नहि पुरनि। (5) विद्यापति कहैत
छवि प्रथम सगमक इएह रीति थिक। नवयौवन राधा दिखलुट्टन छवि
रिति बुझैत जाएत

एके अवल न होत नहि लोके के पाहुने कहत 1) अण
आकम भागे रत नहि होत नहि कहत 2) अण
नभन नीर भाग नहि होत नहि कहत 3) अण
कहुसले कुधकारक हो नहि होत नहि कहत 4) अण
भागे विद्यापति वेरनि अण अण कहत 5) अण
भनइ विद्यापति भनइ भनइ रति होत नहि कहत 6) अण

1. सहजक। 2. तर बसनि। 3. जीअए।

कवि मुग्धा नायिकाक वीन भनकक उणेन अने छवि 1)
एक तें अवल आ तहिपर छवि नचयौवन कहुन दध बल
छवि तें राधा साख करुण (दया दयल) कहुन अने छवि 2)
आलिंगनक नाम सुनिनेन नेना हनइ अण नाइ लोके नेना हनइ 3) अण
पहुल कमनिनी। (3) अखिस नीर भरि नहि नहि कहैत रति छवि
तेना धुकधुक करण लगेत छिज जेना सिद्ध हो हरिणी 4) कृष्ण

कौन नचयौवन राधाके स्तनपर हाथ देलने थि हनइ मुन देखि नचलनि
जेना आब हुनक पाण छुटे जात 5) राधा अखिससी भा कृष्ण
जसनी कमुक। 6) अखिस रतिहु पचन खेलाकी कामदेव मना नहि
मानैत छवि 7) विद्यापति कहैत 8) थि है कृष्ण, सुनह। रति पचवाव
हेतु माने हठ कहुन तें राधाक पाण छवि अणैक

नचयौवन राधा कहुन अणैक कहुन अणैक जमुनि कहत अणैक मोर 1)
नचयौवन राधा कहुन अणैक नचयौवन राधा कहुन अणैक मोर 2)
कहुन अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 3)
कहुन अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 4)
भनइ विद्यापति नचयौवन राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 5)

1. अण अणैक 2. अणैक 3. अणैक 4. अणैक 5. अणैक

राधा भवन सगमक धराभय मखीके सनयैत छवि -- (1) जखन
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 1)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 2)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 3)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 4)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 5)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 6)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 7)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 8)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 9)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 10)

अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 1)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 2)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 3)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 4)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 5)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 6)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 7)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 8)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 9)
अणैक राधा कहुन अणैक राधा कहुन अणैक मोर 10)

१. पद।

[illegible]

(1) हम अबला (कमजोर) छी ह माली ई बलवान ह। ओसक निचोह केओ प्राण गमाए लड़ि कए सकै। भाउ १२ कानगाम्ब पढ़ह आ

वहाँ मुग्धा राधा को स्नेहायुक्त वृत्ति कहते हैं -- (1) अरु इ की
 वृत्ति अर्थात् राधा का स्वभाव है कि जो भी भक्ति, करमे सेवा प्रदान
 करता है उसे ही प्रेम की भाँति प्रेम करता है -- ऐसी वृत्ति है जो
 प्रत्येक से वैचल्य नहीं है वह वृत्ति भक्ति (2) सुन्दरी विमुख भक्ति
 जिसमें वह प्रेमात्मा मानते हैं कि प्रेमात्मा ही प्रेम प्रदान करता है
 भक्ति (3) सज पर चकित भक्ति जहाँ प्रेमात्मा प्रेमात्मा ही प्रेम प्रदान
 करता है भक्ति (4) सज पर चकित भक्ति जहाँ प्रेमात्मा प्रेमात्मा ही प्रेम प्रदान

ਪਰਸੀ ਪ੍ਰਦੇਵ ਨਾਮੁ ਤਿ ਅਧ ਕੁਨ ਬਲਿਕਤ ਸੀਰਤ ਮਖ ਭੋਜ ਮੂਲ ॥
ਨਾਮੁ ਰਾਨੈ ਜਨਿ ਕੀਚਿਲ ਸਾਟ ਤਿ ਮ ਅਧਿਕ ਹਫ਼ਤ ਸੰਗਿਨ ਲੋ ਘਾਟੁ ॥

सुन्दरि बहल तोहर बिबेक। चारि जेओल नल मुख क
 बासर देखाहे न परल पूर। दूतिक बान लाहाहुं पल दूर। 4
 पओलह सीतल पाणि बिभेक। हरि पिआस किं करबह देखि 5
 भनइ विद्यापति सुन बरनारे। नजनक आतुर रहल भूषार 6

1. बदन सुसीरभा। 2. सुरे। 3. सवाद। 4. भरि। 5. धरिअ सुर।

कृष्ण राधाक संग केलि-विनास करैत छथि -- (1) हे राधा स्वामी
 बहल जे तोहर शरीर सिरीसक फूल सन कोमल 3। महक मो भ
 कमलक फूल-सन लागल। (2) तोहर बोल कोइलीक गुहजव सन बगना।
 हमर रसना तोहर अधरामलक स्वाद पओलक 3। हे सुन्दरी तो तेरेक
 (न्याय) करवावे चुकलह। हम चारि इन्द्रिय लक्ष्य 4। फलत आ
 जिह्वाकें तो तूम कयलह परन्तु एक ओखि मुखले नइ जेब तोहर रूप
 देखि नहि सकलहुं। (4) दिनमे पूरा-पूरा देखि नहि पओलहुं 5। हे दुख
 कहने केर रालिमे तोहर रूप देखए पलेक दूर आनहुं 6। हे नजनक
 प्रभारक शीतल भूषार 6। हे नल भूषार 6। हे नल भूषार 6। हे नल भूषार 6।
 देखिके की करबह? विद्यापति कहैत छथि, हे सु-पि-म-ह-कृष्ण-दी-न।
 तोरा नयन भवि देखवा लेल आतुर 13-रु-

भावे न सहति आर्क्षति भावि ॥ १ ॥ नयन नयनि नयि
 ॥ २ ॥ एक जीव राख कलहाइ। परक देनमे देर ॥ ३ ॥
 चुम्बने लेपित काजर कर। अधर निरसि लौडलह ॥ ४ ॥
 नखेरि खल कुचजुग लागु। कैसे होइत मुकुजल आगु ॥ ५ ॥
 भन विद्यापति रस सिद्धांतर। शंडकेत आइलि तौजे के पार ॥ ६ ॥

1. लेपि 2. धार

दूती कृष्णसँ राधाकें भुक्त करवाक अनुरोध करैत छथि -- (1) हे
 कान्हू, आब एहिँ आगँ हमर वश नहि चलत। लोकसभ हे चोरि (मुस

मिनक भपल अछि देखि लेत (किएक तँ घरात होएवापर अछि)। (2)
 एक देन राधाक ॥ ३ ॥ (पतिहा) बघाबह। आब परखीकें अपन पति लग
 पठाए दहकें (3) चुम्बनसँ तो करी काजर लेपि अधरकें नीरस कए
 देलहुक ॥ ४ ॥ (आब तोहि देखहुक) (4) स्तन दूनपर नखजत कए देलहुक से
 सभ ना तो मुकुजलक लोइँ कोना होएत। (5) शृंगाररसक गीतक
 रचयिता विद्यापति कहैत छथि, सकेतस्थलमे आइलि रमणीकें के छोड़ि
 सर्वेत अछि

तज्जने सखध कहि ल गण
 लखल अखल सखि अखल नीर ॥ १ ॥
 कलिल ॥ २ ॥ कलिल ॥ ३ ॥ कलिल ॥ ४ ॥
 लखल सखि लखल नीर ॥ ५ ॥ लखल सखि लखल नीर ॥ ६ ॥
 कलिल ॥ ७ ॥ कलिल ॥ ८ ॥ कलिल ॥ ९ ॥
 लखल सखि लखल नीर ॥ १० ॥ लखल सखि लखल नीर ॥ ११ ॥
 कलिल ॥ १२ ॥ कलिल ॥ १३ ॥ कलिल ॥ १४ ॥
 लखल सखि लखल नीर ॥ १५ ॥ लखल सखि लखल नीर ॥ १६ ॥
 कलिल ॥ १७ ॥ कलिल ॥ १८ ॥ कलिल ॥ १९ ॥
 लखल सखि लखल नीर ॥ २० ॥ लखल सखि लखल नीर ॥ २१ ॥

१. लखल २. लखल ३. लखल

सखी ॥ १ ॥ सखी ॥ २ ॥ सखी ॥ ३ ॥ सखी ॥ ४ ॥ सखी ॥ ५ ॥
 सखी ॥ ६ ॥ सखी ॥ ७ ॥ सखी ॥ ८ ॥ सखी ॥ ९ ॥ सखी ॥ १० ॥
 सखी ॥ ११ ॥ सखी ॥ १२ ॥ सखी ॥ १३ ॥ सखी ॥ १४ ॥ सखी ॥ १५ ॥
 सखी ॥ १६ ॥ सखी ॥ १७ ॥ सखी ॥ १८ ॥ सखी ॥ १९ ॥ सखी ॥ २० ॥
 सखी ॥ २१ ॥ सखी ॥ २२ ॥ सखी ॥ २३ ॥ सखी ॥ २४ ॥ सखी ॥ २५ ॥
 सखी ॥ २६ ॥ सखी ॥ २७ ॥ सखी ॥ २८ ॥ सखी ॥ २९ ॥ सखी ॥ ३० ॥

(भंडह) देखल आ' तकरा उपर साध (येणी)। (4) एक आओर अकथ देखल - बिनु पानिक कमल फुलाएल (हाथ) आ' दून् कमलक उभर द्वितीयाक घान (नख) देखल। (5) विद्यापति ई अकथ कथा कहल। एकर रस जनैत छथि लखिमा ।

प्रथम दरस रस रभस न जनए कि करति पह सजी कली
नहि नलिनी जओ कुञ्जरे मञ्जलि दमने दमन तनु मेली॥१॥
कि ओर देखिअ X X अनूप
मधुलोमे कुसुम मुकुल दल कलपए आराते मुखल मधूर ।

कवि मधुसूदनसँ नायकक संगमक वर्णन करैत छथि -- (1) नायिकाक प्रथम दर्शन (संगम) थिकैक। ओ रंगरमस नहि जनैत अछि तखन पियाक संग काम केलि कोना करत। (2) ओकर दशा ओहने छैक तेहन साथी सँ उपेसल कमल-लताक। (3) अहां, अद्भुत देखि रहति छि आतिवश मुखल अमर फूलक कली लग कलपि रहल अछि।

भाजे देखलिसि कानि देखलिसि आज काले कल मंद
रीराबे बापूरे सीमा छाडलि जउयने बान्धल फेद॥१॥
सुन्दरि कनक कआसुनीते गीरे
दिले दिने चान्द कला जओ' बाढाले जउयने साभा ॥२॥
वन्ध पओधार बदर' सहोदर अन्गुलिअ अन्तरांगी
कओले धुक्ख करे परसए पाओल जे तनु जिनल पराज
मन्द हास बडिफज कए दरसि' घडिगम भप्रह बिभङ्गी
वाजे धोआकुलि समूह न हेरसि' आउल लयन तरङ्गी॥३॥
विद्यापति कवियर एह गायन लय जउयने नख रन्ता
सिधमिद ॥ त एह रस राना मधुम ॥ २॥ ५ ।

1. सजी। 2. बदल। 3. दरसए। 4. हेरए। 5. कन्ता।

नायक मधुसूदनसँ वर्णन करैत छथि -- (1) ई सुन्दरी तोरा आइ देखलिसि आ' कान्हि देखलिसि। आइ आ' कान्हिमे कनेक मंद भए गेल अछि। बेचारा रीराब सीमा छाडि पड़ाएल आ' यौवन गठ बन्हलक। (2) ई स्वर्णकदली-सन गोरी सुन्दरी, तोहर यौवनक शोभा घानक कला जका दिन-दिन बढ़ि रहल छल। (3) तोहर नख उठल स्तन जे बैर सन छल ताहिसें तोहर, रंगोदयक (काम-सौधक) अनुमान होइत अछि। के पुरुष तोहर ओहि स्तनकें छलक जे ओ परागकें जीति सेलक (?)। (4) सुन्दर मंडकें देख कए मन्दहास तँ देखबैत छल किन्तु आकुल मयनकें तरंगित सम्मुख तकर नहि छल। (5) ई गेल कवियर विद्यापति रचलनि। नय यौवनमे नय रमण केनिहार (रन्ता) मधुमती देवीक धनि राजा शिद्यमिदक ई रस जनैत छथि।

दिह परिममने पीडलि कन्हें। उबरी अएलहुँ सखि पुरुषक पुने ॥१॥
दूदि छिडिआएल मोतिम हरे। सिन्दूर लोटाएल सुरङ्ग पयारे। २ ।
सुन्दर कुयजुग नखखत भरी। जनि राजकुमर छिदारल हरी। ३ ।
अधर टसन देखि जिय मोर कोपे। चान्दमण्डल जनि राहुए झपि ॥४॥
मसुद ऐसनि निति न पाविअ ओर ' कखन उगत रवि हिन भए मोर' ५
मोरे नहि जाएब सखि तन्हि ठामे'। बर जिय भारि नडावथ कामे। ६
भनइ विद्यापति तेज भय बाजे। आगि जारिअ पुन आगिक काजे ॥७॥

1. मदन। 2. ऊरे। 3. मोर हितकर सुरे। 4. तन्हि पिया ठामे

राधा अथन संगम-वेदना सखीकें सुनबैत छथि -- (1) ई सखी कन्हें हमरा ततेक जोरसँ पीजिअओलक जे पियाए गेलहुँ। पूर्य कालक पुण्यक बसें उबरी अएलहुँ। (2) मोतिक हार दूदिकें छिडिआए गेल जेना सिन्दूर पर सुन्दर पयान लोटाएल ली। (सिन्दूर=देह, पयान=मोति)। (3)

सुन्दर स्तन पर लखलख भरि देलक जेना हाथीक मस्तककें सिंह छल
कए देने हो। (4) अथरक दंशन देखि हमर हृदय कापए लागल, जेना
राहुक आक्रमणसँ चान। (5) राति मानहु समुद्र भर गेल, कतहु और नहि
पायी। मन मन सोयी जे कखन भूय हमर भए उगताह। (6) आव फेर
हम पिआ लग नहि जाएब, बर कामदेव घाण हरि नडाए देखु। (7)
विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, भय आ' लाज छाड़ह। आनि जरबेत
अछि, तैओ तैं आगिक काज होइतहि छैक।

कि करति अचना हठ कन' नह, निदए भए उपमांगए पाह।।।।।
परम प्रबल पदु कोमलि नरि: हाये हय जनि पड़ल पओनारि:।।2।
कि कलह हे रहि नह विवेक, एकहि बीरे रस माइग अनेक।।3।
कएल काल' कल कमजुग जाए। तहअओ सुगुं... 4।
बिनु अवसर हठे रस नहि आव। फूलक फूल मधुवन मधु पाव।।5।
भनहु विद्यापति गुनक निधान। जे बुझ ताहि जाग परजवान।।6।

1 कए। 2 कास काकु। 3. मुगुंध रति रघए उपाए।

कवि नययौयनाक सम्भोगक वर्णन करैत छथि -- (1) अचना की
करओ? ओ विवश अछि। पिआ हठ करैत छथिन। ओ निदय भए ओ
उपमांग करए चाहैत छथि। (2) पिआ परम प्रबल छथिन आ नारी
कोमलांगी (नययौयना) अछि, मानू कमललता हाथीक हाथ मे पड़ि गेल।
आगेँ नायिका सखीसँ कहैत छथि -- (3) हे सखी, पहुक विवेक की
कहिअहु, ओ तैं एकहि बीर सभ रस (सभ प्रकारक सम्भोग) चाहैत अछि।
(4) दूनु हाथ सँ ओकरा कल करवाक (टारवाक) बहुत प्रयास कएल, तैओ
ओ लोभी रतिक उपाय रचैत रहल। (5) किन्तु अनुकूल अवसर (उचित
वर्ण अछि) नहि रहल पर हठ कएने रस नहि भेटि सकैत अछि। फूल
फूलएलहिपर बमर मधुपान कए भवेत्त अछि। (6) विद्यापति कहैत छथि

जे गुणवान् व्यक्ति रस बूझैत अछि कामदेव तकरहि पर पहार करैत
छथिन।

[376]

रमा तोरि बढाउलि केनि।
कए टैखल नहि नलिनी मत कतइगज भेनि।।1।
गौर सरीर धरिधर करी परस अखन भेनि।
कनक बलरि जनि रतोपल मुकुल उदय देल।।2।
छइल जन जटि देन न भाखए' ताँर हृदय मन्द।।
खने बने रति रमस आगर दिने दिने नय धन्दा।।3।
मधे नवीना पिआ सआन कुपित कुसुम बान।
कसरिकने करिनि पड़नि नासु मरते छोडान।।4।
से जे अवसर मन न बिसर नयन बला' तोर।
सिरीस कुसुम धंडी खलीलनिह ममर भरे जे और।।5।
भन विद्यापति सुनहु जीयति ऐमक गाएक कन्त
राजा शिवसिंह कपलराएन सुरस विन्द सुतन्त।।6।

1 पाइओ 2 धलए।

मुगुंध नायिका दूतीकें उपराग दैत छथि -- (1) हे सखी ई केनि
(रम-रमस) तोरे बढाओल थिक (तोही एकर संघातिका थिकह) मय
कमललता आ' मत हाथीक हाथ मेल कए देखल गेल अछि। (2) हमर
गौर देहमे जे बरक फड सन स्तन अछि रहल अछि से ओहि निदयक
हाथ मटित भए लाल भए गेल आ' लगैछ जेना सोनाक लता (नायिकाक
देह) से लाल कमल फूलाएल हो। (3) छइल (रसिक) लोक जे ककरो
देन्य (व्यथा) नहि बूझए तैं बूझी ओकर हृदय कुत्सित अछि, जेना दिन
दिन शुष्क पक्षक घान। (4) हम नहि छी, पिआ घौंड, आ' कामदेव कुद
छथि। हथिनी सिंहक घाना पड़लि। सिरीसक फूल पर खड़ग चलओलनि जे
बमरहुक भार नहि सहि सकैत अछि (?)। (5) ओ जे रतिरगक क्षण छल

से बिसरि नहि परेत छि, आबिसि नीर बहए लगीत अछि। (१)। (६)
विषापति कहैत छथि हे दूबरी सुनह पह नीर पेमक सखक उचुत
राजा शिवसिंह रूपनारायण।

ऊह गन लेमि जत मल लगे। अपन आगिनि विन मनुज
पिआ रसधंसल पथम समाने कत खन गखब नखबिना लगे
सोय नीर धरण हसि हरी नाह नहि वचन मलय कर रीति ।
दुहु मन पुरल उभर रतिवदने लडभन से धनुज न छह नखन ४
भइ विषापति बहु रास रास सिवसेह नखिने देखि रानी ५

राधा हाथीक मर रागिगक मर कहैत छथि दहिने हाथी पुडैत
छनि हे गनगागेनी नतक से मर पदेन लह भयल रसिकन
आओर पिआक अनुराग लजावह से राधा इतर देत छथिन १। हउर
पिआ रसिकशिरोमणि छथि आ तहिपर प्रथम गनगागेनी कौक मल लह
वचनोले रहल २। पिआ दिगिक लह नहि मर न रीति
लखलह कलेक बेर नाह नहि रेत रहल ३। रागिगम दलक भल
नैसी ओ कामदय धनुष इलाय नहि केन ४। रीति से पदेन
छथि हेर रन नखिने विषापति नखिने देखि रानी ५

निधसक जत धन किछु होअ करण चाक उछाक।
'मिआरक' जत गीत नतगागि गिरि उछाक चाह ॥१॥
दूती बुझबि लेहनि मति
'कल' मरहने गुनर कि हार लहे विन २
विषापी ज नखी रीति मलगा मल कर कामगा
योदे जति घहयह कय पोटी जगत के लहि जल ॥३॥
लडभनो उकर मुह पंच मन दूसर जेदा मल
हम गह के विषाद भागर हावदक विन मल ४

झरक धनि होअक कोइ गरब उपज जाहि
भल विषापति नतक कमल दुना बहए नाह ५

१. छोटा २. पोटी के नहि

राधा कृष्णक धमक जिन्दा कहैत छथि -- (१) निधजक जे धर
होइक ते भे छहर महर करण लखत सिनापक जे सौध होइक ओ
पंचलक उपादा लागत (२) हे दूरी नीर बुद्धि नहि बाले ५
(३) चुटहीने नै पछि नखमैक न ओ आगिमे कूटा लाग थोद पाले
जोरी घहयह कहैत अछि से बात मसरमे के नहि जनैत अछि। (४) उकर
अपन मुह उल्लू मन होइत छैक सेहो मनका दूसर चाहैत अछि। दौठहुके
होइत छैक से विषादमे पुनवत नदवासे लोह हउरगत पार ३। अउरे
(५) विषापी कहैत छथि जे मलगा बह लडभन केर जति न बचक
मनकोका म गह हउर नै पालेक मलगा दुना बहए नाह ५

कउह उछाक जत मल लगे। अपन आगिनि विन मनुज
जत न पछि मल लगे। लखत सिनापक जे सौध होइक ओ
पंचलक उपादा लागत (२) हे दूरी नीर बुद्धि नहि बाले ५
अएले बडभन पाव पोआर। सेजक कहिनी छथि गोआर ॥१॥
आओर खण्डतरि पतिआ चाह। आओर कहब कत अछिनि नाह ५।
भनक विषापीत बहु गुनमल सिवि सिवसेह लोखमा देखि कल ६

१. लोअक रासि पुरुष थिक जाति। २. बडभन। ३. विआर

राधा कृष्णक लोअ म सिवि गौरवक जिन्दा नखीक मलगा छथि
(१) बडभन पतनले जोरी नाह मेहि मरि छैक पोचक जोर कथा,
मुख भूत उधर माकत। भटतक बासो नाह आ भाडत उछाक पुरुष
स्यमाचन बह लोखी होइत अछि २। हे सरी पो व हे मल भाइ एकल
अपूव कौनुक (मनोरजक घटना) मेल। अउरे कान्ह गौरव गमओनक। (४)

अति भयवति निर्वोद्रे रवि कइस भडिगरति दीउत सति ५
 एत जुनि नले ताहि नाला नई, न आब अधिक पास ६
 पाइअ टाम बैसले न तोषि जे कर हाइत सहे हट नई
 भल विद्यापति सुन मुगुरि विवस पाइवि भउ मे नई ७
 नृप सिद्धिदिह डे रस जल गले लखेछा कहे रमान ८

१ लोहिं २ ता ३ बैरस,

दूती कृष्णके कहैत अछि (१) बाबा विद्यापति रजक 'न
 कतर आनख' है कान्ह बर नदी ओतण चलह। (२) राधा पीएव के प्रेम
 कएलक अछि बड ५ जुनि भवि बहल पयास भोकरा मति मिलत
 कराओल। (३) जकरा खेछे मृत मातया निरयेत से यमुना धर कए लीरा
 लग जोला अभोतहु ४) छत्रा जे ठेक भोकरा पापर कएल
 ठेक भा बट दू ५ राति बड भयलक आ घन अन्तकार वाला
 अछि भा छत्रा अकट कर ६) बड ७) लोचन भोकरा भन नरन
 भन लोचन ठेक मधु मधुकरक (भमरक) लग नहि अबैत अछि (भमर
 मधु लग जाइत अछि) ८) बट ९) लोचन भोकरा भन नरन
 भाछे। जे साहस करैत आ १०) कहे छिह ११) बट १२) लोचन
 (१३) विद्यापति अछि १४) है कान्ह मुन्दर भा बेटा कहे १५) क म
 पड़ति अछि (१६) राती लखिमादेवी १७) जे क विद्यापति १८) रस भोकरा
 छिये।

प्रथम पहर लिसि जाऊ धु जल जेन जिय जिये १९)
 नर नाराय विधि भन्त भविक सति रमि आनन चन्द २०)
 मुन्दरि बल अभिराम रस सिद्धाण मन्तरक मर
 भोकरा भडा विभा आसे। एतए बेटल गिल मन्तरक मर २१)
 साहमे साधिस अभाधे तिल एक कठित पदिल भगवत २२)

से सान, तज लोच विरि ब्याहक लागत जोरी ६
 हँसि भाइदुगल देसी। भन भवि जवान सतम मुख लेली ७
 मधे सहेका कर दुन कांजनि कल भवोरथ पूरे ८
 कवि विद्यापति भन सिद्धिदिह लखिमा देवी रमाने ९

• तिम निभ मन्दिर सुजल समाऊ २ भव ३ ४ सिरसि

सखी दूती राधाके अभिसार हेतु प्रेरित करैत अछि (१) राते न
 पहिल पहर छीनि जेन रागक लोक अपन-अपन घर पैसि गेल। (२)
 मन्थकार भी मादेरा पिथि दुह चान आब लगले डगला पर अछि (३) ते
 है मुन्दरी, झट दए भभितरमे नर शृणय रस जमजम अन्तर
 मसारमे समसं बटि थिक। (४) ओतण विभा लोहर आस लगओने (बाट
 रकत कहु भा कतर लोरो मन्दरमे बामलेद अपन फल लगओने दधुन
 (दूध पक्ष अनुव)। (५) अमावस्य काज साहस कए पूरा कए लखक थिक
 लोचन भवि दिवस ६) लोचन भवि दिवस ७) लोचन भवि दिवस ८)
 कारी अछि भा लोचन भवि दिवस ९) लोचन भवि दिवस १०)
 लोचन भवि दिवस ११) लोचन भवि दिवस १२) लोचन भवि दिवस १३)
 लोचन भवि दिवस १४) लोचन भवि दिवस १५) लोचन भवि दिवस १६)
 लोचन भवि दिवस १७) लोचन भवि दिवस १८) लोचन भवि दिवस १९)
 लोचन भवि दिवस २०) लोचन भवि दिवस २१) लोचन भवि दिवस २२)

मन्तरक मन्तर २३) करि लिलकी २४)
 मन्तरक मन्तर २५) करि लिलकी २६)
 मन्तरक मन्तर २७) करि लिलकी २८)
 मन्तरक मन्तर २९) करि लिलकी ३०)
 मन्तरक मन्तर ३१) करि लिलकी ३२)
 मन्तरक मन्तर ३३) करि लिलकी ३४)
 मन्तरक मन्तर ३५) करि लिलकी ३६)
 मन्तरक मन्तर ३७) करि लिलकी ३८)
 मन्तरक मन्तर ३९) करि लिलकी ४०)
 मन्तरक मन्तर ४१) करि लिलकी ४२)
 मन्तरक मन्तर ४३) करि लिलकी ४४)
 मन्तरक मन्तर ४५) करि लिलकी ४६)
 मन्तरक मन्तर ४७) करि लिलकी ४८)
 मन्तरक मन्तर ४९) करि लिलकी ५०)

सुन्दरानन्द धर्म नीति हस्तक एक लक्ष ३

विष्णु नीतिके लक्ष्य ज्ञान कर्म

अधिक सिद्ध कर देसति एक सखी के दोसरि सखी सपट्ट देन
वति (१) कस्तूरीक लेप आ लट लट मुकुट लेखक लहे करह से
कानन सुगन्धक घान कलह दाग) से कुरंग भए भवत। (२) राध
भयगंधे लहे सुन्दरि अछि ई अधिक सिद्ध भयी लहे करह ३। करह
भौंछे शीतकमल-सल ४। करह लहे करह भवत भवत लहे करह ५
कर अछि मानह दुधसे घोल भवत करह ६। करह लहे करह ७।
जोशिम जोरि देवदक लहे करि लहे करह ८। करह लहे करह ९।
पुष्ट स्नान जे उतरल करह १०। करह लहे करह ११। करह लहे करह १२।
करह से कएने मानह ममक दलहे करह १३। करह लहे करह १४।
जो निरोहित भए जएनेक १५। करह लहे करह १६। करह लहे करह १७।
उज्ज्वल धनी १८। करह लहे करह १९। करह लहे करह २०।
६। करह लहे करह २१। करह लहे करह २२। करह लहे करह २३।

अरुने किरन किछु अम्बर दल देसति सिद्ध भवति भवत भवत

हठ तन मधु जय देह लहे करह २४। करह लहे करह २५। करह लहे करह २६।

दुरजने जाएत पोरन करह लहे करह २७। करह लहे करह २८। करह लहे करह २९।

अमर कुमुम रलमि न लहे करह ३०। करह लहे करह ३१। करह लहे करह ३२।

अपनी धन ई धनिक धर मोह लहे करह ३३। करह लहे करह ३४। करह लहे करह ३५।

पाम घोरि लहे करह ३६। करह लहे करह ३७। करह लहे करह ३८। करह लहे करह ३९।

अनक विष्णुपति अछि करह ४०। करह लहे करह ४१। करह लहे करह ४२। करह लहे करह ४३।

राधा और भेलधर कृष्णसे पुटरी चाहत लहे ४४। करह लहे करह ४५। करह लहे करह ४६।

अरुणादेन सागरसे अगत किरण किछु-किछु पसरवति, टीक लहे

अनक भेल ४७। करह लहे करह ४८। करह लहे करह ४९। करह लहे करह ५०।

रखि थिक ५१। करह लहे करह ५२। करह लहे करह ५३। करह लहे करह ५४।
पहुंचि जाएत। करह लहे करह ५५। करह लहे करह ५६। करह लहे करह ५७।
सम्भोग करह लहे करह ५८। करह लहे करह ५९। करह लहे करह ६०।
रहेत अछि ६१। करह लहे करह ६२। करह लहे करह ६३। करह लहे करह ६४।
धन्यकर लोक अपनो धन नुकार के रखैत अछि। अनक रत्न परखी केओ
कोनो पकर करह ६५। करह लहे करह ६६। करह लहे करह ६७। करह लहे करह ६८।
(अछ देस करह लहे करह ६९। करह लहे करह ७०। करह लहे करह ७१।
छवि ई करह लहे करह ७२। करह लहे करह ७३। करह लहे करह ७४।
अनक उपकार करह (अनक सकटसे बचावए)

पाम नीलमि ७५। करह लहे करह ७६। करह लहे करह ७७। करह लहे करह ७८।

करह लहे करह ७९। करह लहे करह ८०। करह लहे करह ८१। करह लहे करह ८२।

जिकर करह लहे करह ८३। करह लहे करह ८४। करह लहे करह ८५। करह लहे करह ८६।

विष्णुपति लहे करह ८७। करह लहे करह ८८। करह लहे करह ८९। करह लहे करह ९०।

लोह लहे करह ९१। करह लहे करह ९२। करह लहे करह ९३। करह लहे करह ९४।

करह लहे करह ९५। करह लहे करह ९६। करह लहे करह ९७। करह लहे करह ९८।

करह लहे करह ९९। करह लहे करह १००। करह लहे करह १०१। करह लहे करह १०२।

करह लहे करह १०३। करह लहे करह १०४। करह लहे करह १०५। करह लहे करह १०६।

करह लहे करह १०७। करह लहे करह १०८। करह लहे करह १०९। करह लहे करह ११०।

दूरी करह लहे करह १११। करह लहे करह ११२। करह लहे करह ११३। करह लहे करह ११४।

करह लहे करह ११५। करह लहे करह ११६। करह लहे करह ११७। करह लहे करह ११८।

करह लहे करह ११९। करह लहे करह १२०। करह लहे करह १२१। करह लहे करह १२२।

करह लहे करह १२३। करह लहे करह १२४। करह लहे करह १२५। करह लहे करह १२६।

करह लहे करह १२७। करह लहे करह १२८। करह लहे करह १२९। करह लहे करह १३०।

करह लहे करह १३१। करह लहे करह १३२। करह लहे करह १३३। करह लहे करह १३४।

करह लहे करह १३५। करह लहे करह १३६। करह लहे करह १३७। करह लहे करह १३८।

आकर प्राण अवग्रहमें पैक। नगर (भद्रपुरुष) से थिक जे आनक हिताहित
वृक्षए (6) नक्षत्र मलिन भेल। और देखार भेल। बग चलेत केओ आन
देखि लेतेक। (7) पड़ोसमें दुर्जन सभ बसेत अछि। ओ सभ पृथक् त
कोन साथ करत? (8) विद्यापति कहैत छथि, (9) आदारपूर्वक आनिके
आकर प्रतिष्ठा नह नहि करह

[392]

छल मनोरथ जौवन भेलें कतन करब रडग
सहै सवे ओर धरि न रहस भेल किरदए भडग। 1।
तयहु इपर छल मनोरथ आबि कि करब साप।
अइसनै अपराधिनै भेलहुं जे छल तयिहु बाध। 2।
माथय आवे तजो इ बड दोष
जते जे किछु बोलैत धरिअ तयो गुरुजन रोस
अबस तिकट आणव जाणव धिनअ कर ई नारी
दिले साते पाँचो घाटहु घाटहु दिठिहु हनु निहारि। 4।

1. से सवे पैम ओल। 2. अइसनै भए अपराधिनै

राधा प्रेमक भावमें बाधा पाबि अपन व्यवसाय कृष्णसँ कहैत छथि
(1) मनोरथ छल जे जौवन भेलापर खूब प्रेमविलास करब। किन्तु से अन्त
धरि नहि कर सकलहुं। मन दूटि गेल। (2) आगेँ आओर अभिलाषा करब
व्यर्थ (3) तेहन अपराधिनो भेलहुं जे जतयो अनुबन्ध (संगति) छल
साहूपर प्रतिबन्ध लागि गेल। (4) है कान्हू, आम तँ हमर ई अनुबन्ध
बडका अपराध बूझल जाइत अछि। जे कतहु गपसप करैत छी तँ साहूपर
गुरुजनक क्रोध होइत छनि (5) है कान्हू, ई बेचारी नारी (हम) धिनती
करैत छहु कृपा कर लग अवैत-जाइत रहबह। पाँचो सात दिनपर पाटो
जामे क नजरि निहारिओ लिहह

दूर सरो पैम ने बाटल मनक चिरिति जानि
अन्तरि कान बडि दूर आन्तर करमे साओल आनि। 1।
घरन नूपुर धन सबदए चान्दनि। हनि उजोरि
नलाने बैरनि निन्दे न सोअ आबे अन्तइति मोरि। 2।
दूती बोलि बुझाबह कान्हू
आजुक राति आए न होएत हृदये कोपधि जनु। 3।
छल नूपुर करे उतारब सामर बसल तनु।
छेन्हु जे नै नलाने कोपधि बिलम्ब सागर जनु। 4।
ओ भरे लखन नव सिनेह सँ भरे कुलक गारि।
मवल पैम सम्भारि न होएत हठे धिनसनि नारी। 5।
भन विद्यापति उगन्त भेयिअ मदन धिन्तधु आओ।
चिरिति कारने जिब उपेख्य सँ बैर होअ कि जाओ। 5।

दूर सिनेहा। 2. अन्तरपे काजे। 3. चान्दहु। 4. आउ। 5. जाओ।

राधा दूतीद्वारा समाद पठबैत छथि -- (1) है कान्हू सोरा मनमें
प्रीति छहु से जानि तोरसँ बचन द्वारा दूरहिसँ नेह बढाओल परन्तु हमर
कर्म (दुर्भाग्य) ताहि नेह बीच बाँझि कालमें बहुत व्यवधान कर देलक।
(2) पाएरक नूपुर बड अघाज करैत अछि। शुक्ल पक्षक एकमक राति
धरिनि ननदिके नीन नहि। हम विवश भेलि छी। (3) है दूती, कान्हूके
हमर उपयुक्त समाद कहिके बुझाबह जे आजुक राति हमरा आधि नहि
होएत। मनमें तामस नहि करथु। (4) पाएरक नूपुरके हाथसँ रोकि सेव
कारी धरब पहिरि सेव। खेती कौतुक कर ननदिके परतारि देब जाहिम
अभिसारमें बिलम्ब नहि हो। (5) ओम्हर (एक दिस) नव सिनेह आ
एम्हर (दोसर दिस) कुल-कलक। प्रीतिक सभ अपेक्षा हम पुराए नहि
सकब। तैओ जे तँ हठ करबह तँ मारलि जाइति ई नारी। (6) विद्यापति
कहैत छथि, उगन्तक सेवा करी (अविष्य प्रेमक चिन्ता करी) आओर

मंघ सत श्यामवर्णी राधा चनकैत गदल सभके करी वहासे भवत कर
 लेल। बाटमे कतहु केओ देखि नहि पसालक जेता मोसे मे हूँहि छसो
 हो (4) विद्यापति कहैत छथि जे होहिअर आ जेनाक अछि तकरा आग
 तोहर ई चतुरपल (गोदल) नहि चलतहु एकर रस नैत छथि राधा
 शिव

धनदा अनु उग आजुक गली शिअके निविण पठाएहि सही ।
 साओन सत्रो हमे करबि धिरीली, जत अमिसन भासिसरक रिने ।
 अधवा राहु बुझाओय हंसो, धिया अनु उगिल्ल सैतल समी ।
 कंठि हन जलधर तोह लेह साहोक रसनि धन तम का देह ॥ १ ॥
 भनइ विद्यापति सुभ अकसर भन जत कराय परक राग ॥ २ ॥

कवि राधाक अँकेमे अमिसरक जणल उदैत छथि । हे राधा
 आजुक राति तो तौहें उगइ हम शिअके धन निविण पठाएहि । तू हम
 साओनमें छीने कहबि कियार । जत अमिसन भासिसरक रिने ।
 अन्धकारमे) यशोद अमिसर धनैत अछि । २ मधन राहुत पल्लवपूके
 अङ्गाय कय ने कय काग सो सोनल च । हे लल पुन रसनि देह के
 (4) हे भोव हमरासे लायि बान्ह लेह आ तकर बदलामे मानइ करि
 गहन अन्धकार जग देह ॥ ५ विद्यापति कहैत छथि । अमिसर उअ ह
 भनू लीज राद साधक इच्छा करैत छथि साओन हनु आ मोन नम
 तोहर सहायता करतहु

पथम जँचन लघु मरअ मनीभव लोह मरअएक रकते
 जग गुरुजन कीरा लोहम चरिअ लेह मरअ मरअ मरअ
 हाए हाए केओ से बँडल नगु जग
 सकैत निकैत हनि जगल जचैत पर अनु जल देहल ॥ १ ॥

पथ गुरुजन सडका पथ पथ पथ पडका कि करति ओ नबि करिती
 चना चाह धसि पनु गुरु जग अमि जलक ऐकवि हरिनी ॥ ३ ॥
 विदि मर घड मरता उगि अनु जग कन्द उठि उठि गगन निहार
 मलिनी दल निर निर ल रहल शिर तत घर तत ही बहावे ॥ ४ ॥
 करि विद्यापति भन अन्धकार गुरुजन नीन्द निरूपण लगो
 कपट निकट मर चदन काग राग रसनि मरअएक रकते

१ कमल २ निकुञ्जपल जे ३ दल पथवने ४ पथहु पथक ५
 पनु वह खसि खसि ६ सुनि उठि ७ कि कत ८ वसति लीर शरि
 धीर झपाव

जदि राधाक भासिसर हेनु विकलताक वर्णन करैत छथि
 राधा लघु जीवत प्रथम मरण मे पति कायक अछि । कामदेवक भारी
 दवाय । मिलतक साहस । हेर मरअएक राते होह लेह अछि धन
 मे गुरुजन नगल ऐक देम दवाय बाहिन वदि हि मर करी लघु
 सगल मे पलीत अछि । २ ह के ननैव सोकर गीत काय
 लघुमर मे दल उठि उठि जग सो लोना मरअ सोकर पथ
 निर २ कल ऐक । दल मरअ लोना देह देह मर २ ऐक
 दल मे मर देह पथ मर देह ऐक होहो गल बाध की ज सो जौल
 दपही । लो लमल लका कहैत अछि आ पर-पर खमे जौन अछि
 लेल लल मे जौनावे हरिनी ४ मरअ दल घड अथलाह अछि
 कदापि । जग हे राग राग गी प्रकारक गुनधन मे ओ बर-बर उठि उठि
 मरअ दल लल अछि । मरअ शिर पथलक पल पल जौने मर
 जल ऐक लल मे घर साइन अछि । लल मे दल विद्यापति कहैत छथि
 छत छत मे हे देहपाय हेनु ३ गुरुजन नगल उठि धि मूलन जौलो लघु
 लल जग गुरुजनक मुह लल कत जल नानि मर गति विद्यापति नैन
 अछि ।

१. शा. वि.

$\pi^0 \rightarrow \gamma \gamma$ $\pi^0 \rightarrow \gamma \pi^0$ $\pi^0 \rightarrow \gamma \pi^+ \pi^-$

6. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 1033-1037.

ग्राहक विभाग, (11) भाग, 9. 10. 2018 ई. को, 10. 10. 2018

[illegible]

चित्रावलि कवि भावे रु०-१९५२ ई० पृ० ४

સાથી કૃષ્ણાકે રામાય મંત્રિજના મુદ્દવૈત ઉપિ ૧ કા-૨ ૧૬

भयानक साप सभ रहैय, चारोटस मीय बरसै रहै । २ ॥ ॥ ॥ ॥

बौद्धिक बलें यमुना नदी पार करलक। भाग्य ३ पाछा ॥ १६६ ॥ १६७ ॥

लेखक महोदय का पता : १५, बंगला रोड, दिल्ली-६

पथ शीघ्र वड गरुड नितम्ब। यस कत बेरि मरी अमलम्ब। ८ ।

શિર્ષી ઉપર દરમયાન નેચ રહી જાય તો ધારક યંત્ર

एक मूल निर्माता साधन गलत। उत्तरदायित्व भाग्य दूर गलत। 4

२ प्रति मासिक कर रकम १५ रु. ३० पैसे केवल देय है।

1. नहीं। 2. जानि करिअ सोयें।

द्वितीय शोधक यिलम्बसें पहुँचबाक सफाई कृष्णाकें दैत अछि -- (१)

राष्ट्रिय सभा ३२ स १५५ चार डेरा प्रान्त ३ अथ जोरस बरसए

ला. ४ धरती पानिसे भरि गेल। (२) बाट पीछर भए गेल नहि के वर धर

मार्ग विलम्ब। कर शीघ्र खसरा अ. ७१५ + पट्टा ए. ३ *

विषय सूची

[illegible]

अतः $\frac{1}{2} \times 10 \times 10 \times 10 = 500$ घन मीटर

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

Figure 1. The effect of the number of trials on the number of correct responses. The number of correct responses was significantly higher than the number of incorrect responses for all groups. The number of correct responses was significantly higher than the number of incorrect responses for all groups. The number of correct responses was significantly higher than the number of incorrect responses for all groups.

[illegible]

ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਪਾਠ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਨ।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

संख्या १-३ पर से प्रतीक ५.३ और गैरि मय माफ़िया

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

संशोधन और विकास के क्षेत्र में नए तकनीकी आविष्कारों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं।

जहाँ न आगलहे लहे धाने पल्लवि कोह
 थोड़ा गेति गलति माला १ ३
 भनड़ विद्यापति सुन दर कहति जौन जौन सन्दर १
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

१ जागल २ जउदिस मर न धन ससु नहि ३ लहु म से चलये ४
 नहि। ५ से कहति।

दूरी कणकें उलहन दैत छनि । पदम सभ जागल १२१।
 नगरक लोक घनेत घुलैत रहल ससु धन बरान्हन नहि रहल तेनी
 राधा अपन बुधिअरी आ कौनक वने ओली लोच वल गाने पढ़ाने
 एतेक अधिक छैक राधाक लोच स्तोत्र २ ३ कातर कोर जनेन जौने
 (अपन घातपर दहला) छहु से सभ की काहअहु। राधा सकेन मरान सोने
 त्रे सुन छल। (३) ते ओ तोहर आ चक बल्लभाल रहि नहि मरुकर
 नीतैत रहति। जखन ते लोह भागल रहन आ मरम ३ छहु गोले
 आ (अपन आधाक प्रमाण) हाली मरल ते छि जौने व तेन
 भनने छति, फाके गेले ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 रहए से जागत कोना

राहु मेघ आ गगन मर १० धाने पल्लवि भन २
 घन' बरिसए अउसर लहे होए ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 सलवाल सुन्दरि क गान सन दिखल मगगल १० २०
 गुरुजन उरिल न क दू धिनु सारस कर्मिभार लोहे ३ ४
 एहि सभन क वयु गेह विद्या क मरम ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 भनड़ विद्यापति कवि क १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

१ नहि। २ सडगम

दूरी राधाकें दिवाभिसारक हेतु प्रेरित करैत अछि - (१) राहु मेघ
 घाने के सुंदर गलित रूप लबक, (ततक अन्हार भए गेल अछि जे)
 दितहिमे छह नहि चितहाइत अछि। मेघ लगातार बरिसि रहल अछि
 एतेक देखलहु भवकष (विराम) नहि होइत अछि। नगर मे आ धर
 भाइलमे कसो चलैत दुनै नहि अछि। (२) हे सुन्दरी, घलह अभिसारक
 तैआरी करह। आइ दिवा संगम सफल होएतहु। गुरुजन आ परिजनक हर
 यागह धिनु सारस कएने कामना सिद्ध नहि होइत अछि। (३) एहि
 सभ मे सभस महत्वपूर्ण स्तु थिक छन भरि पैसोसँ मिलन आ जीवन
 भरि एगए तजोह कविकण्ठहार विद्यापति कहैत छथि लाखी चेष्टा कएने
 दिवाभिसार दिखल गुम मिलन सम्भव नहि होइत अछि।

गगन गगन होय नहि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 ललल सलल ललल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 दलल दलल ललल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 ललल ललल ललल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 ललल ललल ललल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

१ दनि २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

कवि कणक सभके लोह करैत अछि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 दुहि गेह तेनी फल सगल लोह नहि छथि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 सललल धिय लोह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 गगल मरल १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 ४ राधा ऊठल लोह लोह स ५ सलल विद्यापति नहि घनैत अछि कण
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 नदिका आ दूरी लोह नीलमे दूरी अछि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

खरि त्रि वेगे भासति लङ् धरा न गर नागो जललङ्
 न धमि ऋजुनि भेलतुं गङ् कुण्डल बलभी दलन तल ?
 १ मधि २ मधि न बोल मन्त विहङ् वयनं वलन दलन ३
 कुण्डल वलन ऋजुनि भाङ् लङ् नोहङ् नोहङ् नोहङ् ४
 मलक निलक न दहि गल सुभ सुभकर वलन नभ
 लहिति तल न पाङ्ग वल न कुङ्ग वलन लङ्ग वलन ५
 भन विहङ्गनि मं वलनलङ् वलन लङ्गनि विहिति ६ वल

शधा गुप्त मगमक नक्षत्राक साथ करैत छथे । तस्मिन् देव वड
तेज छल । तओ भासि गेल । नवयुवक कान्हू अछि । समझैत ताह सकल
(2) तै यमुनाक धारमे धौमे धार भेलहुं । रही छूटि गेल भ । तार छूटि
गेल (3) तै समी कलक छति बगवद । बगवद छति । छति छति
भए गेल । (4) कान्हू कान्हू मगमक भासि छति । तकर । तकर
तकर ताह छति गेल । (5) गनक धारमे पसारे । भेल । भेल
अकलक चान सन भए गेल । (6) धारक ताह बाह भेल । तै
कलक धार ताह गेल । छति । छति । छति । छति । छति । छति ।
कौशल छी तै बाह (भोकरा) तै न । तै न । तै न । तै न ।

भाग 2 भाग 1

गैल है नए अमर डार पर जाँटे लेलक (2) ते जमुनाक कात पड़ाए
आनहु भोतर घमान आँघर डघरि देलक। (3) हे सखी तोरा सत्य
सत्य कहैत बिबहु हमरा मान किछु नहि कहह। (4) आँघर हटलासँ हार
देखार भा गेल से देखि गदगद के सन्देह भैलैक जे ओ ऊजरा साप थिक।
(5) ते मयूर झपट मरलक से अँकर बाधुरक कह गदि गेल। (6)
चियाणवि कहैत छथि हे तो ओ कहैत रह से 5'घिन (विश्वसनीय) लगैत
अछि गचलक पट्टा हो ते लाथ करब सफल होइत आँछ

49

[illegible]

ॐ २ सासुनिह। ३ २३

मासु गुप्त सगमक भक्षण देखि शका करैत छथि आ' पुताहु लाख करैत छथि --(1) है मन्दरी, तौ जाहि लेल (जे आनए) गलि छलह से कहाँ अन्नलह (पानि कहाँ अन्नलह)? आओर (पानिक) पानि (समुद्र) केर पशु (सगमक) केर पानि पील कता रहद अपना मुहें कहह, कीन सुख दुखस जाई तौ कता? भूषण है, असभलह, तौ अपन पतिकें एहि

पक्षी की उतर देवहुत जे में जन्मक समय सुशोभ्य कालमें गेलत भा
 लज्जिक अन्त भेलापर (सुशोस्त भेलापर घुलत भातक काल कला
 छलह?)। राधा उतर देव उचित (3) जाहि नैल गेलहुं (जाहि नैल
 गेलहुं) से चलि आएल पाति आखे गेल वषा होभए जायत ते हम
 दंडिके एक सुरक्षित स्थानमें नुकाए रहलहुं। जखन से जाहि चलि गेल
 (वरखा खतम भेल) तखन पाते भरि घुललहुं। (4) बाटमें किछु मन्याय
 (सकट) भए गेल। शकरक वाहन सांड पाछु दिस छोलाइत छल। जे मझ
 सग छति से सभ पम्हर-ओम्हर भागति। हम खुद भाग उपाए लागलहुं
 (5) लौ हे सासु, जाहि दू वस्तुक (पाति भा घनक) पुराण में 38 से
 दूनु अपन-अपन सगमें मिलि गेल (राधा जहिमें मिलल अ देव
 मारिसे। विद्यापति कहै छथि हे सुदती मुनर मने रग रिगल नहि रहि
 सकैत अछि। साथ के व लयदे)

जाहि खन महाघ भइ किछु अरु खन अरु
 रुपदे धरि मान सम्मान लेह
 कानक जपी पैम कसि पां उलो जलक होत
 भांधि सत्रा अधा भोजन रह
 ११ १ १
 ११ १ १
 इन्दुमुख अइ न कर भिन्न मध्य अरु हर
 सुमुखर रङ्ग सदा सदा
 वला जस होति तब सदा कानक होत
 सहज पर छाई देव सभन मिला
 पथम रसभरम भेले लोभ मुखसोभ गेल
 व निध भुजपासे पिअ धरय गीसा॥३॥
 नहि नान कलकार कल कलि कलित धर

खन नखन लाल कन लेह वेन
 बरन उद लाल गग भाट नि इन्द्र रम
 नखनी मुख मुख भमिर मेन १
 सरस कवि सुख भने भन्तर चलाए
 जाहि आगदेभर पञ्चवान
 सकल नल मुकुल रहि रहि रहिमाक पाते
 रूपनयन निचारेह जना ५

इन्दुमुखि २ भिन्न गेइत १ मुकुल कर

सगी लोभे हाके काम-कला (सगमक रीति) सिखयन छथि -- (1) हे
 मुन्दरी खन महग भा खन जेवना कोप दयाए मान कए पिआस
 मझान एवह गहन गण करह जे सहज सुख भूझि उपोक्षित नहि
 होसत। जतिमें जलन भूह बेरि पम्ह परीक्षा करह जेना सोनक परीक्षा
 होइत जाति भा परीक्षामें सखन भेलाए के। पुरि के शोक विलोकन
 करह न भय न भुषी वीषए टहन। (2) अपन घाल
 सन सके जहि नहि रहत जाक मनमें खेद होएतनि ते हे जे
 जेन विन्दु ससारमें कामपभागे सभसे पैघ वस्तु थिक। (3) पिआस
 जे नहि होत जे जे कह्यन से समटा मानहुन जाह। हुनक कोना
 हो जाइत नहि। रसभरम क अपन देह काल कए लेह तेओ सटथुन ते
 शब्दो रीति हो न सभसामें जखन हुनक रसभागमें बाधा होएतनि
 नहुन ओ भुजपासे वान्हि लोहर गरदनि धरथुन। (4) जखन हुनक
 लोभो दीनतास कलज कवि जकी संकुचि जाए तखन ओही कान
 नखनर के रहत जस वल मुकि। पओन जेहन आनन्द होइत अछि तेहजे
 सलन्द लोभो सभ म म समय होइत अछि। (5) सरस नामक कवि
 रसय जखन जेहने जाते ते परम घनुरताक सग कामदेवक प्रेरणासँ लोकोक
 भाग्यला कने य थिक। रकर रस जेत छथि रानी लखिमाक पाते
 नि निर अपनगयण जे सकल शिष्ट जनक आश्रयदाता थिक।

[illegible]

1. एण्ड 2. गीम्स 3. मैनड 4. एहु।

राष्ट्रक संघीय सभा में प्रवेश करने के बाद ही
मध्यमो इस स्थिति को समझें। अतः यह बात
वि जाई मानिनि आगेही मने अनुमान।
११११ स्वच्छते से लड़ें और ही न करें।

कुंगरुमः अहं वरु आचं

[illegible]

कृष्ण आनिते मल्लिकार्जुन चरि १ २ सुंदरी लोहर सुह
यान चिकहु. हमर आखि जकार ३ लोहर मीठयेंची अन्नन पीति सिद्धि
अछि। लोहर अधर मधुरी फल चिन्ह म लोहर निम भजन म म

दिना कतेक काल तीवि सकेल? (2) ते माणसीने लोह, अन्न लोह तेना पाथरस गढल हो, ती कितक नहि विलासपुटेक होते होस किंहुनो पथर दैत छह जे रातिक अन्न सुखमे हो? (3) ते अन्न अन्नमे मानीन छह ते अन्नकर बात सुनैत छह आ 'रसिकक परिपाटिओ नहि बुझैत छह अपन काज बेरि-बेरि कहबहु मे हमरा नाज होइत अछि। अरथित बेरान्त याचक बनने आदरमे कमी आये जाइत छैक (ते हम नव देसी अनुचर अनुरोध नहि करबहु)। (4) विद्यापति कहैत छथे ह सुन्दरी मान ह हरदम मान नहि करवाक चाही ॥ १३ ॥ लखिमा देवीक धरि मेरा शिषसिंह जनैत छथि

यदुन सरोवर हास नुकाए लेवह ते माणसीने लोह तेना पाथरस गढल हो, ती कितक नहि विलासपुटेक होते होस किंहुनो पथर दैत छह जे रातिक अन्न सुखमे हो? (3) ते अन्न अन्नमे मानीन छह ते अन्नकर बात सुनैत छह आ 'रसिकक परिपाटिओ नहि बुझैत छह अपन काज बेरि-बेरि कहबहु मे हमरा नाज होइत अछि। अरथित बेरान्त याचक बनने आदरमे कमी आये जाइत छैक (ते हम नव देसी अनुचर अनुरोध नहि करबहु)। (4) विद्यापति कहैत छथे ह सुन्दरी मान ह हरदम मान नहि करवाक चाही ॥ १३ ॥ लखिमा देवीक धरि मेरा शिषसिंह जनैत छथि

मनोरथ जागल

कृष्ण भागिनी राधाकेँ वडसैत छथि ते माणसीने लोह तेना पाथरस गढल हो, ती कितक नहि विलासपुटेक होते होस किंहुनो पथर दैत छह जे रातिक अन्न सुखमे हो? (3) ते अन्न अन्नमे मानीन छह ते अन्नकर बात सुनैत छह आ 'रसिकक परिपाटिओ नहि बुझैत छह अपन काज बेरि-बेरि कहबहु मे हमरा नाज होइत अछि। अरथित बेरान्त याचक बनने आदरमे कमी आये जाइत छैक (ते हम नव देसी अनुचर अनुरोध नहि करबहु)। (4) विद्यापति कहैत छथे ह सुन्दरी मान ह हरदम मान नहि करवाक चाही ॥ १३ ॥ लखिमा देवीक धरि मेरा शिषसिंह जनैत छथि

सकैत छिअह ते लाल कलक शोभा घोरओलह ताही भाजै मुह नहि देखदैन छह की ॥ ४ ॥ कवि विद्यापति कहैत छथि कामिनी जे कोउ (मान करैत आछे ते कामदेव जागि उठैत छथि (मानस विराग नहि अनुसंग जैत अछि। नयमनीदेवीक पनि सान्धि विद्यापति शङ्कर एकर सभ रस आ भाव बुझैत छथि

राष्टिस नवदे रसिने भो गति धरने धरति बेअगिति भनि गजल गरने जागल पञ्चावत एहना सुमुखे उंचेत नहि मान ॥ १३ ॥ लखिमा देवीक धरि मेरा शिषसिंह जनैत छथि

कृष्ण भागिनी राधाकेँ वडसैत छथि -- (1) चाक दिशा ह रति मेघस भोर गेल तलधारास धरती व्याम भए गेल (2) मेघक गर्जनस वज्रस जहि उदरस आछे एहन समयमे ह सुन्दरी मान करब उचैत नहि ॥ १३ ॥ लखिमा देवीक धरि मेरा शिषसिंह जनैत छथि

कवि विद्यापति कहैत छथि कामिनी जे कोउ (मान करैत आछे ते कामदेव जागि उठैत छथि (मानस विराग नहि अनुसंग जैत अछि। नयमनीदेवीक पनि सान्धि विद्यापति शङ्कर एकर सभ रस आ भाव बुझैत छथि

पलटि शत्रु कैलि पिउ मइय पत् मनि दम्भारे उंचे दिना :

के. वि. भर्षे मिनि रणारभस रावह दळपतिक. इन मने फ. व. ५. २५. १९५५.

* જાલ સે જોર વધિ નીકે મલ આજે કર અવશ્યતે 5

गैर, अगला १ मिनट रोकना पड़े

ਸਮੁੱਚੀ ਜੀ ੨੮ ਨੂੰ ਸਾਹਮਣੇ ੨ ਵਾਰ ਜੀ ੨੪ ਨੂੰ ੩ ਵਾਰ

साजलि बड धथु दपका

जहदि बघने पर हित से लाहो लेखन कर

साधु जन मखि परहित लागि न गुन धन धरने

राहु पिआसन राहु धरने न होम खीन मलान

न धिर जीधन न धिर कीधन न धिर एक ससर

गेल अवसर पुनु न पाइम किपिने भसर भर

कनए राघवरा घरीनी कनए लइकी राघव

कनए हनुमान साधु लखन किछु न गुनु नाम

जखने बकर बडक विधान सभ कनए जने भन

मधिक तापदे धरन करन कवे विधान भन

जन की 2 अनुमान.

सखी परोपकारक भदिमा देखाए व्यवस्था द्वारा संधाक करीब १२५१
करबाक छेरना दैत छथि । १) साजलि बड धथु दपका न सजिक
कनेक शीकब ? (कृष्ण धान जकां उन्नत हो रहल हलअ नोकक जकां
दराइ नहि)। जखन जे उपलब्ध रहए तब तब १२ सग १२५१ छि
वमान देखि ईज उठएबाक थिक । २) सखी १२५१ सखी १२५१
देख धस्तु थिक। जकर दधनम कनेक अपन हो जाई कोन कोन
वृद्ध। साधु जन आनक हित लेन अपन धन भन जखन जे कोन कोन
दुईत छथि। पिआसन राहु धानक धारि १२५१ लेखि विधान दाल
छथि जे क्षीण। (४) जे जीधन स्थिर छि जे जीधन न हो तब नहि
वीतल काल फेर नहि भेटेछ। केवल कीति भन होत १२५१
राघुबल-गृहणी सीता, कनए लखनम न हो तब नहि सखी १२५१
रासक परबहि नहि कएलनि । ५) सखी १२५१ सखी १२५१
सखी १२५१ छि सखी १२५१ आकर कोन सखी १२५१ सखी १२५१
जखन १२५१ सखी १२५१ छि सखी १२५१ सखी १२५१

वजन सुध सन दधन बिलास। भन जन तनहि जाणत दिनवास । १

मन्द मन्द धरने सवे कोए। पिबइते नीम बोक मुह होए । २

१) सखी १२५१ वजन सुध सन से कि होति भलि जे मुहधार । ३

जे नन जेसन हन धर गो। तकर तैसन नन गौरव होए । ४

जैरा र सखि दैन मध एहु नहि धरए सतओ अपराध । ५

जइमओ हन राह मिमिअ समाज। तइमओ रहब अजुधि भए नाज । ६

काचपी अनुगत जन नम लागे लखइ हटअगत पम । ७

मदुरचन हे मवहुर मर विधानि भन कवि कण्ठहार । ८

१) नौ अछ हठया विधान सखी २) सखी १२५१ रहब

सखी १२५१ सखी १२५१ छथि -- (१) जनए बोल धानक अमृत सन
सधु नुईत अछि सन नन तनहि विश्वासपूर्वक सदन। (२) सभ केओ
सन्त (सीधे) धोलादेस (वृद्धापी होएबाक कारणहि) मन्द (अधम) वृद्ध
मदुर (नहि) नीम धरने मुह बिजकि जाइत अछि। (३) १) सखी
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ छि (कटुपचन) छि से कनेक सखी
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ (४) जे भजना हटएक भयक जनेक विधान
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ से तनेक आदर पछि
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१

दाजत दाजत विधान सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१
१२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१ सखी १२५१

शास्त्रि अपनहि मने अवध १ लखसैदन क लख कुटार २
 जनने सख लिय रहिअ सोए ते रवि ने परबस कहि सोए ३
 परगट काय न सुपहुक होस राख्य अलख भयल मरोस ४
 मनहु विद्यापति परिस धन्य अनुखन न रह पलक अनुखन्य ५

तबो करयह २ पए राख्य ३ २ रह पलक

सखी राधाके सहनशील एएवाक उपदेश दैत छथि (१) दुइ लोकक दुर्निति (दुहता) केर परिणाम अधलाह होइत अछि कहि लेल पहुँसे भगवत नहि करक थिक। (२) इठान् इन्हें समझ लहि करक थिक प्रेम मानह स्फटिकक कगल थिक जो ज कुटल तें भाकरा के कोड़े सकल? (३) हे सखी अपनहि मनमें दिना कइ ने सखी दुई सखी अछि लकरा पर कुहरि के वतारन? एम उद ननु हउर हनेको भाषातन दुई सखेछ लकत बचावहु। ४ धातुक अपन २३ जगल के राखर न हेम भी जगल हथमे लहे सोने लोहा ५ भयल विमल दोष एकल नहि करयह (मनहि मे मन रहिह) सखि भयल १४ भरोस रहिह १५ लो स जगल भयल सोने ॥ इह जगल विह १६ विद्यापति कहै छथि एम नहि कहै कहि कहि १७ अनुबन्ध (सधु मन्ध ४ कह नहि हे भउ १८ दुई सखि अछि)

सखि हे वृद्धल कान्ह राखर
 पिलकक हार काज कीदह न कपर चकमक सो
 हमे जे नाह भय मरुत ही भय एम सख ननु मरुत भय
 तोहर धन्य कहि जगल स से लेखि नहि मरुत विह
 प्रसुक सङ्ग मे ननु मरुत नील मे कि नुखल न लेख
 मधु रासिनी हवि जग विजय लेखि नहि मरुत मरुत २

राधा राधा सखि 'हित केर मानव' ने हम रोदिहु अघट
 चन्दन मरुत किन्ह भालिहुल भनि रहल दिन कहि ४
 मनहु विद्यापति हरे वहुवलभ करल धनु अपमाने
 सख सिवसिंह सपनसपन लखिहोनि राम जने ५

दहु कबोस १ हम तौ करल ३ मडगे हुनि ४ वृद्धाधि ५ तोहरे वगने रूप धस तोरन

राधा दुर्लभे सखल दैत छथि -- (१) हे सखी, आइ वृद्धयामे आएल ने कान्ह वास्तवमे गोआर थिक। पितरक दार कोन काज दैत? केवल उपरसं वकमक २ हमरा मतमे भेन जे जगल नीक होएत किणक तें हमरा धारणा छल, ओ कान्ह नीक लोक अछि। तोरा कहने हम अमृतक भमे विद्यापति काय ने पलक सग जीवन विमलक से कोना वृद्ध ३ जे राधिका की शिष्य ४ हे सखी तोहर धारके कितकर वृद्धल ने हम वृद्धागे धलल। चन्दन वृद्धि सिमरक माछके धएल, तें हृदयमे कोट भोकाए रहल अछि विद्यापति कहै छथि काय वहुवलभ भिषाक ते ओ तोहर वृद्ध उपमान कलल न पकर राम जतोनेहार थिकाइ लखिनाक ५ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सखि हे वृद्धल कान्ह राखर
 पिलकक हार काज कीदह न कपर चकमक सो
 हमे जे नाह भय मरुत ही भय एम सख ननु मरुत भय
 तोहर धन्य कहि जगल स से लेखि नहि मरुत विह
 प्रसुक सङ्ग मे ननु मरुत नील मे कि नुखल न लेख
 मधु रासिनी हवि जग विजय लेखि नहि मरुत मरुत २

कतन मन्तरसे अछतिहँ सुन्दरि नगर भगर हगर
गमसक अवसर की लहि अछिणन कतन करन चरनच
अवसर गेल हेरि नहि हेरए फल जहिअन सब चरन

1 जानिअ।

कृष्णसँ उपेक्षित राधा रूपन मन्ताप सखी सुन्दरि उथि १,
भारम्भ आदर पवि तनेक ने पुनकित भए गेलहुँ जे बाझ दहेन किछु
नहि सोचि पओलहुँ कान्हक मधुर वचन अमल बुझि पिछैन गेलहुँ अ
नकर परिणाम भेल छियक समात। २ हे मर्या मन्तसे कनेक मन्त
करने छलहुँ परतु हमर नगर (सँतक पिआ) भन्ना तुल्य सिद्ध भेल ज
धरि रस पवैन रहल ना धरि दशक रहल। रस समाप्त होइतहि किन्तु दोखहि
छाडि के छनि देलक ३ मगक समय की लो नहि गछा कनेक ने
आवेस करए। अवसर गिनेतहि ताकेओ के मोह गकर परिणाम मे
केवल दिन्ता हाथ लागए।

प्रथम जीवन नय गर मन्तभव छोट मधुमस रजनी
ज मे गुरुजन गेहा राखए छोट मन्त मन्त मन्त मन्त
साए साए केओ न बैदत लख जाते।
सकेन निकेत हरि जाइनि कजनि हरि मन्तवन विकल पवन
पथे पुरजन सदाका उअ उअ मन्त उअ उअ उअ उअ उअ उअ
छन्ना छान्ना छान्ना छान्ना छान्ना छान्ना छान्ना छान्ना
गिदि मीर बड मन्त सोने जन्म गान दल्ला रति रति रति रति
मलिनी दन निर दिन न राए कि नर पार न हो पदने ४
कवि विरापति भन अनुचल गुरुजन की र दिक न जन्म
कपट निकट गण बहन कन दान रमनि मन्तवन जन्म ५

१ कमल २ निरुत्तम ३ ४ हन पद्यवा ५ गधु पथुक ६ पुनु
७ छसि छसि ८ सुनि उठि ९ कि करत १० वसति नीर भरि धारे
झरवा

कवि अभिसारक हेतु नववीयना राधाक विकलताक वर्णन करैत छथि

१) राधा नय यौतक प्रथम चरणमे प्रवेश करलक अछि। कामदेवक
भारी दबाव (मिलनक आत्माना छैक) वसन्तक राति ओट होइत अछि
एसमे गुरुजन जागल छैक। प्रेम राखए चाहैत अछि। एहि सभ कारणे राधा
सकेन स्थिरमे कण्ठ बाट तरेन अछि। मुदा ओ जा कोना सयन। ओकर
एण निरन्तर व्याकुल छैक २) घटमे नगरक लोक देखतैक लकर डर
छैक डग डग पर भारी गोट छैक हस्तिको राधा की करण (पोंक मोन
एर डर)। ओर मगए चला जाइत अछि। ओ वर धीर छसि पदेन
अछि नेता नलमे बड़ा होइत। ३) भन्ना हमर पड मन्तव सोछि
कदाचित् धान नै उगि जाए एहि प्रकारक शुभचिन्ता ओ दार उरि ओट रा
सकास दिस तरेन अछि, ओकर गिन पुनः केवल पल पल पति नश
चरण छैक लखने रस नद्वन अछि। लखने दान ४) विरापति रहैत
छथि उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ उअ
कोनो साथे सग जाए गुरुजनक मुह लग कन दए-दए जाओ के न
पिचैत ओ ५

मन्तनी मन्तनी मन्तनी पद्यवा
रति मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी
मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी मन्तनी

विद्यार्थि कति समये गये मन्त्रिक वहाँ पहुँचें वृत्त ५ भय
दि २ बहारदैनिक नाम ने सम्भवत विद्यार्थिक जाँदें

[५३३]

कमल भयम जग अछय अनेक। सबलह से यह जाहि विवेक।।।।

मानिनि तोरित करह आँसुमार अवसर शब्दहु वहुन उपकार। २

मधु नहि देखत रहन की छाँति से मझति ने आँखन लखि। ३

अकुलित लए तुलना तुम देख जय जैव अनुताप भेन। ४

तब नहि मन्द मन्द तुम जात मरेऊ गल ह मन्दा ममान। ५

अनह विद्यार्थि दुति कह लाग दिन छोडि गिन राहिन लोक हान। ६

१. अपुजित।

दूती राधाके आँसुमारक हेतु परित्र अनेक भवि १) समझो वहु।
कमल आ भयम अनेक तबिसे २) कह ओ शिक मकर विवेक होवक
२ हे मानिनी तो अरु हो। सोँसैकर कह विवेक न भयमरार शब्द
उपकार वहुन वृत्तन ताड़ ३) जय जैव अनुताप भयम ४) वहु ज
महलहु पर मधु नहि देखत रहन की छाँति से मझति ने आँखन लखि
हो। (५) तोहर तुलना कान्ह अकुलितम देखत रहन मन्दा ममान तबि उह
तोहर है काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलहु। अधलाह लोकक सजाये
लौकी लोक अधलाह भए जाइत अछि १५) तो अधलाह तबि उह लोक
है काज (कृष्णक उपेक्षा) अधलाह भेलहु ६) विद्यार्थि कति उछि है
दूती, राधाके पुपताप वहुन ज अपित हँसैकर विवेक मानिनि दिन ताड़
ऊएल जाए सकैत अछि अपन मान ममान पुपताप हँस करह ग

शिर नहि जखन शिर नहि हो। शिर नहि हए वचन सन १६
शिर जनु जानह है सखाद। एक घर धिर रह जर उपजा २१
रान गुन सुन्दरि कणवह मान के परमहंस नहर लौकिक। ३

कहसल कह होत आनन गेह मुर सकी भइगलह कान सिनेह ४

अनरि मानल विषटल रहन सुनारक राय तँस भेल सहर ५

विद्यार्थि चलत हरि दंडी यवहर भाव के आनन कावे कणवह ६

१. की परससह। २ कउलाते ३ मुर आनन मन करतह।

दूती मानिनी राधाक गंजन करैत छथि--(१) ने ककरी यौवन स्थिर
श्रीक नहि ने दह आ न पिभक जस २) तबि समझहुके स्थिर तबि
पुझह। स्थिर रहनिहर एकमात्र वस्तु थिक पर उपकार। (३) हे सुन्दरी
सुन्दर नहर वहुन मन्त्रिक के पशता कान्ह १४) कौशल का कावक
तोरा घर भतलहु न तो सोयर उभय जाँदलहिस तोडि देखत ५
कान्हके आदरपूयक भतलहु किन्तु राधा भय भय भय सोकर अभिलषित
मिलन सुनरीक राय मन भाग शब्दक जलनय ने गुन वनपथसे सुनरीक
सेनपर राध धीरल नइत अछि न राध भा सुनरीक सग होइत छैक
किन्तु गुन जाँद गेह सुनरी कान्ह के देख नइत अछि ६) कान्ह तोहर
सदहर मान दंडी यवहर तोहर भा चलि गेल अछ करि वउहर
के मगन होत

चहउर भाग विन नहि लखन परह नइत न होत
गुन मिलत १५) तो अधलाह तोह सोँसैकर नहि
मगन १ २ ३ ४ ५
मगन उलोटे चल विनक न पर मगन सच उपकार
कान्ह हल सोन हल कान्ह जके लखि भनह वउली
विमाननो पकड़ वउर कान्ह वउल नहर तोर दूह न प्रताप
मगन लखि विन हिन आ लखि दूरम जान न कनि आ
दूरम विनक पनन मगन केकर गनि न नाने भा ४
अनह विद्यार्थि सुन राध सुनरीक नहर छथि के कर भन
राधा विनसेव रहत मान लखिन होत रहने

लिसे 2 लोटो सो 3 का लो कं 4 पुरुष कं लो 5
5 मछिन्दु

दूती मानवती राधाके गजन सैत छथि 1) एह जेकर मन करा
चहलकहु न ही अपन मधर लग जाह अलस नो टोहि धरा न लहु व
तो गोंहि मोडि (छिपि) सेलह। पिआ स्नहपूर्वक संगम करि गहलकहु व
तो पकरा गेलह तोरा मन पाएनी केनी लई 12 हे
माहिनी भावहु घुइके पिअ लग नइ ओक
पाए धरह सभ अपराध दूर भा गहतहु 1) मरपर रमयलहु रास
आवए लगलहु न ओकर छलपूर्वक छिआलहु जिक
सहर भंड भइलहु
किएक? पिआके कहु घयन पिक कइलह से वडेल सहर जोह दूजेन
किएक ने छति पदगहु 4) पिआके हउय जल) के मनुष्य राखलहु
थिक जाहिसे सौरस्य सोमनस्य (मन, मनस रास) से स्वके स्वजन लई
देवाक थिक विसनस्यरूप थिथ पृथक अकुनहके होइ जाह दैन नग न भो
पल्लयित होइत जाएत 1) पिआके कहु लई 2) म मीन रास
मूह, मान धे न न लई गइ देवाकर

कपल 1) लोके कलहि सको सको हउ भयल वृष 1) 2)
2) लोके कलहि सको सको हउ भयल वृष 1) 2)
जालकि, अनुचित एक बड मेव
निज मधुन लई लई गहन मन विचरल मन 1)
मिनी मन मधुन विचरल मन मधुन मधुन मन
गुह मधु छडि पलटि लई आओन देवाकर पद, लोके
सहज 1) मनन गलक विचरल लई कलस रस नई
जह लागीर बुझ लकर गनु ल मे लई जालहि सको 1)

1 वोलन 2 एद 3 पुनु 4 भेल 5 भेल

सखी सानिनी राधाके उपदेश दैन छति 1) भयर केनपी
(कैसीन) फूलक लग गेल न कोह गडलक किछु कहुना भा गेलक न
लोकस रहि के लोका लग भाव लो कोपवश ओकरा न अनरे उदाम
जालह से लीक लज लई 2) हे जालकी (राधा), ई बड अनुचित
भवहु। तो भयन मधुरसद जमसोन लई गेलहु 3) भयर पिआसल चधि
नै 4) ओ भयर नलै नलै ने कोन मधु कनेक मोठ आओर ओ
भरी स्वभावकी आते तो स्वमिमात छडि गुरि के नई अमाततहु
फेर भिक टोलहुम सन्दह 4) सुभज प्रदह, अछि ओ लई गुणवान
अछि। सभ कसुमक रस चुसैत अछि, ओ नागरी ओकर धतुरपन
संसेकता) बडैत अछि से ओकरा वडैत ओकर लई

भयर 1) भयर 2) ओ नग नलै नलै नलै नलै
लज लोके लोके लोके लोके लोके लोके
नलै नलै लोके लोके लोके लोके लोके
कुनै नलै लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके

लौ लोके लोके लोके लोके लोके लोके 4
नलै नलै लोके लोके लोके लोके लोके

कलक दूरी राधाके धन दैन लई 1) भयर लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके
लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके लोके

मन ऊह लोही हुनकी मन छलि से लाहें कदि के कनेर दिख्यन
करावहुं, हे घान नरनारि अछि ते भजन सनक साक्षी भजन मन हाइल
अछि विचोकर अलला कइने लोहे स्वयं मनमें जगत हैर ।

पुन चलि आयसि पुन चले जागे घाने इहमि किहु जेवन नरनारि ।
आस दइए कह हउ के लोहे भजन की काने इनर गह देस
सुन लोहे दूरे सरुप कह भोजि सडग सरी कपट इहमि भजन गह
लनिहकर कथा कहंसि का लागे लोहे भजन गह भजन गह
लनिहकर कथन मोय गह देस कहलें लोहे कहंसि कथन गह ५ ।
भजन विचोकरि गह देस गह भजन भजन भजन भजन ६ ।

१ हरि कह २ उत्तराव ३ लोहे दूरी ४ दसा ५ भजन

राधा दूरीपर मानदह के भजन गहन की १५० १० दसा
हरि भजन उह भ १० लोहे भजन उह किहु च १० लोहे उह भ १०
वनेत लोहे उह १० १० भजन दह क हउ किहु च १० भजन भजन
वाक्यमे भ १० किहु च लोहे दह १० १० दूरी भजन गह भजन गह
ते भजन की विचोकरि भजन भजन भजन भजन भजन भजन
कथन भजन भजन १४ लोहे भजन भजन भजन भजन भजन भजन
लोहे भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन
१० भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन
भजन भजन ६ विचोकरि भजन भजन भजन भजन भजन भजन
लनिहकरि भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन

कि कहल भ १० लोहे भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन

अधिक भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ४
भजन विचोकरि भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ५

भजन कए पछतवैत राधा सखीके कहैत छथि -- (१) हे सखी की
कहैतहु भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १२
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १३
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १४
अधिक भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १५
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १६
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १७
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १८
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १९
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन २०

४४

भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन २
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ३
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ४
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ५
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ६
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ७
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ८
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ९
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १०
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन ११
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १२
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १३
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १४
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १५
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १६
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १७
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १८
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन १९
भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन भजन २०

[illegible]

नवदि उम ह नरिहिन
सबान्द सुनिम मी न बयकन
ए कान्ह शं कान्ह लोकि ससा
पराक साधु है तन देन मिले किने
गुण गुनी ज सुतन सबान्द
ते लेट उपवन पराक सील

• २३। २ गीतः , करण

राधा रसस्य कृष्णके वसन्त छाये । जगत् पंथ रहित भक्ति
तथा इन्द्राक्ष होइत छैक । इन्द्राक्ष भन्ना ज गूणवान (चित्केशील न्यास
केर नर जोड़े बँत भक्ति । सभ छग इहँ व्यवहार मुनन (देखन
जाइत भक्ति हार धरि धरि दुईत भक्ति आ धरि धरि गँथाइत भक्ति । ३ है
जान्ती नी दुष्टिआर लोक छक । आब तामस विसरि इन्द्राक्ष समाधान
करइ । ४ नी पेमक अक्षकें धरबँत रहलह आ' से दिन-दिन बढ़ैत-बढ़ैत
विश्राम गछ भए गेल । (५) तोहर गुणपर मुग्ध भए इहो नहि सोचल जे
संस्तित भान्ह । विद्यार्थक गछ (गणक कटवक नहि थिय । ६ जे पंथ
पायापणत करबल से दुखल । जगत भूति समस नहि करब शिक ।
इसर दोह । उम समारंभ विद्या न भेल भक्ति जेना एक पाण दू देह । (७)
विद्या नहि उरैत रवि राधाउ दहास नहि करब पै । लोकक घातधर
विद्या न करबक शिक ।

सबसे अधिकतर आवाजें तब पास बिसरी न हलबें टप बिसबास।।।।।
 मरने के वक़्त के आवाजें कौन बिसल टप उठाएगा तब तब
 र उठाएगा तब तब सनसनीले तब तब तब तब तब तब
 तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब
 तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब
 तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब
 तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

1. 100, 2. 100, 3. 100, 4. 100, 5. 100, 6. 100, 7. 100

राधा कसल कृष्णके बड़सैत छथि । कान्हू हम सभ किछु छवि
 तोरा लग अएलहुं। विद्यास दए बिसरि नहि जाइ। (2) से स्थाय तेज छह
 आन केओ तोरा की कहतहु। से कर जहिसे उपवास (खिन्ना) जहि
 होअहु। (3) है कान्हू, तोहर वचन अनमोल होइत अछि। नीक वचनक
 हम जा जीव ता धरि पावन करैत रहब। 4 मद्र पुरुष भा रा दूज
 मूल्य समान होइत अछि, रत्नक मूल्य सभ नहि केवल जीवनी करैत
 अछि। (5) हम अबला छी। तोहर इटय असाध्य छै। महान भए सकल
 अपराध क्षमा करक यिक। (6) विद्यापति कहैत छथि तोरासँ पण्डित न
 भटजलक पैस दूए नहि पाबए

कुल्लस कुमल विद्यापति न भेल अपनक कान्हू भयल न गेल
 कान्हू धाराधर नहि ससिह। कबोने परि कबो उपवास रह
 ए खाये ए सखि पुरुष अमान। भुजङ्ग भयबोधे ॥ १ ॥
 दुख सजो सुनिअ उमल ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥
 भलइ विद्यापति एह रस ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

१ संसार २ नहि के ३ पितरि ४ भन

राखी संगममे विफल भौले राधासँ पुछैत छथि । नही
 तोहर केसक फूल निरमाल नहि भेलहु । कान्हूक कान्हू भयमे नहि
 लगलहु। (2) स्वर्णपथ (स्तन) पर नाचलन नहि भेलहु । ३ ॥ ४ ॥
 नहि मदल तोहर पीतेकें कीला ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥
 येन्ह नहि भेलहु? राधा उत्तर है ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥
 होइत अछि। कहयैत तँ अछि भुजङ्ग जीमी रासक कामुक) किन्तु
 रंगरसस नहि जनैत अछि। (4) दास तुम्हरी रही ने मदल जमन
 (सनकल) रहैत छथि, परन्तु प्रत्यञ्क भग्न भुजङ्ग की भी कृष्ण-रस

कान्हो पशव नहि देखाए सकलाह। (5) कोन पाप लागल ओ हुनको लग
 गेलहुं। पछतबितहि रहति नीति गेल। विद्यापति कहैत छथि, एकर रस
 अनतिहार थिकाह लखिमादेवीक पति शिवसिंह।

आदरि अनलह धएलह टारि। आन्धर न छुलह' बदन निहारि ।
 सुदिदेओ केस न बन्धलह कोए, सबे रस सुन्दरि धएलह गोए। ॥ २ ॥
 मय के पुछसि रहि भल नहि भेल। जतने आनल कान्हू तोरे दोस गेल
 गतिजन पय सह लगलह भोर। आन्धर हीर हरा एल तोर' ॥ ४ ॥
 साधेजन मोहगइने भेलहुँ राधा। गेल पाइअ जसो हो यड भाग ॥ ५ ॥

जहि २ छलह ३ भोर

भ जी रंगरसमे विफल भौले राधाकेँ भजन करैत छथि -- (1) तो
 कान्हूकेँ आदर एवक अनलह, किन्तु टारिकें (धारिक) काले रखलहुन
 हुनक मूह लकैत अपन आँचर नहि छलह। (2) सैतली केस (खोपा) केँ
 खोलि केर सम्भारिकें नहि बन्धलह। है सुन्दरी तौ सभ टा रस (कामोदक)
 छिपाए रखलह। (3) भाव की पुछैत छह। नीक नहि भेल। धनपूथक
 भलहुँ कान्हू तोहर टोछी चाले गेल। (4) (7)
 भनन भौले तोहर हीर हराए भौले ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥
 कृष्णकेँ सोंपए लागति लखन तोरा कोथ भए गेलहु। गेल वस्तु यड भाग
 केर भटैत छैक।

करौ प्रिय जत जत भन ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥
 धा धुनल नैन ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 निदुर धाँसु सजो न सोन सिके ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥
 सुप्रसन्न भेल भन एत गेल ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
 चाहे रत दूखल गेल विनय ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

परिलन धित नहि हित पस्यावा। धरखने जीव कलए नहि चाव।।६।।

हमें अवधारण हलत सकार बिह सि धि निव दण कर गर ।

भनइ विद्यापति मुन बरनारि धरन वा नहि मिलन सु रि ३ ।

१ धन २ पारहरि ३ पसारअं

उपेक्षिता राधा अपन व्यथा शक करीत उथि मन नाना
कान्हसं जनक अनुनय विनाय करीत की तबख अंगर यद्वार पर
पधातापे पवैत छी। (२) पैय धारण कर सत्वथ ब्रह्म मभा दार
मोने हमरा लेख काय भए गेल। (३) विषय विनस नहि लग्य भए न
मनोरथ पूरत ने मनक शका दूर गेल (प्रीति मोक्ष देव गन वि लोके
एकि गुनधुनमे रहि गेलहुँ)। (४) सुपुरुष बुझाएल, नै मोकय मया
मगरापी धन मोही मयाभाय भनही ने मनारर, छल हो मं वन भए गेल ।
विना गुन रोषक विचार नहि करीत मोक्ष ने निवृत्त वि न लोभ न मय
पूछ पसारी गेल अरि १६ । नै मोकय मया मोही छल विचार नहि
अवैत अछि। धरखने (कामनाक उदाह भौ लोभ कल नहि दूरी नहि
(७) हम एहि दुष्टद स्थितिक प्रतिकार सोधि लय १७ । नै लोभ पय
दण पार करय। (८) विद्यापति कहैत उथि हे मुनी नहि पय पय
रह, कान्हसं मिलन होएतहु

पुरुष वचन छल पायर री। नदय धन नहि नहि नहि

मगर भनइ दुहुका एक रीति रस लग्य मोही मिलन नहि

ओ परिलनहि मोल लोही परान पय मोही नहि नहि

मौन अवधि राख अनुनय नहि पय अधिक नहि

ओ वैनउने कल पय नहि नहि नहि नहि नहि

उदयते अर देव नहि नहि नहि नहि नहि

कि कइव माउ नहि नहि नहि नहि नहि

भनइ विद्यापति मुन बरनारि पेलव रस वस नहि मुनी ४

१ नहि हल २ नहि ३ नहि ४ नहि ५ नहि

राधा कृष्णक मन्त्राल सखीक सुन्दर उथि पतिने ओ एक
वचनक पाथरक रण ब्रह्म। इदयमे एल धारण मिल जे कहिओ वियोग
नहि होएत । (१) पान्नु भाव ब्रह्म नै लग्य रतिन पुरुष भा भनर
दूक रीति (चरित्र) एके अछि। नि शेष का रस लग्य नैत भा लीने
(मोक्ष) कए विधि नहि । ओ पतिने कल नहि हमर पाप शिक
पान्नु नहि नहि पतिने पतिने नहि रणन । (४) ओ योगन लय धरि
मनन्य राधन। नहि दिस अधिक ध्यान रहैतक। (५) वैनयाक वैन ओ
नहि रणन देव (मोक्ष) नहि नहि भा नहि नहि नहि । (६)
पान्नु नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि । (७)
भगिना कल पर वैन रहैतक। (७) हे सखी की नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

ओ नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

राधा कृष्ण के मन्त्राल देव नहि नहि नहि नहि नहि

नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि

राए है काल्ह काह कपट नहि करह कन्ह
 ने हमरासैं कोल अपराध भेल? (3) हम तें लोहर वाल भानसैं धरहु
 चुकन्हु नहि कछुलहु गडाह वालो नहि बरहु लोहर सभने हम
 ओहना रहबहु जेना चालक सभने कुमुदिसो ॥ विद्यापीने करत छथि
 लखिमदेवीक धनि सत्ता शिरोमोह सपनासयण पुनरीकर भवहार लेह
 कामदेवक नुन्य छथि

अइसओ जवद मोहै हारा जवद मोहै ३६३
 सुपुत्र वरुन कछु नहि दिखल न मोहै वरुन ३६४
 भलने हकी मोह हो से भलनी
 आल कुसुम सुपुत्र देव ३६५ भव देव ३६६
 देव देव मोहै मोहै ३६७ नव मोह ३६८
 भावक वरुन भलहुनि पदल ३६९ से नहि मोहक मोह ३७०

, धरए

सखी सखी ३७१ मोहै मोहै ३७२ मोहै मोहै ३७३
 मोहै मोहै मोहै ३७४ मोहै मोहै ३७५ मोहै मोहै ३७६
 मोहै मोहै मोहै ३७७ मोहै मोहै ३७८ मोहै मोहै ३७९
 मोहै मोहै मोहै ३८० मोहै मोहै ३८१ मोहै मोहै ३८२
 मोहै मोहै मोहै ३८३ मोहै मोहै ३८४ मोहै मोहै ३८५
 मोहै मोहै मोहै ३८६ मोहै मोहै ३८७ मोहै मोहै ३८८
 मोहै मोहै मोहै ३८९ मोहै मोहै ३९० मोहै मोहै ३९१
 मोहै मोहै मोहै ३९२ मोहै मोहै ३९३ मोहै मोहै ३९४
 मोहै मोहै मोहै ३९५ मोहै मोहै ३९६ मोहै मोहै ३९७
 मोहै मोहै मोहै ३९८ मोहै मोहै ३९९ मोहै मोहै ४००

से भव ने जे दसा बिदेस पुनि अ पयक न न नाक पदेस
 दिन निकटहि वस दोहो न न दूध अदम्य विरहदुख कछु गह्व २
 भव नो धरत सन ३६ कछु अब अकसेओ हमें तेजब घराने ३१
 धाते रीत पर विना नाय सोंसिओ अबसेओ दिन एक देत हुसिओ ४
 भव विद्यापी ३६ ३७ मोहै सिवसिह लखिमदेवी रमासे ५१

विद्यापी (कलान्तरित) राधा विद्यापी करत छथि -- (1) जे विदेश
 मे रहए से घर नीक, किएक तें ओकर उदेस (कुशलक्षेम) बढोहिओ समसं
 पुनि दोहो भवत की २, पर लखिम अछि, तैंओ पुछ्यो नहि करत
 अछि, के सँहि सँहि भौछ रहत विरहदेव ३१ हमर सधुरी यधन काम
 लहि देन अछि, नाच हम सबसँ घण न्यासि देव ४१ विद्यापीने
 अथारन देव अछि ॥ सुन्यो छथे एकर गहर विद्या रसिक आ ५
 निश्चय आन न कछु विद्यामे देव ६ एकर रस नैत छथे लखिमदेवीक
 धनि सिवसिह

मोहै मोहै ४०१ मोहै मोहै ४०२ मोहै मोहै ४०३
 मोहै मोहै मोहै ४०४ मोहै मोहै ४०५ मोहै मोहै ४०६
 मोहै मोहै मोहै ४०७ मोहै मोहै ४०८ मोहै मोहै ४०९
 मोहै मोहै मोहै ४१० मोहै मोहै ४११ मोहै मोहै ४१२
 मोहै मोहै मोहै ४१३ मोहै मोहै ४१४ मोहै मोहै ४१५
 मोहै मोहै मोहै ४१६ मोहै मोहै ४१७ मोहै मोहै ४१८
 मोहै मोहै मोहै ४१९ मोहै मोहै ४२० मोहै मोहै ४२१
 मोहै मोहै मोहै ४२२ मोहै मोहै ४२३ मोहै मोहै ४२४
 मोहै मोहै मोहै ४२५ मोहै मोहै ४२६ मोहै मोहै ४२७
 मोहै मोहै मोहै ४२८ मोहै मोहै ४२९ मोहै मोहै ४३०

विद्यापी राधा विद्यापी करत छथि -- (1) धन मोहै मोहै ३१
 ३२ मोहै मोहै ३३ मोहै मोहै ३४ मोहै मोहै ३५ मोहै मोहै ३६
 मोहै मोहै ३७ मोहै मोहै ३८ मोहै मोहै ३९ मोहै मोहै ४०

विधाना यत्नो राज विद्यादि दैव छाये श्री यदि यम एतेकृत हति व
की से की गए सकत भिडे १ ६ कज्ज लोहर डे डम नीर नई डर
सहसा पूर्वक पीति एता छलम कय ठीक नई २ काये कहिन माये
राधा पहुक सग पूर्वमे कएल केति विलासके मत श्री पाये जिकन हति
दिशाके निहारि रहति अछि। (5) अखिस नीर टचोन छैक ते नीर
सम्हारत अछि जे नार पहोन अछि ६) घान नाख जिनत ट ७) सैन
छथि सैनो कुमुदिनीके भानन्द दैव भिडे ८) ने ककरा ए विनत
(अनुरक्त) रहत अछि से भर्तार दूरत दूर राखे नावक जेति यो नर
भानेक ९) निशाचरि पहोन छथि स दशे छेओ दस गेन व १०) क जिनत
अवश्य करत अछि ११) रम ल विद्यापीठ पति १२) नई १३) राधा
भली छथि

१) १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)
२१) २२) २३) २४) २५) २६) २७) २८) २९) ३०)
३१) ३२) ३३) ३४) ३५) ३६) ३७) ३८) ३९) ४०)
४१) ४२) ४३) ४४) ४५) ४६) ४७) ४८) ४९) ५०)
५१) ५२) ५३) ५४) ५५) ५६) ५७) ५८) ५९) ६०)

अस-नाके रजनी १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

मछी कण्ठासे कहैत छथि १) श्री राज लोहर च २) ३) ४) ५)
वाण धामसे चकमक वसन्तक रोगी ६) ७) ८) ९) १०) ११) १२) १३) १४) १५)
समयमे ओकर उत्थापठत १६) १७) १८) १९) २०) २१) २२) २३) २४) २५)
लज्जत दसौ दिस औताइत २६) २७) २८) २९) ३०) ३१) ३२) ३३) ३४) ३५)
दशज लेल भगद रति ३६) ३७) ३८) ३९) ४०) ४१) ४२) ४३) ४४) ४५)
तोरा तामस नई करवाक ४६) ४७) ४८) ४९) ५०) ५१) ५२) ५३) ५४) ५५)

६) ७) ८) ९) १०) ११) १२) १३) १४) १५)
मिला चलत १६) १७) १८) १९) २०) २१) २२) २३) २४) २५)

२६) २७) २८) २९) ३०) ३१) ३२) ३३) ३४) ३५)
३६) ३७) ३८) ३९) ४०) ४१) ४२) ४३) ४४) ४५)
४६) ४७) ४८) ४९) ५०) ५१) ५२) ५३) ५४) ५५)
५६) ५७) ५८) ५९) ६०) ६१) ६२) ६३) ६४) ६५)
६६) ६७) ६८) ६९) ७०) ७१) ७२) ७३) ७४) ७५)
७६) ७७) ७८) ७९) ८०) ८१) ८२) ८३) ८४) ८५)
८६) ८७) ८८) ८९) ९०) ९१) ९२) ९३) ९४) ९५)
९६) ९७) ९८) ९९) १००)

गैर कहे च १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

दूरी चयनमे खुशी १) २) ३) ४) ५) ६) ७) ८) ९) १०)
११) १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)
२१) २२) २३) २४) २५) २६) २७) २८) २९) ३०)
३१) ३२) ३३) ३४) ३५) ३६) ३७) ३८) ३९) ४०)
४१) ४२) ४३) ४४) ४५) ४६) ४७) ४८) ४९) ५०)
५१) ५२) ५३) ५४) ५५) ५६) ५७) ५८) ५९) ६०)
६१) ६२) ६३) ६४) ६५) ६६) ६७) ६८) ६९) ७०)
७१) ७२) ७३) ७४) ७५) ७६) ७७) ७८) ७९) ८०)
८१) ८२) ८३) ८४) ८५) ८६) ८७) ८८) ८९) ९०)
९१) ९२) ९३) ९४) ९५) ९६) ९७) ९८) ९९) १००)

गोस्वामि ।

गेलहः। ४ विद्यापतिने लखन उषि सन्दर्भक कवन
नहि कहइ। सुपुरुषक वगन पाथर धाक १४४ छिक् ९ परम
सौभाग्यवती देवी लखिमाक पनि राजा शि. मिहदेव ३ रस जनेन उषि

धनतन घटत ह्य भाग्यनि नष्ट भवता नष्टे विमल नष्ट
 तने बड नगर ओ बांटे भाग्य भाग्य विमल नष्ट विमल सत्रो धर्म
 नष्ट हल माधव भक्त नुम कष्ट नष्ट वलन नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट
 सुपुरुष जालि कष्ट विमल नष्ट के पतिभारत कुल नष्ट नष्ट
 पुरुष निरुप विमल पतिभारत नष्ट पतिभारत नष्ट नष्ट नष्ट
 निरुप नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट
 नष्ट विमल नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट

५ जन रात्री

[illegible]

444

[illegible]

दूती कृष्णाके गजन करैत अछि । गधा औरए भयल धरम
अपन एतिर लज छाने । सकैतस्थलमे भइलि लोहर बल पर
विश्राम कए। (२) परन्तु ओ ने एतए ठाम पओलक ने ओलए। कामदेव
ओकरा बल भएल मालु ओहिमे जगु र देलाने । ई माधव हवा
बल रहल । तभील (हाथ भाएल) धलके भभारे ल्यामैत अछि । (४) लोहर
मुलक वणित बराबर कालक अग्रिध का क ओकरा अपन विर
लवाने जन गतेनस्थल भेलन । मुदा लोहर पैम लखे लख
पुछी न ने कय के अलखमे हज्ज उठ लेलहुन । न ह । ए पर
ओकरा लखके लखी हज्ज । सबी कामिनी लोकनि ओहिहाउ
गिअएत छलहुन । एतए मुदा भभल । विवाधाने रहैत छल
ह मुदा मुदा एतए न । एतए होइ होइ करक शिर ।

[illegible]

की

दूसरी कृष्णके इन्द्रज दैत अछि -- (१) हे कान्हू, तौ राधाक मनोरथ पुराबह। ओ लोहर गुण घर मुग्ध भए एतक दुसरे सदाँन अछि, २) मे घरसे बाहर पाएर देबहुमे धरारहत अछि, तकर साहस कहल अछि -- ३) एक तँ बाट पीछर लण्डे पर अछि ४) राते मने ओ अपन दुन स्तनकेँ घेल बनाए यमुना पार भेलि। (५) मेघ मुमलधर घरसे के रहल धरतीकेँ भरि देने छल। विद्यधर साप सब सहसह बुलित छल ६) एतने भयाओन रातिक परबान्हि नहि कालक भा प्राणपातहत अछि ७) सहस्र सहस्रक। (६) विद्यापति कहैत छथि दुख अने मन बुझैत राधा ने कबल भ्रमरक अनुरोध ८) दू दुखदल भा ९

राधाक कारन राधाकेँ

राम अभिसार कहल १०) दुख भए जालैत ११) के भा १२)

धिस वसंधर धरति १३) १४) १५) १६) १७) १८)

१९) २०) २१) २२) २३) २४) २५) २६) २७) २८)

२९) ३०) ३१) ३२) ३३) ३४) ३५) ३६) ३७) ३८)

३९) ४०) ४१) ४२) ४३) ४४) ४५) ४६) ४७) ४८)

४९) ५०) ५१) ५२) ५३) ५४) ५५) ५६) ५७) ५८)

५९) ६०) ६१) ६२) ६३) ६४) ६५) ६६) ६७) ६८)

६९) ७०) ७१) ७२) ७३) ७४) ७५) ७६) ७७) ७८)

७९) ८०) ८१) ८२) ८३) ८४) ८५) ८६) ८७) ८८)

१) से सुवदनि करे,

दूसरी कृष्णके राधाक सोभितक कथा सुनबैत सोरहे १) हे कान्हू राधाकेँ आनि देखिअह। आब एकदसँ समाधान (समझौत) करह। हे लोहर अभिसारमे जे जे कालक से भएल कोनो काहेमेरी लोहर काँ सकैत अछि।

२) मेघ वरमे ३) धरती चलेस भरल रति महाभयानक। राधा तौओ लोहर गुणक स्मरण कए कए चलि पडलि। आकर साहसक सन्त नहि ४) देवानमे लिखल साप देखि जकर मन वस्त भए जाइत छैक से अपना हाथे सापक मणि केँ झोले प्रसन्न सापकेँ लोहर लग आवि गेलि ५) ओ अपन पाँचे केँ छाडि विद्यधर लोहरकेँ लण्डे अपन परम पतिविन्द कुनक कलककेँ उपेखि लोहर प्रेममदमे मज्जलि सोहि पथ सकल सखक कोनो परबान्हि नहि कालक ६) ई रस सरस गीत रसिक लोकनिक मन्त्रजन्मकरी सुखी राधाधनि राधनि ७) कल भा प्रेम ८) दुख राधनि ९) एक से मित्रि भा सा १०) कल ११) कल १२) कल १३) कल १४) कल १५) कल १६) कल १७) कल १८) कल १९) कल २०) कल २१) कल २२) कल २३) कल २४) कल २५) कल २६) कल २७) कल २८) कल २९) कल ३०) कल ३१) कल ३२) कल ३३) कल ३४) कल ३५) कल ३६) कल ३७) कल ३८) कल ३९) कल ४०) कल ४१) कल ४२) कल ४३) कल ४४) कल ४५) कल ४६) कल ४७) कल ४८) कल ४९) कल ५०) कल ५१) कल ५२) कल ५३) कल ५४) कल ५५) कल ५६) कल ५७) कल ५८) कल ५९) कल ६०) कल ६१) कल ६२) कल ६३) कल ६४) कल ६५) कल ६६) कल ६७) कल ६८) कल ६९) कल ७०) कल ७१) कल ७२) कल ७३) कल ७४) कल ७५) कल ७६) कल ७७) कल ७८) कल ७९) कल ८०) कल ८१) कल ८२) कल ८३) कल ८४) कल ८५) कल ८६) कल ८७) कल ८८) कल ८९) कल ९०) कल ९१) कल ९२) कल ९३) कल ९४) कल ९५) कल ९६) कल ९७) कल ९८) कल ९९) कल १००)

राधाक नगत केँ नहि कल

१) २) ३) ४) ५) ६) ७) ८) ९) १०)

११) १२) १३) १४) १५) १६) १७) १८) १९) २०)

२१) २२) २३) २४) २५) २६) २७) २८) २९) ३०)

३१) ३२) ३३) ३४) ३५) ३६) ३७) ३८) ३९) ४०)

४१) ४२) ४३) ४४) ४५) ४६) ४७) ४८) ४९) ५०)

५१) ५२) ५३) ५४) ५५) ५६) ५७) ५८) ५९) ६०)

६१) ६२) ६३) ६४) ६५) ६६) ६७) ६८) ६९) ७०)

७१) ७२) ७३) ७४) ७५) ७६) ७७) ७८) ७९) ८०)

८१) ८२) ८३) ८४) ८५) ८६) ८७) ८८) ८९) ९०)

१) दूरे हरि लोहे विजय भेबाटे २) दूर चर्चा के।

राधा कृष्ण केँ मनबैत छथि -- (१) हे माधव, ससारमे ई वल २) नहि ली। सोरहे ३) न न भए यथत यथल भा सोरहे ४) भएन छैक ५) वलन सोरहे समाधित लीन अछि ६) एत तारी भए भादवक एहि रतिमे लुझल जाति ७) रस भावहु नहि भाग से जे तौ उनम लाग

आ गुणक अगर छह, ती हमर सभ मनोरथ पुरा बर एव जन्मक
पुण्यक परिणाम स्वरूप ती भेटलह तँ, परन्तु एतना नहि कएलह जे की
बाल, ततब नहि, हमरा देखि भुइ पुमार लेबह हमर मन ~~सुख~~ भए
गेल। ती जे आजक कित करघामे एना उदामेन होबह न लखि आये जे
युग बढ़लि गेल बरि। कवि विद्यापति कहैत छथे ततवा मुनि गेटे कएल
बिहुलिके राधाक दिस तकलनि आ स्वास दलने मथन हटयक पीर भाए
देखओलनि। तखनहि राधाक देह पुलक सँ भारे गेल

4 5

भक्तप्रिये गीत भक्तप्रिये गीत। सत्यं ज्ञानं च तत्त्वम् । सत्यं
आयुः वरुणं तद्विदुः शिवं । सत्यं भक्तप्रिये गीत
कान्धर्वाः शिवं तद्विदुः शिवं । सत्यं भक्तप्रिये गीत
सत्यं भक्तप्रिये गीत । सत्यं भक्तप्रिये गीत । सत्यं
सत्यं भक्तप्रिये गीत । सत्यं भक्तप्रिये गीत । सत्यं
ई रसतन्त्रं यथापि किञ्चिद् किञ्चिद् आयुः भक्तप्रिये गीत ।

१. समरि न गोल २. सकाचित

[illegible]

सततम् च ज्ञानं (२५-२६) केशां केशां वाङ्मयं सर्वं अस्ति तद्भिः भाष्यकं
ब्रह्मन्ति अभिलष्य अयं च विराटि

and

[illegible][illegible][illegible]

1. सयुत। 2. दुअओ केलि समे समे केली 3. दुनभा

कवि नायक-नायिकाक सम्मोगक वर्णन करैत छथि। रसिकक फलस्वरूप नायक नायिका दुनूक लज्जाल केरू केलि गेल दुनू बूझि गेल जे के कतेक बलगर ॥ (2) दुनूक अधर पर दन्तहासक घन्ट लागल। दुनूक मदन दू गुन जागि उठल। (3) दुनू दुनूक अधरहास कएल। दुनू दुनूक कंठमे घोड़े दए अलिङ्गन मे आबद्ध भेल। (4) दुनूक केलि (रतिहीडा) धराधरि रहल। दुनू संगमक आनन्दमे रति बिताओल। (5) ओरमे दुनू धाकि धाकि सेज धएल। कपडो समहारबाक सुधि नहि रहल। दुनूक पिआस लगलैक तँ उठि उठि पानि पीसल। (6) विद्यापति कहैत छथि के जीवन के सरल मे विप्लव विपश्यन नहि रहल। किएक तँ कामदेव दुनूक जयपत्र लिखि दैत।

सागर पुरुष मधु घर पाहुन रहल।
जहाँ तिरिफन राखल। सओलनिक केसु पौन।
ते पिआ दए गेल केसु पँसुरि।
X X X X X X
नथ तसि' छन्दे अनुरागक आकुर धाम।
काहे कार मखीजन लीधत परमे।
व्याध कुसुमसर सरे' पिघटाईमे भाज'।
गतन मेह संसारक सीसा उपगित कइसनि घोर।
घोरि भावे हमे भरमलि अछलहुँ।
कान्ह रूप सिरि सिधसिह।

नखमुति। 2. ससिनच। 3. दीन्ह। 4. रनो 5. रन

नायिका सखी अपन संगमक वर्णन भूतवैत भति। एक-दुआन वर्णक पुरुष (स्वप्नमे) हमरा घर पाहुन भए आएल। ओकरा संग

रहल कौन राति दीने भेल। ओ पुरुष हमर काँच श्रीफल (संभित) स्तन। मे नखलत कालक मल पलायन फूलक पेंखुरी अंकित भए गेल। ओ पलायन फूल उपहार दए चलि गेल। ओकरा हम जोगाएकें राखि लए सकलहुँ। ओ पेंखुरी की छल, द्वितीयक चन्द्रमाक छविरूपमे एतक मदुर छल। नकरा हम अधर तर झुपि जोगाए रखलहुँ एहि नल मे साखं नभक कनकाओल अखि लगलै ओ प्रेमाङ्कुर म्लान नहि होअ। (4) कामदेव रूपी व्याधक तीर हमर लाजरूपी हरिणकें भगाए दैलक। (5) नखलत रोदनक सवोरच सुख दिक।

(6) चारै सान्त्वक भाव (स्वद, कम्प, समाध आ स्वरभग) जागल भा नारद हम भगवान गेलहुँ (यथार्थ नहि बूझि सकलहुँ) ओहि श्यामवर्ण रूपकें जएबाक काल किछ कहिओ नहि भेल। यथार्थमे कृष्णक रूप स्वप्नमे भेल। ओह आएल रहथि, एकर रचायेना शिवाइ काये ओह।

नखलत रोदनक सवोरच सुख दिक।
चारै सान्त्वक भाव (स्वद, कम्प, समाध आ स्वरभग) जागल भा
नारद हम भगवान गेलहुँ (यथार्थ नहि बूझि सकलहुँ) ओहि श्यामवर्ण
रूपकें जएबाक काल किछ कहिओ नहि भेल। यथार्थमे कृष्णक रूप
स्वप्नमे भेल। ओह आएल रहथि, एकर रचायेना शिवाइ काये ओह।

कल ११ न रन १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

कवि जसन्तक भति। उरि छथि ११ सनयक जसन्तक सनयक
दोहरी भति। नखलत रोदनक सवोरच सुख दिक।
चारै सान्त्वक भाव (स्वद, कम्प, समाध आ स्वरभग) जागल भा
नारद हम भगवान गेलहुँ (यथार्थ नहि बूझि सकलहुँ) ओहि श्यामवर्ण
रूपकें जएबाक काल किछ कहिओ नहि भेल। यथार्थमे कृष्णक रूप
स्वप्नमे भेल। ओह आएल रहथि, एकर रचायेना शिवाइ काये ओह।

आलम्बित अङ्गिः 14 प्रिलामिनी लोकांते कोनूकपूर्वक कककलि करैत
छथि। कृष्ण नागरी (गोपी) सभसं शिखे शिखे रमण करैत छथि

[463]

अभिजित कोमल सुन्दर आनं वनन सगर यनं धरिणन गन 11
मलय पवन झोलए यह भूति, अपने कुसुम रस अपनेदे भूति 12
देखि देखि साधव मन उलसन्त। बिरेन्द्रावन भन देकन वसन्त 3
कोकिल बोलए साह्य धार भटने जगल जग लव अधिकार 4
पाहुक मधुकर कर मधुपान अमि भूमि कोण मरिचिक मय 5
टिहि टिहि अमि-अमि विविध निहारि राम र-वाम मुन्दर मय 6
मनइ विद्यापति एह रस गाय। राधा साधव अमिनए भाव 17

1 सवाई बने 2 अहार। 3 से भूमि। 4 कुल 5।

कवि वसन्तः कुलुषाणां वरैत छथि 1 वन मे गाछ सभसो
नय, कोमल आ' सुन्दर घात भेल। मान सनसन एत नय सव कय
पाहरलक। (2-3) नाना भङ्गीमे मलय पवन वरैत 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
(4) कोकिल आभक 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
आधिकार जमआलोने 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
(अल भए) धूमि धूमि मानिनी लोकनिक मनमे जो 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
, करारोपण हेतु) योजि रहल अछि, (6) कृष्ण 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
निहारि प्रमदित भए राम रचयैत छथि। (7) राधा 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
भाषवाला 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

बना लहर मण्डप टीड निरभर मनोरंजनी पवन
धनुस लाल ऐषन भले भले 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
गायन साउ है अदालत 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

मधुकर जल मलय गाछ दूजवर कोकिल मन्त उदव 4
वन मकरन्द पत्रिक तीर विष्णु चरितानी धीर समीर 5
कलकलानुते नल नल लव विद्यरल वेलिक फूल 161
केस कुसुम कर सीदुरदान। जौतुक पाओल मानिनि मान 7 1
कलिकुल कर 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
अमिनए 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

को 1 2 भीने 3 पहीरल पानव 4 देखर भाड़ है मनचि 5 6
5 पुष्पा वसन्त

कवि वसन्तः दूता बनाए विवाहक वर्णन करैत छथि -- (1)
लतासँ छरल गाछ (कुम्भ) मण्डप देल। निमल घान लकर भीतकें डोरल
12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
दाइ भाड़ लो 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
विवाह 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
माने 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
मा 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
व 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
दू 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
विवाह 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
दू 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

मलय पवन का वन र विनय कइ
रामर क द 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
वा 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
म 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

तस्तु तस्मिन् सदा रक्षितं धर्मं
कवि विद्यापति भक्त। मानिनि जीवन जान ६१।
नृप रुद्रसिंह बर। मेदिनी कल्पतरु

1 करधु। 2 खेपवि

वधि वसन्तक धीरु करैत छवि सनयपवन धरेत भा
वसन्तक दिनद करैत १ भक्त गुनत करैत भवत सौख्य पस
भक्ति। अनुपति कल्याण देव सनय कल्याण करैत २
भक्त। भक्त सनय करैत सनय हिते मिले काले दिनद करैत ३
(5) युधक सनय युधती सनय सनय रग रमस करैत ४
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

भक्ति वसन्तक धीरु करैत छवि सनयपवन धरेत भा
वसन्तक दिनद करैत १ भक्त गुनत करैत भवत सौख्य पस
भक्ति। अनुपति कल्याण देव सनय कल्याण करैत २
भक्त। भक्त सनय करैत सनय हिते मिले काले दिनद करैत ३
(5) युधक सनय युधती सनय सनय रग रमस करैत ४
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

भक्त वसन्तक धीरु करैत छवि सनयपवन धरेत भा

वधि वसन्तक धीरु करैत छवि सनयपवन धरेत भा
वसन्तक दिनद करैत १ भक्त गुनत करैत भवत सौख्य पस
भक्ति। अनुपति कल्याण देव सनय कल्याण करैत २
भक्त। भक्त सनय करैत सनय हिते मिले काले दिनद करैत ३
(5) युधक सनय युधती सनय सनय रग रमस करैत ४
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

कैतकी कैतकी फलक पुरा ज पसरत भवि सनय सनय शिव
(6) कवि कण्ठहार विद्यापति करैत छवि सनय सनय गीतक रस वृद्धनिहार
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

परदेस गमन नृ करैत सनय पवनधर धरेत भा
कवि कण्ठहार विद्यापति करैत छवि सनय सनय गीतक रस वृद्धनिहार
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

नायिका पिआस प्रायना करैत छवि -- (1) है कन्त, परदेस भक्त
कवि कण्ठहार विद्यापति करैत छवि सनय सनय गीतक रस वृद्धनिहार
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

कवि कण्ठहार विद्यापति करैत छवि सनय सनय गीतक रस वृद्धनिहार
विद्यापति करैत ५ धि धिधरक कल्पतरु सर। सनय रुद्रसिंह भक्त
जीवन (धरि) जनैत छवि।

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि--(1) कन्ह हमरा खरि उचै गेल, विधाता तँ भारी दुख देलनि। कमलक जल पानेक संघन सखा आगिसन भए गेल। (2) आँखि दीड़न दीड़न (घाट तँकल तँकल) ओकरल गेल। कन्ह नहि आएल। हाए, आसमे ओझराएल प्राण तँक रहल भछि। (3) मन होइछ उड़िकें तए चलि जइ जनए कल्ल भेरा आ ओकरा स्पर्श मणि सरस हाथ छाती सँ नगणी। (4) सपनहुँमे एक सौ सम भेल आ' रंग रमस आरम्भ कएल किन्तु विधाता नरु मे बाध कएलक ओही कालमे निद्रा हरे लेलक। (5) रन्द किरण ते शीतल कल सेहो तीव्र भए गेल। विभाक दिना सखि तँक रहल भए किन्तु प्राण हरबा धर अछि। (6) विधापति कहैत अथै इ शब्द धरै राखल। शेष तोहर मनोरथ पुरतह, यत्नभ अछि जएयुन

मगिरल पठए मठल सरधारा। एकन देह व...
अपनेहुँ तिर एक तनिक सखी रहगेल। नीन्द विधाता...
शान्त कान सौगी कहैहाइ भयल। तँक रहल भए भयल...
एखा छेति कल्ल ओरि सेवा। निरस ज...
अनहुँ विधापति नरु मे बाध कएल किन्तु प्राण हरबा धर अछि।

साथे २ राग मीरासिंह

राधा भसर कहैत छथि...
अ' इ' अछि। एकसर हमर देह सँ कल्ल भएल। र' सखिहुँमे पल्ल
अरि हुनकासँ मिलन होइछ। नगीत अछि निद्रा जल हुँके र' निद्रा
उलि गेल। (3) भसर कृष्णक काल लागि हमर सखि जल गेल। रो
हमर देख निरन्तर देखत रहैत छह। ए' पनव जइ र' नो हुनका हमर
सेवा सिद्धेति करबह जे कोनो तीय जाण हमरा न्याज कएले देखि।
विधापति कहैत छथि। लखिमा देविक पति के'समर हुँ र' तँक रहल अछि।

नामि दसा देखि गेलह जइ...
हृदि नरस भयलस अपकार हमर यो नदोषल सखि योनेवार २
अह कन्ह नहि आएल। हाए, आसमे ओझराएल प्राण तँक रहल भछि।
वह मलयपति इर मकरन्द। उगओ सहस दीस दारुन चन्द 14
करबो नमलवन अलि भयल। आवे कि मन मन्द होए' हमरा। 5।
अनहुँ विधापति निरस क' र' गि सखी भेल कह जीवक अन्त। 6।

1. जिवे। 2. आवे सुखे कन्वह। 3. होएत

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कन्ह हमरा विरह
नओम दसा (जडता) मे छाडि गेलाह। आव हम दसम दशा (मरणवस्था)
मे पहुँचि गेलहुँ। (2) ओ अनुचित काजक अपजस अरजि गेलाह हम
बाध यत्नभी यन्त्रिआक गहल। (3) आव कृष्ण विदेशमे सुख भागथु। मल
किन्तु न' न्याजलिकर सन्देस पठए देखु। (4) मलयपदल शैव
मकरन्द अरि' सँ जइल। स' इरओ। हजार-हजार दारुण चन्द उगओ
५. भयल र' न' न्याजलिकर अलि करओ। ताहिसें आव हमरा कान लाग
अ' र' सखिहुँमे पल्ल अरि हुनकासँ मिलन होइछ। नगीत अछि निद्रा जल हुँके र' निद्रा
उलि गेल। (3) भसर कृष्णक काल लागि हमर सखि जल गेल। रो
हमर देख निरन्तर देखत रहैत छह। ए' पनव जइ र' नो हुनका हमर
सेवा सिद्धेति करबह जे कोनो तीय जाण हमरा न्याज कएले देखि।
विधापति कहैत छथि। लखिमा देविक पति के'समर हुँ र' तँक रहल अछि।

क' र' सखिहुँमे पल्ल अरि हुनकासँ मिलन होइछ। नगीत अछि निद्रा जल हुँके र' निद्रा
उलि गेल। (3) भसर कृष्णक काल लागि हमर सखि जल गेल। रो
हमर देख निरन्तर देखत रहैत छह। ए' पनव जइ र' नो हुनका हमर
सेवा सिद्धेति करबह जे कोनो तीय जाण हमरा न्याज कएले देखि।
विधापति कहैत छथि। लखिमा देविक पति के'समर हुँ र' तँक रहल अछि।
साथे २ राग मीरासिंह

भनइ विद्यापति सुनु बरजोयति चिन्ता करि ॥ १ ॥

अधिर मिलत हरि रहु धइरज धरि सुभ दिन पलटत भग ॥ २ ॥

1. ओछाओन। 2. भमि। 3. रमि। 4. सिनेह। 5. बेआधिक। 6. मर।
चिन्ता करि त्याग।

विरहिणी राधा विनाय करैत छथि -- (1) घानसं गऊसक रतिमे कुन्दक फूल भरि भरि सैज रघल। छन भरि वाणित पहुक सम पडलहु भग ताहि लेल मर के कह। बरख दिन सन्नाय भोगैत रहलहु। (2) हाए हाए, कोना फेर घुरिके मथुरा जाएब? कोना फेर कान्ह भेटत? चिन्तारूपो नाल बाझलि हरिनीक समान ई विरहिणी नारि (हम) कोन उपाए करत? (3) भभरा एकमरे घुमैत रहैत अछि। बहुता फूलक सम रमण करैत रहैत अछि, कहाँ कतहु केओ आँकरा रोवैत छैक। धरन्तु हम जे बहुयत्नम कान्ह नेह गढाओल से हमर अपराध भए गेल। दिन दिन हमर कटैत गेल कामदेव दारुण भए गेलाह। आओर कतक बरख भासल। खेपब? प्राण अब तब करैत अछि। (5) विद्यापति कहैत छथि, हे सुन्दरी सुनह। चिन्ता तेआगह। शीघ्र कान्ह भेटयुनह। धैर्य धरह, सुभ दिनम भाग्य पलटलहु।

[474]

साहर भञ्जरी भभर गुञ्जार कोकिल पञ्चम ॥ १ ॥

दखिन पवन विरह वेदन निहुर का ॥ २ ॥

साजनि रघु सेह उपाए

मधुमास जत्री माधव आचर विरह कान्ह ॥ ३ ॥

अछल अडगज भेल अनङ्ग धनुषे धारल ॥ ४ ॥

नाह निरदय तेजि पड़ाएल पडल ॥ ५ ॥

एक बेरि हरे मसम कणलाहे दुसह सोचल ॥ ६ ॥

पुन गोपकुल जन्म लेलह विरहि बधन लागि ॥ ७ ॥

जत्री तोहि पावत्री अरे विधाता बान्हि मेलज अनधूप

जाहेरि नाह विचंचल नहि ताके कक ॥ १ ॥

ई रूप हमर बेरी भए गेल दैअ बहु दिठि साल ॥ २ ॥

अलख ई रूप हित पर होए ॥ हमर ई मेल काल ॥ ३ ॥

दिने दिने दुख सहिन पावत्री पीड़ए ॥ अधिक मार ॥ ४ ॥

X X X X X ॥ ५ ॥

1. अनङ्गज। 2. धनुरियाडल। 3. ओडल। 4. काँ। 5. करए। 6. पड़ए।
नेपा सं

राधा सखीसँ विरहव्यथा सुनबैत छथि -- (1) सहकारक (आमक मञ्जर पर भभर गुञ्जार करैछ। कोकिल पञ्चम स्वरमे कुन्दकेछ। मलयानिलब बहैछ। विरहवेदना बढल जाइछ। एहनहुमे निहुर पिआ नहि अबैत अछि। (2) हे सखी, एहन उपाए करह जहिसे एहि घसन्तमे कान्ह आवए। ओ आओन सखनहि हमरा एके विरहवेदनासे बाण भेटत। (3) छल तँ ई काम अगज (पयुम्नक पुत्र अनेरुद) किन्तु भए गेल अनग (शिवक कोप)। प्रथमे धनुष लेलक। निहुर कन्त तँ छाडिके पडार गेल। अकर मम बाण हमरे माथ पर बजरए लागल अछि। (सखीकेँ एतबा कहि राधा कामदेवकेँ कोसए लागलि। (4) एक बेर तीरा शिव अपन आँखिक दुसह आगिमे मसम कण देलथुन तँ तौ विरहि सभक पथ करक लेल फेर गोपकुलमे (कृष्णक पाँच अनेरुद रूपमे) जन्म लेलह। (पुन राधा विधाताकेँ कोसैत छथि) -- (5) हे विधाता, हम जे तीरा पाबैतहु तँ हाथ पाएर बान्हि अनधूपमे धकेलि दितिअहु। जकर कन्त बुझनुक रसिक नहि हो तकरा तौ रूप किएक दैत छइक? ई रूप हमर बेरी भए गेल। ई रूप तँ बहुतोक जोगिये गइल छैक। अलख हेतु अलहि रूप हितपर होइक। हमरा लेल तँ ई काल भए गेल। (7) दिन-दिन ततेक वेदना होइत अछि जे सहि नहि सकैत छी। कामदेव बहुत सताए रहल छथि।

पथन्दि उपलब्ध नह अनुगो मन ज्ञान प्राप्त करि ज नरु सार
भावे दिल दिन मन पेम गुणो अनुगुन कसुन मुने के नरु
होके कहोय सकि हकी चितन विमल न हकी नरु नरु
रभस समय पिअ जत कह गेला अरु सो अध नरु नरु नरु
अनरु विषयति एहु रस जाले गेवा सह नरु नरु नरु

राधा सखीके विरहव्याथा सुगयेत छवि १) पंडित नखन नख
अनराग (पूर्यराग) उपजन तखन मन होअ जे भयन प्रणी सन्त पर
निहुंछे दी। (2) आब जखन दिन दिन पेम पुरान होइत गेल नखन रस
बदलि गेल। अंगि लेल गेल (वासि) फूलक नरु नरु नरु
नाइत अछि। (3) हे सखी, कान्हके हजर दिन नी कलहल जे सो पुरान
प्रीति बिसरि नहि देखि। (4) कामकासेक कालमे ओ अतक जे पुरान गेल
तकर आधक आध नहि रहल। विषयति कहैत छायै ११ रसक जे न
विकाक लखिगादेवीक पति विवसिह

कओ सुखे सुख केओ दुख जाय। अपन अपन धिक जित जिय नरु
कि करिअ अधन नरु नरु नरु नरु नरु नरु
माजरी पायि भगर मधु पीय। से दाख पोयक नरु नरु नरु
कनन कनन मरौरय पूर। विवसिह विवह वआए नरु नरु
विषयति मत पक रस जात। विवसिह विवसिह विवसिह

सार। 2 तौरि।

विरहिणी राधा शिलाव कहैत छवि १) केओ दुखस सखी नरु
हैं केओ दुख हैं जयैत ओछे। सभक अपन नरु नरु नरु नरु
विरहिणी अथला नि कन सखी नरु नरु नरु नरु
एकहि नगरमे वहु तहक याहार देखैत छी १२ अरु भग सखी

पांवेवे मधुर मकरन्द पान क रहल भांछे नपल प्रेयसीय राग रसग
का रहल भांछे भा ओम्हर से देखि देखि पथिक (विरही जत) केर
पण। सुखान रहल देख १४ अरु कनन (कामिनी) काननक लालसा
पुनवत जाय ३ ओम्हर विरहिणी व्याकुल भेलि आछि रहल छायै १५
देखपति कहैत छवि हे रस जने ३ छवि रूपितेदेवीक पति विवसिह

जे लस नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
से अरु जे पुरान नरु नरु नरु नरु नरु नरु
विषय ११ कहव पिक मोर एही बानी। रभसक अघसर दुरजन जानै १३।
गहैदे सुखेक कि कहव आने। अनमय तन्त अल नरु नरु नरु
हट १२ नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

छवि २ अरु ३ नरु नरु

विषय ११ राधा शिलाव कहैत दूत पण रस नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु
नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

१०१ नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु नरु

चान्द ऐसन छल सीतल सेहओ दहए जनि आगि। 3 :

भनमय मन मय सयनहु से सुनि रिज मोर माल

वानेओ हमर बिदेस बस ते जउवन ओर काल 4

1. सेहे 2. लज्जा 3. तन्हुहु 4. पुणरुत्पत्ति 5. बहाना

राधा भमरके दूत बनाए पिआके समाद पठयेल छथि । 1. है
भमरयार, कान्हके कहबह ते एक धरि धुरिके यदि देण भवत जायके
अपन प्रियाके देखए आ तखन बर केर बिदेस जनि जाय । 2. है
अयस्या छीनि गेल। देहमे यौवन बस लेलक बिदेस छीनि चले जायत
पुनः हमर आशा नहि पूरत । 3. छित पन झरै झरैत देह बिजाय
गेल। कमलक पल पर सुतेत छी यान ते पल गीत बन भए नहि
जयै जरबैत अछि। (4) कामदेव सभ सभ भएत अछि। 1. यद्यपि वही
रहेछ, से सुनेत छी त हमर हृदयमे टीस छी । 2. छीने दहए दिआ गेल
रहैत अछि, ते यौवन बलाए भए गेल

भा. 1. 2. 3. 4. 5.

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

पञ्चम निबन्ध गीत 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

अशि है गगन जगद्वर सत्य 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

नाम जेउते छीम लीन भए गइल, कह गेल

आपन जन्म हो गेल ते दूर जेह 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

आबि अने वन छीनि छित, भएत ते गेल मय 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

विधिगति नहि 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

मुकवि भनवि कण्ठहार। 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

1. कलकि केर पात, 2. सबहि लिखवि 3. छेद 4. लज्जा 5. सुनि 6.
परहार।

विरहिणी राधा सखीसँ सन्देश पहुँचएबाक अनुरोध करैत छथि

(1) है सखी, केतकीक पात आनह. (2) कस्तूरी घोरि मोसि
बनावह आ नह सँ कलम। (3) सभसँ पहिने हमर नाम लिखबह माझ
ठाम हमर बिनती लिखह। (4) है सखी, पहि तरहें हाथक लिखल है पत्र
हाथमे दैत पहुँक ई संवाद सूचित करह --- (5) है पिआ, तोहर नाम लेल
हमर कण्ठभर गद्गद (गहरित) भए जाइत अछि। (6) अलिगनमे
व्यवधान नहि होअ तँ हार हटाए लेल छलहु। (7) अब यन, पथत आ
नदीक अन्तराल भए गेल। है बन्धु, तँ आयहुँ हमर स्मरण नहि करैत
छह। (8) विधातक विधानक कोनो प्रतिकार नहि अछि तोहर विरहक
नीहण बाण हमर हृदय सालैत अछि। (9) कवि कण्ठहार कहैत छथि
काम प्रह 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

48

राधा है ओर जल वो बर का साह

हमर माथ धिक बिसरे न हलक गए ताजे अघसर पाह

हमिसाओ ऐम हलक हमे लाल लीन 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

सलक छायी तर हमे बिसलहैं जैसन 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

को हमे नहि गगारि सयह नह दोसरे सहज नहिहीनी

भएत देह 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

अपनेन योज, नहि भोक्त धरि निबह धरए अपन बंधन

अपनेन 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

अपनेन 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

राधा 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

पुणः 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

राधा सखी द्वारा समाद पठयेल छथि । 1. है सखी हमर सखी
कान्हके कहिअह, हमर सपन, हमर ई का न पानह 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15.

1. 2.

भेटलापर काव्हके कहव चिसरि नहि जइइइ ॥ कहइहुन न हुनअसे
हम रुखात् (हडबडाए) प्रेम कर बैसलहुं 'इतेही सभक उपदेश' जिये
नहि सुनय। लाइक गाछक छहरिमे सुतलहुं, तखन न हुने ह्यवक वाही
से भेल। (3) हम एक तैं सभसैं गमारि, नारी अ तारिहार सभसैं
बुद्धिहीन दोष हमर अपने थिक। विधाताके की कल्पिते, हमर मर
तीन्हि नहि पाओल। (4) अकुलीन (गोपबशी) ज वरान देन तकर विवेक
(पालन) श्री भक्त शरी लोह कल तकर अने भो भो ॥ १ ॥ वनि शान्त
रहत पूरेक बात प्रेम प्रेसारे पावेला चन कयल अने सज्जन ॥ २ ॥
कुसिआर पहिने (जडि दिस) रसगर आ आगां ॥ ३ ॥ तिम ॥ ५ ॥ ॥
विद्यापति कहैत छथि, हे युवती सुनहु मन्म भव्यच लोह गेह रान
विजिह रूप नारायण सकल कलाक रस जनैत लो

की यह चिमून बचन देन काल। की ॥ १ ॥
की यह चिसरल परवक नेह। की ॥ २ ॥
चिमून बचन सुनलहुं मन लागे। तुर ॥ ३ ॥
भक्त दिगन्त गेलाह की लजि। सोतोने रओने ॥ ४ ॥
कय कलापति कलन हमर। बरिस परदेश ॥ ५ ॥
मय परदेसिआ एक सोभाव गए परदेस ॥ ६ ॥
मार मजोज मरम सर साहि ॥ ७ ॥

अंग २ मोज। ३. तुरज ४ ५ ६ ७

वि २ की गछ नहीपा लोह दे दे ॥ १ ॥ सही ॥ २ ॥
कहइहुन की हमर यह चिमून जगए ॥ ३ ॥ दे दे की सज्जन ॥ ४ ॥
हुनक जान हरे लैलकान की ॥ ५ ॥ तुरज ॥ ६ ॥
हुनक की कविभीत हम न मोज न मोज ॥ ७ ॥ वि २ ॥
बात सुनलहुं। तुरमे बाहि घरमे आगि ॥ ८ ॥ सज्जन ॥ ९ ॥

कियाक परदेस चलि गेलाह। हुनक विरहमे शान्त राति लोह जेल आगि
बरसवैत हो। (5) हे तुरिगारि सखी, हमर पिआके कहवलि से गप कृपुमे
गमारे परदेसमे रहैत अछि। (6) सभ परदेसिआक स्वाभाव एक रा
होइछ, परदेस जाएत तैं हठे पटलि नहि आओल। (7) हमरा कामदेव
दिया कर ममस्थलमे शर-प्रहार करैत अछि। वर्षा अनु वसन्तहुसैं अधिक
फलगर होइत अछि

बेटव सभे कोकल भोजन कए कर कदकन झमकाइ
जखने जखने धओलागिदि बरिसब तखनक कजोन उपाइ ॥ १ ॥
मगत गरज घन भुनि लड़िपल मन बरिस हरे क ॥ २ ॥
रवि ॥ पवन ॥ ३ ॥ नट मंतर ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
से गान तुवति जीव कैसें शक्ति सुन विद्यापति बानी
राजा विरमिह है रस चिन्दक मयने बोधि देव आनी ॥ ३ ॥

मन लड़िकत। २ अंठ

विरहिणी शय विलाप करैत छथि -- (1) जे कोइसी कुहकत भमरा
गुन तें रायक कगना झमकाए के ओकरा बैलाएब। परन्तु जखन
धवलगिरि सहज मेघ बरिसए लागत तखन कोन उपाए करब" (2)
आकाशमे मेघ जखन गरजैत अछि तैं से सुनिके छती कापए लगैत
नहि। परसा कह देव राजा लोह नहि ॥ १ ॥ (3) से सुनि
के युवती कोन निवेन रहल। विद्यापति बात सुनल। तौहर कन्तके
कामदेव, बरसके अति मज्जल, पकड़ स जलैत छथि राजा दि हो

तौहर सडरम गगत भरे। भरि भमर दुह बाद करे।
जोकर मरभरम महरम दन्त पहत विआस और भकरन्द
से देखि रितुपति आएल चली। जाकर मो मन सकल छली।

1. इस सूजान। 2. नाम

सरोवर स्निग्ध समीप विद्युत् केवल काल ५ गी
साधिका मधु पिबति मधु मधु मधु मधु मधु मधु
साजनि साजनि मुनि है साजनि मरी
पालम्भु सती मधु दीति निवर्तति हनुमान हनुमती
पदवि परिमल आसा धरत मधु मधु मधु मधु मधु

घान्दनि रजनी रामस बढावा मो उति सवे चिपरीन 3
 इदयक बाउलि कहिअहु पर अनु मोहिदि कदम समाने
 विनु माधव मधुरनी जडाते मीत कि निव दिनु 4
 विद्यापति कविधर एहु माधव उपदेशे रसन्ता
 भरजुन राए घरन गए सेवहि गुलादेवि रनि कनन 5

1. विधरओ। 2. कोकेल। 3. होउ उपदेश।

सादिका वसन्तकालिक वियोग सखीके सुनवैत छथि -- (1) सरोवरमे हूब दए धवन कमलक पराग फसवैत अछि। मधुकर माधवी फूलक रस पिबि नहि पवैत अछि, तँ ओकरा उपराग दैत अछि। (2) हे सजनी, हमर बात सुनह। हमरा पिआस ओखि मिलवाए देह। एहि उपकारक बदला हम तोहर शरी भए जएबहु। (3) पांडनि फूलक सारभसं दिविरान्त भरल अछि। हमर गीत गवैछ। इजोरिओ राति काप्रयासना जगवैत अछि। परन्तु हमरा सेखें सभ विपरीत (केवल दुख देखिहल)। (4) आन लोक हमरा चिहिन इदयवाली कहैत अछि। तौ बुझैत अछि 1 मोहि कहैत छिअहु। हमर ई वसन्तक राति विनु कान्हकिण बीते जाएत की? माछ कि पानिक विन जायि सकैत अछि। (5) हे गीत लोक लोकनि के उपदेश देबाक हेतु विद्यापति रचल जे सखी गुलादेवि रनि भरजुन राए घरन गए सेवक छथि।

अ न मने जानल हरि राख कन राति बदन मोर पूर्णिमाक चान 1
 एके दिन पुरित दिनहु दिन बीत तौ सखी तुलना नहि ओ हीन 2
 बैसनि अधोमुखि चिते गुन दन्द। एके विरहिलि हे दोरी नव चन्द 3
 नभ नीर दह जालि ऊपल बल फल समर मरु मरु कन जौन 4
 सखिसखी बिलावए अवधिक आस रिपु दितुराज तेज घन मंस 5

1. हरि हमे दीन। 2. सखि चेलापुनि

(क) रूपगविता राधा सखीके कहैत छथि -- (1) हे सखी आइ हम जानल जे कान्ह मुख अछि। ओ कहैत अछि -- तोहर मुह पूर्णिमाक चान बिकहु। (2) से कोना हए। पूर्णिमाक चान तँ एके दिन पूर्ण रहैत अछि तकरा बाद दिन दिन हीण भेल जाइत अछि, तखन तकरा संग हमर तुलना नहि। ओ हमरासँ हीन अछि।

(ख) कवि विरवी राधाक वर्णन करैत छथि -- (3) राधा मुह झुकावे चिन्ता करैत बैसलि अछि। एक तँ ओ विरहिणी अछि ताकि पर चान झरकाए रहल छैक। ओखिसँ मोर झबड़ि रखल छैक। (4) सखी सभ अवधिक आश दए दए ओकरा होसमे अनैत अछि। झतुराज ओके राख भए गेल छैक। ओ बेरि-बेर जोरसँ संस लैत अछि।

नखने आओम हरि राख घरन घारे घान्द पुजब अराबिन्द
 पुगुम सेज भनि कबब सुरत केसि दुहु मन होएत सानन्द 1
 लए लए X X X X X
 हमर पराननाथ कत्राजे विलमाओल कत जिय दैब विमधाने 2
 दिवस बहरो हरि रआने वीर मोने विमम कुमलसर भाव
 फलन नीर मोर मुखाछ घाति पड नि 3
 समय माधव मास पिआ परदेस पास ताकि दैस कमल न मेल
 फूलन कदम्ब गाछ हाट गट सेही साछ मोर पिआ सेओ न देखला 4
 मनहु विद्यापति सुन बर जांचति अछ लीके जिवन अधारे
 राजा शिवालिह रूपनरूपन एकदस भवज 5

विरहिणी राधा विलाप करैत छथि -- (1) कान्ह जखनहि आओत ओकर घरन धए रहब। ओकर नखरूपी घानक पूजा अपन कमलरूपी हाथ बढाए करब। उतम पुष्प-शय्या पर काम-कैलि करब, दूनुक मन आनन्दित होएत। (2) हाए ..। हमर प्राणपतिक के विलमाओलक प्राणक कतेक दिन आशा-विश्वास दैत रहब। (3) दिन भरि तँ बाट तकैत थीति

जाइत अछि, मुदा राति बैरिनि भए गइछ कामदारक सन्ध भरपहरक
पमावें आँखिसेँ मोर बहैछ, मुछित भए भूमि पर छडीन छी । रादय कल
नहि अबैत अछि। (4) यसन्तक समय पिआ परदेसमे अछि केँ गह
देशमे यसन्त नहि होइत अछि। कदम्ब फुलाएल। हाट बाट सेही स्थान
भए गेल। हमर पिआ सेओ नहि देखलक। (5) विद्यापति कहैत छथि हे
राधा सुनह। एगारहम अधतार राजा शिवसिंह रुपनारायण तोहर जीव-ज
आधार छथुन।

लोचन नीर तटिनि निरमाने। कर कसलमुखि तयोह मनन
सरस मृगाल कइए जपमासी। अहनिन जप होइ तय होइ
ओ कान्हू दुअ लागि धनि तप करइ, इदय बाट जे जे कह्यो ३
चिकुर चरि हे सम्भरि कर जेअन कल ५ तय पल्लव देखि ४
जिय कथ समिध समरपति आनी। करत सम ४ ७ ८ ९ १०
अ. ५ विद्यापति सुनह मुरारी तुज पथ ६ ७ ८ ९ १० ११

कान्हू! २ जिय कर समिध समर क ७ ८ ९ १० ११

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि । म २३ तौ
नदी भए गेल। राधा ततए स्नान के ल १ कज २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
माला बनाए दिन-राति तोहर नाम जपैत छैन आनी । म २४ तौ
पस्या (यज्ञ) करैत अछि । हठकपी देखि विरहपी अछि । म २५
छैक। (4) कैसरूपी कृष्णकें समेटि हाथमे लैत अछि । हठकपी कल देखैत
अछि। आव पाणकें समिध (होमक) करैत छैन । म २६ तौ
ओ जेँ ई पाण-होम करत तें बधभागी (हठकपी) भएत छैन । म २७
(6) विद्यापति कहैत छथि हे कान्हू सुनह राधा तोहर बर नैन १ २

फुजल चिकुर राहुडो मोर। मोअ सुधाकर कान्हिनि कोर। 11।
ओ कान्हू ओ कान्हू देखह जाए। बाँझ मधय दैअ बाद छडाए 12
दुहु आछुरि भरि दुहु पुज सीब। कामदाज मोर राखह जीव 13।
जदि न गेलह तौहें अपजस भेल। समधर कला गगन चढ़ि गेल 4
भलइ विद्यापति हरि मन हंस। राहु छडाए चान्द दिअ बास 5

१. फुजलेओ चिकुर राहु कजोर। २. जाएब। ३. चनि

सखी कृष्णकें उपदेश दैत छनि -- (1) राधा विरहसँ केस फोलने
रहैत अछि। तकरा राहु बूझि डरें बेसुधि (मोर) भेल घान राधाक कोरमे
कर्नेत अछि। (2) हे कान्हू आधिक देखह घान आ' राहु लडि रहल अछि।
ई लडाइ बलघान मध्यस्थे छोडाए सकैत अछि। (तौँ आचह तें केस (राहु,
दलान जाय। झगडा खतम। (3) तौँ दूनु गोटेर दूनु हाथ जोडि शिव-
पूजा करी। छह हे कामकें जरओलिकार शिव (कामकें भगए) हमर प्राण
वचावह। (4) जेँ ती राधाक लग नहि जाएवह तें अपजसमे पकयह। घान
(राधाक मुह) राहुक डर आकाशमे चल जाएत (राधा नहि बाँधति)।
विद्यापति कहैत छथि, ई सुनि कृष्णक भन प्रसन्न भेलौने ओ राहु
गामकें शरण दैलनि। राधाक लग आवि गेलाह।

अकामिक मन्दिर भेलि छहार। थडिस सतल भमर झडकार 1।
मरछि खसलि महि न रहनि थीर। न चेतथ चिकुर न धेरण थीर 12
कओ सखि माधए केओ कर धार केओ चान्दन रही करए सम्भाए 3
कओ बोल मन्त कान कर जेछि। किओ कोकिल छेद हाइनि वीनि 14
ओ मा भए बान्ह के कछि कहि सक। भुजङ्ग इसु बाँलाहि तोरि 15।
जिये विद्यापति १२ न आ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

सखी कृष्णके राधाके लिहदश सुनयैत उचि है कृष्ण हमा
धान सुतह रोहर गिरहमे राधाके दश कहन आ गेन आउं । नीकर
पान्तर देह मेनमे केन दूधे लकन ठेक नही समझायाक राखिमे
गानकली । सखी यह भीकरा साजसज्जा के रखने अडि डिवाक
न मरना ठेक जे आ अपने मरसं भाजाने न उडि जा । अशीन दिहहं
सोस बड तेन गनैत ठेक । 4) नीकर रोहमी कहेन हमा दश पनेन सखिन
आ भांमे वर राहो नही 5) मरना आ नीकर लेने पाण लखैत 6)
आ नखन ओकर मरना सखी रोह 10) नि नि कहेन
जोय राधाके भाग के न । रोह नीकर 10) जेन के नखन
निदान (प्रतिभा) के न । रोह नीकर 10)

॥ यत्किं शब्दः सः सः गुरुते बुद्धिः शब्दः ॥
 चतुर्दश शब्दः शब्दः ॥ यत्किं शब्दः ॥
 शब्दः सः सः सः सः सः सः सः सः ॥
 शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः ॥
 शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः ॥
 शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः ॥
 शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः ॥
 शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः शब्दः ॥

मदत तब से तब सन्तानाश्रम विनियमों के तहत
अपना व्यवहार जहाँ तक आवश्यक तब तक परफेक्ट तैयारी 5
भक्त विद्यापति सूर्य तब जहाँ तक रहने सड़क से गुले
कल्लु (दोस्ताना) यदि 12 शुभारंभ के तब रूप कि गुले 6

1. धरके कहाँ ? 2. छिनीवर्ती 3. मड़ 4. भीतर 5. परदाज

मछों कृष्णलें राधाक विरह दशा कहैत छथि । नय नय
पल्लवक संज पर सुखनि राधा दिन थिक कि राति सेहो नहि बुझैत
अछि चान थिक कि मूलत सेहो नहि बुझाइन छैव चन्दन कहकर छेक
दए, लगेत छैक । १३ विरहक अंगि कहल होइत छैक तकर अनुभव
मनहिमे होइत अछि मनका कहल जाई जाए मनेत अछि राधा दिन
दिन छौन होइत होइत । समाधि-साक राधाक अवस्था ये घाम फालक । १४
हे कालक राधा अन्धकारधरो हुंगनि नीचे अइ धारे हम अण दए
निमग्नोने जलहुँ सबि अणों से नाइ । १५ काहु फूल अछि, फलहु
होइत आ काहु ममका मजन कछुन दहैत । १६ अणो नय आ
अन क कहैत कहैत कहैत । १७ ओ लखीह लखीह लखैत छैक ।
१८ नयन कहैत । १९ नयनी हो । २० नयनी हो । २१ नयनी हो । २२ नयनी हो । २३ नयनी हो । २४ नयनी हो । २५ नयनी हो । २६ नयनी हो । २७ नयनी हो । २८ नयनी हो । २९ नयनी हो । ३० नयनी हो । ३१ नयनी हो । ३२ नयनी हो । ३३ नयनी हो । ३४ नयनी हो । ३५ नयनी हो । ३६ नयनी हो । ३७ नयनी हो । ३८ नयनी हो । ३९ नयनी हो । ४० नयनी हो । ४१ नयनी हो । ४२ नयनी हो । ४३ नयनी हो । ४४ नयनी हो । ४५ नयनी हो । ४६ नयनी हो । ४७ नयनी हो । ४८ नयनी हो । ४९ नयनी हो । ५० नयनी हो । ५१ नयनी हो । ५२ नयनी हो । ५३ नयनी हो । ५४ नयनी हो । ५५ नयनी हो । ५६ नयनी हो । ५७ नयनी हो । ५८ नयनी हो । ५९ नयनी हो । ६० नयनी हो । ६१ नयनी हो । ६२ नयनी हो । ६३ नयनी हो । ६४ नयनी हो । ६५ नयनी हो । ६६ नयनी हो । ६७ नयनी हो । ६८ नयनी हो । ६९ नयनी हो । ७० नयनी हो । ७१ नयनी हो । ७२ नयनी हो । ७३ नयनी हो । ७४ नयनी हो । ७५ नयनी हो । ७६ नयनी हो । ७७ नयनी हो । ७८ नयनी हो । ७९ नयनी हो । ८० नयनी हो । ८१ नयनी हो । ८२ नयनी हो । ८३ नयनी हो । ८४ नयनी हो । ८५ नयनी हो । ८६ नयनी हो । ८७ नयनी हो । ८८ नयनी हो । ८९ नयनी हो । ९० नयनी हो । ९१ नयनी हो । ९२ नयनी हो । ९३ नयनी हो । ९४ नयनी हो । ९५ नयनी हो । ९६ नयनी हो । ९७ नयनी हो । ९८ नयनी हो । ९९ नयनी हो । १०० नयनी हो ।

१. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 २. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ३. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ४. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ५. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ६. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ७. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ८. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 ९. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन
 १०. संविधान का अर्थ है राष्ट्र का शासन

भजुहेरि अडिम अन्तरंग चाप दिहु काकिलकें दिहु बानी
केवल देह नैह अछ सओने एतवा अएलाहु जानी ।4।
अतइ विधापति सुन घर जउवति धिते जनु झंखइ अने
राजा सिवसिंह रुपनारायन लखिमादेवि रमाने ।

1. तप घमरि के। 2. मन्धु

सखी कृष्णकें राधाक विरह-दण सुनबैत छथि -- (1) हे कृष्ण, बूझि
गेलहुँ जे राधा आब नहि जुडति। जकर जकरसँ ओ जीवनकालमे जे-जे
वस्तु लेने छलिन से सभ मरण कालमे कामध्वयासँ व्याकुल भए सकरा
तकरा सुनझाए देलक। (2) शरदक पूर्णिमाकें अपन मुखक शोभा दए
देलक हरिणकें ओखिक लीला (3) छमरी गएकें केस, दाडिमकें दाँत।
मधुरी कूलकें अधर ओ विजुलीकें देह दए अपने कज्जली सन भए गेलि।
(4) भईह कामदेवक धनुषकें देलक ओ' काकिलकें प्राणी। देखने केवल नैह
(प्रेम) दए रहि गेल छैक। हे कान्हू, हम एतका जानि अएलाहुँ अछि। (5)
विधापति कहैत छथि, हे सुन्दरी, मनमे आनेहाशका नाह करह। एक
रसक जाता धिकाह लखिमादेवीक धति राजा सिवसिंह रमाने ।

कल कल भाँसे पुरुष देखल कल कल कल कल
जीवन तरह प्रेम उपजए' सय से यज्ञ विचारि।।
तकरि दसा' देखि देखि कह' मोहि न रह गेआन
महि बधनब से जेहन कर तोह पाई मोह आन
मधव कहौ तोहि बुझाइ
ते आये मरल सन आनल तोहर विरह पाइ।।3।
धरति सखन मुन्दन नयन मलिन मलिन समे
कलने जतने मोलि कहू धनि लोछि बैसाउलि हमे।।4।
तैओ धनि' पुछले न काजनि बयन न मुन अथे
मुमरि से सखि नोहि मोह गेलि विधिवसे मोलि सथे।।5।

पिरिति गुन विपरी न होए बिसरि न हल गण्डे
देवस दोसे की नहि सम्भव प्रेम परानहु चाहि ।6।
भन विधापति सुन तप्रे जूचति रस नहि अवसान
राजा सिरि सिवसिंह जीवओ सखिमा देवि रमान। 7

1. निब सओ प्रेम चलक उपजइ। 2. आसा। 3. तबे। 4. जदि

सखी कृष्णकें राधाक विरहदशा सुनबैत छथि -- (1) जतए-ततए
धूमि-धूमि हम बहुतो पुरुष ओ' बहुतो कलावती कामिनी देखल।
जीवनरूपी गच्छहिमे प्रेम फडैत छैक। (2) राधाक दश देवि-देविकें हमर
जान प्राण हराए गेल। हे कान्हू, तोरा बुझा कए कहैत ओ जे प्राणत्याग
करए तँ वधभगी तोरसँ आन नहि होएत। (3) आय ओ तोहर विरहक
कारण मरणदिकें शरण बूझि लेलक। (4) भूमिपर सुनैछ। म्लान कमल
सन ओखि मुनने रहैछ। फलेक प्रयासँ बुझाए सुझाए हम ओकरा उठाएके
पैसाओल। (5) तैओ किछु पुछिऐक तँ उत्तर नहि। आध बान सुनैछ आध
नहि। सखी राधा तोहर स्मरण कए बेहोस भए गेलि विधापति धिज्ज कए
देलक। (6) हाए, प्रीतिक प्रभाव जतए होइछ से बिसरि नहि जाह दिनक
दोख की नहि हो। प्रेम प्राणहुसँ बढ़ि थिक। (7) विधापति कहैत छथि हे
युवती, सुनह। रस केर और नहि छैक। सखिमा देवीक धति राजा शिवसिंह
जीवथु।

498

कल ललिलीटल तेज सोआउनि कल दे-
कल मृगमद रस' देह देआओल तथिहु हुताशन मरक।
कह कैसे राखनि तरुनी X X X ।
X X X X तमन मटल उरको ।
विदलने करतल नील वदन तसु देखि उपजु मोहि भाते
दरस' लोभे चिह्नि अपरुष मिमिजल बान्द कमल सन्धाने ।।3।

दरन पञ्चसर सुरति धरनि पढ सुनारे राजारे ॥३४॥
तोहे पुरातम विभुवन सुन्दर अपद म अपजस तहे॥४॥

१ जलजदल न धन २ दर

सखी कृष्णके राधाक विरहदशा सुनवैत छथि - (१) राधाके पुराइनिक
घानपर कतेक सुनवैक घानन कतेक लपटके कलन ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
मलवैक एहसभमे त ओकरा अगैक भ्रम होइत छैक। रखन ओकरा कोरा
बचाएथे। कामदेवक धरपर प्रताप
धित्तारी भो भवन मुह राध पर रखने रहैत अछि। से देखि हमरा एहन मन लगैत
अछि। तेना विरहना नमस्ता देखवाक लोभे घान म कमल दुआके ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
एक काल मे रहजिहार नहि नहि एकटा सा वे नृति कलन ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥
नौवक मम धा कण कण खमसेवक दुरा भावना न भूति न भूति र भूति
पडैत अछि। तो तीनू लोकमे सभे म सुन तो सभे म ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
अनेर अपजस नहि तहे॥४॥

[499]

आज तिजोर दह दिस छडल। आज दिपर अप दिन ॥ १ ॥
आज मकर मेल होइत तथे मारनि न ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
विरह दुगध मन कत धावत। गङ्गात मने ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
अत दिन धरम जाइते जिब शोखे। आसा बान्ध पल्लव मन म ॥ ५ ॥
भनहु विद्यापति सुन सजनी। बालहु सकल महांछे रजनी
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
रखि

राधा दिनहोत मितलक इल्लस भरीजे सुनवैत छथि ॥ १ ॥ अछि
हसो दिशामे अन्धकार प्रकाश जेन नदु हीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
(जलदी बीति नहि रहल अछि जे रातिमे रंगरमस हो। नदु घर म नौवक

कहव अकरय मेल ॥ १ ॥ भाने कसुभता जगत छैक त उचि। व्यवस्था
नहि रहि एवैत छैक। (३) हे सखी सुदिन आएल पिआ नम आनन।
आखिसें आखि मितल। (४) एतेक दिन विरहसें जरेत मन कतए कतए जे
होइत छल। आइ माइल मनोरथ पाबि गेलहुं (कृष्ण आबि गेलहुं) ॥ ५ ॥
बहुत दिन धरि साइन घाणके लेकने रहलहुं। प्राण मरिष्यक विलेनमे छैकल
रहल। मने तकर सखी अछि। ॥ ६ ॥ विद्यापति कहैत छथि हे सुनारी
सुनहु। पिआक संग बाल राति बड दुलभ होइत अछि।

[500]

भोग १ भोगत वाचनत धन मरिष्यक लोभे चोख कृष्ण काज ॥ १ ॥
कह बह आने कला नृक सखीरा कहे सोय वदल भोग ॥ २ ॥
अत चोख दन्धन देव मेरे वलन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥
गङ्गा माइल भनलोलिनि। सुनारि मअन अराधण जामे ॥ १ ॥ २ ॥
बालदेस लहल महीन कलन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥
कइते क म मअन आगधो होइति मरिष्यक बडि सति ॥ १ ॥ २ ॥
विद्यापति कवि गाबिआ सुनारि पदु अछ गुनक निधान ॥ ३ ॥
राउ भोगिसर गुन आनन नागर पदुमादेवि रमान ॥ ४ ॥ ५ ॥

१ भोगति २ भोगता घटल केरि। अनुपम ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
भीष बाअस जगो पिआ मल्लैत मल ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
कल मसन। हाडी जे पडै रति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

राधा पिआक आगमनक एतीकामे उल्लास व्यक्त करैत छथि

१) हमरा भाइतमे नालनक इमदत मार माछ अछि। ताहिपर चढि फौअ
कुनैत अछि। एक एक र कोन हमर पदक मल्लैत कइल हमर भोग
पलटत जे अइ हम पिआके पाएब त तोहर चोख सोनसें मडार देखीक
(२) हे सखीलीकने सुनारि गङ्गा आ चन्द्र मदनक पूजा करा ॥ १ ॥
चार दिस चम्प आ मानसिरीक फल फलान सखि राती चोख

1. शुरुआत

[illegible]

74

प्राम कए तैजिए गेल।
 गेल संचकते जाम धोले नएरयो न उगान गेल
 सैयन दस गेल गोकुलसोई अथुर झाड़क खीर
 दुहु सिद्धि न उगल सीअओलाई जौयने कौच सरिर। २।
 दान ओई मुह खोइअ अए गेल डोडे गेल सब दाप,
 तैजिए नएन सचकर टैजिए कँचुअ आएल गंध
 अँखि मलामलि दूर न सइए बन फुटि गेल काल
 दअओ अघर धरि तिरौघिअ नइअओ सरई भास' (११)

कति बाधकता पर नैराश्य प्रकट करते छथि - (1) है अएस, तौ
दमरा तेजि कतर धडएलह? तोरकि सेबैत हमर जीवन बीतल, तौभो तो
अपन नहि भेलह। (2) शीशु अवस्थामे तौ माइक मधुर दूध पिअओलह
थीयलमे हमर कौच शरीरकें दू श्रीफल (बेलक गाछ) केर छासामे

सुनभैलक कथक्यमें आगे दोन छदि गेल मुह थोपड़ भा गेल सभ छपे
 (अभिमान) उदि गेल। आब केदुसाएन (जादक) सभ जकाँ देखल देखल
 तीन मुचन देखि रहल छी (नन अचल नन बाँझइत)। भौखे झलफलइत
 अछि दूर नहि सुझैत अछि कस पाके गेल जेन वनमें काम फुलाएल
 हो। दूनु छोरकें सम्झैत छी, तैओ तरहि दिस मासल जाइत अछि।

(4) रागतरङ्गिणीक गीत

५७

सँझक धौरी जमुनाक नौरों कटोरा धल तर तर ॥
 अकामे कानरा कि कहय समरा मोझाहि जुझल सखि कुसुमसरा ॥२॥
 भौंरि भौंरि कानरु भनरा कहिन कहल जनु ॥ ३ ॥
 उर धिर हाँ कर कय धरि अधर धिया मुख हेरि ॥ ४ ॥
 एतु पुन भौर परत कुच मोरा निधन पासीन जनि कलभे कलारी ॥ ५ ॥
 ओ ॥ जुझनी दुझनि जुगुनी दोषय मधुप मधुप ॥ पनी ॥ ६ ॥
 नीर अलुझने धियापनि भाते सिबसिह नयिमादेइ रगत ॥ ७ ॥

१ कानरा २ मधुकरा ३ मधुरपती

गथा कृष्णसँ आकस्मिक मिलनक कथा सखीसँ कहैत छथि

(१) हे सखी सँझ छन यमुनाक कातमें कदम्ब दनमें गाछतर (२)
 अकम्भान कानर भेटल। तबनुक हाल की कहयहु जेना साहान कामदेवसँ
 युद्ध भए गेल। (३) हमरा कानरसँ भेट भेल। ई कथा अनका नहि कहिरह
 (४) कानर छपती परसँ पीर हटाए दैलक। हायसँ केस धरगंड हमर मुह
 देखि देखि अधरधान कएलक। (५) ओ भोर भए (सुधि बुधि गमाए) धेरि
 धेरि स्वत एकर लागल जनु ॥ ३ ॥ रति मोनाक कटोरा पावि गेल हो
 (६) धियापनि कहैत अछि हे यमुनी पीहर जुगुति (गोपनक प्रयास) हम
 बँझि गेलहु मधुर मधुरक स्यामी कृष्ण दोसर (मानवरूपी) मधुप
 धिया ॥ ४ ॥ पीहर अधरमधु पीवे करताह। हमरा सँ संगैत अछि जे कृष्ण
 आन लहि नयिमा देखिक पति राजा सिबसिह सेह धियाह

५८

ससल परस वस समर ॥ देखल गले छह
 नव नलधर ॥ २ ॥ धरगंड ॥ रति दौनुनि गेह
 आज देवनि छलि जादुने ॥ मोहि कपजल रहल
 कलकलन ॥ नयि मल्ल ॥ मदि नीरल सदा

५९

ता पुन अचन्व देखन १ कृष्ण अरुद्धि
 विगसिन बिनु किछु काज १ लोहा मुखचन्द
 विषापति कवि गात्रेन १ दुहा रमभक्त
 दसिह नपनपर १ हसिनि टाँके कल ४

निर अचन्व २ नहि

कृष्ण राधाक रूपणीत मित्रके सुनवैत छथि १) वसन्त
 लगनसँ आँदर खसि पड़लैक; हम राधाक देह देखल जेना नव मेघक तर
 बिजुलीक रेखा हो थी श्यामवर्ण देह गौरवर्ण १ (२) भाइ राधाके मडन
 देखल तँ हमरा भाँसा भेल जेना मेघक तर सोताक लता धरती पर
 बुधैत हो १) एक असी भाइ राधा देखल ३ दिनु कारणदे
 (असमवाहिमे) आ सोझसँ मुखरूपो चानक बड्डन मन्तरुपी कमल
 विकसित अछि। (४) विषापति कवि ई गीत रचल कर रस दुलैत छथि
 हसिनि टाँके पति रसिक नागर १ ता देवसि

भाइक मन्दल काँचीर तरनर को रिता भुनि वसन्त
 समर सकेल निकैल ऐसन धीर दोर वसि रहल
 सँझि नील लोरी जगद्वेन पदम मुख
 गोकुल भोजन भवद्वेन १ ३ जेन नील पदम मुख
 नमुनक नि डालन डहवेन १ ३ करि कहै १ ३
 १ १ १ १ १ १
 लोह मनिमाले गुमनि माधवनि व ३ मुख १ ३
 भवद्वेन विषापति रूत वा नीली वरद नलकेल १ ४

बिके लि २ निहनि ३ मनिमान

राधाके सखी कहैत उठित मन्दन सोन १ कदमक गाँउ १
 मन्द मन्द स्वरै (बेसी लोक भुनन लह तो कुनी दनवैत छथि ३

निधोपत समयमे सकत स्थानमे बैसन छथि भा घेरि घेरि नीरा १ वशीक
 सकतमे वज्रवैत मधुन १ (२) है मुन्दरी लहरा नैल मुगुरि सनत विकल
 रहैत छथि भा गोरम घेचर भवैत जाइत प्रत्येक गोपेसँ तोहर छेजपुछरी
 करैत रहैत छथि १ कृष्ण यमुनाके झीलमे डुपलमे डुहगमन भेल
 घेरि घेरि झोही वाटके निहारैत छथि जाहि वाँ १ १ १ १ ४
 विषापाते कहैत छथि है सुन्दरी हमर बात मूह तो बुधिआरि छह भा
 कृष्ण मँही बुधैत छथि वनुरतापूर्वक लल्ल विशीरक भजन करैत रहै

१ १

मान परहर है कर वचन झेरा मार ललभ १ धम रघन तोरा १
 न कर न क है लोह विमुख भाजे पखक रूत है पुनु भेल समाजे
 कमल बदलि ह कर आकल टाले बिलख के लोह है नर लज्जा भाजे ३
 विषापति कवि है भन रसिक धीरे राजा सिद्धिद है वर भूपति धीरे ४

भाइक घेमे नमुन

कृष्ण माँजेरी राधाके मलवैत छथि १ है मुन्दरी मान
 छावत हमर बात भाजे जाइ वासदव हारो सनवैत छथि तो गोद
 शरण लागल २) भाइ हमरा गिबूरा (लोचन लोह नवह होय पुनवरा
 भाइ मुनिसैल भेल आँ १ १ कलनवटकी कालेगल दोल देह बिलख
 लोहोरा) क ले के लोह मान रहैत आँ ४) विषापति ऊँ १ व है १
 छथि रकर रस जलैत छथि रसिक धीर धीर गला १ ३ ३

हसम वन विषाक कानन कम लोह १
 निविड लोह रस हरण भरन जनि विज १ १
 अ है लख गलनन गनि वर नुपति विहान मार
 जनि काकद्वय विनयन १ लोह लोह समा २
 मरट रसिधर सोरस मुनन बदल लोह लोह

१ १

येवि लखिमा कन्ना ज्ञाना सिद्धि संस्था निह आ ४

+ 11

कर्मन्तरात्तु तद्विषयं शब्दस्योत्पत्तिः कर्तुं शक्यते इति तत्रान्वयः ।

1. खण्डित दर्शन 2. बोधह 3. तब ज्ञाने गाने 4. गुप्तन कर कर्तृत्वः

[illegible]

4

1. नवजात शिशु 2. के बच्चा है 3. अक्षित 4. मोलह
मोपने क्षितिल नखले। 5. कुदितिलन दखि 6. वल घन 7. मललि फूल
भले 8. पुर नख 9. जलद। 10. रर उलवण चमले वंदी। 11. लीला
12. खोलन। 13. गारा 14. भाया।

सत्यदाएक कहवैक। ई शब्द एही अर्थमे असमिउमे प्रयुक्त हवे। सोखे

[illegible]

भीम (अजीठ) कब उद्येत छल से काज घनगर इत कालक उन्हेभर
शब्द शकास्पद गनमुका मत माधवी कूल बन्दनधार मेहराव सेन
15 पीतगणक गाँदुरि जकर कूल मधुकरी नामक राजा सेन संकत अछि
महुभरि बगए गायए लखने धुधर कूल काहर नामक राजा बानभोजि
छल नागेसर कूल शख वज्रभोजक नगर कूल झल्लि पर ताल द्वारक
6 मधुकर भ्रमर कमलक पंखुरीमे नग नेनाके मधु चटभोजक
कमलक ताल तोडि देहुधोरे छान्दल सेन पल्लवक कूल बघनछी सेन।
7। नव पल्लवक सेन ओछाभोल गेल। नमक नाथक उा कटभक
माला लटकाओल गेल। भइयो सज हसद (साँदर) गायए देसने नग
चानकपी भाको माहु चाको टीप। लिहारक 18 कलकलकी कूल पर
राशि लखन शिवा जन्मा गी कुण्डली, लिखल गेल। काकिल जे लोक
माँगीकल जोखी। सोछे नैसाक नाम वसन्त राखल 9, मलयपाल
कमलक घराग लाग ओकर दह उदरक भन्नी सुखलन दार
पक्षिभोजक मेष अँछिम काज कालक 10। सरल 11। ताल ज
साहिने तरुण भर सकल ससको छल। विजयलक 12। 13। 14। 15। 16। 17। 18। 19। 20। 21। 22। 23। 24। 25। 26। 27। 28। 29। 30। 31। 32। 33। 34। 35। 36। 37। 38। 39। 40। 41। 42। 43। 44। 45। 46। 47। 48। 49। 50। 51। 52। 53। 54। 55। 56। 57। 58। 59। 60। 61। 62। 63। 64। 65। 66। 67। 68। 69। 70। 71। 72। 73। 74। 75। 76। 77। 78। 79। 80। 81। 82। 83। 84। 85। 86। 87। 88। 89। 90। 91। 92। 93। 94। 95। 96। 97। 98। 99। 100। 101। 102। 103। 104। 105। 106। 107। 108। 109। 110। 111। 112। 113। 114। 115। 116। 117। 118। 119। 120। 121। 122। 123। 124। 125। 126। 127। 128। 129। 130। 131। 132। 133। 134। 135। 136। 137। 138। 139। 140। 141। 142। 143। 144। 145। 146। 147। 148। 149। 150। 151। 152। 153। 154। 155। 156। 157। 158। 159। 160। 161। 162। 163। 164। 165। 166। 167। 168। 169। 170। 171। 172। 173। 174। 175। 176। 177। 178। 179। 180। 181। 182। 183। 184। 185। 186। 187। 188। 189। 190। 191। 192। 193। 194। 195। 196। 197। 198। 199। 200। 201। 202। 203। 204। 205। 206। 207। 208। 209। 210। 211। 212। 213। 214। 215। 216। 217। 218। 219। 220। 221। 222। 223। 224। 225। 226। 227। 228। 229। 230। 231। 232। 233। 234। 235। 236। 237। 238। 239। 240। 241। 242। 243। 244। 245। 246। 247। 248। 249। 250। 251। 252। 253। 254। 255। 256। 257। 258। 259। 260। 261। 262। 263। 264। 265। 266। 267। 268। 269। 270। 271। 272। 273। 274। 275। 276। 277। 278। 279। 280। 281। 282। 283। 284। 285। 286। 287। 288। 289। 290। 291। 292। 293। 294। 295। 296। 297। 298। 299। 300। 301। 302। 303। 304। 305। 306। 307। 308। 309। 310। 311। 312। 313। 314। 315। 316। 317। 318। 319। 320। 321। 322। 323। 324। 325। 326। 327। 328। 329। 330। 331। 332। 333। 334। 335। 336। 337। 338। 339। 340। 341। 342। 343। 344। 345। 346। 347। 348। 349। 350। 351। 352। 353। 354। 355। 356। 357। 358। 359। 360। 361। 362। 363। 364। 365। 366। 367। 368। 369। 370। 371। 372। 373। 374। 375। 376। 377। 378। 379। 380। 381। 382। 383। 384। 385। 386। 387। 388। 389। 390। 391। 392। 393। 394। 395। 396। 397। 398। 399। 400। 401। 402। 403। 404। 405। 406। 407। 408। 409। 410। 411। 412। 413। 414। 415। 416। 417। 418। 419। 420। 421। 422। 423। 424। 425। 426। 427। 428। 429। 430। 431। 432। 433। 434। 435। 436। 437। 438। 439। 440। 441। 442। 443। 444। 445। 446। 447। 448। 449। 450। 451। 452। 453। 454। 455। 456। 457। 458। 459। 460। 461। 462। 463। 464। 465। 466। 467। 468। 469। 470। 471। 472। 473। 474। 475। 476। 477। 478। 479। 480। 481। 482। 483। 484। 485। 486। 487। 488। 489। 490। 491। 492। 493। 494। 495। 496। 497। 498। 499। 500। 501। 502। 503। 504। 505। 506। 507। 508। 509। 510। 511। 512। 513। 514। 515। 516। 517। 518। 519। 520। 521। 522। 523। 524। 525। 526। 527। 528। 529। 530। 531। 532। 533। 534। 535। 536। 537। 538। 539। 540। 541। 542। 543। 544। 545। 546। 547। 548। 549। 550। 551। 552। 553। 554। 555। 556। 557। 558। 559। 560। 561। 562। 563। 564। 565। 566। 567। 568। 569। 570। 571। 572। 573। 574। 575। 576। 577। 578। 579। 580। 581। 582। 583। 584। 585। 586। 587। 588। 589। 590। 591। 592। 593। 594। 595। 596। 597। 598। 599। 600। 601। 602। 603। 604। 605। 606। 607। 608। 609। 610। 611। 612। 613। 614। 615। 616। 617। 618। 619। 620। 621। 622। 623। 624। 625। 626। 627। 628। 629। 630। 631। 632। 633। 634। 635। 636। 637। 638। 639। 640। 641। 642। 643। 644। 645। 646। 647। 648। 649। 650। 651। 652। 653। 654। 655। 656। 657। 658। 659। 660। 661। 662। 663। 664। 665। 666। 667। 668। 669। 670। 671। 672। 673। 674। 675। 676। 677। 678। 679। 680। 681। 682। 683। 684। 685। 686। 687। 688। 689। 690। 691। 692। 693। 694। 695। 696। 697। 698। 699। 700। 701। 702। 703। 704। 705। 706। 707। 708। 709। 710। 711। 712। 713। 714। 715। 716। 717। 718। 719। 720। 721। 722। 723। 724। 725। 726। 727। 728। 729। 730। 731। 732। 733। 734। 735। 736। 737। 738। 739। 740। 741। 742। 743। 744। 745। 746। 747। 748। 749। 750। 751। 752। 753।

[illegible]

(2) हमर एहन उत्पन्न (वैराह) बिना कोन छटे जाइत भेलाला ओ त्रिपुर नगरके डोहें तककर ऊँड़र अपन छाल उचा में भरतें, तेपले छथि घासे बूढ़ भा बसहा पर चढ़ल छथि 4 हरके नीचे 11 आंखि छति। एक अखिस आंगि बरैत अछि माथ पर गणक जलधारा छानि। (3) चिदापति कहैत छथि ओहें सगलाके ध्याऊँम गौरीक मन बिकल छति।

वि कइहु मन्त्रशालास नहि। लगीत अछि जेना प्रत्येक छप्पक एक एक चरण भुम भए गेल हो।

[illegible][illegible]

तखन भंकरा भेराए रोष थिरद दिवस पुगए रहते अछि देखि जाय
 शान्त करक उहेरयमें मुह सिखाक हेतु सखी धनि भनैत अछि । १२
 कान्ह मुन्दरी राधाक की बात होएछ सँ सोचइ सखी नहि जनैत यत्न
 कए एखन घरि ओकरा जिभओसे आछि । (१) बुद्धिहीन सखी सब बूझै
 नहि रहति अछि जे राधाकेँ कान्ह रोग छैक। रोग किछु छैक भा उपचार
 किछु आने कए रहति आछे । १३ ककरो हाथमें पुनिक घात छैक न
 ककरो हाथमें चानन। केओ कावसे। कहैत छैक कान्ह भगवान् । १४
 केओ भगव इकरा मुन्दी ताछै न राधाक कान्ह मुनि रैन भोरे केओ
 थोपरी बजाए। झुंझोकेँ बैनबैत अछि । १५ केओ रतका कमल नान
 ओकरा हृदय पर राखैत अछि न केओ चन्द्राकरछकेँ हाथमें झुंझैत
 अछि ।

न जानते।

[illegible]

हमारे विचार 2 प्रकृत वाले 3 न 19 नती कुलीन लगे म
मन्त्री सभा के आदेशों से ही प्रेरित करे न अर्थात् भाई राजेश
विक्रम म ज ने हम अर्थात् कि भाई मोहन सांख्यिक दफ्तर के देखने
होते गन्तव्य विभाग में तीन भाई साख्यिक नकल केनी कुलाकर्त देखा नहि
पाये। (2) है सुन्दरी ली अपनहु विचारिकें देखे। हम आर्थिक धमारी
संसार भाई साख्यिक मोहन ली सुन्दरी ली फलहु नहि में न 3 न
अन्धकार के आदेशों से ही प्रेरित करे न अर्थात् भाई राजेश

मनु अन्धकारक शत्रु शिक है यनि किछु अलबन होय सह न म्वाभाविक शिक लकरा बिसरि के चलह. अन्ध कृष्ण छथि, १५) चिरायनि कहै छथि, दूनीक ई बात राधा हिनकर बुझतनि जानिये चालक भेलह भा सुन्दरी कृष्णसँ मिलए यनि पडलीह.

रोपनह एहु लहु मलिक अजि पानह जवन एत सीलह पणि ।
 त अचिरकि उपधित जेलि से नंद बिस्वलि अल बोलत के ।
 माधव बुझल तकर अनुशेष हेगितहु कलह नयन निरच ।
 एकाहु भयन पांसी दरसन बाध किछु न बुझिअ एहु की आराध ।
 सुपुख गचन सबहु विधि कू असरले बिस्वराज न काअ दू ।
 भनइ विषयनि एहु रन नन सिवगिह लखिमा दइ राज ॥

पृष्ठानि २ भरविनी।

राधा कण्ठसे निकल कर निकल आये । हे गुरु जी हमको, हम
आजिके सपने का प्रत्यक्ष प्रमाण (प्रति दिन यत्नपूर्वक पापों का दण्ड) देख रहे हैं।
12) तबसे फलस्वरूप भी हमारे शरीरों में ही भयानक परिवर्तन हो रहा है।
गोला लकड़ा के नीचे कहते हैं । हे गुरु जी हमें सन्तोष दिलाए ।
श्रीगुरु गोविन्द आदि हम नीचे दिए लोकांशु की बातों से बहुत प्रभावित हैं।
(समिति) लैत रहे। 4) तबसे परमेश्वर के दण्ड हमें पता चल गया। हमारे कर्म
अपराधों से ही एना कर रहे हैं। तबसे तबसे तबसे की कथा । 5) भद्र
लोकक वचन सदैव सत्य ही रहते हैं। क्रायवरा प्रियेक दो लोके कर्म
घाटी । 6) विद्यापति कहते हैं ।

महाने ज्ञानवानि गरीज ज्ञानमने दिवत मनेद
दिने दिन तम् ज्ञानमने भव ज्ञान कर्मनेने सम दैद
अम्ह न सुमिद भवियु कि कर्मने ज्ञानने रासा

दिनु टोसे लांके बिमरवा कांली पर रह ठामे 2
एक दिन पेस मसाका दिन सुविदिन दस बिसाला
दुहु पय चढनि तितज्जिनि मसअ रइ कुलदल 3
घ-चवाल अळिआतए धारने पा कर थैरे
आच्चर मुह दस कान्दर झंढार नरल रह लोरे 4

1. गंगाधर 2. ललु 3. लह 4. नाम 5. सोहि 6. कहिलि रहु ?
फादर

सखी कृष्णार्क उपरान्त देत छथि - (1) हं कान्हू राधा तँ तोर लग्न जायत तँ कुलसयादा गमाओत। जँ नहि जाएत तँ जीवनमे सन्देह दिन दिन ओकर देख झीण भेल गेलक आछे, जेना हिम ऋतुमे कमलनिनी, (2) हं कान्हू अखहुँ तो आकर सुधि नहि लेत छह। ओ बेचारी सुन्दरी कोन उपाय करत तो अखरा बिनु दोखहि धिसरि देलह एना कान्हू केवल बदनामी रहि जातहुँ 3 एक ठोस सा दोसर दिस बड गोट दिगन्धान वश सुन्दरी दू छोट ४ गरा देने पाटे आछे सशयमे पकड़ि अछि जँ कोन छोट धातु सा, 4) कान्हूदेव साग, बड़बेल छथिन ओ पैर 5 छटा पदेक सलल हेम स्थिर कलत अछि आंचरसं भुज झोप कलत अछि दिगन्ध वरीत अछि सा तोर दरीत अ' 3

विशदतः यदि पण्डितः स हो सोपान केस सोहोती
 एक एक सहस्र (हो) धर्मिणि अति जा पुर होती १
 कचसल तय १३: काये कीर्तिमा ३ तल सय तुम घाली
 गोपबलदल यदि भायी कीर्तिमा मयम कहेमा गयी २
 बस घर कसली कीर्तिमा तर घर कीर्तिमा नयी
 नरणात घर कसमा कीर्तिमा वै तल कसली सोरी ३
 विष्णुपति कविपर सोरी शायिल सायक नल के गली
 हासिलि दूद गति शक्यतरण देवसिंह तराली ४

कवि आदिशक्तिक स्तुति करी ३३ (१ है देवी तो अत्यन्तर रूप
छह से द्युतरूप (विदिता) होकर धन केर तोहर शेष द्युत अति
एक होइतहुं तो अनेक छवि (रूप) धारण करैत
छह १ २) तोहर हं करी रूप उहुं से करी
कहवैत अछि उज्जर रूप कणी सरस्वती मूर्ति रूप धण्डी अ नवरूप
गगा (३) तो ब्रह्माक घरमे ब्रह्मणी कहवैत छह महादेवक घरमे शैवी अ
विष्णुक घरमे कमला (लक्ष्मी)। तोहर उत्पति के कहैत अछि को
आदिरात्रिकरूप शिकर)। (४, एकर रचयिता शिकर कविगण विष्णुगण
होसनि देवीक पनि राजा देवसिंह गरुडनारायण याक लोकतक अक्षर
शिकर

गोरन मण्डहुं कल सारी मण्डहुं नर
सायनि सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
दिन देवदत्त दियत धोने
रत्न मण्डहुं सारी मण्डहुं देवदेव लक्ष्मी सारी मण्डहुं
तिर नर नर सगार सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
होकेवी लक्ष्मी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
जोखी नगर नगर सारी मण्डहुं
मिनि नगर मण्डहुं मण्डहुं सारी मण्डहुं
रत्न सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
रत्न सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं
सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं सारी मण्डहुं

१ मोने मण्डहुं २ सारी मण्डहुं ३ सारी मण्डहुं ४ सारी मण्डहुं ५ सारी मण्डहुं ६ सारी मण्डहुं

रथा कृष्णक सन त्रिभि कलह करैत उथै १ है जान्ह हम
मुक्ता भा मण्डहुं नुत्य कल लोहर गत अण्डहुं अछि। तो किएक हमर
मानल सजभोल सारी निजैत उह धण २ एतेक भारी आनुरता
अनेक सांझा दिन देखार गोरि (२) है जान्ह सानक धनक एतेक लोभ
जे लोभ लोभ करैत नकरे शाभा (पानेछा) टिकैत छैक (२) वन बीच
वृजमे सजसमे भेट भेल ने गोर मुखलउजी (मुह देखला पर लजाएथ
सहेलजना लोह होइत उहुं तोहर एहि कुकर्मके हम छिपएवहु नहि
देखार कर दयहु है सल्ल सल्ले जाले करैत जतवामे नगर गला पर
लज्जित लोह होइत उहुं है जे सूर्य मल देखैत छह से राजा
मटलव मण्डहुं सजस थिक एकर मण्डहुं (अवभाग)मे रत्न जडल अछि।
हि नर साथ लोह दह साथ दह मण्डहुं भा जाएत। हमर स्यामी बड
कलर उथै सजस भारी सजस भेल ३ वरेकलहार करैत उथै ४
छादि लोह सारी रत्न लोहसारी रत्न सजस भेल सजस सजस रत्न
मण्डहुं सारी मण्डहुं है सजस सजस सजस सजस

रथा वरचस सजस सजस सजस सजस
है सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस
सजस सजस सजस सजस सजस सजस

1 सोपनिहूँ 2 बिलसए।

दूती राधाके कृष्णसे मिलना कहलक तहि पर राधा चर देन छथि
 (1) एहि प्रवासमें छथि हम तोहिपर तेहर छै तैं तैं सन्धिनि
 काज करए कहयह की जकरा म्यामी रहक दायर गेलाह सेह यदि पावक
 (जिअनिहार अए जए तैं अहं कोली बचाओन (2) हे सखें हमरा
 अधर नहि घटाचह अल्पित काज नहि करयह । एहिन्हि हमर पिता
 हमरा देन पकड़िकें लीश हाथमें लेये गेनह (3) लखन जैं हम कुलहा
 अए परपुरुषसँ टम करी तैं एहन जीवनक कोन काज कामकेनिक मुख
 पाएय छन भरि भा खान रहि जात जीवन भरि 4 कुलकासनी शत्रु
 अपने पतिक संग विनास करी कतहु कुबोट नहि जगयह घड़ी मालती
 की तैं मधुकरक संग विवास करन अकि लताहिमें लुझा जात 5
 विद्यापति कहै छथि कलक मकंद वधसोनाह पर प्रवीन छै दूख
 एहन काज नहि कर राग शिशिरिह रूपनारण तैं
 लखिमाटेरीक संग रहैत लीश

सखि हे सत नयन बहै

पर गुरुन पर न मय न दूख

वाटन भाँसि भाँसि भाँसि लेख गेहूँ नयन बहै

मनन दिहल लोचन गेहूँ नयन बहै

धवास धमन लन दूखअव एसन करय मन्द

कहुनाओ हंस गमन पर न मय न दूख

न हरी कहुँ किहूँ नयन बहै न हरी करय अति

अधिक न लीश पर मय करिह लोचन बहै 4

भन विद्यापति सुनह कुँवै माटसे मय न काज

बुझ सिवसिह रस रमय लोचन बहै लखने 5

1 मोही 2 मुखन का 3 सकल

शुक्लामिसासिका राधा अपन पौढता सखीकेँ सुन्दर छथि (1)
 हे सखी अइ बेला हो नला हम ओह कृष्णक लग तय करय घरमे
 गुरुजनक कोनो डर नहि करय मिलनक ने पचन देन छिअनि नाहिमे
 बिचहुँ नहि चकव 2 अन्धमे चलन लेख गहलासे राजमुक्ताक हार
 पहिरय भण्डिमे काजर नहि करय नहिसे अण्डिमे शैल आभा भाबि
 जात 3 शैल वससँ देह झणै लेख भा मस्तीमे मन्द मन्द गमन
 करय मजहि हजार हजार चान मगर सकसमे उणि नाओ 4 ने हम
 केकरो लखि वरय ने असोद करय जकरा देखदाक होइक से देखओ॥
 अन्धमे अधिक चोरी नहि वरा इन्ह थिक गरनय प्रेम करबाक रहस्य
 (5) विद्यापति कहै छथि हे युवती मुख कज सादसहिसे सकल होइत
 अछि एकर रस नलिनार छथि लोचन देवीक संग रसिक शिखरिह

रमा अङ्गरे पिना विमल

पुरुष कर्महि लीश नयन बहै दूख देन अंसलाड ॥

सिंहि पूरन देह न दूख देह पाव न पिउन सुगंध

अगर मयुही दूख देह नयन बहै दूख देह मय नयन 2

मोही कलक मय न की मय नयन बहै दूख देह मय नयन 3

मुन नयन बहै दूख देह मय नयन बहै दूख देह मय नयन 4

अन्ध विद्यापति सुनह रस रमय लोचन बहै लखने 5

रमा शिखरिह मय नयन बहै लोचन बहै लखने 6

1 बिस 2 लख 3 मिलन 4 कल सौख

बिनु रागम कान्हि रसिके घरनि मय के सखी पुँन अछि
 हे सुन्दरी लगीत अछि तैं विआकेँ बिरस कए (बिनु संगम कएनाहै) घुरि
 भइलै अछि पुरुष सिंह-सन (बलवान) होइत अछि आ' लारी

कानन वन्यत जयत हा तौर २ घनत कुल्लत त सैमर री। १
गुअ पय रीर रह चित तहि रौर सुमिहि पुशुय तेरु टागध तरि। २
कत पारे साधव साधव मन विराहंते मण्डरा दरसन दनि। ३
जल मधे ककल गगन मधे मूर आपल मन्द कुसुद कत दूर। ४
गगन गगन मेघा सिखर मण्डर कत तन गगन म कत टा। ५
भनतु विषादनि विषादन मर दुखे कत न नगन गगन ६।

कृष्ण मान कहने लगे। सभी हँसकर मनवीर लगे। (1) राधा
हाथ पर मुद्र रखने लगे। नरिखेरी नीर बहल गइल ठेक न कम
सम्भवित अति ने नीर २० नीर ४० तकत रहै न भाउ। जिन स्थिर
नहि रहैत ठेक, मन दौभाइत रहैत ठेक, एतेक प्रेमक स्मरण का का
ओकर तेह जग लखैत ठेक ३, २, ४, ६ नो करैत ८, १०, १२
मान सधाने गइल १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८, ६०, ६२, ६४, ६६, ६८, ७०, ७२, ७४, ७६, ७८, ८०, ८२, ८४, ८६, ८८, ९०, ९२, ९४, ९६, ९८, १००, १०२, १०४, १०६, १०८, ११०, ११२, ११४, ११६, ११८, १२०, १२२, १२४, १२६, १२८, १३०, १३२, १३४, १३६, १३८, १४०, १४२, १४४, १४६, १४८, १५०, १५२, १५४, १५६, १५८, १६०, १६२, १६४, १६६, १६८, १७०, १७२, १७४, १७६, १७८, १८०, १८२, १८४, १८६, १८८, १९०, १९२, १९४, १९६, १९८, २००, २०२, २०४, २०६, २०८, २१०, २१२, २१४, २१६, २१८, २२०, २२२, २२४, २२६, २२८, २३०, २३२, २३४, २३६, २३८, २४०, २४२, २४४, २४६, २४८, २५०, २५२, २५४, २५६, २५८, २६०, २६२, २६४, २६६, २६८, २७०, २७२, २७४, २७६, २७८, २८०, २८२, २८४, २८६, २८८, २९०, २९२, २९४, २९६, २९८, ३००, ३०२, ३०४, ३०६, ३०८, ३१०, ३१२, ३१४, ३१६, ३१८, ३२०, ३२२, ३२४, ३२६, ३२८, ३३०, ३३२, ३३४, ३३६, ३३८, ३४०, ३४२, ३४४, ३४६, ३४८, ३५०, ३५२, ३५४, ३५६, ३५८, ३६०, ३६२, ३६४, ३६६, ३६८, ३७०, ३७२, ३७४, ३७६, ३७८, ३८०, ३८२, ३८४, ३८६, ३८८, ३९०, ३९२, ३९४, ३९६, ३९८, ४००, ४०२, ४०४, ४०६, ४०८, ४१०, ४१२, ४१४, ४१६, ४१८, ४२०, ४२२, ४२४, ४२६, ४२८, ४३०, ४३२, ४३४, ४३६, ४३८, ४४०, ४४२, ४४४, ४४६, ४४८, ४५०, ४५२, ४५४, ४५६, ४५८, ४६०, ४६२, ४६४, ४६६, ४६८, ४७०, ४७२, ४७४, ४७६, ४७८, ४८०, ४८२, ४८४, ४८६, ४८८, ४९०, ४९२, ४९४, ४९६, ४९८, ५००, ५०२, ५०४, ५०६, ५०८, ५१०, ५१२, ५१४, ५१६, ५१८, ५२०, ५२२, ५२४, ५२६, ५२८, ५३०, ५३२, ५३४, ५३६, ५३८, ५४०, ५४२, ५४४, ५४६, ५४८, ५५०, ५५२, ५५४, ५५६, ५५८, ५६०, ५६२, ५६४, ५६६, ५६८, ५७०, ५७२, ५७४, ५७६, ५७८, ५८०, ५८२, ५८४, ५८६, ५८८, ५९०, ५९२, ५९४, ५९६, ५९८, ६००, ६०२, ६०४, ६०६, ६०८, ६१०, ६१२, ६१४, ६१६, ६१८, ६२०, ६२२, ६२४, ६२६, ६२८, ६३०, ६३२, ६३४, ६३६, ६३८, ६४०, ६४२, ६४४, ६४६, ६४८, ६५०, ६५२, ६५४, ६५६, ६५८, ६६०, ६६२, ६६४, ६६६, ६६८, ६७०, ६७२, ६७४, ६७६, ६७८, ६८०, ६८२, ६८४, ६८६, ६८८, ६९०, ६९२, ६९४, ६९६, ६९८, ७००, ७०२, ७०४, ७०६, ७०८, ७१०, ७१२, ७१४, ७१६, ७१८, ७२०, ७२२, ७२४, ७२६, ७२८, ७३०, ७३२, ७३४, ७३६, ७३८, ७४०, ७४२, ७४४, ७४६, ७४८, ७५०, ७५२, ७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२, ७६४, ७६६, ७६८, ७७०, ७७२, ७७४, ७७६, ७७८, ७८०, ७८२, ७८४, ७८६, ७८८, ७९०, ७९२, ७९४, ७९६, ७९८, ८००, ८०२, ८०४, ८०६, ८०८, ८१०, ८१२, ८१४, ८१६, ८१८, ८२०, ८२२, ८२४, ८२६, ८२८, ८३०, ८३२, ८३४, ८३६, ८३८, ८४०, ८४२, ८४४, ८४६, ८४८, ८५०, ८५२, ८५४, ८५६, ८५८, ८६०, ८६२, ८६४, ८६६, ८६८, ८७०, ८७२, ८७४, ८७६, ८७८, ८८०, ८८२, ८८४, ८८६, ८८८, ८९०, ८९२, ८९४, ८९६, ८९८, ९००, ९०२, ९०४, ९०६, ९०८, ९१०, ९१२, ९१४, ९१६, ९१८, ९२०, ९२२, ९२४, ९२६, ९२८, ९३०, ९३२, ९३४, ९३६, ९३८, ९४०, ९४२, ९४४, ९४६, ९४८, ९५०, ९५२, ९५४, ९५६, ९५८, ९६०, ९६२, ९६४, ९६६, ९६८, ९७०, ९७२, ९७४, ९७६, ९७८, ९८०, ९८२, ९८४, ९८६, ९८८, ९९०, ९९२, ९९४, ९९६, ९९८, १०००, १००२, १००४, १००६, १००८,

राजा कपलराज जल सिंघादेन मंत्रिभूषा दधि भक्षण

कृष्ण मान कहते हैं कि तथा हृत्का मन्त्रान्ति छि
आकाशमें मेघ गरजन विकट गति रत्नदुक लेल चोरी नहि बहराए २
(अन्तार नेहन जै) अपनी देह अपना नहि देखिए एहन धर समयमें हम
अपन घरमें बहराए लोहरा नग भएलहुं ३ हे बान्ह तैं छनो भरि
लेल मान छाडह लोहरा लेल हम पाषा सहरमें पड़लहुं ४ अगम भयाह
यमुना नदी पार का अइनि ५ दनु स्तन मानह न सो भाग गेल लको
बने नदी पार कएल ६ हे कान्ह भनुगति देह, कामदेव समर भेलथु
हरिहर होअस १ लोहरा सन नाग १२ किंक पुरुष जगनमें भेल नहि
भलि, १३ विद्यापति कहैत छथि नारीक ई स्वभावे थिक ओ भयन
भूमिअल कामला युक्ति हार एवट होन अछि नखिरा

हमने एक-दूसरे को प्यार करने में सफल हो गए हैं।

 $\frac{1}{2} \text{ mol } \text{Fe}_2\text{O}_3 \cdot x\text{H}_2\text{O}$

આ રીતે દેશના દુધના બે મહત્વના સ્ત્રોતો એક સાથે મળી

[illegible]

6.62 $\psi = 1/4$ at $x = 0$ and $\psi = 0$ at $x = 1$ and $x = 2$.

॥ गणेशाय नमः ॥

ਸੰਖਿਆ ੬੬੬ ਮਨ ਜਾਣ ਨਿਯੰਤਰਣ ਕਮਿਸ਼ਨ ਸੰਘ ੧੯੯੯ ਸੰਖਿਆ ੪

ਦਿਲ-ਮੀਲ ਕਰੀਓ ਸਾਥ

१. श्री विद्यादेव सुप्रसन्नान् श्रीगुरुः तं ह स्मरति ।

1. $\frac{1}{x^2}$ 2. $\frac{1}{x^3}$ 3. $\frac{1}{x^4}$

कृष्ण विदेश जएवा पर छथि राजा तबिका शोकवाक अनुरोध
सखीसँ करैत छथि 1. हे सखी हमर पिना विदेश जायपर छथि।
हम कुलकामिनी माय हुनका किछु कहयनि से उचित नहि होएत (ने
तोरीहें अजाए नबलिआहु आउं) तौही हुनका उचित विचार दहूत। 2)
गुरुननै है अनुमान नहि कए सकताह जे हमरा कतेक घटना होएत। ने
तौही पिआ लग जाए कहूत गए 3) ने तंहए मानताह ने मथु किछु
दिन रहयु परदेसहिमे हम पूरे जन्मसँ जे कएने छी तकर फल भोगव
परन्तु बांकमे ने उपहास लिज्या हो तहि तहिनें बचकक उपाय करयु
4) विदेश गएताह तेँ ओ वधभागी होएताह जखनहि ओ विदेश जायक
विषय करताह तखनहि हम अग्नि कुण्डमे धाँसे एएन्याय करह। 5
कवि विद्यापति एकर रसयिता थिकह।

(5) भाषागीतसंग्रहक गीत

एन दिन अउं माइ हम छल भान कजल पारि विराहनि राख पर 1
रहेँ दूसर दुख विहारे माँहे देला पिआ दिनु वसव जगर रात भेला 2
कुलिस समान इहय गोर राह दिअ विमलख विहारे लहे जाइ 3
कत दिन अगे स्थिति विहारे होएत मन्दा हलधर जाने लुगओव चन्दा 4
हारे हारे कतएक हम छल साथ मानल विधेयस नहि होय चाहे 5
भनइ विद्यापति न करह दन्दा विर नहि राग दिअस भान मन्दा 6

1 विहारे

राधा सखीसँ विरहस्थिति मृतयैत छथि 1 हे सखी एतेक दिन
हमरा लगैत छल जे विरहिणी प्राण खोज रहल रहैत आउं 2 विधाना
सह असह दुख हमरा देखनि थिकह तेँ हमर वसन्त लगव कलिये गेल।
3) हाँ हमर हृदय वज्र सन आउं ने पकह विद्यापति भनहुँ धर कहि
नहि गेल 4) मति लहे वलोक दिनु विधि नाम रहन पतेय दिन सेध
राजकेँ झुपने रहल 5) हाँ हाँ हमरा कलक ने मन्दाय कल आउं
बहुक जे विद्यापति कहय केओ गोर नहि रहैत रहै 6) विद्यापति
कहेत छथि गीतक नहि करह दिनु लीज गेओ मन्दाय विर नहि गे 7
आउं

मन्दमन्द ३४ लीजे सौन मन्दन लीज्यो कल देल गेल
कुं कल भौ लीज्यो कल देल मन्दन लीज्यो १
रूप विर कल देल मन्दन लीज्यो कल देल मन्दन लीज्यो २
कल देल मन्दन लीज्यो कल देल मन्दन लीज्यो ३
मन्द विद्यापति

कवि नादिकाक रूपक वपन करत छथि । नन्दनगलमें
एकटा मानु लली जनमल। तकरा कामदेव वाला बन्कि पहिलेन रहलहु
2) ओ लली फूल अ फेरक भारस नम्रादे गेल पुरुषरूपी भरस नहिमें
अनुक्त भए गेल । 3) ओकर रूप की कहू कहल नहि जा कृष्ण मन
परम सम्भ्रान्तो छथि मुग्ध भए गेलाह । 4) ककरा नजरि नहि लागे
जाइक ते रोमावलीक रूपस काजरक रेखा दल छैक मानु अन्तर्ग
अगहीन कामदेव। केर मी रति शरीरी भए गेलहु विद्यापति ।

१५

हामक चतुरिग मन मानहु। उपमेन अलन पुनैम के लन
मन मुन माधव से मखि मोरे । १) कामा बाइक छलही मोरे ।
२) कामा बाइक छलही मोरे । ३) कामा बाइक छलही मोरे ।
नन नल मुनल गुन भविष्यक मन्त्रो पढ़ान गेल छल । ४)
नयन नरगरी मान ५) नहि म का जगो ६) नहि म का जगो ७)
भामि विद्यापति

सारी कृष्णमें अनुगोध वपन छथि जे गणक फेरहु लहे कनादे

1) हमरा सबी हैसधामे चतुर अ मर धरल रहलहु मोरे ओकर
मुन पुनैमक धान सर छैक । २) हे कामदेव मर ३) हे कामदेव मर
लोह्य धारिक उदरि चरित अछि । ४) कामदेव मोरे म नयनि मोरे
रूप ओ गुण दुनू लोहू लीन लोकमें दुखैम ५) ६) कामदेव मरक जे
गुणोत्कषे मुनैल रही से मर हा अनुगवम यशसे दूखाना ७) ओकर
नयन नरगरी कामदेव जीने छैल छथि अ मन होलन मोरे जे ओकर
रूप ओछेस पीछे ली

१५

चिरानेन वसन वपन ३ रति छिनु अति
काम कलक हन पनल कये अन्तर्ग अति
कलन सखि छिनि सखल ३ रति रूप विमल
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
हामर काँचेवाल कुलनल कुमुम अति मोन
अनट रति अति कलन नखलायनि पाली ३
मद मोह मानन सुंदर दल लोचन जोर
मद लोचन नखलायनि अति चकित चकित ४
विद्यापति कछि गमोल वृद्धा रसमन्त्र
दुर्गम पर नयन लोचनद्वि कलना ५

1) गजना विमला ३ दुर्गम ४ कलना ५ सुंदरी ६ लोचन
अन लोच

कछि लोचनक रूप वपन ३ रति छिनु अति
मद मोह मानन सुंदर दल लोचन जोर
मद लोचन नखलायनि अति चकित चकित ४
विद्यापति कछि गमोल वृद्धा रसमन्त्र
दुर्गम पर नयन लोचनद्वि कलना ५
कछि लोचनक रूप वपन ३ रति छिनु अति
मद मोह मानन सुंदर दल लोचन जोर
मद लोचन नखलायनि अति चकित चकित ४
विद्यापति कछि गमोल वृद्धा रसमन्त्र
दुर्गम पर नयन लोचनद्वि कलना ५

१५

माना वपन मोर मान रहल त नहि लन नर नहि कलना
लोचन छिनु अति कलन नखलायनि अति चकित चकित ४
विद्यापति कछि गमोल वृद्धा रसमन्त्र
दुर्गम पर नयन लोचनद्वि कलना ५

१. न तन्नि २. परकारे ३. विहारि!

[illegible]

कथं पण्डित गुरु संसर्ग युक्तः, कतः पीडितः स्यात् इत्येव भवति
 मुनिना च युक्तिमं भक्षणं वसन्तः मलयं पठन् वरुणः स्यात् १, २
 गते सुधीः लिखितं च युक्तं च वसन्तः मलयं पठन् स्यात् भवति ३
 भावे तस्यैव भवति ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३,

† अ.पि.न. ५.

लान्येक अघत घेरहउदना पथिक दान सुजित कौन उथि 1
 है पथिक हमार पहुँकें बुझाएँ कइयलि जे हम कलेक दिन धरि जगजग
 एल अश्वमे वझओले राखव 2 कामदेव कुपित छाँथे वसन्त से अवि
 गेल मलजगितेन कहैंत आँरे समथ दुखद भए गेल 3 हम शुद्ध
 स्वभावक लोक जालि नहि पओलहु न प्रेम करवाक परिजाम की होएत
 बुझैत रहलहु जे थिया अश्वमे छाँथे 4 पिरहउदनामे राखे जगजग
 धितचैन की हमरा हुत्कामे न प्रेम भेल से गही पराभव लेल की 5
 दियापति करैत उथि है सु दरी सुनह पूर्वपुण्यक दने मुरारि आवि
 मिलथन

११
 निम्नलिखित विवरणों के आधार पर सही प्रकार का दंड
 लगाएँ। यदि सही दंड नहीं दिया जा सके तो सही दंड
 बताइए। यदि कोई दंड नहीं दिया जा सकता तो
 बताइए।
 १. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 २. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ३. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ४. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ५. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ६. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ७. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ८. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 ९. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।
 १०. एक व्यक्ति ने एक और व्यक्ति को धमकी दी कि
 वह उसे मार देगा।

1. भस्मरस 2. तिग्मरस

[illegible]

कामदेवक परिणाम विस्मय होये ॥ १ ॥ कंट मन्त्रक लोके एकर
दिस ताकि ताकि हुतका अंश भाव समोचन सकेत नये मन्त्रक
अममान कामवासना बाला यकिर तं प्रेम वदाओल लोके न मन्त्रक
कोला पूरा ॥ ४ ॥ पितृक मन्त्र वज्रह्म अधिक कठोर छाने ओ कखन्ह
अपन विधरीन भाव नहि छाने छाने छाने को न ओर वज्र कामलवायेन,
नहि छाने ते हमरा नहि छाने सकेत छाने अंश कामदेव ने हुडलाइ मे
फेर गीलाइ नहि

१५

विश्वसुपाय हरन लोके ओर मन्त्र तनय विभ सन्नि मेल रा
सुन सुन सुन तन्त्रिक नाल खडन दिने दिने छाने मेल रा
पंडित दीसपन आउने गेल भादिक देस मन्त्रक भेल
मुनरुपजन्म शरी तनु मन्त्र मन्त्रक गेल विषमता मार ५
मन्त्र विषमता मन्त्र मन्त्र सिद्धि मन्त्रक मन्त्रक

द्विद्विणी विनाय करीत लोके ॥ १ ॥ मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
लोके मन्त्र अंशमाल एकर मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
दुखता मन्त्र ॥ १ ॥ मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
परन्तु मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
मन्त्रक मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र

॥ १ ॥ मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्र

१६

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

१७

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

१ देखने २ कपारे ३ मन्त्र ४ मन्त्र ५ मन्त्र मन्त्रक

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक ॥ १ ॥ मन्त्र मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
॥ २ ॥ मन्त्र मन्त्र मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

१८

मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक
मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक मन्त्रक

१९

राधा सकलस्थलमें लहि अथवाक अनहत कण्ठके हैत छवि
 घन मीठ बन्धन बरिसवैत लपौ क्युक रावि धन अन्धकार। 2) कन
 टिकन समायहुमे हम नीले रसक चौर पाँहिरे सनक अनुसन्धेन पावर
 सीत 3 बहुत साहस कर अवसर पाँवे सकलस्थलमें लहि गेलहु
 किन्तु सकलस्थल शून्य छल तो लहि आनह 4 लोरी की कहवहु
 हमही बकलैत जे ऐनक वचनके सत्य बूझल। 5 जखन अवसर दिनि
 तेन लखल आव कहिके की होएत अपन परिचय तो अपनहि देबह 6
 किछु किछु लख कहि कहि हमरा अनर परगरीत छह। तोहर भावने इदय
 मभ बालक साही छहु 7 विद्यापति नाहि कलक स्थिति कहैत छथि
 जखन निषाद कर सकी लकरे हा भक्षण दवाक छाही

हरि हरि माधुर यत्न भास कल छैन सौन्दर्य हरि नान्त
 हमर सख्य हए पुष्टिह सखी जियहुने परमान होएत कि नान्त
 लग दुखन सित भनि छोट होअपी कि नही जखन परितह
 पुरन कि नहि मत शस्य जे कलक स्थिति नीत बचन 4

हरि हरि २ माधुर यत्न

दिरादिणी राधा कृष्णके सखी हर सखद पश्यैत छथि
 हाए अश्रुपाक बगटहि जे आस नान्त छैन भाँडे, साने नहि अछि 1) स
 कनेम दिन उपासन रहत 2 है सखी न हमर सख्य दू होएत
 पुष्टिहुह जे जियेन दुखक दणेत होएत कि नहि 3 हमरा न दह
 निषाद होइत भनि छित बह विविध 4 है भाँडे भद ई विविध भा
 ग्यपाक चाही जे दणेत होएत कि नहि 5 सख्य भवस भा गेल 4
 दणेतक मनोरथ पूरत 3 नहि पुर नहि सख्यने पदल पाए कथन
 हितोद खैल रहल भाँडे झूला अक छल एकर छन भोहर का
 गल नहि

दूहि रहिऊ करिऊ मन भात नयन नारासत इतल न भात
 इदय इतल न हरेनुख हैन सुदिदानी लोचन भवत सने वरे 2
 वि करु कह कह धाय कत नहि कोरु भात जजो आइलि नहि 3
 गणदि न पारन इदय कलस मुन्दनाहु बदन वेकन होअ हास 14
 भनहु विद्यापति तीर नहि होसे भूखल मदल जगद्वारा रोस 5

राधा गुरु ऐसक कारण अपन असमजस स्थिति सखीके कहैत
 छथि 1) है सखी कलहसे इतल रहैत छी मतये भात दिस लग जाए
 चाहैत छी किन्तु दणेत लेल विनासन नयन वनत नहि मात्रैत अछि
 2 कान्हू मूढ़ टिथिनहि इदय दह लाइउ 3 कसिन्ह वनलो वीरक
 कसनी धरि धरि मसरि जाइत अछि 3 है सखी की कहैनुहु। एहि
 ऐसके कनेक विषयव भात कर वैसिनहु ते विद्यापति होइत मुदा विवर
 छी सही काल नहि होइत अछि 4 हादिक उल्लास विषय भात नहि
 होइत अछि। प्रेमजल्य पसलनकाह होरी गुललो मूढ़ पर जाइत जाइत
 अछि 5) विद्यापति कहैत छथि है राधा लख दोख तोह भूखल
 काभटे अनस उमल 3 है न स सैन रहैत छथि

विद्यापति दणेत नहि
 नहि उमलने सख्य जने होइत कल नहि 1) स
 दणेत दणेत जे विद्यापति नहि दणेत भात
 करतनगत भनत रोएत छैन लोचन लेवत 2
 धरति धरति नहि नहि शरति सखी नाम
 प्रेम भवत 3 सखी भात 3 नहि लख
 विद्यापति कहैत छथि है उमलने कल नहि की परकाय
 विद्यापति कहैत छथि विद्यापति कहैत 4

देखनि गुरु

सखी कृष्णक राधाक विरहदशा सुनईते छथि । हे कान्हू हम्
राधाक देखल तो बिसरि देखहुक धन्यो सखसं पड़नि भाँडे भक्तक
वात कफरा कहत २, ओ तोहर दशैतक माराम देखि पर दैसले वात
तकैत रहैत अछि तरहन्थी पर भुड़ी रखत कजैत आ चितान सैत रहैत
अछि ३, धरनी पर हाथ रोदि जहाँ कान्हूक उठल चढ़ैत भणैत कि
मुरुफिक ठामदि खसि पडैत अछि, तेओ धनक महारसम मारले राधा
तोरे नामक स्मरण करैत रहैत अछि ४, विभ्रसं विपुसंले भ भभभसंले
कोन उपाय कतए एक तँ विरहक सन्तपसं जरि रहलै भौ ५ दोनरो महु
पर कामदेव दारुण प्रहार करैत छथि ॥

भुक्ति हल माधव तुम भवन्त्य जयम मरु पोरे मरु चरु
अपति भारति तदि वृक्ष भव धन्य सखसं हटव राधा १
नीह हरे कारी न दुखह भक्त पदमद भव क म राधा २
रहा दखन तदि समय सोभन मरु मारले विपुसं तरु ३
भनइ विषागनि मृग पर नाँ कयलै उम पदमद दु ४

उप १० भारति न दुखह

राधा कृष्णक इच्छल दैत छथि १, हे मरु २ हम् सखि ३
जे तोहर दैस कहत छहु मरुसं मरु भा सखि ४ तो
सधन वीरभक्तक अपन आनख छान (भारत) तोरे दुखित भू तोरि बिल
तँ भक्त सन १५ किन्तु हटव पोधि सन ३ २ कान्हू तो नामक उह
परिणाम की होत सै तदि कहैत छहु वनहु, गनल दीर भव तदि कस
सकलह प्रेम निगदि तदि सकलह ४ गरिम तँकर दीप रस ५
समयक साभाव शिक भसर मालिक सभ रस नूसे भोका नद
नयान दैत जाउ ५) विषाग १ कहै ३ कोरे हे मरु इति रुनइ जपति
प्रेम ददा गगने टिज निकल भौ ३,

तेन तर लखइ सँसे जसि ३३ वषागनं गेल विविआन
तँदे भक्ति हरे भगवि विवि हापु भागे मोर भक्तहु पडाइ
तँकरि विवि पाँदरुं चाटे दैत हरे जखने दिगम्बर आइ
लखक तदि गोरे तँदे भवए राँदे सखे सैलि ३४ १
महु हे मरु मरु तदि नाथे नही दस उगत नमाइ ३
पापर शोभन खल दूध घेइल फलि हर लखनि तमु गोरी ४
सखि शयनहु करतल बलभा मरु हासे हेम गोरी ५
रामरि सखर बदन वगारल आंचर छलल गिभनस
टाँके विविभन भौरी कच चढवाइ भौ कि कहव उपहास
गोरे सखी जिति इस गोर धीर तखन जँजल सन भौ
एक हाथ लखनल ददल दोसर गिबल गदग गोरे ६
भनइ विषागनि मरु भनइति भौ वर सखक भौ
गोरे मरु न १ २ दूध मरु वर पुन भनइ वर ३

विषागरी विरहदशा सुनल जौ अछि महादेव पाल नि रदि
विषाग वरु मरु १ तकीसं दलीन काल मथ दूध भोलनि त प २ कसि
पदल भवति धाव कोनो शोभा सखी मरु तोरे वर मरु ३ मरु ४ मरु ५
६ मरु ७ मरु ८ मरु ९ मरु १० मरु ११ मरु १२ मरु १३ मरु १४
मरु १५ मरु १६ मरु १७ मरु १८ मरु १९ मरु २० मरु २१ मरु २२
मरु २३ मरु २४ मरु २५ मरु २६ मरु २७ मरु २८ मरु २९ मरु ३०
मरु ३१ मरु ३२ मरु ३३ मरु ३४ मरु ३५ मरु ३६ मरु ३७ मरु ३८
मरु ३९ मरु ४० मरु ४१ मरु ४२ मरु ४३ मरु ४४ मरु ४५ मरु ४६
मरु ४७ मरु ४८ मरु ४९ मरु ५० मरु ५१ मरु ५२ मरु ५३ मरु ५४
मरु ५५ मरु ५६ मरु ५७ मरु ५८ मरु ५९ मरु ६० मरु ६१ मरु ६२
मरु ६३ मरु ६४ मरु ६५ मरु ६६ मरु ६७ मरु ६८ मरु ६९ मरु ७०
मरु ७१ मरु ७२ मरु ७३ मरु ७४ मरु ७५ मरु ७६ मरु ७७ मरु ७८
मरु ७९ मरु ८० मरु ८१ मरु ८२ मरु ८३ मरु ८४ मरु ८५ मरु ८६
मरु ८७ मरु ८८ मरु ८९ मरु ९० मरु ९१ मरु ९२ मरु ९३ मरु ९४
मरु ९५ मरु ९६ मरु ९७ मरु ९८ मरु ९९ मरु १००

समस्त सग विचके साथ एकट्ठे भण्डिमे का भर कर लगतीह तें एक हाथ
अधिक आगिमे भर लगलति दोसर हाथ जलक गंधि हाथ लगलति । १
विषापनि कहेत छथि हे मलहति सुन्द ओ वर रहलहि भोर सरलमणि छथि
गौरी सहित शिव अभय वर दथु न अहंक मनोरथ पूरजो ।

११

कजोने वर आनन नपसिआ गेने सुगुणि भेनि दन्ति रङ्गरजिआ
नयन मनले कोजर कहे तालीव जट गडग गंध केस दुखभाँद ।
भूत बाँधानी कतए जमाओव पाँच वदन महुअक कहे पाओव
पाँच पिताक मुसरी सरे गबए बाघछान जठन किछु न सोहए ॥ १४ ॥
अनहु विषापनि ओ वरदायक दथु अभय वर ओ नयनायक ॥ १५ ॥

एक पदोसिनि शिवविवाहक वर्णन करैत छथि (१) के मतवन्ति
एहन नपसिआ जोगिआ जेने नैओ भाषय जे गेने एहि ठोके
रंगरजि क बुझि एकरा पर मोहन आ गेलीह (२) अगिमे भण्डि छाने
कातर कतए करवनि जगमे गग ओ गंधि छथि बुनासोन कोला
करवनि ३ वरिआनी अछि भूत नकरा भोजन कतए कर दैक भूत
पाँच हा छथि महुअक कोल मुसरी होएन ४ हाथमे पिताक एक
प्रकारक धनुष ५ ने मनोरथ ओरह नुनक स्वर गलति की दानक
छास ओटने छथि ६ कोनो शोभा नहि दैत ओर ७ विषापनि कहेत
छथि ओ वरदायक शिवन ओ नगरक स्वामी अभय वर दथु

१२

अमे सुगुणि छाने महुली सग मर १ होने पजलने मरी
वले चले चपल कलहु अमे २५ मर के निनाई
अदि नहि नहि जवनामे वर रसली कहे ३५ विषापनि
नपसि नीचन गेल मुनी नै करन मरे भेलहु दू ४

१३

दूती कृष्णके अनहन दैत अछि १ सुन्दरी राधा मिलनक
आशंस चलि आइलि आभोर सकेतस्यसके सन देखि घरिके चलि गेलि
२ जाह जाह हे चंचल कान्ह आब तें नो मथी खाए कहबह तें तोहर
वान केसो नहि पाँतेआभोर , जें तारा अवकाश नहि छलहु तें पर
कामिलके विश्वास किणक दैबहक ३ यौवन सभ दिन गंधे रहैत छैव
हमरहु एक दिन जौवन जगल छल किलनु भाव ओ सूति रहल लाली
कमणे दूती भेलहु ।

१४

दीक भण्डिहें ई भेल ओर की छनि जजो न विजाने घोर
जलहि जगघ छर न होए पार हरी कलहु रुपमजोव एमर
हठ तेन मथय कए मदि पर सवतह वद दथु पर उपकार १
कोरुके विभावे वरिहभोलहु हार रज्जव चीज पयोधर भार २
छुड ननु हलह जीव जजो कज वामादुरकी नहि भय लज ३
आइति डोहन गरिम वेषन शिर नहि रफा ओथेर ओषकार ४
अनहु विषापनि ई रस नान विषादि जोगिआ देख रज्जव ५

१ उपकार २ नप विषादि

नहरा वरदा सगल राधा लालि कृष्णके जहेत छथि १ अन
नहि काल ते वर २ जलहु तें घोर नहरा विषा ३ जल ४ ति ५
जग कलहु तें वर पूरे साव एर लहे ही न हस हस कोनो सापसी
नहि ६ कलहु धिक्क दोकन डमारे तव लछापर अदि देवा ७ है
जलहु हठ जलहु हमरा ८ को दैह भावक उपकार वर सगल पघ
वस्तु धिक्क ९ धिम की कपुदेक हमरा ई हार वरि भाँलने आ लहे
पुष्ट स्तनक धरदलति १० न हमर जणक कात छहु तें लकरा छलहु
नहि कास दुरके न डर होइन छैक न ललत ११ जे भायति एरा मे
पवन हो सकत छनि पाँचन लछापर करज लाली अधिकार अस्थिर वस्तु

१५

शिक मं स्थिर नोहे रहैत अछि, अनुचित करग्रह तँ बालक पाला छिनार
जएतहु, १ विद्याधरि इ खल कर रस जनैत अछि नहिमादरीक
परि शिवसिंह।

52

चानुर सरदन सीधे चन्द्रमणि सेवति कुसुम कामल हरी ॥ १ ॥
 तिहारि न करिष अथ मधुपान भानु दिवस वाइ दिअ चिहान ॥ २ ॥
 दासि होख मने लिखि लेह नाम, अखल बलि टार न पुरिअ काम ॥ ३ ॥
 मृगमद निभक छामे बाँह गेल चान्द कजवक मरुत हाँह लेल ॥ ४ ॥
 बुझवने नयन निरञ्जन भौन कुनए नार छानिने ह्य गेल ॥ ५ ॥
 फाल न भानक देव विराध पर छानि न दुख निअ आनख ॥ ६ ॥

राधा कृष्णक जितुर कामधामक वनेन करैत उटि ।
काहे तो बाणार पहलमानके फराओलकर मझबनो रह भा हम सिंगारक
फूल सन ललक अंबला की २ हमर मधर मधु तेना लोहे पोटह न मझ
रम विशेष भए गए सगल दिव्य तेन हमरा पाण दात देह (हमरा)
बीधा देह । ३ हमरा पाण दात देह न हम लोकर दसी भ मझ
बाँहखतमे हमर नाम लिखि लेह ४ बाँहखत क ले म गी व ५ ६ ७ ८ ९ १०
से सांगे तो हमरा बाँहखतु जहि बलबद्ध हम सबला जगल विहदु हमरा
बलि देने लोकर जगलरा ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
होइन अछि ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
जाहि लोहे के बालक काही दाम भोगल देखल १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २००
हमर विधाने दाम उछि न तो हमर पाँखल लोहे सुनैत २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३००
लाभ देखैत ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४००

1.4

$\frac{1}{2}$
 $\frac{1}{2}$
 $\frac{1}{2}$

1. नृत्य रंग हैरि हैरि तिल्लह २ सोभई अवनन भावन धानि कल रोभई ॥
 3. भूतल विहुर हवारे भरे पकई जलि कलकाचल चामर टरई ॥
 4. येरा एक भव कलक नोरे रांई निई जजो नृत्य रूप नयन भरि विपई ॥
 5. कल परदादिभ लहि विवाइ नन लोई समदल कहांई ॥ १ ॥
 6. भरे कलक काठ कालेल नृत्य नृत्य धाने लोई रनोले नोभई ॥ २ ॥
 7. भवई विहुरपनि ३ ॥ ३ ॥ नन विहुरिह ललिता नैह ॥ ४ ॥

शु. ज. नै. सो. १ मं. १ नृप सिंघसिंह

सखी राधाक प्रिरहदश कृष्णक सनघैत छथि ॥ १ ॥ तोहर बाट
तांकि तांकि राधा नीलम सुनैत लोह भांछि भूखी झुल मोन कजैत रहैत
आछि ॥ २ ॥ फुलन केशगशि ओलरि ओलरि जाय पर दित रहैत तैक
जेल सखिवाक प्रीति पर चालर होलाओन सजुन हो ॥ ३ ॥ हे कान्हू आव
तोहर राधा रज्जु और लखन जेहि सज्जन जे तोहर रूप और भांछि और
डाक पीयर ॥ ४ ॥ कान्हू दुइद्वैत मुझद्वैत विष्णुक हमर बाट नहि
परीअहुन आछि ओ कान्हूक समझ कहि पछिअनबहु आछि जेतेक बहल
लोह हो ॥ ५ ॥ हे कान्हू तोहर हृदय बसहुन जालीर खु राधा तो मम
सुता ॥ ६ ॥ कान्हू आछि प्रियतम ओ बह लियेव जे प्रिय ॥ ७ ॥

[illegible]

१. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3}$

2

कृष्ण आपन पथम ऐसक वर्णन भिन्नके सुन्दरत छथि । हे
 मित्र हमर मन कामदेव बोझ लेलाके बिसरल चढ़ैत छी किन्तु देखि
 नहि होइत अछि: २) आइ हम एकटा काँसेली देखल ने देखल से कह्य
 कठिन। भाव कहल उपाय कह भहिमें फेर दूजैत होअ। भोकर देख
 बिजुलीक रश्मिसन (चक एक गौर छल जेना विधान दसो पद ३
 बिधज होथि ४ हे मीन ओकर पुष्ट पुष्ट स्तनक रग पीअर छल जेना
 बेलक फल पर सोनाक मनर पसरल हो। ५ ओ दइवक सखीभक्त
 कान भा मुखिके हमरा दिस ताँकि एम मज्जाक सिद्धाँति अछि, उथि
 ओकरासँ भिन्नक एकटा उल्लस भछि यमुना नदीक तट पर कहुआरि
 धरइ, नाथिक वनइ ओ टही दुध बेचा अछिओन आ हो ओकरासँ दान
 (घटबारी घट शुल्क) लेबइ कामदेव दर्शन आ स्पर्शन दूक मनोरथ
 पुराण देखुत।

बाहुक नयन मर १ मल हल हल
 पिबल कलल हल १ लले भ्रम भ्रम
 शिला १ लल लल लल
 मल न लल भोला न लल लल
 लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल

१ यम नयन मर १ मल हल हल लल लल लल लल लल लल
 वेमेल २ लल

कृष्ण आपन रश्मिद ३ मल मित्रके सुन्दरत छथि । हे
 बाहु नयन बाण हमरा दिह छल देखल नयन जेना लोहित कलक कल

(मुख, पर भ्रम (भछि बैसल हो १२, हे मित्र राधाक दर्शन भेल।
 देखि भल न) बाहु देखल छी जे धरती पर गल रजि गेल ३ भोकर
 पुष्ट स्तन देखल जे सहज नीरवणी छल नागल जेना कामदेव सोनाक
 कटोराके भँजि देल होथि ४) ओकर चचन नयन लगीछ जेना दुइ
 खजल परम्पर मिलैत हो विद्यापति राधा ओ कृष्णक लोनाक वर्णन करैत
 छथि।

५५४

अतना मानस अतना कल मान वि ३ लली लल देह अल
 हल न वल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल
 कल कल सुन्दर कल सल सल सल सल सल सल सल सल
 दुली लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल

सखी गुण एम कर विमल भौले राधाके पुछल छल १) हे
 सखी की बात थियैक ने आइ लोहर मल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल

५

दुल सखी सुलल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल
 लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल लल

राधा सर्वाधिक अपत प्रेमजगत् विकलतः सुखेन इति । ३. १. १
कान्तक नाम सुखेन राते, केभी कहल जे भी देखिण चकका प्रेमजगत्
इति ते केभी कहल नाम कचक प्रेम। इति २। भाइ सखा राधा हुनक
दशन भेन देखित देरी भी हमर हृदय हार लेबदि । ११। ई सखा की
पुछैत एह मनका की कदवीक तो होक नालवह हमरा कान्तक दशन
भेल। १४। लाज ततेक भेल जे आधी रहित हुनका देखि नाह भेल
नर्याहजे मउ कान्तक प्रेमद चक होकर नालव

महामेल सत्र का अनुमान ४ गणदे द्वारा तैय्यक निरमास ३
कैतदे द्वारा सकल संस्थापन रमाते नगणय रनिक जवु जाले ४

शिक्षा आ हेअर हृदय हरिण थिक नों भएअ यौवनरूपी ए
(अभयारण्य) में एहि हरिणके शरण देअ

DE 12 7 2

हेमजला हिमकर रति गेल दुहु टिसें गुरु मकें सेव नेल
देखति रसनि पुरुष पुने भाल रति रस अंकुर पोखण नाल
बोधलभो रहु करण कल लोभ तादि उपर नालास सभ
हैसनि मुमुक्षु किछु भाव बुझाए अति न्यदस १ कुसुम छिंदे भाव २
भावक भवमल भवरा दल कामक चानर के लहि भव ३

नौवक नःशिकाक रूप धा मग्धा भा ओकर दणोन अऽन छति

१) सोनाह लता (नादिका) के देह में जो नख मुक्त प्रकट भव्य नखर दृष्ट
दिस गुरु आ शुक, कर्णभूषण, सेवामे उपस्थित भव्य। २) भाद
पूर्णजन्मक पुण्यक बल मुन्दरीके देखल रहि रलक सहर, कामादेक
लनिके ठेके देखक (३) बालन रहलहु पर गद (केशवार्थ) मुक्तरी
घालक लोभ करैत जईत नखे गदक पल लता सभ जितनमन अईत,
नादिकाके नखेक कामादेकर जईत गलेक जे ४) जो मधुकी अंगन
भाय प्रकट रहैत मुद लनिके विदुसे देखक मान्, पर पूल
छिड़ल गेल हो। सोहि जे कामादेकस ५) मन्त्र भव भव भव
नखल कामक प्रकटके के सहे भाद प्रकट, ६) ७)

[illegible]

1. आग 2. सूर्य 3. कण 4. विकिरण

मृधा नायिका अपन सगाईक कथा तखीकें सुनैत छथि ।
 जखन कान्हू तब अपन तखन हम तबो मूढ़ी गणने लगहुँ । १२ जखन
 ओ हेमि हेमि रसकथा सुनैत तखन हम हाथसँ कान मूढि लेलहुँ
 (१) हे मखी हम बहुत मोल कान्हू नाहिराँ अनेदश कान्हू बड़ पराशय
 पभौलक । १४ हम यत्तपदेक मौन धारण कान्हू दिसा कौशलपूर्वक हमरा
 पराभूत काँ देखल १५ तखन हम छाण सकटमे पड़ि गेलहुँ एक कान्हू
 कुण्डल फोले दोसर मालमे पहरिल किएक १६ विधाधाने कहैत छथि
 मूस कथा भन जलैत कि नहि जलैत चतुर लोक बुझि जइल छथि ।

जर्मिनि दहति सुनिभ पितृगणः अक्षधुनि सुनि गर्भे किं न सोहाय ॥
 मरणं तत्र न तिर्यग्यः प्रत्येकं दृष्टव्यं नाति प्रायश्चित्तं मर्त्येभ्यः
 शरीरां तद्गर्भे ई नदृष्टव्यं नोभ्यः अतिष्ठे प्रत्येकं भागं तत्र ॥
 नोनन भः मर्त्येभ्यः भव्यं मरणं पश्यति दृष्टं न पश्यति दृष्टं ॥
 भागं निर्याति तत्रां प्रत्येकं प्रत्येकं भव्यं न कश्चिद् विहाय ॥
 मरणं विहाय न दृष्टव्यं मरणं मरणं मरणं दृष्टव्यं मरणं ॥

$$1 \quad \pi \pi \rightarrow \eta \pi \pi$$
[illegible]

6.

बेह सर्वस्व (रुकल सखति पैतरे) दासोपर राखिके कागदाइ लहि कौन
अछि भाषाय जे किछु मोखलह किछु अछि लेल ब्रजराके राखह
विधापति ।

सुन्दरि जओ लोहि विह्वलक शीतल ।

अपल अहित हिन धमहि बुझि पर सजो करि विधि ।
एक निच एक तनु विधिनि कहि जनु मनु मो गच्छे गुर लख
जुग दस लीप्यो वैष्णवी लहि पाइल सुदरनि सुन्दर समार ।
पीढ़लहि आस पास भरुललह अये कहे करत इतर
की मोहि कलकल कए सुखलह की मोहि विधिनि विचार ।
अशिर सौजन धन शिर मोहि शीघ्रन धिर मधुनस धिर मोहि
जोहि परिश्रम ऐसल धनि होय एत १ २ ३ का की को ४ ।

बुझिअ बरु न अरिअ पर सजो गीत ।

एस कथासो तनमताइत राधाके कथा ३ सोहर कौन उचि ।
है सुन्दरी तोरा न विह्वलक विह्वलक मरुत ४ उचि । मोहहि सख
हितोहित विचारि लितह तखन पर वरुस पीन कोउह । ५ अच न
हज तो एक पाण एक देह भा गेन की गकरा नो गुर अलक ६
दुनेलके समोहो विधिनि लहि अच एतउह मोह ७ नुकी तम दू
तापस्या कलह पर मृदुल सग लहे पाछ भव सकल छेकर ८ न
गोहेने न हमरा अलक फांसमे घुसाए लेबह तरुन अच विह्वल उदस
निराश करैत एह की नो हमरा कमलनामे आनु बुझि लेनह अरि तहि
कागदकिसा पिरक भा गेलह ९ नो योना विधिनि विधि नो छन भा न
जीवन स्थिर शिक केवल अपनम भ लज मोहस छेकर हमराय पीन
कह नो हने विधन होल न ।

(6) हरगौरी विवाहक गीत

परत पउ लोहि बढनि मरुत कतिअक भेनि देखि देह आन ।
भोछि वेजजे बस मोर आये मल्लालन जोगिआ भव गाव २
ए माइ ए माइ भजगुन लागु मृतनि मोरि जोगिआ देखि लागु ३
जहि जोगिआ देखि दुरहि पहाड लहि जोगिआ कोर मोरि छेलाह ४
मनइ विधापति मल्लालनि मनु ई जोगिआ वर हासन पुनु ५

भेनि भउ, १ हे माहि

मल्लालनि (मल्लालिनी) गौरीके शिष्यमे अनुरक्त देखि चिन्ता करैत
उचि १ नो जोगिआ विधिनि हमरा पुनल अछि गौरी कलक बढनि
भोकरा आनि देखि देह जे कलक ट भोले २ नो मतमोहक जोगिआ
मदवग लाग हमरा जेना सवेन भोले अ सुन्दर गीत गवैत भवि ३
आर माइ एह भजगुन लाग भवि देखि न सुनि जोगि मोरि भाव
देखि नो जाना मोरि इहेन भवि ४ जहि जोगिआके देखि बाज गेल
मम दूर पहाड मोरि गौरी लहि जोगिआय कोरमे छेलाह जोगि आ ५
१ विधापति कौन उचि २ मल्लालनि लवह हउह जोगिआ
कमलनामे घुसाए लेबह तरुन गौरीके वर नो

कौरव न भव मोरि लख मल्लालिनी वरि देव
न हनु भजगुन न विधन मल्लालिनी मोरि जोगिआ
कौरव न कौरव कौरव लख देखि कौरव लख पहाड
लाग भजगुन माइ भजगुन लखि देखि देखि जहि ४
बाजगुन भजगुन जहि लखि भजगुन बस विधन ५
विधापति कौन नो मल्लालिनी हउह विधापति

ईह वरुन

कवि शिव विवाहक वर्णन करैत छथि महादेवक विवाहमे
एकटा बडका कौतुक लमस भेल, जखन महादेव देवी पर होबइ आ
अंकुस लगवाक विधि आरम्भ भेल २ टीक ३ इति नहि ॥
साकुस जटासे लगभोल गेल अंकुस धिक्कतहि गडगाक धर गूटि पदल
३) वसह बाटिम अस्मिन् कुश खर लागल नावा दी के सघनभ
फुफुआ उठल ४) लछा भालल जाए आ भूषन गामुकी ओकरा बाँछे
दिछे खरले जाये ५) बाघपाल सह भोलन लागल सगसभक
फुफकार सुनि वसह टिगुआ (भडोके गेल) ६ कवि विवाहमे ई गीत
लिखलौ शिवसिंह रूपन रायण चिर गंधी होयु,

पञ्चवत्स पुगथन भगवत् शङ्कर नाम कजने धरिआ
नीने पग हर एक भजन पर के ज्ञान कजौन कल मय नीन
साए १ बाघ साग लक्ष्मी खलन मेरा भजन निग २ भो
मनमथ भावे भावे आनंददा ३) ते दूधदा हजने गी
पाषाणे शङ्कर जग जोड़े खेदा गी ४) गंधी ५) लछा
मरुद नीने के गगन कुलवत् ६) गी ७) गी ८) गी ९)

कवि महादेव वर्णन करैत छथि एक गीत गुरु ३) ने
नगर के जगमग छथि रूप दिये गी ४) गी ५) गी ६) गी ७) गी ८) गी ९)
१) गी २) गी ३) गी ४) गी ५) गी ६) गी ७) गी ८) गी ९)
३) गी ४) गी ५) गी ६) गी ७) गी ८) गी ९)
सग देह भक्त लेख छथि काम सगसभ के ले भावे दल नै
कार्यावधन भा गरीक उपास कोन छथि, भाग्यनिधि कोन छथि ॥
(३) पापहरिणी गंगादे २ नदी मे रहैत छथि मे ३ दल
पगनु १ के मग्य दूर कर गी २) दल भ-३) दल बुद्धाभोल ४

विवाहमे कहेत छथि ई मन्त्राङ्गि तुलस महादेवके भजन के बुझाओत ओ
न अपनहि सगर भसपक गुरु धिकाइ राजा शिवसिंह रूपनरायण सभ
बाचक तक हेतु कल्पतरु धिकाइ

५१

महा की न गमावति गरी

सकल सम्पत्ति मजे नीहि आनन्द पाभौ भसम गरी ॥

न पर सगर न छीनि अन्ध न शिव पैच उधार

नला वपुर मृग वेआकुल कि मजे देव आग २

वाकुकि जिकन पलन धिक्क हर जेठय चोख खड

संभर सखी दू भल केसन हजर वजोन दण्ड ३

पेट पचकल गल गोवधन पचकल भँदरि गी ४

नहि मुठ हाथ ई विधि देखि ने मजे पावति धकी ५

सा न संधन वग न खोजन खोजन दैव अपर

शिखर जिकन मेरे न पावैत झलिन मलहि गले ६

भन विवाहमे भुल पगाने ई पर प्रतीक देव

जगत हग सगरे गी ७) गी ८) गी ९)

गीरी गाने अपन गग मृगद्वी छथि १) ई गगन मोहन देवी

गीरी की ले गगमगन हम अपन लखुमे सभ सखीने खीने अन्ध

भोजन वन भोजन भोजन गी २) नै गी सगल नै दैवने प्रथ

पै जो उधार भेटलैह नहि वेअन देव गगन आ वनिभ भूषन लगल

भावे। सोकरा की दैवक खर लेल ३) वाकुकी लगल न पलन पीये के

जीतइ मह दल आने विग गगन जीवद जेहने मेक लखुकी नेहने

मानिक (विग) ४) गी ५) हमर कोन उचार होय ६) की हम निकष्ट गग

काने छी ने विधान हमरा जकल पेट चिकल गल सा पावक भौ

पला बुद्धा न दैवने ७) नै गग सोचलने न वग भोजनने हमर

भजने दैव भगवत् एहन घर खोजन विधानक लख के भेटाओन

मतदि मत सुखै न छी ॥ ६ ॥ विद्यापति कहैत छथि हे पाँतलौ तू नू ई वर
तीनू लोकक जमु थिकाइ अहाँके नगदीधर खासी भेटलाइ कर मोद
हुनक सेवा कर

११

रसनि भवलो हन परवाध भाज छम्ह गोरी मों भजुनोथ ॥
जत किछु संगतह भउए भउका उठिअ देव कनि मने मिसहा ॥
भुबल भउग देअओ दिछ सनि चढाक बसही टवहु पल्लि ॥
अलहु विद्यापति पुन पुन भव चन्दन ओ पने बैलच देव ॥

१ न माना दोष २ उठैचढ़ै

१) गौरी रसनि छथि महादेव हुतवा जौन ॥ छथि हे गौरी हम
भजुनोथ नेहोरा) करत विभु आइ हमर अपराध माफ करह (२) ती ने
किछु भउवह से संग हमरा भउवहो मोजूट नहि, पदवाक हनु
नागमणि मिसहा देह ॥ भुबल नहए त दिछने मनि मनी आइ
देहु चढाक हे ॥ बसही भाज देह ॥ ४ ॥ विद्यापति कहैत छथि वरदा
देवीक पाँते बैलच देह ॥ नैय भजुनोथ विद्यापति ॥

मोवा भावलाइ सुख बानी विद्यापति रस भजुनोथ नैय ॥
वसए चढाक आइ गोरी कलह रस भजुनोथ ॥
श्रीशे नि बल्लभ भवलो जति जति नैय भजुनोथ जक पद ॥
उठिअ कदम जति जाइ इअ भउवह कलह रस ॥
विद्यापति कहैत भजुनोथ देहु भउवह नैय भजुनोथ ॥

कवि विद्यापति लीलाक राखि करैत छथि ॥ हम गुण ॥ १ ॥
भेटअ ताहि हेतु शिखर सेवा करा ॥ नैय ॥ २ ॥ रसनि दित
सेवा किरक नैय ॥ तेरा भाँतिसे सदा भजि करैत रहै ॥ जति नैय ॥
रदनाक पनीक शीय ॥ ४ ॥ हुनक प्रसदा भजुनोथ भजुनोथ नैय ॥

४४४

पताल दैसे गेल ॥ चाल उठिके अकाम चलि गेल तँ गौरी रुतिके नैय
धापक (विद्यापति) लग पाँते गेलोह (४) एहनामे कोना ककरहु उचित
जथा कदम, ठीके बताइ मलिकक सेवा करच ककरा पार लगेलेक ॥ ५ ॥
विद्यापति कवि करैत करैत छथि हे शङकरदेव भभय वर दिअ ॥

४४५

(१) गोरक्षविजयक गीत

हि एहें गटकक गीत समेक छठ गनेक प्रकाशन संछे नें बहुत कम संशक अर्थ बुझवामे भएल नईछ नैना अनेक मन्दमे भा अनेक गीत मिझवाएल अछि।

१. १. १. तस्यापि देवः सुगुति भूयान् रतु वन सम मेव ॥
 २. १. १. १. तन्ति एक द्विज मयावति भूयान् तनु रतिरं तस् सुगुति सम मेव ॥
 ३. १. १. १. १. मन रतिराय रीथ तह देव मातर मदन जिआलय देव ॥
 ४. १. १. १. १. १. सुगुति कायण भोलाह जटाधारी भूयान् वल्लभ नथेननु नती ॥
 ५. १. १. १. १. १. १. भनडु विद्यापति परबधु नाना मङ्गलन काय देव विद्यापति ॥

1) आराधन देव १ १ १ हितक शिवाक संगम युक्त
(शिव आ भुक्ति योग) द्वाद उपस्थित उक्त मध्ये १) ईश्वर
अद्वयत्व (शिव) जे तीव्र सवि शक्ति तत्व मे वन उक्त हे २) शिव
(शक्ति) मे वायव्य उक्त ३ सतमं नृप सत्ताधिपते मन्त्रे क दिव
या बोध असत्त्व उक्त ४ ते शिव दिव शिव सत्ता मन्त्र सवि जे
शिव अद्वयता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता
शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता
शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता शिव सत्ता

अपने भाई को भी बताना चाहिए।
मुझे भी बताना चाहिए।
मैं भी जानूँगा।
मैं भी जानूँगा।
मैं भी जानूँगा।
मैं भी जानूँगा।
मैं भी जानूँगा।
मैं भी जानूँगा।

राजा मन्त्रसंस्काराथ विराजमान छथि जे गौगक न्याय क सम्पन्ति युक्ती सभक सग विद्वय ज्येन छथि २ (हुनका बुझाबाक हेतु गोरक्षनाथ अयेन छथि हिनक पररण गन्दन के का सकैत छथि ३ ३ ब्रह्म (जातो) सत्कारक कन्याण कथु १ १ १ १ (४ हिनक उपदेश सुनि के मुक्त लोकनि सुश्र एवेन छथि आसार दुर्जन लोकनि नैन सद्दिष्टि १५) सुनन भा दुर्जन दुर् १ १ अदिकपढहार विद्यागते ३ कौन छथे

१ १ १ ५ नट पसर पाशा नट पसर यद निरासन आग
मनन होस लोकर कर नाद मधु १ १ १ १
आपलदे १ १ १ गोरुजाशे राधा मुठा उभारत सिंगरा हाथ
मडगटि फेलासाय हाथ सनकत सरत कोन पाद ५
भरत होस गोरी वरुन मधु कल मडगल दित, यु होरा ईने

1) कर्नात वातावरण में पानी 1 मिनट में 100°C तक गर्म हो जाता है।
 2) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 3) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 4) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 5) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 6) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 7) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 8) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 9) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।
 10) कर्नात में पानी 100°C तक गर्म होने पर 100°C पर ही रहता है।

४. संज्ञा वह वाक्य है जो किसी वस्तु या व्यक्ति का नाम बताता है।
उदा. - सूर्य एक बड़ा तारा है।
यहाँ 'सूर्य' नाम संज्ञा है।

संख्या १ १ १ ३ १ १ १ नमूनांक प्रवेश १४ जावे
संरचनाती नीक उपदेश दैन छथि रा.रा. हसनस वग. पत्र. ८१११११ धुलीन
हस्ता

मध्यम गम्भीर मूलतः का भार दृष्टि को न देकर च दियार
कार न विच्छिन्ने लीकते मान १११ मय अने राजकाल का मीन
आपन मङ्गल मङ्गलमणि ताम गंगा के अङ्क मङ्गल दृष्टि
नएन धनप मङ्गल दिस धाय १११ मनि अङ्क मङ्गल
धनम रवि धन भारिअ अङ्क मङ्गल दृष्टि धाय १११ मनि अङ्क मङ्गल

[illegible]

| | | | | | | | | |
|-----|---------|------|-------|----------|------|-------|-----------|------|
| १ | २ | ३ | ४ | उत्तर | क | मार्ग | १५ | ७५ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | ककरो पुर | १ | १ | १ | १ |
| भाग | भाग | भाग | भाग | गोरी | १ | १ | बिगाही हल | १००० |
| दूध | चोरी | आमल | पानीर | गेल | गोरी | ११ | १२ | १३ |
| २५ | विधापति | कलहि | लगा | पल्ल | भगवत | भग | भग | भग |

कै.पी.१ पृष्ठ गंठे चलित भाँड़ि है मजिंदर इलाक़ का, हम से.

दात कहैत छी, १ १ १ १ १ १ ३ मन्त्रक आज्ञा भाग भाग दैत
 भक्ति (नुरन्त फालेत हंडत भाउ, चीरो सभ जन्मसं मन्त्रस्त गोरि
 विसरि गंत आउते। १४ दूई गोट योगी भाएन छलाह ने धुरिके चलि
 गलाह। अपतरु डरें हुनका लोकनिके भयनमे पैसा नहि दनिअनि ४
 दियापति कहैत छथि ओ सन्य कथा कहैत भक्ति एखन राता
 मन्त्रचन्द्रनाथ भयसर अमर दुराग मे छथि

[illegible]

1) मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है।
2) यह राज्य का राजधानी है।
3) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
4) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
5) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
6) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
7) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
8) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
9) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।
10) यह राज्य का सबसे बड़ा शहर है।

१. अमर बीजाणि मिटिअ साइ उड्डकन वन छिन वस २० ३
 २. वनक वनकमणि वनक वनक पुनि नगव ननि नगव ननि २
 ३. ननि ननि ननि ननि ननि ननि ननि ननि ननि ननि ३
 ४. कि कशिच न न न न न न न न न न न न न न न न ४
 ५. नन न न न न न न न न न न न न न न न न न न ५

संस्कृत-भाषायां पद्येषु प्रथमः पद्यः स्यात् । अतः प्रथमः पद्यः स्यात् ।

नरपटु तो हमर सेवाने रहल लोहर ओ मज्जादय, मज्जा होणहु मे हन
देवहु (3), ई हमर दुखरु बालक बाँहनाथ खोलाधक काल
घाएल भर गेल आठो अगमे धूरा नाखल छैक (4), मज्जा पिबि रहल
कौतुकपूर्वक साओल। ओ पिछाहु दौडल भाएल राजा पुनके भरे पाँज
कए धाएलनि जलसँ धाए घेसुह कालादे

मुक्त निःशब्द बन्धु आनन्द अन्तर्भाषा उक्ति गेह दुःखिभक्त चन्द
कह कह भाए भाए १ १ १ १ कमल नृपत र हारे हारे २
गौरवलाथ हो नैह हरे शीघ्र सेवै नालाह देह अनी ३
दलह निःशब्द नृह कल सार अन्तर्भाषा विद्यापति अंगी उपगद ४

[illegible][illegible]

है और वह स्थिति ताथ से वाहन चिंता उन से साब गरीब नहीं
भए गेल १२ से उन दूध से पानि भ गेल बकरा कानि देखल से
आइ लॉड भणि। ११ श्रीवास्तव्याक देव दिवस गेल साकथ उन

वाचस्पत्ये अग्निं नैतः १४ तत्र किंतु तत्रै शतशत आशीषादसं भेत्त अग्निं
आशीषाद देव हम् तोहर ताम होच्यहु ५ विद्यापति कवि बुझवैत इति
एहिमे वांगमे आ भौहिमे भोगमे, परम विरोध हैक

सिंह नद का जल अकाल सभा में लक्ष्मण सभा में भी भेजा जाये ।
मग मल वाकल लोहे गुरु हजरा सवे लो जालि सेनाह कण्ठहार
पार भइल है पलटि के सुखी पारि भइलने उखि के नहि उडई
सुवांतिह सडन घिसाई गेल चन्द भइल घोषाणां फाभ फन्द ।

(1) सकल सस्यवे रचनह तैऔ सरार पार नहि भग सकनह
(2) ई हमर गुर तो भेल जलवान होइतहु युवतीक पाला वागर
(व्याकुल) भग गोरह नौ सभ किछु जाति कषटकारा भेलह 3 पार
भइऔ का के वे मखे फेर लहीअ इवैन भडि कोन गही पाखिक
जलन सहीन उहीन (अंगन चहीन नहि भडि 4) युवती सकन सस्य
हेन राग पान विगसि गतहु (युवतीक मुखहिक पान 5) गोरह
विगसति कहैत, लीये ई भगसु दलाय पलन रहैत 6 न नहि
माजनासुं सन लीये 7

[illegible]

(1) हाथी घोड़ा आ पशुदल सेना शिबिर दूर दूर दौड़ते भेड़ें दूर दूर से सुन्दरी युवती हकारि हकारि आवाजें जाइत। (2) है राजा चक्र कुल नारी लोहर रोकास लागले रहैछ धुरन्धर देवता शिव लहर पहरी धिक्कह। (3) है राजा तखत तो एहन कान रस्यस्यारण, किंक कानह गंग तें राज्यक भारे लहि छहु मन्त्रिण तिमारे दैन उथुन। 4, हमर चिह्नलसक काहु अन्त जोह नाछे मेघ प्रभो नखद कल रहत चिन्तनी (पेम्बिका) तब काल रहि सकैत अछि। (5) है नारी कठनीय होइत जाछे मेह स्वास्नीक बिल निवेत अछि, तो हमरा बिल अन्हार घरक दीध धिक्कह। (6) चक्र कालसे नारी सभ चंकोर दानवेत रहैत छहु चारे सभ नारी चण प्रसाधन करैत रहैत छहु 7 इन्द्रक मन्त्रिण आइत भेन छहु दीध गिरार छहु राजा अग्रस्थान राज्य के ताँत्रि सकैत अछि 8 अनुभव प्राप्त का विद्यापी केहन छोरी सकुल के छाँड़ि पाँते नन राम कता बसत

जाइत जोर अमरक समु नी चाले मर मरि लखन चले चर
आ कलने छहउ दहउ राजा मेमरक मर मरि क मर मर
शिबि नयो सिवनील रर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
राज मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

राजा मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
दूर भए मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
(पेम्बिका) लखन दूर भए मर मर मर मर मर मर मर मर
अन्धकार के दीध दुनीन मर मर मर मर मर मर मर मर
जालरूपी नर फेर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

विद्यापति लहे १ रथि राजा शिवसिंह रूपनारायण स्वयम् है नन्त दूझि
मनका दुझि भेताइ

31

लखन दूर लख नरी लोचुनि लखेन दिवस दुहु नरी
जेहि चणन लोहे गेल जाइत नपनुक धरि मो न भेल 2
बकर लोहे वर भए अचरु न टोस विचारन मर
माय मन समारे मर अम्भान्न प्रह रिनारे 4
विद्यापति कहे मर 5 धन दान रातेक छाया 5

1 पाट लखन जीणे होइत अछि लोहा नारी नीपी होइत अछि।
दुहु चरि दिन सुन्दरी देखाइत अछि 10 11 नहिना अधनीन लोहे
लहिना चलि जाइत अछि 12 लो वर वकनीन मर मर छहु न मर मर
हमर वन पर विचार लोहे करैत छहु 4 है समर मायक वर मे अछि
दहीक विवेचनमे मर मर मर मर रथि कहे विद्यापति कहे न 13 रथि है
धन है दान मेघक छरि धिक्कह

सुखिनि चर विचारन वर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
चल लख मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

14 है नारी लो सुखिनि चर विचारन विचारन लो लोच
हमर दीध मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर
मेघ दहल चल वरी मर मर विद्यापति कहे न छोरी मेघ लनि कहे 15
मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर

32

घुट हैं

॥४॥ गुरु सुख निन्देन चण्डले भेले तपि लीले

गद हस गल निन्देन देव कएल विरह ॥ १ ॥

लोक सन पुन हो करी न रहि रहि

विद्यापति कवि वीर एहे भोहे परम विरह ॥ २ ॥

अब विद्यापति भग सुखस सुख ॥ एक दिन विद्या
लोहर वैरी भेल छलहु ॥ (१) लोहर हमार बाल्य कालहिंस सन रहल आब
आयवश विच्छेद भए गेल ॥ (२) लोहर सन केर देखि मोन भेल ॥ हम लोहर
छोड़क हेतु आय विरह छी ॥ (३) कवि विद्यापति दुखदेल छथि ॥ गी
ओहि वीर (योग आ भोग वीर) बड विरह छैक

विमल गुरुमुख बाध लीक नो कर कि भाव

विमल भक्ति भावे निरिह नगन के लख ॥ १ ॥

सरी गन विमल गी ॥ अछु न रहि गी

१ विमल

गद विद्यापति वीर लीक भोहे परम विरह ॥ २ ॥

हम गन गन वृद्धि सुख ॥ ३ ॥

(१) लो गुरु सुख जे उपदेश दयल सुखस स विरहि रहल
लीक गी ॥ २ ॥ गुरु सुख निन्देन चण्डले भेले तपि लीले
विमल काशिलीक नयनक ज्योने विरह ॥ ३ ॥ लोहर लोहर
लोक सन विरह ॥ ४ ॥ आब केर मोहमे फँसल भसल ॥ ५ ॥ है
लोहर लोहर विरह ॥ ६ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ७ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ८ ॥
लोहर लोहर विरह ॥ ९ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १० ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ११ ॥
लोहर लोहर विरह ॥ १२ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १३ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १४ ॥
लोहर लोहर विरह ॥ १५ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १६ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १७ ॥
लोहर लोहर विरह ॥ १८ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ १९ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २० ॥

लोहर लोहर विरह ॥ २१ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २२ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २३ ॥

लोहर लोहर विरह ॥ २४ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २५ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २६ ॥

लोहर लोहर विरह ॥ २७ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २८ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ २९ ॥

लोहर लोहर विरह ॥ ३० ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३१ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३२ ॥

लोहर लोहर विरह ॥ ३३ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३४ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३५ ॥

(१) है गुरु सुख तो हमर पहिले पढ़ा विद्या थिक हमर
सेवामे (हमरा सुख) अछि ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३६ ॥ लोहर लोहर विरह ॥ ३७ ॥
(२) आय हम लोहर गुरु सुख लीक जय जय गुरु सुख ॥ है गुरु सुख लो
हमर जगजगत् छै ॥ (३) अब सभ गनी पढ़ानी होथि प्रजापति पूजा
पढ़ै रहथि ॥ (४) हम आ लोहर विरह ॥ जय जय जय ॥
लोहर लोहर विरह ॥ (५) विद्यापति कहै छथि मन्मथनाथ
हाथमे हथ लोहर विरह ॥ लोहर लोहर विरह ॥

(8) प्रकीर्ण स्रोतक गीत

(क) विद्यापतिगीतसंग्रह ग्रन्थ संख्या 6978 संस्करण
लिपिकाव ल म 477 (1986)

१५

नयन निरोधि निशायि बुझओचर अवति । अपर कि मही
वचन थिलास भास उपजभोलह भेलहु खान लहे नही
मुन्दरी बुझनि जुन परिधारी
सिधये सुधयमे साहर लामेन निभहु गहि हो घरी २
भाध पयोधर उले लीहै टसेलिहै फल टय वान जगु लेहै
गुणुन हाम कये मन गदलह किये नये छडियहु गेटे
केन अग इति कये पुनक दकन भेल कयहि उपलह कये
इकनि भलहुसि हटय भान वस कयह करह कनि ले ४
धौलहि पम भादिक उपजभोलह जगु जगुने नये कये
अये भलहुसि धनि कोल इदियेन गदल गट मोहि नये
भलहु विद्यापति गुनक जगु जगु के कोल भलहुसि जगु
होने नये कय अतिम हाम भय नये नये नये नये नये

सादकर उदियेह २ भास गद

नायक नायिका पर उपोहक आरोध नयेन उये
समय तो इहि स्थिर था हमरा देस नाके बुझभोलह ने
वागविलास(सधुरवचन)सँ भास देनह लो। कलेस मलहमे लो। नहि
छह २ है मुन्दरी लोहर चलि हम बुझि गेनहु। नयेन जगु पद
हाकर (भासक गच्छ लमभोल मुदा तजय फल लीजहुसँ वसी तीन
भेल कोली छाये लो अपन आधा स्तन देखओचर ६ गद
हाम क' हमर मनके किये पयदि लेनहु। भास लकर छेहाम सयद कि
नहि लोहमे सन्दह। ४, लोहर संगमे कलेक रत पुनक नहि नहि

५५

व्यक्त भेल गे अछि कैशय। लोपाके फेरमे वललह गहि सभसँ हमरा
पते देस प्रकट कयलह। मुदा वचनसँ भल सत अन्याइ। अर्थान प्रेम
देखावयला उलहु न हटय भल पुनक वसने। छलहु कपट कनेक
घेरि कयलह ५। पूर्वमे बहुत देस लमभोलह लम कानमे भास रहैत
उलह। अब है मुन्दरी दिन दिन लोहर घोन उदयसीन भेल
गेनहु ६। विद्यापति कहैत छथि है लमभोलह सुनह के वलत
जे गद। मुन्दरी। भयन थिक कतयो यत का दास भ' अकर मे।
अरेन रहलह लो। अ' पम रहलहु दासैत अनुकल, गेटे होनहु

१६

मनजनभा भि विनक छेहि गीत न गीत भानत दास
नहिरे बर जत गद। अराने न केवल लोहर उदय
साधय देस नये नये नये
छहमे दोष पदउले गेटे कय विनय नये नये नये
किये देवता मलह नये नये नये नये नये नये नये
अस विनयमे भलहुसि लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर ३
भलहुसि लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
भलहु विद्यापति लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर

१७ नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
भानत देस भलहुसि विनय लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
म लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
भलहु विद्यापति लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर
लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर लोहर

५६

मानस जाइत अछि किएक तँ हुनका भोजन आंगेअंहेसँ देल जाइत छनि। लोहर विरहवश ओ अन्तिम नगर मृत्युलांक गेलन ओ ओ हु युग युग लोहर ध्यान करैत रहत। मन्त्रजतसा कामदेव लोहर देखीके मायेछ सखिसँ बुझाइछ तँ कामदेव विचिंतहि अछि। विवाधनि कहैत छाये हे राजा शिवमिह अदसर रहैत कृष्णके हु बान बुझाए दिअन।

(ख) रागभजतसमूह ५५

शेषन अने दमला पिआ कर गमना सौमं नगर वंभाएन न १ की

१ १ १ १ १ १ १ १ १

नओ पिआ भओताहे जगल लुओगहे मन्त्रजन्ति देव पास न १ की

अधर मधुर रस जतए अमिर रस दए पिआ हरष पिआसे न १ की २

कुन सिमि फल लए भेट करब गए रस पावै पएर जाओगए न १ की

कावे विवाधनि मन सखि बँहए भन सिमि शिवमिह देव आओग १ की

१ अओगी २ लुओगी ३ धौआए ४ मोरहु

विहिती न्यायिका पत्रिक भएला ज कहैत इत्यस करन नकर वर्णन करैत अछि (१) हम दमलापुष्पक गाउ लगभगत सँजतमे उठए फालत कि पिआ परदेस जावे गेल। लोहर ओ भाउ पुआए से न नगर गमगमाउ उठल।

नयन जुडाएन ओकर मर अन्तिम देव देव अधर रस ने उभारत रहैत भछि से आँखि का पिआक पिआन हए (३) मन्त्रजन्ती देव भोजन हेतु आइत करब प्रेमरुपी पाविस नगर पओगए अछि विह नि देव उठि लोहर मन ठीक सोचैत छहु श्री शिवमिह अवश्य भोजनह

(२) मानसरागभजत

मानसि वसत करिअ परकार ने चाँते आवा कलत हमर

आनह मानसि लैथलि पाव लिखि पडसोव सपनुकि रात २

हुनिक कुसन किछु अपनुव खन दिरह कसँटी काँसेहथि प्रेम ३

मानन मन्त्रमथ करमचउर एकलि सएन मोहरे रहइत मय ४

मझुरे कलन मोह करजा नैस दिरहि नगर बसि रहए बिदेस ५

सबहु पथक केर एके सोभाव गए परदेस पलाँटे लहि भाव ६

नवहु प्रणव करम अवधान की न मिलए जओ रहए पगत ७

भनइ विवाधनि के लहि नान सिदमिह लोकेमटथि रगत ८

१ मानि २ हुनि ३ ततहु जोगा

विगँहणी सखीसँ पत्र लिखवैत अछि (१) हे सखी एहन उपाय करह जे हमर पिआ घुरि भावथि (२) कोरल अ कलम आलह। आपन बात बंदता ओकरा लिखि पठाए। (३) कहिने हुनक कुशलक जिज्ञासा लिखह लखन भएन पुसल होम। ओ विरहवशी जसँटी पर प्रेमक गँव करथु। (४) एतए वरकभो उपलब्ध जामए, वलह भए गेल अछि ओ हमर एकसरि सुनसि पावि मारेत पीत रहैत अछि। (५) हमर पिआँ उल्लस दए लहि उल्लस लहि देखने रहिहु ओ लोहर इथि नैना विहसमे रहैत होये (६) सभ परदेसीक के वलन रदेस जात न सुनव नम लोह नैत (७) रसो बर का कोला उपाय रहल जए त पाव वलन तँ की लह भेट (८) विवाधनि कहैत छथि हे वल के लहि नैत भछि शिव

भावह नदर शोभनि घनन जल नओ

चलनवन बुडि छहरि भवि सुमरि गनो

झरि मझुरे पगत नगरी को वल

धनुष धनुष सुनिभ कृतं हनुष धनुष ताव २
 उत्तर आरको मीन दक्षिण को सानो
 सैर पांहेरि आगारिभ जीने सावारी
 मीनि पुनिव बा माडांगरि किण किण फल ३
 नच लेवा नच रिनुपनि नच कल्लु माड ४
 नच नच कौतुक एणन मीनि धर न सावारी
 १ १ १ १ १ १
 विवापनि कलि गामोन झुमरि रसवन्त
 राजा मरुवनराएने हारी १२६ कल्ल ५

महेनरि २ जग १ जग ४ उत्तर दक्षिण सुनिध ५ मरुवनराएण
 रसनि को

मायिका मीनिक भागधनरी झुमरि गणविक हेन सखीके मा कल
 छवि (१) आधर हे सखी मभ नचर वेन्दनवन १ एनवनक शीखल
 छावामे झुमरि गामोन नच २) झुमरि गवैत गवैत गवैत तल्लो
 सभक गवैत चवत भा गेव भिकरा सभक गवैत चवतमे गवैत शल्लुन
 गल सुजुव भक्ति ३) मरु विवापन नच गवैत दवववव सिन्दूर
 दक्षिण गेवक चवत गवैत साडी गवैत मीने अणविक पुन कल्ल
 भा ४ मीनिक पुन कल्ले न ५ मरुन ६ मरुन कल्ल भक्ति
 प्रेम नच वसवत केन लव गेव मरुन ७ झुमरि नचका लव नच के
 मरुन लवि नचउ गे घरो नहि मीन ८
 विवापनि हे रसम झुमरि गामोन कल्ल रस सुजुवव सिन्दूर
 मीनोनेदेविक पति ९ नच १० मरुवनराएण

मरुन
 ए मरुन १० मरुन कि कल्ल लव सपरी लवत विवा मरुन मरुन
 विवा लव मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन विवापनि लववव हव कल्ल कल्ल कल्ल कल्ल कल्ल

मरुन

कर धर लवि मीन पुच्छलनि वत मचे हने लविक लव कोल हाथ ४
 उच कच दल्लि कल लखरेह मचहु धनक पुरन मीन देह ५
 मरुन विवापनि लव वर लवि लव वर गुनि मरुन मरुन ६

१ अधर मधुपान २ उर नच को लेह

मायिका मखीक सपन सपन मरुनक वपन सुनवैत छवि १)
 हे मरुनी की कल्लहु कल्लवमे मरुन होइन भक्ति मरुन रति सपनामे विम
 मरु अणवः (२) छन भक्तिगत माडर छन हाथसे मरुन छव मरुन
 अधर पत कर ३) कपरा फल्लुके मरुन मीनिक आभोर की की
 कल्लक से कल्लक कल्लहु ४) विवा हाथ धर एकटा धल मरुनक
 इच्छा पुच्छलक न हम हंगिके मीन हाथ लवव लव ५) ओ मरुन एण
 मरुन पर मरुन लववत कल्लव एणलहु देह मरुनमे मरुन भक्ति ६)
 विवापनि मरुन लवि हे सुदरी सुनव लव पति मरुन कल्ल कल्ल
 मरुन आभोर

मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन

१ लव २ कल्ल

मखी कल्लके मरुनक विवापनि सुनवैत छवि १) मरुन
 मरुनमे लव वरसे मरुन भक्ति मरुन लव विवापनि मरुन मरुन
 भक्ति (२) हे कल्ल मरुन कल्ल पतिजा कल्ल लव विवा विवापिक
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन
 मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन मरुन

मरुन

व्यथित। तब पर मलयपर्वत मन्द मन्द रहैत 4 के सारे लकैत अति मलयानिव ओ न काभटयक चाण जका हृदयमे धरैत छैल। 15 विद्यापति कहैत छथे ई वन के नहि जेत अछि ने नहि अधिक भटर पणचाक हेतु मान करैत अछि। 16 एकर रस लखिमा ।

पद 2

मनिक बेसकल रतन पसाग मार पिआ रसिआ गुन बलिअर
दुहु दिस गान्धल रतन पसाग। माझि मंगल रिआ भूत ग 2
नेकक गान्धल दुहि पुत्रि आन लेकक बान्धल रह गरुडान 3
सुरभि ममय भेल अतरु सहार कत टिन भेल रहल गतेअ 4
भनइ विद्यापति मन पर नहि गुन लुखल गान्धल सुरभि 5

1 नियरक 2 लदन

विरहिणी राधा कोइक प्रमोदण करैत छथि गुनक प्रसा
धनि भा। (समांतरागार रसिक पिआ रतक दोहोअमी माधोदय चमकवक
17 तवरा दुहु दिस रत भा मंगल टाटा भा कीअमे प्रेमक भूत 2
हार गथिला 3 तैत 4 के लकवक देओ तूत में गोलल हा दुहे हनि
साहुत अछि किन्तु प्रेमक भूत गरुडन सोझी रहै जाइत अछि नहि
दुहेउ) 4 असल भएना आस मकरना रहि लोह विआ अरुअ रिआ
धनि भा भेल रहल 5 रेवा नैत करैत छथि ई मुरली सुन लो
गुन पर लोभानन केइ आगे वेल

पद 3

सिब हे भनि भनुगल कल भोग
गला मरगि मरि पातर केही गने मनेरक अछि 1
कोइ होखत परमर पातीन प्रलीत धन नरन वदन ने भासै
तमाक सककल पुनु उपदि दलह अनु मेकील है वरि 2
गान सबन गेल तनु अवसन भेल नहि कोइ होखत मनेर

पद 4

कि 3-3 तलि छल दय गऊ माने धनं झंगैते वेआकुल मने 3
हरि कमलामन इन्द चान्द गन सब परिहार हमे देवा
भगत गऊन हर बल नहेसर मे जालि कहति नुन मेवा 4
भनइ विद्यापति मुनह मनेसर जल होन जम भवसादे
हरि हरि दुख लखु नहर सुख लवे हाँअ नुअ परसादे 5

1 भनि 2 अछि 3 शिव 4 सपद 5 सुनि

काँवे जीवनमें दैरक भए शिबक स्तुति करैत छथि 1) हे शिव भनुगतिक प्रतिक, परिणाम नीक भल एता (एहि जीवनमें बहुत सगति (प्रेम) भेटन आग जालि नहि होन गने होअन आव सेह अलारथ मतमें रहल। 2) तो असल होखत असुख धन पाव एही आशमें जीवन बीतल। यमराजक आगों जे सकल व्यवस्थित होअन लकर उपेक्षा नहि करवत वर यतनं बंदर सेवा कएल अछि गेल कान गेल देह बसल न तो प्रसन्न होखत न भाँधी पाँछ धन सम्पत्ति का की मरव तिल्लो करैत मल बकुल रहैत अछि 4 विष्णु ब्रह्मा इन्द चन्द गणपति मम देह को छोड़ हम गणेश महेन्द्रा शक्तजसल अछि ई दछि लहर मेगमे लजबह विद्यापीर जहैत छथि 5 मधोदय मुनह 17त 18त 19त 20त 21त 22त 23त 24त 25त 26त 27त 28त 29त 30त 31त 32त 33त 34त 35त 36त 37त 38त 39त 40त 41त 42त 43त 44त 45त 46त 47त 48त 49त 50त 51त 52त 53त 54त 55त 56त 57त 58त 59त 60त 61त 62त 63त 64त 65त 66त 67त 68त 69त 70त 71त 72त 73त 74त 75त 76त 77त 78त 79त 80त 81त 82त 83त 84त 85त 86त 87त 88त 89त 90त 91त 92त 93त 94त 95त 96त 97त 98त 99त 100त 101त 102त 103त 104त 105त 106त 107त 108त 109त 110त 111त 112त 113त 114त 115त 116त 117त 118त 119त 120त 121त 122त 123त 124त 125त 126त 127त 128त 129त 130त 131त 132त 133त 134त 135त 136त 137त 138त 139त 140त 141त 142त 143त 144त 145त 146त 147त 148त 149त 150त 151त 152त 153त 154त 155त 156त 157त 158त 159त 160त 161त 162त 163त 164त 165त 166त 167त 168त 169त 170त 171त 172त 173त 174त 175त 176त 177त 178त 179त 180त 181त 182त 183त 184त 185त 186त 187त 188त 189त 190त 191त 192त 193त 194त 195त 196त 197त 198त 199त 200त 201त 202त 203त 204त 205त 206त 207त 208त 209त 210त 211त 212त 213त 214त 215त 216त 217त 218त 219त 220त 221त 222त 223त 224त 225त 226त 227त 228त 229त 230त 231त 232त 233त 234त 235त 236त 237त 238त 239त 240त 241त 242त 243त 244त 245त 246त 247त 248त 249त 250त 251त 252त 253त 254त 255त 256त 257त 258त 259त 260त 261त 262त 263त 264त 265त 266त 267त 268त 269त 270त 271त 272त 273त 274त 275त 276त 277त 278त 279त 280त 281त 282त 283त 284त 285त 286त 287त 288त 289त 290त 291त 292त 293त 294त 295त 296त 297त 298त 299त 300त 301त 302त 303त 304त 305त 306त 307त 308त 309त 310त 311त 312त 313त 314त 315त 316त 317त 318त 319त 320त 321त 322त 323त 324त 325त 326त 327त 328त 329त 330त 331त 332त 333त 334त 335त 336त 337त 338त 339त 340त 341त 342त 343त 344त 345त 346त 347त 348त 349त 350त 351त 352त 353त 354त 355त 356त 357त 358त 359त 360त 361त 362त 363त 364त 365त 366त 367त 368त 369त 370त 371त 372त 373त 374त 375त 376त 377त 378त 379त 380त 381त 382त 383त 384त 385त 386त 387त 388त 389त 390त 391त 392त 393त 394त 395त 396त 397त 398त 399त 400त 401त 402त 403त 404त 405त 406त 407त 408त 409त 410त 411त 412त 413त 414त 415त 416त 417त 418त 419त 420त 421त 422त 423त 424त 425त 426त 427त 428त 429त 430त 431त 432त 433त 434त 435त 436त 437त 438त 439त 440त 441त 442त 443त 444त 445त 446त 447त 448त 449त 450त 451त 452त 453त 454त 455त 456त 457त 458त 459त 460त 461त 462त 463त 464त 465त 466त 467त 468त 469त 470त 471त 472त 473त 474त 475त 476त 477त 478त 479त 480त 481त 482त 483त 484त 485त 486त 487त 488त 489त 490त 491त 492त 493त 494त 495त 496त 497त 498त 499त 500त 501त 502त 503त 504त 505त 506त 507त 508त 509त 510त 511त 512त 513त 514त 515त 516त 517त 518त 519त 520त 521त 522त 523त 524त 525त 526त 527त 528त 529त 530त 531त 532त 533त 534त 535त 536त 537त 538त 539त 540त 541त 542त 543त 544त 545त 546त 547त 548त 549त 550त 551त 552त 553त 554त 555त 556त 557त 558त 559त 560त 561त 562त 563त 564त 565त 566त 567त 568त 569त 570त 571त 572त 573त 574त 575त 576त 577त 578त 579त 580त 581त 582त 583त 584त 585त 586त 587त 588त 589त 590त 591त 592त 593त 594त 595त 596त 597त 598त 599त 600त 601त 602त 603त 604त 605त 606त 607त 608त 609त 610त 611त 612त 613त 614त 615त 616त 617त 618त 619त 620त 621त 622त 623त 624त 625त 626त 627त 628त 629त 630त 631त 632त 633त 634त 635त 636त 637त 638त 639त 640त 641त 642त 643त 644त 645त 646त 647त 648त 649त 650त 651त 652त 653त 654त 655त 656त 657त 658त 659त 660त 661त 662त 663त 664त 665त 666त 667त 668त 669त 670त 671त 672त 673त 674त 675त 676त 677त 678त 679त 680त 681त 682त 683त 684त 685त 686त 687त 688त 689त 690त 691त 692त 693त 694त 695त 696त 697त 698त 699त 700त 701त 702त 703त 704त 705त 706त 707त 708त 709त 710त 711त 712त 713त 714त 715त 716त 717त 718त 719त 720त 721त 722त 723त 724त 725त 726त 727त 728त 729त 730त 731त 732त 733त 734त 735त 736त 737त 738त 739त 740त 741त 742त 743त 744त 745त 746त 747त 748त 749त 750त 751त 752त 753त 754त 755त 756त 757त 758त 759त 760त 761त 762त 763त 764त 765त 766त 767त 768त 769त 770त 771त 772त 773त 774त 775त 776त 777त 778त 779त 780त 781त 782त 783त 784त 785त 786त 787त 788त 789त 790त 791त 792त 793त 794त 795त 796त 797त 798त 799त 800त 801त 802त 803त 804त 805त 806त 807त 808त 809त 810त 811त 812त 813त 814त 815त 816त 817त 818त 819त 820त 821त 822त 823त 824त 825त 826त 827त 828त 829त 830त 831त 832त 833त 834त 835त 836त 837त 838त 839त 840त 841त 842त 843त 844त 845त 846त 847त 848त 849त 850त 851त 852त 853त 854त 855त 856त 857त 858त 859त 860त 861त 862त 863त 864त 865त 866त 867त 868त 869त 870त 871त 872त 873त 874त 875त 876त 877त 878त 879त 880त 881त 882त 883त 884त 885त 886त 887त 888त 889त 890त 891त 892त 893त 894त 895त 896त 897त 898त 899त 900त 901त 902त 903त 904त 905त 906त 907त 908त 909त 910त 911त 912त 913त 914त 915त 916त 917त 918त 919त 920त 921त 922त 923त 924त 925त 926त 927त 928त 929त 930त 931त 932त 933त 934त 935त 936त 937त 938त 939त 940त 941त 942त 943त 944त 945त 946त 947त 948त 949त 950त 951त 952त 953त 954त 955त 956त 957त 958त 959त 960त 961त 962त 963त 964त 965त 966त 967त 968त 969त 970त 971त 972त 973त 974त 975त 976त 977त 978त 979त 980त 981त 982त 983त 984त 985त 986त 987त 988त 989त 990त 991त 992त 993त 994त 995त 996त 997त 998त 999त 1000त 1001त 1002त 1003त 1004त 1005त 1006त 1007त 1008त 1009त 1010त 1011त 1012त 1013त 1014त 1015त 1016त 1017त 1018त 1019त 1020त 1021त 1022त 1023त 1024त 1025त 1026त 1027त 1028त 1029त 1030त 1031त 1032त 1033त 1034त 1035त 1036त 1037त 1038त 1039त 1040त 1041त 1042त 1043त 1044त 1045त 1046त 1047त 1048त 1049त 1050त 1051त 1052त 1053त 1054त 1055त 1056त 1057त 1058त 1059त 1060त 1061त 1062त 1063त 1064त 1065त 1066त 1067त 1068त 1069त 1070त 1071त 1072त 1073त 1074त 1075त 1076त 1077त 1078त 1079त 1080त 1081त 1082त 1083त 1084त 1085त 1086त 1087त 1088त 1089त 1090त 1091त 1092त 1093त 1094त 1095त 1096त 1097त 1098त 1099त 1100त 1101त 1102त 1103त 1104त 1105त 1106त 1107त 1108त 1109त 1110त 1111त 1112त 1113त 1114त 1115त 1116त 1117त 1118त 1119त 1120त 1121त 1122त 1123त 1124त 1125त 1126त 1127त 1128त 1129त 1130त 1131त 1132त 1133त 1134त 1135त 1136त 1137त 1138त 1139त 1140त 1141त 1142त 1143त 1144त 1145त 1146त 1147त 1148त 1149त 1150त 1151त 1152त 1153त 1154त 1155त 1156त 1157त 1158त 1159त 1160त 1161त 1162त 1163त 1164त 1165त 1166त 1167त 1168त 1169त 1170त 1171त 1172त 1173त 1174त 1175त 1176त 1177त 1178त 1179त 1180त 1181त 1182त 1183त 1184त 1185त 1186त 1187त 1188त 1189त 1190त 1191त 1192त 1193त 1194त 1195त 1196त 1197त 1198त 1199त 1200त 1201त 1202त 1203त 1204त 1205त 1206त 1207त 1208त 1209त 1210त 1211त 1212त 1213त 1214त 1215त 1216त 1217त 1218त 1219त 1220त 1221त 1222त 1223त 1224त 1225त 1226त 1227त 1228त 1229त 1230त 1231त 1232त 1233त 1234त 1235त 1236त 1237त 1238त 1239त 1240त 1241त 1242त 1243त 1244त 1245त 1246त 1247त 1248त 1249त 1250त 1251त 1252त 1253त 1254त 1255त 1256त 1257त 1258त 1259त 1260त 1261त 1262त 1263त 1264त 1265त 1266त 1267त 1268त 1269त 1270त 1271त 1272त 1273त 1274त 1275त 1276त 1277त 1278त 1279त 1280त 1281त 1282त 1283त 1284त 1285त 1286त 1287त 1288त 1289त 1290त 1291त 1292त 1293त 1294त 1295त 1296त 1297त 1298त 1299त 1300त 1301त 1302त 1303त 1304त 1305त 1306त 1307त 1308त 1309त 1310त 1311त 1312त 1313त 1314त 1315त 1316त 1317त 1318त 1319त 1320त 1321त 1322त 1323त 1324त 1325त 1326त 1327त 1328त 1329त 1330त 1331त 1332त 1333त 1334त 1335त 1336त 1337त 1338त 1339त 1340त 1341त 1342त 1343त 1344त 1345त 1346त 1347त 1348त 1349त 1350त 1351त 1352त 1353त 1354त 1355त 1356त 1357त 1358त 1359त 1360त 1361त 1362त 1363त 1364त 1365त 1366त 1367त 1368त 1369त 1370त 1371त 1372त 1373त 1374त 1375त 1376त 1377त 1378त 1379त 1380त 1381त 1382त 1383त 1384त 1385त 1386त 1387त 1388त 1389त 1390त 1391त 1392त 1393त 1394त 1395त 1396त 1397त 1398त 1399त 1400त 1401त 1402त 1403त 1404त 1405त 1406त 1407त 1408त 1409त 1410त 1411त 1412त 1413त 1414त 1415त 1416त 1417त 1418त 1419त 1420त 1421त 1422त 1423त 1424त 1425त 1426त 1427त 1428त 1429त 1430त 1431त 1432त 1433त 1434त 1435त 1436त 1437त 1438त 1439त 1440त 1441त 1442त 1443त 1444त 1445त 1446त 1447त 1448त 1449त 1450त 1451त 1452त 1453त 1454त 1455त 1456त 1457त 1458त 1459त 1460त 1461त 1462त 1463त 1464त 1465त 1466त 1467त 1468त 1469त 1470त 1471त 1472त 1473त 1474त 1475त 1476त 1477त 1478त 1479त 1480त 1481त 1482त 1483त 1484त 1485त 1486त 1487त 1488त 1489त 1490त 1491त 1492त 1493त 1494त 1495त 1496त 1497त 1498त 1499त 1500त 1501त 1502त 1503त 1504त 1505त 1506त 1507त 1508त 1509त 1510त 1511त 1512त 1513त 1514त 1515त 1516त 1517त 1518त 1519त 1520त 1521त 1522त 1523त 1524त 1525त 1526त 1527त 1528त 1529त 1530त 1531त 1532त 1533त 1534त 1535त 1536त 1537त 1538त 1539त 1540त 1541त 1542त 1543त 1544त 1545त 1546त 1547त 1548त 1549त 1550त 1551त 1552त 1553त 1554त 1555त 1556त 1557त 1558त 1559त 1560त 1561त 1562त 1563त 1564त 1565त 1566त 1567त 1568त 1569त 1570त 1571त 1572त 1573त 1574त 1575त 1576त 1577त 1578त 1579त 1580त 1581त 1582त 1583त 1584त 1585त 1586त 1587त 1588त 1589त 1590त 1591त 1592त 1593त 1594त 1595त 1596त 1597त 1598त 1599त 1600त 1601त 1602त 1603त 1604त 1605त 1606त 1607त 1608त 1609त 1610त 1611त 1612त 1613त 1614त 1615त 1616त 1617त 1618त 1619त 1620त 1621त 1622त 1623त 1624त 1625त 1626त 1627त 1628त 1629त 1630त 1631त 1632त 1633त 1634त 1635त 1636त 1637त 1638त 1639त 1640त 1641त 1642त 1643त 1644त 1645त 1646त 1647त 1648त 1649त 1650त 1651त 1652त 1653त 1654त 1655त 1656त 1657त 1658त 1659त 1660त 1661त 1662त 1663त 1664त 1665त 1666त 1667त 1668त 1669त 1670त 1671त 1672त 1673त 1674त 1675त 1676त 1677त 1678त 1679त 1680त 1681त 1682त 1683त 1684त 1685त 1686त 1687त 1688त 1689त 1690त 1691त 1692त 1693त 1694त 1695त 1696त 1697त 1698त 1699त 1700त 1701त 1702त 1703त 1704त 1705त 1706त 1707त 1708त 1709त 1710त 1711त 1712त 1713त 1714त 1715त 1716त 1717त 1718त 1719त 1720त 1721त 1722त 1723त 1724त 1725त 1726त 1727त 1728त 1729त 1730त 1731त 1732त 1733त 1734त 1735त 1736त 1737त 1738त 1739त 1740त 1741त 1742त 1743त 1744त 1745त 1746त 1747त 1748त 1749त 1750त 1751त 1752त 1753त 1754त 1755त 1756त 1757त 1758त 1759त 1760त 1761त 1762त 1763त 1764त 1765त 1766त 1767त 1768त 1769त 1770त 1771त 1772त 1773त 1774त 1775त 1776त 1777त 1778त 1779त 1780त 1781त 1782त 1783त 1784त 1785त 1786त 1787त 1788त 1789त 1790त 1791त 1792त 1793त 1794त 1795त 1796त 1797त 1798त 1799त 1800त 1801त 1802त 1803त 1804त 1805त 1806त 1807त 1808त 1809त 1810त 1811त 1812त 1813त 1814त 1815त 1816त 1817त 1818त 1819त 1820त 1821त 1822त 1823त 1824त 1825त 1826त 1827त 1828त 1829त 1830त 1831त 1832त 1833त 1834त 1835त 1836त 1837त 1838त 1839त 1840त 1841त 1842त 1843त 1844त 1845त 1846त 1847त 1848त 1849त 1850त 1851त 1852त 1853त 1854त 1855त 1856त 1857त 1858त 1859त 1860त 1861त 1862त 1863त 1864त 1865त 1866त 1867त 1868त 1869त 1870त 1871त 1872त 1873त 1874त 1875त 1876त 1877त 1878त 1879त 1880त 1881त 1882त 1883त 1884त 1885त 1886त 1887त 1888त 1889त 1890त 1891त 1892त 1893त 1894त 1895त 1896त 1897त 1898त 1899त 1900त 1901त 1902त 1903त 1904त 1905त 1906त 1907त 1908त 1909त 1910त 1911त 1912त 1913त 1914त 1915त 1916त 1917त 1918त 1919त 1920त 1921त 1922त 1923त 1924त 1925त 1926त 1927त 1928त 1929त 1930त 1931त 1932त 1933त 1934त 1935त 1936त 1937त 1938त 1939त 1940त 1941त 1942त 1943त 1944त 1945त 1946त 1947त 1948त 1949त 1950त 1951त 1952त 1953त 1954त 1955त 1956त 1957त 1958त 1959त 1960त 1961त 1962त 1963त 1964त 1965त 1966त 1967त 1968त 1969त 1970त 1971त 1972त 1973त 1974त 1975त 1976त 1977त 1978त 1979त 1980त 1981त 1982त 1983त 1984त 1985त 1986त 1987त 1988त 1989त 1990त 1991त 1992त 1993त 1994त 1995त 1996त 1997त 1998त 1999त 2000त 2001त 2002त 2003त 2004त 2005त 2006त 2007त 2008त 2009त 2010त 2011त

१ मोरे २ तोरे

तायिका भयत शोधेन पर विष्णु वदेन उच्यते ॥ १ ॥ सद्यो
 ओं दिन गद्यत काल द्रुत गतिर्हं वीते गेहः तदिह दिन दृष्टिः सम
 हंसर मुह देखैत शरमे ठमकि नहि उत ॥ १ ॥ अपन योनि (सौन्दर्य, के
 निकुनी भानि शोधैत तौनैत रहलहुं जे (सौन्दर्य घटल कि वदल भाव न
 से सभ किछु बाधक्यरूपी धीर धीराग तेनके भाव हंसर ओ रूप धुरि लहि
 आगौन ॥ १ ॥ भाव भोगह दूध पथिक लौलने दहर होइत छी । देखिक
 लजहि फेरि नैत उचि समसुख नाइत छी का धरि लाइत नैत के नैत
 लग नहि सयैत उचि

॥ सवि ॥ सवि जनु सभाह गडे दहि पावकडा भरनत नद
 दुना दह भोग कषयन धीर सवि दुखदर नालनी ॥ २ ॥
 पाम बाहुने सवि विह हार जण केव नमन भव ॥ ३ ॥
 सहा न पदेन लोचक शोधे ससने दिहहि शि ॥ ४ ॥
 भनइ विचारन नह म नैत शनोद नविलगने ॥ ५ ॥
 जवयौ न नालिक सज्जन भव स विह ॥ ६ ॥
 सद्यो हमरा विहा लग नैत के भा हम नालिक ॥ ७ ॥
 अलन (आनु) लोच ॥ ८ ॥ हमर देह दुख सहे लका रोस छाने
 (१) दह पुनहुनिक गन नद गौन लका दलका होइ नौद ॥ ९ ॥
 लग लहुन हमर प्राण जगै सहे गेल ॥ १० ॥
 भनइ अकलण के ॥ ११ ॥ सोह लोह हो न न नालिक ॥ १२ ॥
 लहुन लानि मोह कोन विचार नहि लोचनी लोचन मोहि लोचनी ॥ १३ ॥
 विचारने करैत उचि एहि रसक लका विकार लोचनी ॥ १४ ॥
 शिवसिंह

पाम ॥ नते विहा जवयौ न नालिक ॥ १ ॥
 कि मोरे कि करि कलन उचि ॥ २ ॥
 दिन दिने छिन दह पद विमरन नद नीउनि कलने उपाइ ॥ ३ ॥
 चानन जलन सम चानन गेल बम चानन चानन न माहइ ॥ ४ ॥
 गगने उठने धाते भय नद सुनि कोसोने हटय नद भागी ॥ ५ ॥
 इग एक दुद चले धरिने मरुछि पदु लोचन के उधभागी ॥ ६ ॥
 भनइ विचारने सुनह मरुछि दुनि लोचन विह नहि पागे ॥ ७ ॥
 राजा शिवसिंह रुधिरगणन लोचनी धार नहुन ॥ ८ ॥

१ नलिनी २ तोलि ३ पधु होचन के भागी ४ अचलहु ५ धयल

दूने लारिकाक विह वणन करैत भावे ॥ १ ॥
 प्रवासमे छैक। ते सुन्दरी बडे धारल अछि हार कमलमुखी कोन उपाइ
 करत ॥ २ ॥ दह दिन दिन लोचन भेल गेल ॥ ३ ॥
 लोचन चाननसँ जेहि सद्यत चानन अणि सन लगीत छैक, चानन नद
 हरिभरत भोले ते जल मोहलत नैत जे चानन ॥ ४ ॥
 चानि लोचन गेल अओर भयनक सुनल सुनैत लोचनक हटल
 अणि उठे लहुन सोह दह दह उठे लोचन मोह ॥ ५ ॥
 र छानि पदेन मोह ॥ ६ ॥ मोह जगल न लहुन लोचन ॥ ७ ॥
 विचारने कलन लोच ॥ ८ ॥ सुन्दर दही सुनल लोचन विहनी लोचनी धार
 करत ॥ ९ ॥

१ लोचन २ तोलि ३ पधु होचन के भागी ४ अचलहु ५ धयल

कद पकलनी पकल बीर ॥ १ ॥
 लोचन लोचनी गेल लोचन विहा लोचन ॥ २ ॥
 लोचन लोचनी सुनल विहा लोचन लोचन ॥ ३ ॥
 गुन दूध सद्यो गेल लोचन लोचनी लोचन ॥ ४ ॥

सन्नि मंदरा जगद अस्ति वह हुडकरव नरा अस्ति 5
 अस्मिन् अस्ति परदा पौन हंगवह पिअ जम्बुज हीन 6
 नयन कान्ते करव जन्ति हाकव ज्हु गेरा अस्ति
 अल विद्यापति कहने भिज जौक वस्त्रव टिक मरग 8
 मजो रुपता जन जन भुख सुखमदेदि रसगत 9

कव्यक भाग वेदीके जोग (दर्शिकरणक टीका) सिखयेत जयि
 1. कूट एकादगी एकल जौनर वीर (केशक धलक भविकसेत धल
 घच चितौर भाजोर नयन गीक सीर शीतलीक संग पौनिके पिअए देवहु
 त हे पिआ तो धनिक धणान्वय पिअरि मए जएवह 2) हे वेदी
 जोग वशीकरणक युक्ति मुनह दे जोग कएत पिअ कोइभी नान लहिमे
 भनुरक नहि होएतहु 3) गुड गुग्गुलु वहेड मकरभाही भएहय घेता दे
 सभ सानि आशिम जएवह 4) पिआ तंग पाहु लगएहु जेता गाडक पावो
 घाछा 6 परदाक पिलसं भौंछि भनवह त हे पिआ जम्बुज पिअरि
 होएवह 7 एक कजरमे जे अस्तिमे रवा करवह त पिआके जीता
 परदा जका हंकवह 8 विद्यापति हे भूचकोन व 9 महे जौयि हे समग्र
 योगसं पारस्परिक संगीतकल वल्लभ अस्ति 10 कव रसक
 सुखमदे गीत पवि मना रुपता मना तीर जता तरेन जोग

विद्यापति गीत संग्रह भाग दू

अर्वाचीन स्रोतक गीत

(9) शिअर्सन द्वारा संगृहीत

कर धर कर मदि पारे दब भवे अपरव हार 1
 मखि सब लेनि छलि गली न गाल केसोय गथ भली 2
 हमे न जएव गति वाटे नय समीघट पाटे 3
 विद्यापति गहु भात गुनरि भरु भगवान 4

पा 1 मे 2 अपरव 3 सभ 4 गुनरि 5 गुनरी

दातवीकार गीत, पारेव भए दल टिक वल्लभि गुणी वा
 छरछरि (खैरा) मूल 416 - 4 पारे मे ऊट दूटैत भईने ते पाठ
 अनुमान से बनाएत

सगल वस्तव संग्रह भान गभीर दालि उवा वहु गी
 सजनि सभय दयल क भोवस गुण लगी 1 कर मय
 लील पदम सन चोद होजिये महे ककसी बलन गीत केज
 का वीर कान्ते द 1 भव सच कए करम विवेक नहि भौल 2
 लीला गुर कमल नहि भए मरु मे जग के लीले मले
 से पुन लए नयनल जल भए जकन लित भयमान 3
 मलहु विद्यापति मनु व लीले हे सब नखल जसगत
 राजा सेवसी क जसगत लीले मने 4

1 सजनि मरु 2 गुन 3 पारि 4 नयसि 5 दह पति माने

नायिकाक छति नायकक चादूकि पान्दवाकक हेतु एवम् १
 पाभौल सम्प्राप्त भेल। कदा सत्य बात कहैत छी स मुनह ॥२॥ सुनि
 वरावरी करदासं समर्थ ॥४॥ लखन लक्षण विशेषता जेन ओ मुह
 अथि आ कमल एहि सभमे जे विशेषता देखओल से सभ समस्त सति
 व्यतिरेक उपस्था नहि उपमा

॥ ४

दर्शने कमलमुखि कोमल दह विनयक लीग कत उपसन लेह
 गूजन भवसिद्ध गुरुवर लान वेकत प्रेम कत करण पैलज ॥ १ ॥
 छन लेना छन आबन पास न शिवा भत भरे न हवा उदार ॥
 नखक गोवर पिर नहि होए कर धरहु धर्म मुह धर गण ॥ ४ ॥
 शिवापति कति एहो रस मय लोभरु सभमे सुनि सुदर ॥ ५ ॥

छन धरि नय छन उद्य ॥ रुन्द दूद ॥ १ ॥ भवति विद्यापति भव ॥ ५ ॥
 गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि

नायक नायिका म प्रियक वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 एक छल भव ॥ १ ॥ भवति न कमल प्रेम स्वयं हल नीलो भो लकरा
 छिपल ॥ ४ ॥ नखक गोवर शिवापति लखीके सु ॥ ५ ॥ विद्या
 लखीके सु ॥ ५ ॥ भवति न कमल प्रेम स्वयं हल नीलो भो लकरा

नीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 भवति विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि
 इ शिक विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि
 इ शिक विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि

॥ ५

सधव भव न जीवते रति
 जतन जकर नन छलि मुनि से नय संपन्न नदी ॥
 आतन ससिनुधि रुमिक संपन्नति रुमिक लीलिज लीलिज
 कंस पास चरन का संपन्नति वरुण मनाभव पैल ॥ २ ॥
 दसन दीन रुमिक संपन्नति रुमिक संपन्नति वरुण
 दसन रुमिक संपन्नति रुमिक संपन्नति वरुण ॥ ३ ॥
 हरे हरे कर सुनि उरति रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक
 रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक रुमिक
 मनु विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि

१. उल्लिख (रुन्द भो लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला

दूरी कृष्णके रघु वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला

विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि
 इ शिक विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि
 इ शिक विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि
 इ शिक विद्यापति भव ॥ ५ ॥ गव पतरुति ॥ ३ ॥ उकि

१. उल्लिख (रुन्द भो लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला

दूरी कृष्णके रघु वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला
 लीलिज ले सर लीलिज वरुण लखीके सु ॥ २ ॥ उशि तिला

॥ ५

अतिकर एवमि होइमिनि सजनि गे पाओल पदरथ धार
 नील वसन लल धौल सजनि गे फिर लल विकर समरि
 लचर भासा पिछर रस सजनि गे वदसल पाछे पसारे
 कैदरे सस कटिगत भछि सजनि गे लचन भस्मज धरि
 विद्यपति यह गाओल सजनि गे रल प ओल भदछि

हिरमाओल 2 धलइति (कपमे इका क अम) 3 देखउते 4 छेले
 (व्याकरण) 5 ससधि 6 पछ 7 पसारे

सखी राधाक भटपोल दोसरे सखीक सुनवत छाये भाग्य
 भगवणय केवा विधा ग (स्टागो) साभरी अतिके रलन गारे
 धदरथ धमे अर्थ काम मर्या 4 कैदरे पदह भानुन मसल

मधय लइल लछि पश रस
 गहवासल मरु ललक लछल न सस जोरे लीशयस
 टलउल्लो धारिस धारे सजनी ललय धरल सस मरु
 सुचो सल लीन 1 लीन वे लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन

मादरे 2 दौलत 3 रलन 4 म

सखी राधाक सु लीन कलके सुनवत 1 भाग्य रलने गलन
 (कृष्ण) 2 सस (भोज) क रिम दुन्द क लल लललल क सलल
 सुन्दर ओले 3 भोज भय दलक धारिस वरी लललल क धनि लीन

क दलिले (संकेमणी लछरी) क एउ प्रधुल्ल = कामदेव क पल्ली रति
 क समान अछि सुरपाते (इन्द्र) क शत्रु (हैमन्त) क देटी पावता क
 पति शिव, क वरी (कामदेव) क अपेक्षा अधिक सुन्दर ले राधा भनुल
 भेले (अर्थ भस्मज 3) लकर मुखक कान्ति अतिरिक्त र (देवता) न
 देरी (देवता) क गुरु शुक क वादक धारिस (चान क समान भछि
 कुम्भतलर (भगवन्त) क भदछ समुद्र क पुत्र मीन केर एले
 विसाओल अछि अथान, अथान ओ मुक्ताव हार पहिरने अछि 4)
 लन्दधरले (धरीटा) क कन्या लछा दुगी क वाहन (सिद्ध क समान
 लीन अछि भोज कति कामधेनुक धरि रू क पाते रंय क छि
 पल वल) के भानू ओरर ललन लीने लल (मूलमे लीने ललन
 विद्यपति मदन उदि अछि लल युवतीक रूपरुम अपूर्व लीने 1 रंय
 शत्रु लल क पली लीन क विता ललक क समान लपस्या कलली
 लीने युवतीक लछा धम भा सकेन भद

मधय लइल लछि पश रस
 गहवासल मरु ललक लछल न सस जोरे लीशयस
 टलउल्लो धारिस धारे सजनी ललय धरल सस मरु
 सुचो सल लीन 1 लीन वे लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन
 लीन लीन लीन लीन लीन लीन लीन

मादरे 2 दौलत 3 रलन 4 म

सखी राधाक सु लीन कलके सुनवत 1 भाग्य रलने गलन
 (कृष्ण) 2 सस (भोज) क रिम दुन्द क लल लललल क सलल
 सुन्दर ओले 3 भोज भय दलक धारिस वरी लललल क धनि लीन

राला बलि क पुत्र धर्मात्मा। क कन्या तथा क पति (अतिरिक्त) क पिता (प्रचुरनक क पिता कृष्ण) क पत्नी लक्ष्मी क पिता (समुद्र) क पुत्र (बाल) लक्ष्म जे उपमेय तथा। से भौत उपस्थित भौते (3, दिशा (0) सिंगम (4 ग्नि दत्त अकके नीरू नाहिसे दया क मुखक भाषा (2 दिग्गीक से लएके भौलहा सिद्धार लएके भौलनक सभाष ह भौलन नोहर रमणी एहन सुन्दरी छह 4) ई चिहानी पण्डितक हौ पठ, शिक्षा मूखक हनु पाथर ई भौल भौल (धन्वा द्वारा धनकारी धिक, दिवापारी करैत उथि जे ई भौल दूधाल से चतुरजन

बोडनो । अ मी नी कू । लाई

अपन भवज दिस जाइत छनि। 14 राधक गति तेहन छल जेहन
छगपति (चन्द्र), क एगो (गोवि), क शत्रु (हंस) क दरक टाहन
दि पिहली दिक; अथे कौनहुना पैसाजोत

1. पञ्चदश अक्षरं 2. पाठः

[illegible]

457

पत्ति भेलि २ वट्ठायी

कालने कान्ह काज हमा सुनल भ। गीत भए न भए
हान्ने मङ्गल गीत भए न हान्ने कि कह्य गीत गीत
सात पाँच हमा लीपि वशा लीपि गीत गीत
ने लीपि गीत गीत गीत गीत गीत
गान्ना गान्ना गीत गीत गीत गीत
गीत गीत गीत गीत गीत गीत
गीत गीत गीत गीत गीत गीत
गीत गीत गीत गीत गीत गीत
गीत गीत गीत गीत गीत गीत

1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766 2767 2768 2769 2770 2771 2772 2773 2774 2775 2776 2777 2778 2779 2780 2781 2782 2783 2784 2785 2786 2787 2788 2789 2790 2791 2792 2793 2794 2795 2796 2797 2798 2799 2800 2801 2802 2803 2804 2805 2806 2807 2808 2809 2810 2811 2812 2813 2814 2815

1871 मई के अन्त में जब किंग जार्ज ने भारत आये तो उन्होंने
 वलमी की पत्नी विष्णु की कीर्ति स्तम्भ बनाने का फैसला किया।
 लेकिन वह कलकत्ता में ही रहने लगे। उनके जाने की खबर मिला (2) कि
 वे नेपाल के चलाए हल हल की पत्नी के साथ सदा के लिए छुट्टी
 मारने के लिये भारत छोड़कर जा रहे थे। उन्होंने विष्णु की
 आत्मा को धन्यवाद देते हुए कहा कि वे अपने भाग्य के अनुसार
 देशों में (3) चलने लगे। उनके जाने के बाद नेपाल में भी
 उनकी स्तम्भ बनाने का फैसला किया गया।

→

1. लौकिक चरित्र भवत का सञ्ज्ञति मे लक्षण तम पाँचिम लक्ष
 विच विच सञ्ज्ञित तुलसी भवति मे लक्षि मे लक्षित मुरारी
 तए लभित का सञ्ज्ञित सञ्ज्ञति मे पाँचिम लक्षि चोर
 देखि भवत मत् उपनयन सञ्ज्ञति मे मुनिहुव चित लक्षि नीर
 लौक धसन तत पाँचिम सञ्ज्ञति मे सिंहा लक्ष पाँचिम सञ्ज्ञि
 लक्षण पाँचिम चरित्र सञ्ज्ञति मे लक्षित भवत लक्षि नीर
 लक्षित भवत लक्षि भवत का सञ्ज्ञति मे लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि
 कर धर लक्षि चरित्र का सञ्ज्ञति मे लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि
 मय बह सनमुख लक्षि सञ्ज्ञति मे लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि
 लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि
 लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि लक्षि

1. $\frac{1}{2}$ 2. $\frac{1}{2}$ 3. $\frac{1}{2}$ 4. $\frac{1}{2}$ 5. $\frac{1}{2}$ [illegible][illegible]

१ चलन्दि २ कर धरि ३ नैन्दि ४ परम ५ अट ६ सहेन
कहि अभिसारक वणन करैत छवि परम सरल आ स्वभाविक
दि मिरीस मे ई नन्दपणिक कहल गेल अछि

क३३

प्रथमहि गेलि धनि विअलम जास हृदय अधिक भेल तब तबस १
ठादि भेलि धनि आकुग न भौन हम मुरुति तनि मुख नहि बोन २
कर धर लेल पहु पास बैसण बैसनि रहनि धनि घटन झुकाए ३
मुख हरि लकड़त धनि कृपि लेल आकन भविष कलजमुचि लेल ४
भनहि विषापनि देह सुमति रस बुझ हिन्दुगनि हिन्दुगनि ५

रुसलि छलि २ सुखाए ३ लका भसर ४ भीर के

अभिसार वर्णन (हेन मुरुति सोलक एनिग) १४, अंकन
आलेखन

दि हिन्दुगनि शब्दसं लगेछ अ ई विषापनिक नाहे समापनिक
होएत

६

आने सदि भाई सदि लो ननु गह हम अने वर्णन ४ ५ ६ ७
शेट गोट राखि सब गेलि घहाए वेश कवाक नहु हलनि नगन ८
मिह अवसर धन लाल कला गी तबहाउ ९ तेव भेल १०
नोहे लोह कवा नयन हर लीर कंच कला भसर कुकुर ४
हुमसग जहुमे नैनिधिक लीर नहुमे हुमसग वंशे ५
भनहि विषापनि नय कतिराज अति लर' नि अतिरिक्त कल ६

६ लका २ गहु ३ मुन् ४ तारि

अभिसार वर्णन महज स्वभाविक १) लो नय गी ५
नविली पुरकनिक घन १६ कविगत अपासंगिक लगेछ

६५

सद्यः निविह कुलस गल रहि

लंकिन मधुकर कोसल अनुसर लव रस विदु बबनहि
चहिल वरस छलि पथस समगस गहिबक नगिनि नामे
आरति पति परतीने न मानधि कि करनि कोबेक नामे ७
अटकन भरि हरि समय मुलआन हरन वसन अघिसखे
चापल रस जलज जति कांलने सेटिनि देल गयेछ ३
एके अधर एके लीबि तिराधनि दुहु पुन गेल न होइ
कुलजुग पति पति सोरो कलज कि लए काने धनि गोई ४
भाकुल हटय वैकुण्ठ लीचन गेअ गेल लीर
कलशिक मीन धनि लए वंधन देह टसनिदेन पीर ५
भनहि विषापनि दुहुक मुदिन मन मधुकर लीचन वंश
भसर महनि कर कोसल कलशिक जगति निव टए गयी ६

१ करधि २ का ३ सल ४ मलसि ५ सहलि

मुग्धा नायिका सखी लयकके दुखदो छवि जे मुग्धा नायिकाक
सग कोला करी १) ६ कलक राखक देह सिंसिक पुन सन कोसल
आँछि लोभान सखी लेन कोसलसं गणु गिबन सखि लोभना २) ६ लव
नय रस लेखक २) लोभने नाम २) ६ पहर लोभ आँछि लोभ
स पुनलक ३) मुग्धाक गेदल ४) लोभने लीर ५) लोभने भवि
लोभने के सखी से भवर चाल उगेछ भनहि ४) लीर
लीक कलली लोभ निराधारे लोभने के ५) लोभने ६) लोभने
लोभने भावने लोभने लोभने लोभने लोभने लोभने ६
लोभने लोभने लोभने लोभने लोभने लोभने ६

भाँडे देखिअ साँचे रहि अलखीने भनि मानेन कलख १
 मन्द वसत ताँदे केओ न कहल भलि २ न कहल केओ भो
 आजुक रयति साँचे कहि बिलस भलि कलख भन कर मल ३
 गुन भवगुन पहु एकहु न दुइलाने रहु मलख मल ४
 मध्य सुखए केस भोइलाने दाम निचक रहि रोना
 रागि बिलसिति केलि न जनिभ मान भरन रहि भला
 भनकि विषयति सुन कर जनिनि ताँदे करहु किअ बाधे
 ने किछु उद् देल भोइर झोपे नैव नहि सभ कर इषलस ५
 सुख उदित भेल मन हरयित भेल परबस छपयि राते
 मयवि नव जे नहि नयन झपणन काठ भेल मो छनौ ६
 भनकि विषयति सुन वरजिहति न कोओ मदन जे सन
 एक दैत मदन सखाई होइछ सुखन दण्ड का मदन ७

मदन मयवि १ किछु २ मयवि ३ करहु ४ धरपल देवू ५
 मी मयवि ६

सुधाक विषयति पाँदेल रुडी सखीक दुजे भोग लहिकाक १
 जामोने न मयजहवा २ १ भस भसकेवे ३ निचक पलानेन

हे हवि हे हवि सो भ सखी मी मदन मयजहवा १
 मयजहवा २ मयजहवा ३ मयजहवा ४ मयजहवा ५
 मयजहवा ६ मयजहवा ७ मयजहवा ८ मयजहवा ९
 मयजहवा १० मयजहवा ११ मयजहवा १२ मयजहवा १३
 मयजहवा १४ मयजहवा १५ मयजहवा १६ मयजहवा १७
 मयजहवा १८ मयजहवा १९ मयजहवा २० मयजहवा २१
 मयजहवा २२ मयजहवा २३ मयजहवा २४ मयजहवा २५

यरा

राधा और भेल पर कृष्णस प्रथमक अनुमति भवैत छोटि १
 राधा २ खयल थाप भेल सखीक भवयन विचरि
 भोठ मन्द चन्दमन मोर के पकड़ मन्द भेल कृष्ण ३
 मोठ चटके भुनि छोटि नैवक आशय जे आय राधा मंद ४
 छोटि चटके ५

मदन मयवि सुन कर ताँदे पाँदे मयजहवा १
 कलख मयजहवा २ मयजहवा ३ मयजहवा ४
 मयजहवा ५ मयजहवा ६ मयजहवा ७
 मयजहवा ८ मयजहवा ९ मयजहवा १०
 मयजहवा ११ मयजहवा १२ मयजहवा १३
 मयजहवा १४ मयजहवा १५ मयजहवा १६
 मयजहवा १७ मयजहवा १८ मयजहवा १९
 मयजहवा २० मयजहवा २१ मयजहवा २२

मयजहवा २३ मयजहवा २४

मयजहवा २५ मयजहवा २६ मयजहवा २७
 मयजहवा २८ मयजहवा २९ मयजहवा ३०
 मयजहवा ३१ मयजहवा ३२ मयजहवा ३३
 मयजहवा ३४ मयजहवा ३५ मयजहवा ३६
 मयजहवा ३७ मयजहवा ३८ मयजहवा ३९
 मयजहवा ४० मयजहवा ४१ मयजहवा ४२

मयजहवा ४३ मयजहवा ४४ मयजहवा ४५

उरि

भाषाएं वृत्त, ताल, छंद, म, पणिजानं

बड़ जल जाने सरल सब चमकते सारा संसार ललित

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

चितं भवति दृश्यं गन्धं स्पर्शं रसं कलहं न जायते । २

आपने सब के सँ सँच नियन्त्रण कल जायसँ प्रिय-सँ।

वचन अक्षरक कथं हि विचलत नोभेष्टाने इति एवम् ।

॥ वाङ्मय विधायां च स्तुतं वाङ्मयविनिर्दिष्टं स्तुतं च न च स्तुतं

शाना सिद्धसिद्ध रूप लक्षणन लक्षितद्वयं कृतम् ५

सल लीं । दंडो] दंद जति मने ।

[illegible]

11.9. μ_X is a \mathbb{Q} -valued measure on \mathcal{F} with $\mu_X(\Omega) = 1$.

नाक नगुंये तः तः । भग भस ३ भः ।

解 依题设知, $\lim_{n \rightarrow \infty} \frac{a_n}{b_n} = \frac{1}{2}$, 故由洛必达法则得

ਸਮੇਂ ਕਾਟੁਕਾ ਲੋਕਾਂ 'ਤੇ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਸਮੇਂ 'ਤੇ

विद्युत्‌ के लिये जल में H^+ एवं OH^- आयन

इं इस प्रयत्नित उचितता गीत शिखर १.२५ सांस्कृतिक ताल मीन जे इत

ਉਨ੍ਹਾਂ: ਸਾਧ ਸਾਧ ਫੇਰ ਫੇਰ:

7

चलन और उसे लेखन हम करनी पुरन सकन मन काय;

[illegible]

एकद्वि जगत् एहिं साधु सज्जनै पर भाविति वसु भन्ता

हमो धर्मि नहि अस्मत्पति संनते दल गौरव दर मेला २

अभिषेक "फूल कमल फूल मन्त्री दशोत्तर" लीलाक दांग

સૌજન્ય ફક્ત જાતકરે જ રાખે છે અને રાજાની રાજાકીય જવાબદારી લેવાની

ਬਿੰਦੀ ਧਰੀ ਆਪਣੇ ਸਾਥਲੇ ਪਾਠੇ ਸਾਥੀ ਜਨ ਹਿੰਦ ਖੀਨਾਂਦੇ ਗਯਾ।

अन्य विचारों के अभाव में मैंने भी अपने मन में यह विचार आने लगा कि

भक्तु दिवादीनं गं भाव्यं सज्जतीं इति ३० सोम गनगाद

२४. अष्टादश उरु नदी प्रविष्टा एव तत्र मीनाः प्रसूयन्ति । पृथग् १५५

સાંચીના સ્તંભકલા પ્રતિ કાંઈક ને સૌંદર્ય પૂરતું નથી

የተሰጠው ስራ የሚገባበት የጊዜ ሰዓት ሲገኝ ስራው ሊገኝ ይችላል።

[illegible]

8. 11. 2015 2. 11. 2015 3. 11. 2015 4. 11. 2015 5. 11. 2015 6. 11. 2015 7. 11. 2015 8. 11. 2015 9. 11. 2015 10. 11. 2015 11. 11. 2015 12. 11. 2015 13. 11. 2015 14. 11. 2015 15. 11. 2015 16. 11. 2015 17. 11. 2015 18. 11. 2015 19. 11. 2015 20. 11. 2015 21. 11. 2015 22. 11. 2015 23. 11. 2015 24. 11. 2015 25. 11. 2015 26. 11. 2015 27. 11. 2015 28. 11. 2015 29. 11. 2015 30. 11. 2015 31. 11. 2015 1. 12. 2015 2. 12. 2015 3. 12. 2015 4. 12. 2015 5. 12. 2015 6. 12. 2015 7. 12. 2015 8. 12. 2015 9. 12. 2015 10. 12. 2015 11. 12. 2015 12. 12. 2015 13. 12. 2015 14. 12. 2015 15. 12. 2015 16. 12. 2015 17. 12. 2015 18. 12. 2015 19. 12. 2015 20. 12. 2015 21. 12. 2015 22. 12. 2015 23. 12. 2015 24. 12. 2015 25. 12. 2015 26. 12. 2015 27. 12. 2015 28. 12. 2015 29. 12. 2015 30. 12. 2015 31. 12. 2015 1. 1. 2016 2. 1. 2016 3. 1. 2016 4. 1. 2016 5. 1. 2016 6. 1. 2016 7. 1. 2016 8. 1. 2016 9. 1. 2016 10. 1. 2016 11. 1. 2016 12. 1. 2016 13. 1. 2016 14. 1. 2016 15. 1. 2016 16. 1. 2016 17. 1. 2016 18. 1. 2016 19. 1. 2016 20. 1. 2016 21. 1. 2016 22. 1. 2016 23. 1. 2016 24. 1. 2016 25. 1. 2016 26. 1. 2016 27. 1. 2016 28. 1. 2016 29. 1. 2016 30. 1. 2016 31. 1. 2016 1. 2. 2016 2. 2. 2016 3. 2. 2016 4. 2. 2016 5. 2. 2016 6. 2. 2016 7. 2. 2016 8. 2. 2016 9. 2. 2016 10. 2. 2016 11. 2. 2016 12. 2. 2016 13. 2. 2016 14. 2. 2016 15. 2. 2016 16. 2. 2016 17. 2. 2016 18. 2. 2016 19. 2. 2016 20. 2. 2016 21. 2. 2016 22. 2. 2016 23. 2. 2016 24. 2. 2016 25. 2. 2016 26. 2. 2016 27. 2. 2016 28. 2. 2016 29. 2. 2016 30. 2. 2016 31. 2. 2016 1. 3. 2016 2. 3. 2016 3. 3. 2016 4. 3. 2016 5. 3. 2016 6. 3. 2016 7. 3. 2016 8. 3. 2016 9. 3. 2016 10. 3. 2016 11. 3. 2016 12. 3. 2016 13. 3. 2016 14. 3. 2016 15. 3. 2016 16. 3. 2016 17. 3. 2016 18. 3. 2016 19. 3. 2016 20. 3. 2016 21. 3. 2016 22. 3. 2016 23. 3. 2016 24. 3. 2016 25. 3. 2016 26. 3. 2016 27. 3. 2016 28. 3. 2016 29. 3. 2016 30. 3. 2016 31. 3. 2016 1. 4. 2016 2. 4. 2016 3. 4. 2016 4. 4. 2016 5. 4. 2016 6. 4. 2016 7. 4. 2016 8. 4. 2016 9. 4. 2016 10. 4. 2016 11. 4. 2016 12. 4. 2016 13. 4. 2016 14. 4. 2016 15. 4. 2016 16. 4. 2016 17. 4. 2016 18. 4. 2016 19. 4. 2016 20. 4. 2016 21. 4. 2016 22. 4. 2016 23. 4. 2016 24. 4. 2016 25. 4. 2016 26. 4. 2016 27. 4. 2016 28. 4. 2016 29. 4. 2016 30. 4. 2016 31. 4. 2016 1. 5. 2016 2. 5. 2016 3. 5. 2016 4. 5. 2016 5. 5. 2016 6. 5. 2016 7. 5. 2016 8. 5. 2016 9. 5. 2016 10. 5. 2016 11. 5. 2016 12. 5. 2016 13. 5. 2016 14. 5. 2016 15. 5. 2016 16. 5. 2016 17. 5. 2016 18. 5. 2016 19. 5. 2016 20. 5. 2016 21. 5. 2016 22. 5. 2016 23. 5. 2016 24. 5. 2016 25. 5. 2016 26. 5. 2016 27. 5. 2016 28. 5. 2016 29. 5. 2016 30. 5. 2016 31. 5. 2016 1. 6. 2016 2. 6. 2016 3. 6. 2016 4. 6. 2016 5. 6. 2016 6. 6. 2016 7. 6. 2016 8. 6. 2016 9. 6. 2016 10. 6. 2016 11. 6. 2016 12. 6. 2016 13. 6. 2016 14. 6. 2016 15. 6. 2016 16. 6. 2016 17. 6. 2016 18. 6. 2016 19. 6. 2016 20. 6. 2016 21. 6. 2016 22. 6. 2016 23. 6. 2016 24. 6. 2016 25. 6. 2016 26. 6. 2016 27. 6. 2016 28. 6. 2016 29. 6. 2016 30. 6. 2016 31. 6. 2016 1. 7. 2016 2. 7. 2016 3. 7. 2016 4. 7. 2016 5. 7. 2016 6. 7. 2016 7. 7. 2016 8. 7. 2016 9. 7. 2016 10. 7. 2016 11. 7. 2016 12. 7. 2016 13. 7. 2016 14. 7. 2016 15. 7. 2016 16. 7. 2016 17. 7. 2016 18. 7. 2016 19. 7. 2016 20. 7. 2016 21. 7. 2016 22. 7. 2016 23. 7. 2016 24. 7. 2016 25. 7. 2016 26. 7. 2016 27. 7. 2016 28. 7. 2016 29. 7. 2016 30. 7. 2016 31. 7. 2016 1. 8. 2016 2. 8. 2016 3. 8. 2016 4. 8. 2016 5. 8. 2016 6. 8. 2016 7. 8. 2016 8. 8. 2016 9. 8. 2016 10. 8. 2016 11. 8. 2016 12. 8. 2016 13. 8. 2016 14. 8. 2016 15. 8. 2016 16. 8. 2016 17. 8. 2016 18. 8. 2016 19. 8. 2016 20. 8. 2016 21. 8. 2016 22. 8. 2016 23. 8. 2016 24. 8. 2016 25. 8. 2016 26. 8. 2016 27. 8. 2016 28. 8. 2016 29. 8. 2016 30. 8. 2016 31. 8. 2016 1. 9. 2016 2. 9. 2016 3. 9. 2016 4. 9. 2016 5. 9. 2016 6. 9. 2016 7. 9. 2016 8. 9. 2016 9. 9. 2016 10. 9. 2016 11. 9. 2016 12. 9. 2016 13. 9. 2016 14. 9. 2016 15. 9. 2016 16. 9. 2016 17. 9. 2016 18. 9. 2016 19. 9. 2016 20. 9. 2016 21. 9. 2016 22. 9. 2016 23. 9. 2016 24. 9. 2016 25. 9. 2016 26. 9. 2016 27. 9. 2016 28. 9. 2016 29. 9. 2016 30. 9. 2016 31. 9. 2016 1. 10. 2016 2. 10. 2016 3. 10. 2016 4.

2. 19. 2013. 11: 15. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 8

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$
 2. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{8}$
 3. $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$
 4. $\frac{1}{4} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{32}$
 5. $\frac{1}{8} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{64}$
 6. $\frac{1}{8} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{128}$
 7. $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$
 8. $\frac{1}{16} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{512}$
 9. $\frac{1}{32} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{1024}$
 10. $\frac{1}{32} \times \frac{1}{64} = \frac{1}{2048}$
 11. $\frac{1}{64} \times \frac{1}{64} = \frac{1}{4096}$
 12. $\frac{1}{64} \times \frac{1}{128} = \frac{1}{8192}$
 13. $\frac{1}{128} \times \frac{1}{128} = \frac{1}{16384}$
 14. $\frac{1}{128} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{32768}$
 15. $\frac{1}{256} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{65536}$
 16. $\frac{1}{256} \times \frac{1}{512} = \frac{1}{131072}$
 17. $\frac{1}{512} \times \frac{1}{512} = \frac{1}{262144}$
 18. $\frac{1}{512} \times \frac{1}{1024} = \frac{1}{524288}$
 19. $\frac{1}{1024} \times \frac{1}{1024} = \frac{1}{1048576}$
 20. $\frac{1}{1024} \times \frac{1}{2048} = \frac{1}{2097152}$
 21. $\frac{1}{2048} \times \frac{1}{2048} = \frac{1}{4194304}$
 22. $\frac{1}{2048} \times \frac{1}{4096} = \frac{1}{8388608}$
 23. $\frac{1}{4096} \times \frac{1}{4096} = \frac{1}{16777216}$
 24. $\frac{1}{4096} \times \frac{1}{8192} = \frac{1}{33554432}$
 25. $\frac{1}{8192} \times \frac{1}{8192} = \frac{1}{67108864}$
 26. $\frac{1}{8192} \times \frac{1}{16384} = \frac{1}{134217728}$
 27. $\frac{1}{16384} \times \frac{1}{16384} = \frac{1}{268435456}$
 28. $\frac{1}{16384} \times \frac{1}{32768} = \frac{1}{536870912}$
 29. $\frac{1}{32768} \times \frac{1}{32768} = \frac{1}{1073741824}$
 30. $\frac{1}{32768} \times \frac{1}{65536} = \frac{1}{2147483648}$
 31. $\frac{1}{65536} \times \frac{1}{65536} = \frac{1}{4294967296}$
 32. $\frac{1}{65536} \times \frac{1}{131072} = \frac{1}{8589934592}$
 33. $\frac{1}{131072} \times \frac{1}{131072} = \frac{1}{17179869184}$
 34. $\frac{1}{131072} \times \frac{1}{262144} = \frac{1}{34359738368}$
 35. $\frac{1}{262144} \times \frac{1}{262144} = \frac{1}{68719476736}$
 36. $\frac{1}{262144} \times \frac{1}{524288} = \frac{1}{137438953472}$
 37. $\frac{1}{524288} \times \frac{1}{524288} = \frac{1}{274877906944}$
 38. $\frac{1}{524288} \times \frac{1}{1048576} = \frac{1}{549755813888}$
 39. $\frac{1}{1048576} \times \frac{1}{1048576} = \frac{1}{1099511627776}$
 40. $\frac{1}{1048576} \times \frac{1}{2097152} = \frac{1}{2199023255552}$
 41. $\frac{1}{2097152} \times \frac{1}{2097152} = \frac{1}{4398046511104}$
 42. $\frac{1}{2097152} \times \frac{1}{4194304} = \frac{1}{8796093022208}$
 43. $\frac{1}{4194304} \times \frac{1}{4194304} = \frac{1}{17592186044416}$
 44. $\frac{1}{4194304} \times \frac{1}{8388608} = \frac{1}{35184372088832}$
 45. $\frac{1}{8388608} \times \frac{1}{8388608} = \frac{1}{70368744177664}$
 46. $\frac{1}{8388608} \times \frac{1}{16777216} = \frac{1}{140737488355328}$
 47. $\frac{1}{16777216} \times \frac{1}{16777216} = \frac{1}{281474976710656}$
 48. $\frac{1}{16777216} \times \frac{1}{33554432} = \frac{1}{562949953421312}$
 49. $\frac{1}{33554432} \times \frac{1}{33554432} = \frac{1}{1125899906842624}$
 50. $\frac{1}{33554432} \times \frac{1}{67108864} = \frac{1}{2251799813685248}$
 51. $\frac{1}{67108864} \times \frac{1}{67108864} = \frac{1}{4503599627370496}$
 52. $\frac{1}{67108864} \times \frac{1}{134217728} = \frac{1}{9007199254740992}$
 53. $\frac{1}{134217728} \times \frac{1}{134217728} = \frac{1}{18014398509481984}$
 54. $\frac{1}{134217728} \times \frac{1}{2684354592} = \frac{1}{36028797018963968}$
 55. $\frac{1}{2684354592} \times \frac{1}{2684354592} = \frac{1}{72057594037927936}$
 56. $\frac{1}{2684354592} \times \frac{1}{5368709184} = \frac{1}{144115188075855872}$
 57. $\frac{1}{5368709184} \times \frac{1}{5368709184} = \frac{1}{288230376151711744}$
 58. $\frac{1}{5368709184} \times \frac{1}{10737418368} = \frac{1}{576460752303423488}$
 59. $\frac{1}{10737418368} \times \frac{1}{10737418368} = \frac{1}{1152921504606846976}$
 60. $\frac{1}{10737418368} \times \frac{1}{21474836736} = \frac{1}{2305843009213693952}$
 61. $\frac{1}{21474836736} \times \frac{1}{21474836736} = \frac{1}{4611686018427387904}$
 62. $\frac{1}{21474836736} \times \frac{1}{429496734592} = \frac{1}{9223372036854775808}$
 63. $\frac{1}{429496734592} \times \frac{1}{429496734592} = \frac{1}{18446744073709551616}$
 64. $\frac{1}{429496734592} \times \frac{1}{858993469184} = \frac{1}{36893488147419103232}$
 65. $\frac{1}{858993469184} \times \frac{1}{858993469184} = \frac{1}{73786976294838206464}$
 66. $\frac{1}{858993469184} \times \frac{1}{14711167363904} = \frac{1}{125979962951741130752}$
 67. $\frac{1}{14711167363904} \times \frac{1}{14711167363904} = \frac{1}{251959925903482261504}$
 68. $\frac{1}{14711167363904} \times \frac{1}{29422334727808} = \frac{1}{503919851806964523008}$
 69. $\frac{1}{29422334727808} \times \frac{1}{29422334727808} = \frac{1}{1007839703613929046016}$
 70. $\frac{1}{29422334727808} \times \frac{1}{58844669455616} = \frac{1}{2015679407227858092032}$
 71. $\frac{1}{58844669455616} \times \frac{1}{58844669455616} = \frac{1}{4031358814455716184064}$
 7

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

$\frac{1}{x^2} = x^{-2}$

10

ਜੀ. ਟੀ. ਮਿਸਟਰ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਮਾਸ ਸਟੋਰ, ਫੁੱਲਾਂ ਤੇ ਗਰਾਸਾਂ ਦੇ ਫੁੱਲਾਂ

[illegible]

ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਦੀ ਸਹਿਮਤੀ ਦਿੱਤੀ ਹੈ।

संस्था का 3.5 करोड़ रुपए का बजट है। संस्था के 2000 से 4

भलाहे दिवसपि चालवत नथि एकेक मलक मील परा साधु ।

१ कवि २ जेठम सौतेले ३ परनिग्रह भादुल ४ दिपक.

५. विद्येति कहे (३)ये कणवदेहलो जे उगाद्वारे मज्जाम लाई कर म मनेन
३ कान जाए ते ओ धर टारुण म अ दुख

[illegible]

५. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

+

544

। स्वादिभ

 $\frac{1}{2} \log 2$

1. संस्कृत 2. संस्कृत 3. संस्कृत 4. संस्कृत

• 1

[illegible]

25

1. 2. 3. 4. 5.

गणेश दत्त के विवेक मथुरा जलपात्रों से निकल जाये, मगन मगन,
गणेश दत्त के पास है शक्य (अन्यपुरुषों से जलपात्रों के लक्षण 4)
गणेश दत्त

मैंने अपने दोस्तों और परिवार के साथ एक छोटी सी पार्टी आयोजित की।
मैंने अपने दोस्तों और परिवार के साथ एक छोटी सी पार्टी आयोजित की।
मैंने अपने दोस्तों और परिवार के साथ एक छोटी सी पार्टी आयोजित की।
मैंने अपने दोस्तों और परिवार के साथ एक छोटी सी पार्टी आयोजित की।

1. एक कक्षा में विद्यार्थी 30 हैं। इन में से 15 लड़के हैं।
2. एक कक्षा में विद्यार्थी 30 हैं। इन में से 15 लड़के हैं।
3. एक कक्षा में विद्यार्थी 30 हैं। इन में से 15 लड़के हैं।
4. एक कक्षा में विद्यार्थी 30 हैं। इन में से 15 लड़के हैं।
5. एक कक्षा में विद्यार्थी 30 हैं। इन में से 15 लड़के हैं।

1. प्रश्न : यदि $\sin A = \frac{3}{5}$ हो, तो $\cos A$ का मान ज्ञात करें।

495

माधव हनुम रत्न २३ द्वा. के. ॥ ३ काण संखे कृतम मत्त
 २३ जुग चिह्नं वसु तान्त्र फल हनुम भवतु दुतय तर्हि ॥ २४ ॥
 हनुम करमं मत्त दिदि दिदि ॥ २५ ॥ अथ माधव पुत्रा विनिर्णय
 हनुमक रत्न दत्त मत्तमा, अथक दुत सखि मत्त न मत्त ॥
 मत्त है विद्यागने कवि जय म दि. करत न ॥ २६ ॥ मत्त वाम ॥ २७ ॥

तत्त्वन्दि भाष्य दुर्गदित ३.१ (३.१)

राधा विरह-व्यथा सहन के सु-वैद्य कृति शिव भी लज्जा रहता है ।
रहता है । १५ अक्षरों टैप पर प्रिन्ट पर जोड़

ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਨੇ ਸਿੱਖੀ ਦੇ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰਾਂ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਲਈ ਇੱਕ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਦੇ ਅਧੀਨ, ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਲਈ ਇੱਕ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਦੇ ਅਧੀਨ, ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਲਈ ਇੱਕ ਸਮਾਜ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ।

$$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$

विद्यार्थी, यदि वे प्रश्न-सूची को ध्यानपूर्वक पढ़ें और
 प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हों, तो वे प्रश्न-सूची में
 दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।
 प्रश्न-सूची में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में
 सक्षम होंगे। प्रश्न-सूची में दिए गए प्रश्नों के
 उत्तर देने में सक्षम होंगे। प्रश्न-सूची में दिए
 गए प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे। प्रश्न-
 सूची में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम
 होंगे। प्रश्न-सूची में दिए गए प्रश्नों के उत्तर
 देने में सक्षम होंगे। प्रश्न-सूची में दिए गए
 प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे। प्रश्न-सूची
 में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होंगे।

कुसुमित कानन कुञ्ज बसी। तयजक काजर घोरि मसी ।
 नखसँ लिखलनि नलिनिक पात, लिखि पहाजोन आगार मान ।
 पहिलहि लिखलनि यहँ वसन्तः दोसरहि लिखलनि तेसरक अन्त ।
 लिखि नहि सकलिह अनुज वसन्त पहिलहि पट जहि जीवक अन्त । 4
 भनहि विद्यापति अच्छर सब बुधजन होथि सँ कहथि बिसय । 5

नलिन दल । 2 लिखि पहाजोनि

पिहानी विरह वर्णन राखक (1), राधा पुच्छित कुञ्जवतसे वसि
 आँखिक काजरसँ मोसि घोरि केँ (2) नहसँ दुरलिक पात पर पात
 लिखलनि सात गोट अक्षर विविध पठओलनि । (3) पहिल वसन्त पहिल
 मास 'मधु' लिखल तकरा बाद लिखलनि वसन्त सँ भास्मिक काल तेसर
 अनु यवो, तकर अन्त हस्त अर्थात् कर (दुनु मित्रा भेल) मधुवार 4
 तकरा आगँ वसन्तक अनुज (दोसर मास वैशाख) अर्थात् माघ नहि
 लिखि सकलीह; किन्तु ते पहिले अक्षर (माघ-म) म लिखिनिह पछक
 भक्त मरण

दि जि भे मनु सथे लगानक पछत करब किन्तु स्पष्ट
 आ हटवगत नहि भेल।

मन कबस भेल जइस नहि लिखि लिखकर नत नत धर
 मदन घटन दैत्र मातम भवन काहि कहब दुप जइस कलन
 मुजारी सिनेह गह नहि सब दान दैत्र कौकिल नच ।
 भसनि भसनि घसु निविघन आत बह मनोरघ घर गहुक ममान, 4 ।
 भनहि विशाखाते गनु परमान बूझ नच राघव नच राघवान ।

पहु न

नायिका भेदद्वयथा व्यक्त करैत छथि । नाह पिआ निसाकर
 चाल (2) मानस अन्त अस्पर्श (3) पूर्वक स्नेह भेल पादि घर नहि
 पुरैत छथि 4 घरमे पिआसँ मिलब तकर बड मनोरथ अछि
 दि राघवसिंह धीर सिंहक पुत्र थिकार

प्रथम एकदस टा पहु गेल तेरो 2 देवित मोर कत दिन संव ।
 दिनु आगत्य वसत मोर गेल तेरो न पहु मोर दरसन देव ।
 अब न धरम संधि होयत मोर दिन दिन मदन दुनु सँ नर । 3
 चलत विरत मोहि स्पर्श न होत चन्द्रा नारा विखम सँ मोए । 4
 भनहि विद्यापति गुरुमते नहि धी न पा पहु मिलत गुरादे 5

1 सुनत।

पिहानी। नायिका विरहोदय व्यक्त करैत छथि । पिआ
 राजतरणीक पहिल क राजारस 7 अर्थात् कर (धुरावाक अर्थात्) दए
 गेल तेरो वीरन 2 मोर इमर वसत अनु 6 मदनपर 10 6 10 16
 सोनह वदीक भेल 3 मोर पिआक दर्शन नहि

मधुघ दूकल दुन गत साव
 राखन दुरादु ११ गन दुरादु तेरो देवत मोर कत
 राखिस कौहे उदे गहुक गहुक सँ गहुक गहुक
 कपटो कान ३०० नहि उतली ३ काली २० मास मोर 2
 सति कौहे दह विदु विरहिन त एक कर उपर से
 बहक विरह सन सँ पारि ३ दुन कद करव गराते
 नच विदु टा लकी गन कत से ३४ पार परा ३
 से दारिज भूत लहि होभा सँ कवन भूत लहि जा ४
 भनहि विशाखाते गन वर लीवनि कौहे वैस बाध ।
 भावन जीव दन धरि वृद्धादिम असललल दुह भाषा 5

जे जल रगत मंडे सजें सज्जी कि करत देखि भा वेंक ॥

विद्यापति कवि गेल सज्जी रस धुन मगन

गन सिद्धि जल न सज्जी मंगल देव ॥

विद्यापति राधा भजन विरहवैदनी सज्जीत मूलवैत उद्ये पंखें पकड़
कायु दुहे पकड़ वाजनी राधाक भजन देह दलनेहार लहे पकड़
पाने मोही पलकन उपाय लहे कोन मुन जल कायें शनमला
गुणधैर्य ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ चत राहुक पराधर औहीन
औही नैसो हरिणक गानमें लागल करी दार होरण मन्त्रन गदुर
विद्यापति गान ॥ १४ ॥ तराते सुये

मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥

कत सुखसार पासील नृअ तीरे उड्डत निकट नयन धर तीरे ॥

कर जौं विद्यापति विद्यापति तरङ्ग पनु दामन होम पुनमानि गइले ॥

एक अपराध छैऔच मोर जाले परमल माण एत नृअ पाती ॥

कि करव अपराध नृअ धरिजे जलम वृन्तध एकाद सनाले ॥

मन्त्राथ विद्यापति समन्दरा तीरे भल काल जल विद्यापति मोहि ॥

मन्त्राथ स्तुति ॥ सुखसार उन्कृष्ट सुख ॥ १ ॥ छैऔच क्षमा
करव परमल पाती दे भला अर्थात् जल पाएरस छैहुं ॥ मे एक
अपराध ॥ ५ ॥ समन्दरी प्रस्थान कालमें निवेदन करैत छी जे

विद्यापति गान ॥ १५ ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥ मन्त्राथ कामदेव ॥

ससुर ससुर मोर गेलक विरस स्याही गेल छवि तलिक उटस ५
 सासु घर आन्दरि नएन न सुझ बालक मोर बचन लहे दुः 6
 भनहि विद्यापति अपरुब नहि। जहन विरह हं तेहन सिनेह 7 ।

पथिक ओ परकीयाक प्रेम प्रसंगे उक्ति ध-दुकेस मरल स्वाभादेक
 (3) पथुक पथिक धरोही (5) उदेस खोज।

667

घर घर भरमि जेमथि निन तलिको कहल विरह
 से आबे करम गौरि घर डे हं कतए निरदाह
 कतए भवन कत आइत बाप कतए कत भग
 कतए ठहोर नहि तेहर के कर एहन तमसा 2
 कओने कएल एही असोजन केओ न हिनक परिचार।
 जे कएल हिनक निबन्धन थिकथिक से पत्रिआर 3 ।
 कुल परिवार एक हो नहि पोरजन भूत पैतल
 देखि देखि भूर होअ उन के सह हृदयक साल 4 ।
 विद्यापति कह मुन्टहि धरज मन अचमक
 जे भौंछि जलिक दिमाही तलिको नहि घर नहि 5 ।

जलम

बरके देखि मनाइनि दिखल करीर छवि १ २ विर धर घर
 भीरु माहि माहि पेर भीत छवि गेलक विरहक कांस पयो वल 3
 असोजन मैथिल बाबणसे पसीका 2 निबन्धन डे उमणघर 11
 कन्याक बीच विवाह चलिने नहि निबन्धन दिज्जक यजुवा
 रि गौरीस्वयंवरक अनुसार डे गौर लालकीके शेरु

668

एहन उमल बर कएल हैमन जियि होउ छे छे नएछ रडग
 एहन उमल बर घोडवो न चढ़क नहि घोड रडग रडग अडग 1

669

बाघक छान जे बसत पलाजल भाषक लोचन लह 1
 दिमिक दिमिक जे डमरु बजइल खतर खतर कर अडग 2
 भकर भकर जे भौंछि अकोसथि छटर पटर कर अडग
 चानल सत्रो अनुराग न थिकइन भसम चढ़वथि अडग 3 ।
 भूतपिसाच अनेक दल साजल विर सत्रो छे गेल उडग 4
 भनहि विद्यापति मुनिअ मनाइनि थिकाह दिगम्बर भडग 141

1 मोरल धोरल। 2 गाल 3 भाल।

विवाक विवाहक वणन मनाइलिक उक्तिसे 11 उमल उमल
 खौराह रडग -उगुलता, चढ़वाक लेल घोडो नहि जेहि जडग अरुपह।
 12 पन्नालल जुमसं वान्दल। नडग जीन

670

(2) भोल झा द्वारा संगृहीत गीत

कतेक जनत भामा भोल सजति गे दग दग सस्य हजग
सपनहु जे छल जनिमहु सजति गे नहि करिन्हु मजिकर १
आब जगत भवि भाविने सजति गे केसो जनु कसो पनीनि
मुखसँ अधिक बुझाबयि सजति गे पुरुषक कसो छीनि २
बाजयि बहुत भोजिने सजति गे वचन राखयि नहि धीर
तनुक बिभा मोर दग्धल सजति गे तैसे तनिलिहल नीर ३
गुन भवगुन सब बुझलहु सजति गे बुझलहु पुरुषक तेने
भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि ४

भाषा स्पष्ट भाषिनि कविनि नही
भाषा स्पष्ट भाषिनि कविनि नही

एहु बड़ सुन्दरी नहि सी दिसा सजति गे स्वयं सजति १
गे नही सुन्दरी सजति गे स्वयं सजति गे स्वयं सजति २
उठहु गेठ वीरनि सिर गण विरल सजति गे स्वयं सजति ३
एक हाथ उठल गेठ हाथ लेल दिस के भलबा सुन्दरी गेठ दल ४
भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि ५

कवि पदास जन्य विरल भाषा काक वर्णन करै १ छि, बहु कलविनि
ह सुन्दरी उठल ह म विरल जाहुन सी केर सजति गे स्वयं सजति २
से मुनि

हम भवला भोजनि गे वीरक सजति गे स्वयं सजति १
हमसँ भलेक कृपति गे सुन्दरी न केर सजति २
हैड दुबल गेठ १ गेठ सजति गे स्वयं सजति ३
भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि ४

ह उचिरी थिक जे गान्य भविथिकें सुलभास जइछ गहिमे अपन
हीनस भा न्यूनसी तथा भविथिकें सुलभास देखाओल जइछ पोसेछ
गीत

६

१ वरनाह सनत भन्नु नही जाहि लोहेनक तलति नहि जही
यसु तेहर सासुरकें भाग नलिक सिर नहि गेवह गाम २
ससुके कोरसँ सनत जसग भसधि दिल्ह राजी बिलहल जाए ३
जाहि उदरसँ गहर भवि से पुनि नहि पलटि गेनि गेनि ४
भल विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि ५

ह विरल थिक उतर थिक सीमा न सजति गे स्वयं सजति १
हैत छथि ननु के लम भरघट नलिक गाम भाताय सिरपर
पापर दए भवत पशुदी धर जग राखल गाम अयोध्या गेवह २
जसग लम सासुरकें भाग नलिक सिर नहि गेवह गाम ३
भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि ४

य वरनाह सनत भन्नु नही जाहि लोहेनक तलति नहि जही

यसु तेहर सासुरकें भाग नलिक सिर नहि गेवह गाम

ससुके कोरसँ सनत जसग भसधि दिल्ह राजी बिलहल जाए

जाहि उदरसँ गहर भवि से पुनि नहि पलटि गेनि गेनि

भल विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि

ह विरल थिक उतर थिक सीमा न सजति गे स्वयं सजति

हैत छथि ननु के लम भरघट नलिक गाम भाताय सिरपर

पापर दए भवत पशुदी धर जग राखल गाम अयोध्या गेवह

जसग लम सासुरकें भाग नलिक सिर नहि गेवह गाम

भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि

ह विरल थिक उतर थिक सीमा न सजति गे स्वयं सजति

हैत छथि ननु के लम भरघट नलिक गाम भाताय सिरपर

पापर दए भवत पशुदी धर जग राखल गाम अयोध्या गेवह

जसग लम सासुरकें भाग नलिक सिर नहि गेवह गाम

भलहि विद्यापति गानोच सजति गे पुरुष न कपरी जीनि

महेसवानी (1) हकार पूरा अड़लि नलन लोकनि वरकें निहारी
 सोचैत छथि अरे इमाक घर तें बउसाइ छथि, (2) सिंगपर लग मुकुट (3),
 गंगाक धार हाथसे विशुल (4) गली राजासँ कहैत छथि । ९
 गौरी सान्त्वना दैत छथिन

११३

हम नहि आबु रहब एहि भण्डन जसो बुढ़ होएत रसाय ११,
 एक तें बीरी भेल बीध विधाना दोसर दिमा कैर बाध
 तेसर पैरी भेल नारद कअन ते बुढ़ भानस रसाय १२,
 पहिलुक गजल कामर बडव दोसर लोडव रुण्डमल
 बडव हकि वरिअति बेलगाय पिआ लग मलय पडाए १३,
 धौली लोहा पतरा पथी सैह सय तंबनिह छिन्ना
 जे किछु बनन नपद बाभन टाही धर चिसेभाय १४,
 भनहि विद्यापति सनु हे मज्झिमे दिठ कर अपन गीअन
 सुभसुभकर हिन गौरि विभाहिम गौरी हर एक मज्झन १५
 मोहिद महेसवानी स्वयन नपह

११४

मुजिलेनिह मर बर मुगर दीवला के पवने मज्झन १,
 मुजिलेनिह मज्झन रसाय दीविलेनिह बुढ़ पद पद २,
 मुजिलेनिह पाद पदकर देखिलेनिह कलने वधमय ३,
 मुजिलेनिह गार गीअन गार दीविलेनिह रदग ४ हर गार ५
 भनहि विद्यापति गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी ५

महेसवानी स्वयन ११४

११५

आमुनाथ एक भवन महेसवानी लखैत है
 लोहे सिंग धर नर वंस के डगर बनवत है
 लोहे गौरी कहे छह लखन दस कोना लखत है

११६

चारि सोच नहि होए कजोर चिधि बाँचव है १२
 अजिज पुष्टि भुईं खसत बघवयो जाएत है
 होएत बघमयर बघ बसल धर खसत है ३
 सिर सभ मसरत सप दहोदिस जाएत है
 कालिक पोसल मजुर सेहो धर खसत है १४
 जहा सभ छिलकत गडग भूमे भारे पाटत है
 होएत सहसमुख धर समंदली न जाएत है १५
 रुण्डमल दुहि घमल मज्झन नगन है
 लोहे गौरी जगद पडाए लख के देखत है ६
 भनहि विद्यापति गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी
 गौरी गौरी गौरी कि चार बचाओत है
 परम पंडित नचारी

११७

लोहे मज्झिमे देखा जह
 दिवक मय कुटल जहा लोहे उपर लग चहा
 जहा दल अंकुश लगन लोहे लोहे सुरमय गेलि बटिभा १
 दल दल लख दिविलेनिह मज्झन घमल के दिविलेनिह गार ३
 बटिभा लोहे पदल करन लख मज्झन मज्झन लख ४
 भनहि विद्यापति गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी ५

११८

दिविलेनिह जगद बुढ़ लहु लहु पदल मज्झन होएत कहु १
 लख मज्झिमे महु लख लोहे लोहे लोहे लोहे लोहे २
 दीविलेनिह लख लख लोहे लोहे लोहे लोहे लोहे ३
 भनहि विद्यापति गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी गौरी ४

११९

हमारे जोरों से लिखने के जंग देखेंगे नगा
 और हमारे पढ़ाई के जंगों में भी हम
 आगे से आगे पढ़ने में भी आगे।
 हमारे जोरों से 25 अंकों में भी हमारे
 खुद के खुद के भी हमारे भी हमारे
 पढ़ने के पढ़ने के पढ़ने के पढ़ने के
 हमारे पढ़ने के पढ़ने के पढ़ने के
 हमारे पढ़ने के पढ़ने के पढ़ने के
 हमारे पढ़ने के पढ़ने के पढ़ने के

[illegible]

तोह प्रश्न दूसरी था है जो कि कर्म इस प्रकार है
दूसरी देखने में है वास्तव में प्रश्न है

सुरसि श्रेष्ठ गति है महत पतनसंति पाति है ॥
 भक्तों लिये ही भक्त है सुरस गुरुक लिखत है ॥

मंगल अचल तबि गेलाह भू रि नउ टित गेलाह तकर १
 सुखस अछाह कर टि २ तिर तीरक तेगल चौक दिन ३
 वर्तिस कानि साह हरि नउ ते गुन संध गहन हल धेल ४
 सा मल ५ ल लिज न विचारि न कोह शन लहि कहल मुगारि ६
 भनहि विगपारि + अरगल रुधानल होथि से कहथि डिमरु
 टित तो भरे ताह नागल

१. संज्ञा वह शब्द है जो किसी वस्तु या व्यक्ति को सूचित करता है।
 २. विशेषण वह शब्द है जो संज्ञा के लक्षण या गुण को बताता है।
 ३. संज्ञा और विशेषण मिलकर संज्ञावाचक शब्द बनाते हैं।
 ४. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 ५. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 ६. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 ७. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 ८. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 ९. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।
 १०. संज्ञा और विशेषण के बीच संबंध संज्ञावाचक संबंध कहलाता है।

पिहानो 2) तिलि दा 180 दिन भयोन उओ भयक भयधि
नकर दला 360 दिन भयोन एवं नकर उओ गुना भयोन उओ वर्ष
(6 सारि धान)

१३५

पाहुन नालिद भयनी बैसक टेल राधरवर भातो
घर नहि सकपति घर न रागेन पाहुन आनल कजोन भयोन १।
हर भाता लण धरधि धैभात पाहुन जेम्बु रजिने सैका २।
साडिगचडिग भातन तसादुह भिंखेभा हरक चांगन टंछि हेगंधे परंगेया
भनहि विद्यापति मुाहु सगाडुनि एहन पाहुन घर लिखिनि अली ५।

१३६

गौरी ओरी ककरुपर कही वा भन जपारी भिधारी
हेम सिखर पर चारि भयदेव ने छागे घर ने दोनारि १।
चारि कुम्हारि गौरी रणद्वारी बिसे के पाल भय
हो गौरी कन विजति गजभोरी के मृग कान दवा २।
नेल फूलन चो केम धेलबागे भाता देव देव भात
हो गौरी कोन देव देव लोकी तिन लो कुनि भन ३।
भनहि विद्यापति गौरी क भयनी हू विन देव देव
मूम हास का वि म लीन दिगल हू वि विन देव देव ४।
लगावे ५ गौरी लहदुहा गौरी

१३७

है हर गौरी न नील गहम गहम
भयल सारन चान हन गौरी भयना नलि दिम चह गौरी
भय लान सिध नूतनर भौर ने दिन ते दुराणी भय दे भय
हो हनर भिंखेभा लण लोके भयन का भन सगाड
भनहि विद्यापति मुाहु सगाडुनि एहन पाहुन घर लिखिनि अली ५।

१३८

१३९

गौरा लीन चडला बह न गान टेल लीन अहना
एक दिन बाघ सिह करण हुनन दोसर चडल उल सेहो वनीना २
कानिक भयवाते दूह नीकल एक चहर मोर एक मून लदला ३
पैच पधार सादर मोनहु भयना सगाडिने भय देवल भयघोटला ४
खोनी न द्यारी भय भय अपन लणनक दाही धिका लीन भुवना
भनहि विद्यापति मुाहु सगाडुनि एहन पाहुन घर लिखिनि अली ५।

१४०

जहम देवल हर हो गुनांनधि गुरल मलारथ सब विधि
वराह जटल हर हो बुद गति कन कुण्डल भाग गजराती २
वैसन महादेव हर हो जीका घांटा जह विडिआनल सौति भौर ३।
विधिबरी हर हो विधि कर विधि न करा हर हठ घर ४।
विधि बरुडन हर हो धुमि गनु सनने खसन कन गौरी हंस
किछु नांन लखि है हावे बहु पुरव लिखल धिका गौर ५।
लगावे ६ भलि गौर भनहि

१४१

होली भयक भयन भयन भयनी भयनी
भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन
भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन
भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन
भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन भयन

१४२

नैहर भय १३ भय नैहर भय नैहर भय १३ भय
भयि विवि १३ भय नैहर भय नैहर भय नैहर
नैहर भय १३ भय नैहर भय नैहर भय नैहर
भयि विवि १३ भय नैहर भय नैहर भय नैहर

१४३

रचित पुण्ड्रिक गाने मालति सजति गे भन मलोन मुख नीर
की दृष्टि मकर पङ्कज सजति गे विहिरी इन्द्र कानर
चल चलन जे कुम्हने सजति गे हरि मनि मधुपुत्र गन
मुन दंष्ट्रि नीर उपखन सजति गे दण्ड दंड दुख टन २
कामलवत नहि आएल सजति गे कन रित धर हने आस
हलिमर सार सार भेल सजति गे भन दंड भेल उदारी ३
नकर कौक भविष्यद्वय सजति गे देवनि कन विमवास
भनहि विद्यापति गजेल सजति गे ई धिक परन उदारी ४।

५

कोअल कमल किरी विधि विराजत मंग विन्या विन लागे
विन्याहि मयी विन्या मोटे सुविभ रदुति रम्याविन गाने
बर कशिनि हे कमल विभारी निते भनिहारी हरि
मुन नितम्ब भरे कलह न गयन कामरा गे रित रदुति २
सा नील मंग विरम्यक विमल रसिमा बहल भनय कलह
भनहि विद्यापति विजुनि रदुति रदुति रदुति पाव दुर

हरि गेन मंगल हस पुनयन हिली हिल मंगली मंगल
की कद की पुन मंगल पद सजति को रित रदुति मंगली
नयन लिल गेल धनजय हस मुख गेल पद मंगल दुख मंगल ३
भनहि विद्यापति मुन बरनारि मुनयक दुख देवक दुख गाने ४।

५

दण्डन समय बरनन हे सखि दुखे वनये मो मंगल
मानु कि मंगल मन्द हे सखि हे दण्डन मंगल २
नील भन विनयन हे सखि लोके मंगल मंगल ३
भनहि विद्यापति भन हे सखि पुनयक नहि परमान ४।

५

अनुध धर पद लण गेल सजति गे कलक भनक वान
हम धनि वान मुनयक सजति गे रित भेल विनयक वान १
पदित दुख पाव मुख सजति गे लोके लोके गलमल
भनहि विद्यापति मुन सजति गे ई लोके रित किछु भन २

३

कनय रदल मंग मधय ना ननि विन कन जिह मधय ना १
हरि हरि कन वनयन ना विन कन कन कन मंगल ना २
शिरम सजल काने लोके ना विन कन कन कन मंगल ना ३
फुलन कमल पर लागल ना विन कन कन कन मंगल ना ४
भनहि विद्यापति मंगल ना देवमंगल रस वनय ना ५

६

मधय लेखि गेल विनय विनय लखत बरसि गेल मंगल मंगल
कनय विनय रदल मंगल रदल विनय रदल मंगल २।
पदित भनय कनय कनय विनय रदल मंगल मंगल ३।
म मुनि कनय गनय विनय रदल मंगल मंगल मंगल ४।
कनय मंगल कनय मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ५।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ६।
भनहि विद्यापति मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ७।

८

मधय मंग विनय विनय मंगल मंगल
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल २।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ३।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ४।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ५।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ६।
मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल ७।

८

निजातें तु ह जास माहि पुन विधि ह वे नव ते
 पकट दिवत मजोर शोर घुम मधुकर जावन हाते त वेजते ॥
 विषयाचें भल भरण कर काहिनि ते कात पावत पैजते
 रिज दन माहि सुवास वहत हरि पूज सक मनवान

1. संविधान राष्ट्र की ऊँची कानून है।
 2. संविधान राष्ट्र के सभी नागरिकों के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार को संरक्षित करता है।
 3. संविधान राष्ट्र के सभी नागरिकों के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार को संरक्षित करता है।
 4. संविधान राष्ट्र के सभी नागरिकों के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार को संरक्षित करता है।
 5. संविधान राष्ट्र के सभी नागरिकों के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार को संरक्षित करता है।

1. प्रश्न : यदि $\sin \theta = \frac{3}{5}$ हो, तो $\cos \theta$ का मान ज्ञात करें।
 2. उत्तर : $\sin \theta = \frac{3}{5}$ हो, तो $\cos \theta = \frac{4}{5}$ ।
 3. प्रश्न : यदि $\cos \theta = \frac{4}{5}$ हो, तो $\sin \theta$ का मान ज्ञात करें।
 4. उत्तर : $\cos \theta = \frac{4}{5}$ हो, तो $\sin \theta = \frac{3}{5}$ ।
 5. प्रश्न : यदि $\tan \theta = \frac{3}{4}$ हो, तो $\sec \theta$ का मान ज्ञात करें।
 6. उत्तर : $\tan \theta = \frac{3}{4}$ हो, तो $\sec \theta = \frac{5}{4}$ ।
 7. प्रश्न : यदि $\sec \theta = \frac{5}{4}$ हो, तो $\tan \theta$ का मान ज्ञात करें।
 8. उत्तर : $\sec \theta = \frac{5}{4}$ हो, तो $\tan \theta = \frac{3}{4}$ ।
 9. प्रश्न : यदि $\csc \theta = \frac{5}{3}$ हो, तो $\cot \theta$ का मान ज्ञात करें।
 10. उत्तर : $\csc \theta = \frac{5}{3}$ हो, तो $\cot \theta = \frac{4}{3}$ ।

1. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 2. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 3. $\frac{1}{x^4} = x^{-4}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 4. $\frac{1}{x^5} = x^{-5}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 5. $\frac{1}{x^6} = x^{-6}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 6. $\frac{1}{x^7} = x^{-7}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 7. $\frac{1}{x^8} = x^{-8}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 8. $\frac{1}{x^9} = x^{-9}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 9. $\frac{1}{x^{10}} = x^{-10}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$
 10. $\frac{1}{x^{11}} = x^{-11}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-11} = -11x^{-12} = -\frac{11}{x^{12}}$
 11. $\frac{1}{x^{12}} = x^{-12}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-12} = -12x^{-13} = -\frac{12}{x^{13}}$
 12. $\frac{1}{x^{13}} = x^{-13}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-13} = -13x^{-14} = -\frac{13}{x^{14}}$
 13. $\frac{1}{x^{14}} = x^{-14}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-14} = -14x^{-15} = -\frac{14}{x^{15}}$
 14. $\frac{1}{x^{15}} = x^{-15}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-15} = -15x^{-16} = -\frac{15}{x^{16}}$
 15. $\frac{1}{x^{16}} = x^{-16}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-16} = -16x^{-17} = -\frac{16}{x^{17}}$
 16. $\frac{1}{x^{17}} = x^{-17}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-17} = -17x^{-18} = -\frac{17}{x^{18}}$
 17. $\frac{1}{x^{18}} = x^{-18}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-18} = -18x^{-19} = -\frac{18}{x^{19}}$
 18. $\frac{1}{x^{19}} = x^{-19}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-19} = -19x^{-20} = -\frac{19}{x^{20}}$
 19. $\frac{1}{x^{20}} = x^{-20}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-20} = -20x^{-21} = -\frac{20}{x^{21}}$
 20. $\frac{1}{x^{21}} = x^{-21}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-21} = -21x^{-22} = -\frac{21}{x^{22}}$
 21. $\frac{1}{x^{22}} = x^{-22}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-22} = -22x^{-23} = -\frac{22}{x^{23}}$
 22. $\frac{1}{x^{23}} = x^{-23}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-23} = -23x^{-24} = -\frac{23}{x^{24}}$
 23. $\frac{1}{x^{24}} = x^{-24}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-24} = -24x^{-25} = -\frac{24}{x^{25}}$
 24. $\frac{1}{x^{25}} = x^{-25}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-25} = -25x^{-26} = -\frac{25}{x^{26}}$
 25. $\frac{1}{x^{26}} = x^{-26}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-26} = -26x^{-27} = -\frac{26}{x^{27}}$
 26. $\frac{1}{x^{27}} = x^{-27}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-27} = -27x^{-28} = -\frac{27}{x^{28}}$
 27. $\frac{1}{x^{28}} = x^{-28}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-28} = -28x^{-29} = -\frac{28}{x^{29}}$
 28. $\frac{1}{x^{29}} = x^{-29}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-29} = -29x^{-30} = -\frac{29}{x^{30}}$
 29. $\frac{1}{x^{30}} = x^{-30}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-30} = -30x^{-31} = -\frac{30}{x^{31}}$
 30. $\frac{1}{x^{31}} = x^{-31}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-31} = -31x^{-32} = -\frac{31}{x^{32}}$
 31. $\frac{1}{x^{32}} = x^{-32}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-32} = -32x^{-33} = -\frac{32}{x^{33}}$
 32. $\frac{1}{x^{33}} = x^{-33}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-33} = -33x^{-34} = -\frac{33}{x^{34}}$
 33. $\frac{1}{x^{34}} = x^{-34}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-34} = -34x^{-35} = -\frac{34}{x^{35}}$
 34. $\frac{1}{x^{35}} = x^{-35}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-35} = -35x^{-36} = -\frac{35}{x^{36}}$
 35. $\frac{1}{x^{36}} = x^{-36}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-36} = -36x^{-37} = -\frac{36}{x^{37}}$
 36. $\frac{1}{x^{37}} = x^{-37}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-37} = -37x^{-38} = -\frac{37}{x^{38}}$
 37. $\frac{1}{x^{38}} = x^{-38}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-38} = -38x^{-39} = -\frac{38}{x^{39}}$
 38. $\frac{1}{x^{39}} = x^{-39}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-39} = -39x^{-40} = -\frac{39}{x^{40}}$
 39. $\frac{1}{x^{40}} = x^{-40}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-40} = -40x^{-41} = -\frac{40}{x^{41}}$
 40. $\frac{1}{x^{41}} = x^{-41}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-41} = -41x^{-42} = -\frac{41}{x^{42}}$
 41. $\frac{1}{x^{42}} = x^{-42}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-42} = -42x^{-43} = -\frac{42}{x^{43}}$
 42. $\frac{1}{x^{43}} = x^{-43}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-43} = -43x^{-44} = -\frac{43}{x^{44}}$
 43. $\frac{1}{x^{44}} = x^{-44}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-44} = -44x^{-45} = -\frac{44}{x^{45}}$
 44. $\frac{1}{x^{45}} = x^{-45}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-45} = -45x^{-46} = -\frac{45}{x^{46}}$
 45. $\frac{1}{x^{46}} = x^{-46}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-46} = -46x^{-47} = -\frac{46}{x^{47}}$
 46. $\frac{1}{x^{47}} = x^{-47}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-47} = -47x^{-48} = -\frac{47}{x^{48}}$
 47. $\frac{1}{x^{48}} = x^{-48}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-48} = -48x^{-49} = -\frac{48}{x^{49}}$
 48. $\frac{1}{x^{49}} = x^{-49}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-49} = -49x^{-50} = -\frac{49}{x^{50}}$
 49. $\frac{1}{x^{50}} = x^{-50}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-50} = -50x^{-51} = -\frac{50}{x^{51}}$
 50. $\frac{1}{x^{51}} = x^{-51}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-51} = -51x^{-52} = -\frac{51}{x^{52}}$
 51. $\frac{1}{x^{52}} = x^{-52}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-52} = -52x^{-53} = -\frac{52}{x^{53}}$
 52. $\frac{1}{x^{53}} = x^{-53}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-53} = -53x^{-54} = -\frac{53}{x^{54}}$
 53. $\frac{1}{x^{54}} = x^{-54}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-54} = -54x^{-55} = -\frac{54}{x^{55}}$
 54. $\frac{1}{x^{55}} = x^{-55}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-55} = -55x^{-56} = -\frac{55}{x^{56}}$
 55. $\frac{1}{x^{56}} = x^{-56}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-56} = -56x^{-57} = -\frac{56}{x^{57}}$
 56. $\frac{1}{x^{57}} = x^{-57}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-57} = -57x^{-58} = -\frac{57}{x^{58}}$
 57. $\frac{1}{x^{58}} = x^{-58}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-58} = -58x^{-59} = -\frac{58}{x^{59}}$
 58. $\frac{1}{x^{59}} = x^{-59}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-59} = -59x^{-60} = -\frac{59}{x^{60}}$
 59. $\frac{1}{x^{60}} = x^{-60}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-60} = -60x^{-61} = -\frac{60}{x^{61}}$
 60. $\frac{1}{x^{61}} = x^{-61}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-61} = -61x^{-62} = -\frac{61}{x^{62}}$
 61. $\frac{1}{x^{62}} = x^{-62}$ $\Rightarrow \frac{d}{dx} x^{-62} = -62x^{-63} = -\frac{62}{x^{63}}$
 62. $\$

अथवा अणुसंश्लेषण प्रक्रिया में ही गैल सैनिटिक साफ़ी २
जुआन नयत मेल व्याकृत है वति से थिर तारे रहए गेआने
पिछावते जावे लाअंत रज्जते गे ह थिफ दखल निदान ४

१०८]

गङ्गाया गङ्गा सिद्धि कर सज्जति गे सहजहिं द्योति देह
प्रथमाहं पहुक समायगम सज्जति गे कष्टल परम सिद्धिह
दुःख भय नृपिनि विमुख आ सज्जति गे घेरह बसन मुख झणिये
अश्रितव ज्ञानिक नामे भवति गे ताह तहि कर पठ कपि २
बलत और भरी वाज्य सज्जति गे भेल गपथ निरखह
पुन्य न आना तागे दुख सज्जति गे कष्टल निज मुख चाह ३
नृपुन कष्टि तबअल सज्जति गे हारल बसन अथसेख
आह भवत डल लागर सज्जति गे भलि दाखन भेल देण ४
अलहिं विवर्णति गे अथ साज्जति गे केसी ननु तह लखह
अथ कर हस गे गद मज्जति गे वे सुन ते द्योत पाद ५

1. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 2. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 3. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 4. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 5. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 6. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 7. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 8. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 9. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।
 10. ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਿਰ ਹੋਣਾ।

‘जैतु दिन हीन धरु मलमोहल हजगि जमनी रस शिव ।’

कांच कमलकुल कलि लहि लोडि अधिक उलत उदघोषे
एहन धास रनिजोग न थिक घहु मातेम मोर उदघोषे २ ।
राहु गरासल सांसेधर जेता तेहन न कपिअ रंभाते
किछु दिन आचर बिनए दिअ गंधध तखन होगत रस टाते
अलहं विद्यापति सुनिअ अंधुरपति घेज घेनि सुने ।
समय जनि तेहि होगत समाधाय अरु हस छहु तय ४

युद्धा वड रण रमिथा जना मणि देण जना हुनांमेया
 बुढीं घाएजे घातक मेल लहि घर बघत न्हि घर तेल २ ।
 महातेक सादी टेलनि आठ्ठा जेन मुहज देन टेलि वैभाय
 भलहि विद्यावाजे सुख महांमेया हाक धरि देणि हामि जनांमेया, ४

(12) तरेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा संगृहीत गीत

क--अभियन्ता

गगन वल्लभः अङ्गल १ शौरस काल अचैत
 क्रोर अ विलति ललित आभोग १ जन्दि बेनु रिङ्गुलन तीन
 आवः सुकति मङ्गलतिनि १ वाह निहरण जजो
 कुन्दित मय दिन ताहि रह १ सुद्विषस मन हरयाजी २ १
 साभर वल्द उगवाह १ गठि पुनि गेलाह भकास
 एनवाह निआव जजो १ पालन विरहिते सांस १
 मूतह दुराह निहाका १ जति दर हिमरा धाव
 वि करव देअर भकुल १ अजिहि दान न पाव १
 विषाधति कवि राविह १ रस नाना रसमन्त
 मन्ति मन्तव सुन्दर १ गनका देवि सुखला १५

ਸੀ 10, 2 ਯਾਦ 3 ਸੁੰਦਰ 4 ਯਾਦ

इसमें मैंने तीन शब्दों को अलग से प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है। पहला शब्द 'अग्नि' है। यह शब्द 'अग्नि' शब्द से आया है। दूसरा शब्द 'अग्नि' है। यह शब्द 'अग्नि' शब्द से आया है। तीसरा शब्द 'अग्नि' है। यह शब्द 'अग्नि' शब्द से आया है।

हमारे लक्ष्य है कि हमारे देश में एक ही धर्म, एक ही भाषा, एक ही जाति हो सके। हमें अपने देश को एक ही धर्म, एक ही भाषा, एक ही जाति बनाना है। हमें अपने देश को एक ही धर्म, एक ही भाषा, एक ही जाति बनाना है। हमें अपने देश को एक ही धर्म, एक ही भाषा, एक ही जाति बनाना है।

मेरे कान्ठ से हँस सेहें पञ्चवान पाछिब छानि ॥ १ ॥
आगिल पैसक कि कहव साधे ॥ २ ॥
हँसि विसरवह दण धिन्वास ॥ ३ ॥
कवि विद्यापति ॥ ४ ॥

1 पाछिब

राधा कृष्णकें पीति भगवत उपराग दैत छथि ॥ १ ॥
भोएह छह आ हमहूँ भोएह छी ॥ २ ॥
(2) भाग्य पैसक आशा करव तँ दूर पूर्वमे जे पैस छल सेहो आव भय
रहि सेव

शिव विषय कर ते पिय पर कोय ॥ १ ॥
भल जानौ सी भयनस छयत ॥ २ ॥
एकपति नर के ओ नहि देख ॥ ३ ॥
भागी मय हरि कर ॥ ४ ॥

तन

नारी का कृपयाश्रितक ॥ १ ॥
मेय स्त्री लारी कुच लव ॥ २ ॥
पैसक उपलब्ध करव नकवहु ॥ ३ ॥
भमगत मानव जाइछ तेना ॥ ४ ॥

हरि धरु हर चमकि ॥ १ ॥
रूपर कोय धनि टिनि ॥ २ ॥
मधुरिम हंस गुप्त नहि ॥ ३ ॥

कर धरु कुच अकुच भेले नारी ॥ १ ॥
चिह्न चमर ॥ २ ॥
विद्यापति ॥ ३ ॥

कवि भावस्थिक घरनासँ दम्पतिक बीच पैमनस्थिक भजन देखयैत
छथि ॥ १ ॥
राधा मूडी छिये ॥ २ ॥
पिदि नारा ॥ ३ ॥

अपुनर रूपक धाम ॥ १ ॥
सीतल सीत मोहये ॥ २ ॥
मधुर दयल मधु सीत ॥ ३ ॥
कि कहव रतिपद ॥ ४ ॥
विद्यापति ॥ ५ ॥

1 रतिमा 2 मय 3 वलये बाट

काये कसिनीक ॥ १ ॥
मय मयमय ॥ २ ॥
(4) परिभ्रम ॥ ३ ॥

रत्न करम मर भेन ॥ १ ॥
दण मेल वधनक भास ॥ २ ॥
कवि विद्यापति ॥ ३ ॥

बडि बडि सवे नहि पावै विरह निहाले जाड़े
अपने बचन जे प्रतिपाला से बडि सचहु पावे
साजनि सुजन जत निहारे
फि दिअ अजर कलक उममा कि दिअ उममा देह
ओ नहि अजन आनि पनपरिअ तैओ न होत मलान
इ जदि आये कि कसिण कालेन तैओ न होत ठान
गरल फि आनि सुधारसे निहारेन तैओ न होत ठान
जडिओ सुधनिधि जडिक नुनि ३ नडिओ न वरिस छात्र
भन विषापति भुन रमापति सज्जन गुन निधान
अपन बेटस जाहि निधेनओ ने पा दैतल रात्र

कसल सुधनिध अमर न आव पायिक निहारेन जत न होत,
दिन दिन सवेयर होत अरवि मचहु न वरिसन गति ओर हारा ३
तहि तेहे वरिसव तअव डालि को कल १ नोव विरह गुन कल
अजड विरह ते मसज्जन वनि मरिजित विरह भोजन २ १ ३ ४

नारियका नायकके प्रार्थना छल धरिअक अरु अरु करैत छाये
गोखरि ओ मीठक एलीक द्वारा (१) गोखरिमे कसल सुधनिध सवेयर अमर
कथी लान ३० भोज (२) गोखरि दिन दिन मरिजित भोज न डाल १
दिनमे तैओ वरिसव न डाल

मधुर भोजन गेल १ ओर दिहाले छाये
गोपी सकल विलापति १ वन छाये नोव ३

सुनाने उलहै अमर गृह १ गनहुँ मरणा
एर मज्जा कुटल पनसति १ कौन लेल अपला २
कल कलवत्र कल सज्जन १ हरी मरिजित मरति
भलक धनसत्री धनसज्जन १ कुवज भेदि गति ३
मोकुल चान अछोरन १ गोरी गेल चन्दा
विपुली धनवि दुहु जोडी १ विरह टा गेल चन्दा
कल भाव नि न मरिजित १ एहु अमर भोज
गिर जडि भोजन देव १ भरि कलक कलरा ५
अजड विरह नि मरिजित १ धरज धर नारी
मोकुल होत मरिजित १ फेर शिलत मरिजित ६

कसल मधुरमज्जनम व्याधेन रात्रि विरह करैत छाये (१)
विहारे काला ३, मरिजित गति विरहव्यथ १४, मोकुलक गतिके
कसल विरह लेखक ५ छाँडि मिसरी कीन्त

कुल गव लकी नारी नारी जत न होत सुधनिध वरि १
मरिजित धनधन सौजन्य भावे विरह मरिजित कर मरिजित २
नरिजित धन धन मरिजित ३ मरिजित धन मरिजित ४
मरिजित धन धन मरिजित ५ मरिजित धन मरिजित ६
मरिजित धन धन मरिजित ७ मरिजित धन मरिजित ८
मरिजित धन धन मरिजित ९ मरिजित धन मरिजित १०

वधि पा रात्रि कृष्णक प्रेमक प्रीति एक वधाव सज्जन करैत
उधि (१) लकीन लकीन गीत सुधनिध वरि मधुर वरिजित १
(२) मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित

दिनु दोहे पिन अरिजित गेल सौजन्य मरिजित मरिजित
मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित मरिजित

हरि सङ्ग करल रहस तन दिनचखे विम तन मेल २
 निरधरि विरह पयोनिधि कनहु मरत नहि टेल विधि ४
 मनोरथ मतीहि रहस कति विरह दहन होअ तन अति ५
 विद्यापति कह गुनभति अघोरे मिलत मधुरघाते ६

राधा सखीके विरहवेदना सुनैत छौदे (३) दितनछे विरह
 विरह (४, पयोनिधि) समुद्र

कानन भमि भमि कुट्टक मयूर कट भेल निरर कलत वद दू १
 कन दुर भधुधु कह सोखे नति कहां वस मधव सारदरपाने २
 सुनि आकाश कान मर देह गल गल गेल मुमरि मिले ३
 भजहु विद्यापति सनु वरनाथ धैरत धन रह मिलन मुगी ४

राधा सखीके अपन विरहवेदना सुनबैत छौदे १, वनमे छुंमि छुंमि
 मयूर कुट्टक अछि रघी कनु भावि गेल कन्हि जे का (अछि दू
 गेल से निकट आगल मूद कन्हि दू रहल

राहु तन नहि वरम लेल हेबोह वरत दिह भेल
 कति लर देव जलज दल कति अमर तन भेल १
 अघोरे कलत फलत भेल कट कुल ममर लोचन २
 विद्यापति कवि गलत छौदे दुरध कल जगल ३
 राधा विरहवेदना व्यक्त करै छवै मरह ४

विम विरहिले अने मरिजि कलत जे लोचन १
 भवति न अगल मलय भव विम जगल २
 रविमर शन भेल विरह कल गली भेल ३
 दिव दिव अचमल देह विरह कल गली ४

हर निमेष नृप लभिते कागिले जगदने १
 मुमरि पडल भवि माझ सोझ सति जगदने ३
 विद्यापति कह सद्यत दुसक मनोभव २
 कसी जनु अनुभव जग जत विरह परामव ४

कवि राधाक विरहक वर्णन करैत छथि, राधिकर सुयक किरण
 विधुवर चानक किरण भोज भयलक भवमल खिल्ल १
 एक निमेष एक पहर सत लगी छौदे भा एक रति एक युग सत ४
 सद्यत समस आधिक

अघोरे भल का विरह विधान
 गेह पम सुनर सुखदायक सेह भेल दुरहत
 लर मुमर तन मरि दुरध मल लर नयन रह दुरध
 गलत मरत भव नलदर लर वि अघे दुरध विम मर
 कविम नयन नयन कलत लोचन नयन १
 विरह दुरध तन लर कल गली नयन नयन ३
 विरह दुरध तन लर कल गली नयन नयन ४
 विरह दुरध तन लर कल गली नयन नयन ५

नयन भल नयन लर कल गली नयन नयन १
 गेह भल नयन लर कल गली नयन नयन २
 जमल कल गली नयन लर कल गली नयन नयन ३
 दुरध दुरध दुरध भल गली ४
 विरह ललने विरहक मरिजि लर ५
 लोचन कल ६
 विरह दुरध लर कल गली नयन नयन ७
 विरह दुरध लर कल गली नयन नयन ८

सबसे खेला चकवा होस विरहिनि धरि मेस मर्मिल मस ॥
कांनिक कबल दिगन्तर बास धि॥ पय हेरि हेरि भेलाहु निगन ॥
सुख सुखरानि स्वहृका भेन हम दुख मल सोअमि दा गेल ॥
अगहन मास जेध के भन्ना अहदु न भाभील निदय कलन ॥
एकसदि ह्यो धनि तूजके कागि, नह न लभोन गुणत मधि नागि ॥
पूरा खीन टिल दीछी रनि धिआ परदम सोअन भेन कनि ॥
हेरको नहिंस झगवरो होस ताक धिआन काहु जनु सो ॥
माघ मास घल दवा नुसर झिलजिन केचुभा चलत धन भन ॥
पुनमनि बहनि शिअनम को विरिचस टव बास भेन म ॥
कागन मास धनि जेध रवाट विरह विरिन भेनि हेरके घट ॥
आनु मर दिव उच्चर जाव स हनि जगते किहु सकव ॥
कौन चकुगन धिआ पावारा मल नल कुसुम विकस ॥
भग्नि भग्नि मसर का मल नल नगर भा पद भन म ॥
वैसाख तवा खर मल शमन जेअन उच्चर ल ॥
न लुके छहरि मोठे वरिण वरि हेम न भगवत प्रानति ली ॥
नैल मल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल ॥
नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल ॥

अभरत भूषल हन्तुं चेदेभार कलंकलनः जलि फुल झटि जा 3.
बसन उगारि दंगल भरी कुंठि गारि लडा मोन कुसुमक सीति 4
भक्त विष्णवनि भुनु बर नारि, धैर्य धर रह निमत द्यारि 5।

विरहिणी पिआके सखी द्वारा लवाद पलटौन छथि। (1) हम एतए हाथ पर गन रखने एता करैक दिन रहय मयंक भौँत कमल भवान भेल आदुछ (पिआक सखीन विरहस हम जौत छी) 14 विहिआस हनु छोटि दलक (4) बैरन अपन स्तन दाखल

१११

रहति समष्टिनि रहति १ और रसनि रगत रनि रस तनि २
नगर निरति सुखे सुख दुख जति हरति ३ मधु पिब हासिबेय ४
दिठ धारि ५ पुताकर ६ नीले अकन पुनु दुख ७
रनि रसमरने गरीक शरद ८ नीले पिबसा ९ रनि कास
१० कद नरक दुख समान दुख ११ दुख १२ ओरी १३ पान १४
पिपाएनि कद रस १५ अतः गुरुमति १६ कद १७

अथे नायक नायिकाक सम्बन्ध दर्शावै कहैत कहि १) गति तीव्र
गेल तेसो रति रमक अलन नाहि २) नायक बहिंस कर सु-दीर्घ मुह
दुखी छथि तेसो रति सम्बन्ध रम गीत ३) सम्बन्ध

[illegible]

जे दुखदायक से सख दथु भवसा जन्म भवितव्य तथु
विभ सौर भाग्य भाग्य एवम् विरह दया राते गले लय कोस १
नभ और उग्रयु संहस द्विभगा कुर्वित्त द्विभ कर अलक्षित वान ३
विविध समीर बहयु दैन राते पञ्चम गायधु भवितव्य ज्ञान ४
हो गृह गृह द्विभ नभस अज विषयवि भन मन निवर्तन ५

आन। २ नहि छथि ३ से

नहिछा एवमी विभाक घर घरला पर अपन उत्तमस दान करी
छथि। १) द्विजराज धान अधवार दिनमे दिने भवितव्य कीछ।

दुख विषय दिवस लन दीन विषयम दानम भवितव्य दीन १
आय लगवितवि विषय नभस कथन भवितव्य भवितव्य २
गायधु उग्रयु संहस अदि गायधु नभस कथन भवितव्य ३
बहयु विषय विविध समीर भन विषयवि कथन दीन ४

नहिछा विषय नभस भवितव्य नभस उत्तमस दान करी छथि
२) आय चन्द्रमा उग्रयु लगीत छथि दीन अदि उग्रयु अदि कथन विषय
नहिछा छथि ३) विषय नभस भवितव्य भवितव्य भवितव्य ४

नहिछा विषय नभस भवितव्य नभस उत्तमस दान करी छथि
वाह पाम लन भवितव्य नभस भवितव्य नभस १
समयवि भवितव्य नभस भवितव्य नभस भवितव्य २
मनसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ३
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ५
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ६
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ७

भवितव्य नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस भवितव्य ५
नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस भवितव्य ६

विषयन २ भवितव्य ३ से नहि

नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ५
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ६
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ७
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ८

नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ५
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ६
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ७
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ८
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ९
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस १०

नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ५
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ६

नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ४
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ५
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ६
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ७
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ८
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस ९
नभसवि नभस भवितव्य नभस भवितव्य नभस १०

घन घन घनतं घुघु कन घञ्ज हन्जन कर गुञ कन ।
विचपनि कवि तुज पद सेवक पून चिसर भुञ्ज मन्त ४

१ भासिनि २ टिअसो ३ काभो ४ कैल ५ घनर ६ घन विसरी
जनि ।

गोसायनिक स्तुति सूत्रेन छी प्रैरवी विद्यापतिक कुलदाता उल्लेख ।

१) भासिनि—भासिनी पाचीन मैथिलीमे भासिनि इत्यत्र रूप धार धरि भेटैत अछि । २) वासर रइनि—दिन रनि सनत घन्टामेले चूडा—दानक माडलीका । ३) जलद काका जल मेघ आ नककमान एक ठाम जुड़ि गेल हो ।

१५५

कनक भूषा विषयसिनि घन्टिअगय भार हसिनि
दशन कोटि विकस वडकस सुनिन चन्द्रकले
मुद सुनिनु घन भिन्ननि मरुप गुञ्ज निशुञ्ज घनमे
भीन अक भयपनेटन पाटन पवन
जय देति दुन दुन नरनिनि दुन नरि विनये नि
भोजनस सुनसु गिरिध मदननामन
गगन मधन गग मरुपन गग भोजन मरुपन
परपु वश कृपाण मरुपन गग भोजन
अहमिदि मरुप मरुपनि मरुप कन कन मरुप
दनु जशोपनि विधि विधि मरुप मरुप
ममरुपन मरुप मरुपनि मरुप मरुप कन कन
मोरीनीन मरुप मरुपनि मरुप मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप

५१५

प्रातः ८ सुकर ९ व्यास कदम्बसिनि ४ जगति ५
कनकपरिचयुनि

दुर्गाक स्तुति भाषा ते शुद्ध संस्कृत ते मैथिली

१५६

भल हर भल हरि भल गुञ कन खन पित घन घन घन घन
खन पन घन खन भुज धरि खन मरुप खन दन गुञ १२
खन मरुप गग चराङ्ग मरुप खन भिधि मरुपन इमरु बजाए ५
यग मरुपन मरुप मरुप मरुपन खन भिधि मरुप मरुप कन ४
एक सरीर नैल दुइ बास खन वैकुण्ठ खन कैलास ५
भनइ विषयनि विषयनि विषय ओ नारायण ओ सुनरनि ६

शिव ओ विष्णुक युगलमूर्ति हरिहरक स्तुति ४ चोकान झोरा
६ भनइ सुनपाते दुर्गा काका स्वरूप ते विषयनि विषयनि
राने किन्तु विषय हरि ।

१५७

पता पता भयन जेन गेदि भासनि ४ जेन पति हरि हरि मरुप
मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
विषय मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप
भनइ विषयनि मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप

१ मरुप २ मरुप मरुप मरुप मरुप मरुप ३ मरुप ४ मरुप
विषयनि ।

शिवक पूरन भाषा पाचीन म परिमार्जन प्राभाषिकनक
भाषा १११

५

॥ मा कहत भोले मुखी ॥
 भोले पोछत सपने भोजन पूत नीर टन नही
 भोजन भोले कृष्ण लीला न ज्ञा अछन नही
 नीले लयन भोजन निहयन देखिनि कलिंद रंग
 गरा गराव लयन नयन निर सोम इति नही
 डिमि लोभ कर दमर दान ॥ ६ ॥ न ल तानो
 गिर सु सति धनु कान्हो दय कमानु गीत
 बसत लोभ आ न रिमल्य वसुधै कान्ता ॥
 भजे विद्यापति रासिक ललना न कर गीत भजे
 बंजर गीत भजे ॥ ७ ॥ भुजंग कदलीदात्र

बुझुम छन्द ॥ ७ ॥ २ नवने छने भोजन छन्द ॥ ७ ॥ ३ रहस्य
 ४ दंतन चंद्रक

धर्मद भोज गीत धर्मद भोज

लीला भोज भोज ॥ भोजन
 भोजन दान ॥ भोजन ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 भोजन ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 भोजन ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 भोजन ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥ भोजन ॥ १ ॥

भिरेधनन नजीक एक पनाय भोजन भोजन भुजंग भोजन

भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

नदत निरुद्ध सौभाग्य लाल हिमालय शीत सन्य फैल भोजन ॥ ४ ॥
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

॥ दिनुधि ॥ २ ॥ लोहे भोजन भोजन भोजन भोजन ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

भिरेधनन भोजन ॥ १ ॥ भुजंग भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

भोजन

भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन
 भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन भोजन

हेरि हखित भेले मन्दाइति भागल नहि नरभाणि ।
 हेमन्त सगीर पुलकें पुरल सकल कामके नहि ।
 हेरि चिन्ति दुः खल बैराल हरकें देलन्हि गरी ।
 तरल तुम्बुरु मङ्गल गवधि भाङ्गेर कलल नहि ।
 कौतुक कोबर पैललि कांसिदे सवे सवे टिअ गरी ४ ।
 भल विद्यापति गरी पवितर कौतुक काहे न जाए ।
 सप फुककरी नहि पलइति बल्लभ ठाके नदग ५ ।

शिपिगढ़ कोलो गिन्त नहि उल्लास उल्लास ।
 साचीलनाक आशुस १ । नरभाणि जम्भ लम्भक रक्षक भारि भगवत् ।
 इन्द्र मन्दाइतिके पुडाएललि लेला इन्द्र भागल होथि ११ ।
 दूनु कन्यादानक साक्षी भोज ४ ।
 ललनालोकनि उपहासमे एक दोसरकें गरि दैन रहति ।
 जेन नरगोटे भोज ५ ।
 आदि दोसर ५ किछु ललना भाक कर तवटे पवइन्हि ।

५ भल न लेन नहि नहि बोलि बोलि सासुर जन कर १५ ।
 नरभानस हीरालि इन्द्राणि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।
 भवन्मन्त गरी गरी गरी गरी कर नदकल गरी ५ ।
 ४ बी सवन्त बीन पार भोज भोज भोज भोज भोज ४ ।
 भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् ।
 भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् भोजभुक् ६ ।

अपनि १ बस भसुरा १ सिनु ४ खसुर हन ५ भजन्मन्त गरी
 तीर ६ उठ । गिरि

भजन्मन्त भजि कुल गरी लेल भागल सके नहि नहि नहि नहि ।
 जाही नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।
 जपने हरल हर नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।

करल कौपु कुसुम छिदिनक छिनुव पुनक ननु बसल झोंपाङ्ग ४ ।
 भल हर भल गरी भल ब्रह्महो जपत दुः खल मन्त दिवारे ५ ।
 भलहु विद्यापति इ रस गढ हर हरसने गरी मदन संचारे ६ ।
 गरी चलनह शिक गूजा कप आ पडि गेलीक कामदेवक नानमे ।

महि भनि गरी कहे भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ।
 भाक धुनु कुल देल भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त २ ।
 जम किकर गरी कि करत भजन्मन्त रह भजन्मन्त भजन्मन्त ३ ।
 जे सभ काल हरे हे हर हरे से सभ काल हर गहर भरोसे ४ ।
 भलहु विद्यापति सकल ननु भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ५ ।

१ जन्मि २ करन हर सवे गरी

गरी शिक वल पलल आ भुक्ति भुक्ति नर भादल २ पुन
 गरीभे जम्भ लेवक दुः खल रहल ३ ज अपरगणीय सभ पठि पर)
 पलपल शिप, न

५ भल सव नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।
 पवित्र भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ।
 भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ।
 भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ४ ।

५ भल १ सवे काल गरी काल गरी काल गरी काल गरी ।
 भाक नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।
 जे नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ।
 नन्दन नन्दन भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त भजन्मन्त ४ ।
 विद्यापति भल भजन्मन्त क न नहि नहि नहि गरी विद्यापति ५ ।

शुद्ध वास हर योग्य न उदित होय न च वसत धवइ
 मार भौल सिव जोर न नगल के नल किं लडन भाव
 वसत पडगाल के नल केन गेल हउआन जोरहु भन
 फुटि गेल मास्स भसम छोड़ि जगल अछरदि न कइति गेल न
 हसा हलन सिव जोरि गौं हउआन भन हउ वंदनार।
 नगरी नगन सबदकी सुनिअ धारिनेक यौन न नर
 मनइ विषय गति सुनइ मरसम इ सति अछरदि नुन नल
 लोहर नग सब विनिमि हिलन सब मलके जोन न नर न

સમઘટન મુજબે પ્રજાને તેનું અધિકાર જાણવાનો અધિકાર મળે છે.
અધિકાર દેશમાં ઠાસે છે અને આદેશ 4) મોંઘે મળતો છે તેમ જ પછીથી સત્તર દેશ
ઉપર છે.

विचसडकर हे भल अन्गति फल भेला

एतए मडवलि एति परतर कोल मनि मलंगे मलदि इहवा

जेहे होएच परसन पाकीच अडोले घल जेलेम बडच एते भामे

जडाक साककट पुनु उपेधि हलह जनु सेवलाहु वडे वेरआने ॥२॥

सवन नयन गेल तनु अघसन भेल जदे तोरे होएच परसन

फि करच नतिखने हय गय मनि धने झुखने धंभकुल मने ॥३॥

इन्द वान्त गल हरि कमलामन हये परिहरि हसे देव

भजन बछल प्रभु बान महेमर हे जनि कहने तुम सेवा ॥४॥

विद्यापति भन पुरह हमर मन छाडओ जमक तरासे

हाह हमर दुख लयिनि लीख सुख हये काम दुम राखट ॥५॥

५ १ मसहु।

॥१॥ विद्यापति सा आनेक सम शिष्टक हनुने करेन ॥१॥ तहेर

॥२॥ जकर जोक परिणाम भेल एतए तहेर जेनसे लोक लोकक

॥३॥ जेन जेन आगने कोल मनि होएच नवर दिने सा जगल भनि ॥४॥

॥५॥ तहेर अघसन क्षिति हय गय ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥

॥६॥ गल गगल ॥७॥ तहेरिहे तालीम

ग परकीया

अपर पयसि मगल भेल तुर नये कुल सडकुल वाट बिदुन

नरि गिरिहरि लचिक घर गेल पयसि मगल पथ सनअ भेल ॥१॥

अलन पयसि करन गगल दामे छनि एकसारे करन न पाम ॥२॥

एक चिल्ल जामो मलमथ भोस दामे छनि एकसारे करन न पाम ॥३॥

एतनि न गगल पयसि मगल अलखल सगल नगर भन गोर ॥४॥

गहे नखन हने दिवाहने नरि पयसि मगल गगल कलमगल ॥५॥

गाम गगल गगल गगल पयसि मगल मगल मगल मगल ॥६॥

मगल दिवाहने नरि मगल मगल मगल मगल मगल ॥७॥

मगल

विद्यापति कामोदक शान्ति हेतु पयसि मगल करि अपन

आपन बुझने छथि ॥१॥ गगल पयसि मगल मगल मगल मगल

स्वयन दामे छनि सा वीरम मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

जनुम विद्यापति मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल मगल

मोर सम्पति मोर अमोर

कामानुर विरहिणी पाँचके अपन कामना नतवैन अछि ॥ १३ ॥
कोतवाल गलिने कहिओ आउरि नहि टैन अछि ॥ १४ ॥ भामे धूमिक गेह
घर

सासु जगति भेनो लखी छनि सही मरु गेह
नैन न देखिअ कहि रहति जगण सम्पन्न होइ ॥ १५ ॥
एहि पुर एव बेवहार कहुक केओ नहि कर पुअर ॥ ३१ ॥
मोर विरहिणी कह्यो हम एकसरी धनि कत टैन रह्यो ॥ ४ ॥
धनिक कह्यो मोर कलह हम सति रहति न तन समझला ॥ ५ ॥
भनहु विरहिनि गावो भामे भामे विरहिने पथक बुझवो ॥ ६ ॥

कामानुर विरहिणी पाँचके अपन कामना नतवैन अछि ॥ १३ ॥
जगति बहुत बूढ़ो ॥ १४ ॥ एहन केओ जोड़े कहि जे गलिने जगण गप
पला ॥ १५ ॥ रौरी बुझव हमरा सत समझी नहि के न तन नहि टैन

हमरा घर नहि एतएक लेन न लखी धूमिक जगण
नैन न देखिअ कहि रहति जगण सम्पन्न होइ ॥ १५ ॥
एहि पुर एव बेवहार कहुक केओ नहि कर पुअर ॥ ३१ ॥
मोर विरहिणी कह्यो हम एकसरी धनि कत टैन रह्यो ॥ ४ ॥
धनिक कह्यो मोर कलह हम सति रहति न तन समझला ॥ ५ ॥
भनहु विरहिनि गावो भामे भामे विरहिने पथक बुझवो ॥ ६ ॥

मूल २ जगण

कामानुर धनिक एक गृहिणीके अपन कामना नतवैन अछि ॥

१

मोरहि २ जगण एकरी सुनु बालहिया
पट्टा आउत वाम परम हरि बालहिया ॥ १ ॥
पट्टा ओव फित मीन सुनु बालहिया
चोकरि एक चिनि रहि परम हरि बालहिया ॥ २ ॥
नव हमे चोकरि चोकरि सुनु बालहिया
कोर चितवनी देह परम हरि बालहिया ॥ ३ ॥
लहरी देह गतासता सुनु बालहिया
नेतर चितवनी देह परम हरि बालहिया ॥ ४ ॥
चोकरि एहिनि हमे कह गये सुनु बालहिया
कोर परोखन लागु परम हरि बालहिया ॥ ५ ॥
कोरि गहिआ सुनु बालहिया
य सिखांसे गल जल परम हरि बालहिया ॥ ६ ॥

रसिक पट्टाक संग एक रसिक सूरतीक भूपर सम्भाव ॥ ३० ॥
विधानिक नहि कोली मुद्रा अधनक छित्त शब्दावली छित्त व्याख्या
लोकगीतक प्रसिद्ध भाष

१

मोरहि १ जगण एकरी सुनु बालहिया
पट्टा आउत वाम परम हरि बालहिया ॥ १ ॥
पट्टा ओव फित मीन सुनु बालहिया
चोकरि एक चिनि रहि परम हरि बालहिया ॥ २ ॥
नव हमे चोकरि चोकरि सुनु बालहिया
कोर चितवनी देह परम हरि बालहिया ॥ ३ ॥
लहरी देह गतासता सुनु बालहिया
नेतर चितवनी देह परम हरि बालहिया ॥ ४ ॥
चोकरि एहिनि हमे कह गये सुनु बालहिया
कोर परोखन लागु परम हरि बालहिया ॥ ५ ॥
कोरि गहिआ सुनु बालहिया
य सिखांसे गल जल परम हरि बालहिया ॥ ६ ॥

धनिक पट्टाक संग एक रसिक सूरतीक भूपर सम्भाव ॥ ३० ॥
विधानिक नहि कोली मुद्रा अधनक छित्त शब्दावली छित्त व्याख्या
लोकगीतक प्रसिद्ध भाष

घ-प्रहेलिका

हरि तम आलस हरि मम लोचन हरि नहि हरे वा अग्र
हरिहरे राहरे हरे वरे न मीमांसा हरि हो कए प्रह नय
माधव हरि रह अलख छान

हरितयन्त्री ध्वजि हरिचरणम् तज्जि हरि हरदुजे जित नन्द
 हरि शैल भाग शर शैल हरि सज्जि हरिक आनन्द न सञ्जये
 हरिदि पडति जे हरि जे नरकाल हरि चरि मार पदापः
 हरिदि बंशज पुत्रु हरि सय दारुल मुकुटि विषयन भान
 राजा सिधसिंह रूपनगान लविष्मा दह रमाने
 पिहनी थिक भये हरि लयन

[illegible]

हृषीकेशः श्रीरामः रामः तस्मात् इति रामायणे इति
मन्त्रेण विना सः विष्णुः तस्मात् सः सः सः सः सः
मन्त्रेण तस्मात् रामः सः सः सः सः सः
परं विष्णुः तस्मात् सः सः सः सः सः
मन्त्रेण सः सः सः सः सः
मन्त्रेण सः सः सः सः सः
मन्त्रेण सः सः सः सः सः

ग. २. सिंगेसेट रूपतगानत न्हिमा दंड गमानं ५
विद्यार्थी कुच न्हि गमान

ड. नाना

772

अजर धुनी जति रिदु सुभ घरती ता चतु २ देमा रही
लेसर दिगपांते पतले सतावर बड बदन इति गाली
गाछप तुम गुले धनि पाडे खोली
महिरा ननय भात बिहल न बिधु देह दयवि ता जाली २
राजा भरुन दयस कण्ठोरय भिदिक दीहल सतावे
लाप नगर जीव तवे छाड़ति लोट न मानिय परथावे ३
याकांदा वन्नु भोपु दालन बिद्वर विधार्मी कवि भाले
राजा गिबोला नयनगमन लोचिमा देह रमाले ४
दिहली अये लोह नगर ५

[illegible]

माधव देखि मने भो भक्तगण
 मलयज राज लए मन्त्रु कहुनि कए राज पुनः तेन लगी
 भय भैत अरि भयिनी एति ननको तनय नान बन्धु मये
 नाग सिंग मिर मोभ दुखज सम देवल बदल सकरी २
 धर्मपति एति तिम्र जनक तनय मम वतन तिरुपति रहने ३
 सुरपति भवि दुहिते पर याहने तासु असन सम गमने ४
 गुम दासन नागि उपजल दिसधर सुकवि विद्यापति भले
 राजा सिधतिह रूपतराजन लखिमदादह रहने ५
 पिहली अये नहि लागल

हन विपु तनय तात विपु भूखन त चित्तो मरि नागि
 तसु तनअ सुत ना सुत बान्धव उठने घनुर एति नाने
 माधव तं चित्तोजे दिनि मेलि गेल
 हरि कैरुने चित्तो मने अकुनि कहेन भदन सर सागर २
 पुन चित्तो हरि साखन सबट सुनि ता विपु तर पण मने
 तसु तनअ सुत ना सुत बान्धव भयवत त लिय लागे
 गरि तनअ सुत ना सुत बान्धव विद्यापति कवि भाषी
 राजा सिधतिह रूपतराजन लखिमदादह रहने ५
 पिहली अये नहि लागल

मुनि छलहुँ हन पाछा १ गरव मरिह २
 गति जखम किनुसख ३ विभा भाषल हस ४
 कए कोसल करे कैचहुने १ हावा पर डर २
 करधकन डर बाहुन ३ मुनिहट निहर ४
 कहने अमरालि मरिनि १ भागलि हरे नि २
 भन कए नहि देखि पाछा ३ गुनमय गौरेल ४

देखिवाते वही मर्मांत १ धनि मने धर धार
 समय पाण तरुण कन २ ऊन लोचि ३ ४

कर १

लखिनी स्वप्नलक्षणम लखीके सुन्दर जाले परम प्रसिद्ध गीत
 एतिह भाव लखी भाषा

माइ १ वासुध भवत माइ बाँटे टेस सखि की २ मनीभद भाव
 लेल सल लखल कोनल कुञ्ज कण्डल पूर्णित
 प्रथ पालि परम परिमल चकुल सहकुल चित्तो ३
 भरण किमलग राग मरिह मरिह भय लखिय
 मधु लख मधुकर निर मरिह लख रम्यन सुनिने ४
 रम्यने मधुकर कुसुम पाग कोक परम बदल भुगल ५
 चोटि कर भदम कदवार से मुनि कटा मरिह चिक ६
 चीर वरुन वरुन करव कणकोण भाव से
 हर जान भुगलमने १ विम मरिह वम तम विम २
 मरिह मने तान लख कणिक ३ लखल
 उल मरिह मने लख लख मरिह मरिह मरिह ४
 लखल लखि पदल वर मरिह लख लख लख ५
 लखल मने भुगल लखल लखल लखल लखल ६
 मरिह लखल लखल लखल लखल लखल लखल ७
 लख मरिह लखल लखल लखल लखल लखल ८
 लख मरिह लखल लखल लखल लखल लखल ९
 लख मरिह लखल लखल लखल लखल लखल १०

सायिक मछीकें टिरव्याथा सुतवैन छथि सम्बन्धितकें कैं
साध नन्मम शब्दमय शिथिल शक्यवन्ध

१३३

सज्जते निहुरि फुल्ल भागे

नीह सदा कमल द्योत मदन उठल ज

ज नहि भावेनि सबन अपवद अपवद कहीनै बला

नै एहि सकल सज्ज जिय ध्यान दीपन मोहन मेल २

भन विद्यापते राहुदि जे विधि करि स से बोल

राजा सिवसिंह बन्धन मोहन कछन सुकवि रीत,

हे गीत विद्यापतेक नीतक ३ धरता पर भाषेन अने छत्ता
विद्यापतेक रूपम पददात ओछे किन्तु तकर प्रमाण अन्वय भोले।
भाषा भाषुक आ परम सरल,

१३४

नीन कलेश दीन वसन १२ ८

सफार भेद शीतलिते मन्त्रित मन्त्रित री

हो हनि कलेश जमु पशारे

१ १ १ सज्जते मदन दीन जेन दूध

गुन्य दलन चार सज्ज मन्त्रित री

रा सिवसिंह १२ के २ नीन मन्त्रित मन्त्रित री

भनइ विद्यापति श्री धरतापरि मन्त्रित मन्त्रित री

सिवसिंह राण लहर मन लगन कर क र क री म म म

दुपा २ सिधा

रधा स्थान समारासक वणीन करैत छथि दद शरणा
पीअ चलिने ३ जेन से लगीत जेना करी लेले किन्तु सज्ज री म
भाषादे चान सेहो उगल होये २। सज्ज ते मन्त्रित मन्त्रित री

१३५

करैत जे भाइ हम सपनामे सान्धके देखल ३ इ नहि ब्रह्मह ने पूर्वमे न
देखल रहैत छैक सेह फेर सपनामे देखैत अछि १४ विद्यापते कहे
छथि हम एहि सपनाक सभ रहस्य जानि गेलहुं तौ कलक नहि
सिवसिंहके सपनामे देखनइ जे देखल देखल छलहु तें वस्तु तो
ब्रह्मके देखल सपनामे देखल

१३६

भजन रन्ध कर बन्धन लगइ सक समद कर अगिति मरी

रौन करि छले जेन शिथिल मन्त्रित री वेलगइ जाउ लरी

दोगेन ज पुरी उडिअ अदमन मुगल सक

दुह नानन लैने ४६ सीन लगल जेन विद्यापति ४६

दखइ श्री पुरी के राजा गोरम मझ दु ३ गोदेओ

सनयने गहन मन्त्रित कन्धर दलसिंह मुगल रीनेतो

रक दिस सकल सज्जवेल मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित सक

दुननन दली मन्त्रित पुरी मन्त्रित री सिवसिंह रक

गुरा मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित १२ दल ३ मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित १२ मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित ३ मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

१ पुरी २ मन्त्रित ३ री ४ मन्त्रित मन्त्रित ५ मन्त्रित
६ मन्त्रित ७ मन्त्रित ८ मन्त्रित ९ मन्त्रित

१३७

दुह दुगल मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

दल मन्त्रित मन्त्रित री मन्त्रित री मन्त्रित री

१३८

१. किछु किछु भइलसु ८ छोडि पार पार पाठ चहौ उगलल पक्षी
पार सँ पारि भए गेल

राधाक जय सन्धि २ ५५ कथा सुनव ५ मन न होइत छैक मुदा
नानें सखीसभसँ नहि जुड़ैत आछे ॥ १४ ॥ अनुपम अनुपम। कलस नथान
स्नह ॥ १५ ॥ हरिणी। ६ पाद स्थधा रूप अवसाद दाणे जीव ॥ १७ ॥
शैशवके राधाक देह छोड़ि पड़ैतक

तैमय जीवित दुहु मिलि जैल घटलक जग दुहु लीन लेन
 बाबक जाति लहु लहु नाम धारि जे नर काल
 भकर लहु भय करण दोहाय नहि पूछै कैरी सुनि पेट
 निरखल करन दह कल घेरि बिदुषण भवन पयस्य हरि ४
 जीवने घलीन ज पुनु लखइत जेन दिन न डर अंगल लख
 निराशे केरु रंछे जरी भाजे दुहु एक तौल कर के कर लखे

1. संस्कृत व उर्दू का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हमें इन दोनों भाषाओं के बीच बहुत सारे समानताएँ मिलती हैं।
 2. संस्कृत और उर्दू दोनों ही प्राचीन भाषाएँ हैं।
 3. संस्कृत और उर्दू दोनों ही धर्मग्रन्थों में प्रयुक्त हैं।
 4. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही समृद्ध भाषाएँ हैं।
 5. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही पुरानी भाषाएँ हैं।
 6. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही जटिल भाषाएँ हैं।
 7. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही सुन्दर भाषाएँ हैं।
 8. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही महत्वपूर्ण भाषाएँ हैं।
 9. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही रोचक भाषाएँ हैं।
 10. संस्कृत और उर्दू दोनों ही बहुत ही शक्तिशाली भाषाएँ हैं।

वय शालेय। १। खदरि वै सन १९५७ मस लव दिशे नर नि
श्रीनक पोर बीजपुर टाभ नी सन ५७ मस लव दिशे नर नि

संस्कृत ग्रंथान् प्रामाण्यं भोजनं तेषां च विलक्षणं भोजनं भोजनं
 यथाह विलक्षणं भोजनं यथाह भोजनं यथाह भोजनं

सौर न्याय अंतर केंद्र अंत १ न द्य द्य लालिम दंत २
घटन नरत ३ न न्याय अंत ४ गल मनसिख नृदिन न्याय ५
अनंदे विद्यापति मृत दर फात ६ न न्याय न्याय न्याय ७

1. धरज धरद मित्तस्य भूत

यह सतिथ ११ रीश्व भा यीवन दुन राजाक सेनामे भिदुत्त भा
मेन। २१ न्यात नयन।

मध्यमस्थि काले विदि विज्ञानि गान
अथरुप रूप मनीष्य मङ्गल विभुगत विनयी भावा
मुन्दर देवद चारु लोचनगुण कातर चरति भेवा
कनक कण्ठन गङ्गा काल भुज्जीविनीति शैथुन छ तन छेन
रामिणीय सन लोभ लोचनीय भुज्जी विनयन प्रभास
लोभ विनयनीय व भुज्जी विनयनीय विनयनीय विनयनीय
विनयनीय मदन विनयनीय विनयनीय भुज्जी विनयनीय विनयनीय
विनयनीय मदन विनयनीय विनयनीय भुज्जी विनयनीय विनयनीय
विनयनीय मदन विनयनीय विनयनीय भुज्जी विनयनीय विनयनीय
विनयनीय मदन विनयनीय विनयनीय भुज्जी विनयनीय विनयनीय

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]

सज्जनी भन का देखे न भे

મધ્યમાલ સકુળ લોકોના જાતે ફરજ સેવ દ્વા સંચાલિત

આધ માંદર શ્રુતિ આદ્ય ચક્રત ફાલિ કારકિ નેવત ન દગ

આદિ વરન જેણે માણે ઓંચર મળે તેવે થઈ દુગધું સમૃદ્ધ

राधा लज्जा और अनेक कठोर। मन्त्रों और मन्त्रों

हम इसका ज्ञान नहीं बुझि ऐतल फोरु हमरल काम ।

टसल मरुता एति अधर मिश्रण मरुत कर्तुं अहं

शियान्ति कह भनार से दाब रह हों हों न बुरा आका ५ ।

પેઢાલ ત્ર મેચ, ૨ મલમલ

कृष्ण! राधा! क. रूप पर मृदुध भा' आ'नल स जीके मृदुधैल छ'शे।

॥ राधा एक श्रवक देवारा हृदयके भवन का दान मंत्रि जना मंद

साभाके दिवस तथा २ सभ दिवस जाये कय हे प्रमाण भ नखः स

କାହାଣୀର ପାତ୍ର : ଜଣା ଥିବା ଚରିତ୍ର : ୧. ଶ୍ରୀ ମ. ଶାନ୍ତି ପାତ୍ର ଓ ମ. ଶାନ୍ତି

कामदेवक काम शिख

१२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

| | | | | | | |
|-------|------|-------|--------|--------|--------|--------|
| ପ୍ରିୟ | ପିତା | ମିତ୍ର | ସ୍ୱାମୀ | ସ୍ୱାମୀ | ସ୍ୱାମୀ | ସ୍ୱାମୀ |
|-------|------|-------|--------|--------|--------|--------|

१. प्रथम - श्री. राजेंद्र प्रसाद सिंह

पॉलिथीन ए सोखे तौहें परलाम हस जौहें जे री ले ^{१०} भा बाज ३

गणेश गुरुकुल प्रमाणित शिक्षण संस्था, मुंबई

राष्ट्रपति महोदय अलाहाबाद और बंगलूर में बर्ष १९५७ में राज्य के लिए

[illegible]

ਦੀ ਧਰਮਗਤ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਸੁਭਾਵਿਤ ਫਲ ਸੰਭਾਵਨਾ ਅਤੇ ਸੰਭਾਵਨਾ

विचार्यते कथं किं ह्येवमस्ति $H = \{H_1, H_2, \dots, H_n\}$ $\{H_1, H_2, \dots, H_n\} \subseteq F \subseteq E$

मुम्बई न्यायिक सत्रां के सभस अग्र सूचन छति ।) परिहार छिदह

(4) मूल्य सूचकांक ।

જાહેરિ પંચવંતે જાગર સુન્દરે મધ્ય માર

अलं भगवन्तं सत्तमं संगतं सत्तमं ताम्रं धरुं गच्छ

राम: मोह बढ़ि कठिन है

ਗੁਣ ਅੰਗੁਲ ਨ ਥਾਂਝੇ ਜੰਗਲ ਜਗਲ ਦੁਆਰੇ ਨੇਹ ॥੨॥

संघर्ष का हिंसा कहेते आता सुना देखिये तोड

कि धर बाहर पैराज न धर पन्धः निरेखा गडु।

कार परीक्षित सांगले २२ मे ल कर भोजन घरा

कालक मूर्ति एतत् अद्याः काल विधासित इति ।

सखी रम्या कृष्णाक गिरिहारा मूलवैल अशि १, शारर व्याकुल

प्रा. ला. २ दुनह दुनडा ५१ न रासि मन्थर ४, पर्याधि बडागैल

निर्देश :

આકૃતિ દર્શાવેલા ગાંઠો માટે ક્રમ નંબર સ્પષ્ટ કરો. ૩૦ ના બેંક.

જાહેર સંસ્થાના અધિકારીઓના નિયમિત સંપર્ક દ્વારા નિયમિત રીતે નિયંત્રિત થાય છે.

4. 34 7.8, 36 7.4, 38 7.0, 40 6.7, 42 6.4, 44 6.1, 46 5.8, 48 5.5, 50 5.2, 52 4.9, 54 4.6, 56 4.3, 58 4.0, 60 3.7, 62 3.4, 64 3.1, 66 2.8, 68 2.5, 70 2.2, 72 1.9, 74 1.6, 76 1.3, 78 1.0, 80 0.7, 82 0.4, 84 0.1, 86 0.0, 88 0.0, 90 0.0, 92 0.0, 94 0.0, 96 0.0, 98 0.0, 100 0.0

2017年12月27日

॥ अथ श्री ४९ अध्यायः ॥

3. 2017 年 12 月 31 日

[illegible]

100-12-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-10

महोदय, राज्याच्या शांतता, स्थिरता आणि विकास याबाबत आपण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभावत आहात. आपली सेवा समाजासाठी खूप मोठी आहे. आपण आपल्या कामात खूपच निष्ठा आणि समर्पण दाखवत आहात. आपण आपल्या कामात खूपच निष्ठा आणि समर्पण दाखवत आहात.

कौ० लॉरे ३ ती तल तल मुहप, रीक में लगीतु जीवा भस्मक टाल

मधुक् लोभं कमल पर वैकुण्ठ हो। 14 राजा नाल 15 वीर लता 16

नूल नुलगा इतिनागे रही करणी।

दि ई कागिनि कर सलाने गि गौतक मकल थिक

५०

जह भोधि सभय बलि धाने मन्देदर धर भोदे

नय नलधर विजुरि रेहा दन्त पसर गोले

धनि अलप वणन धन जति लोभाने सुहुय मल

थोह दरसन भास न पुरन बादन भदनन्याय 1

गौर करधर नुल गने भविरे उत्तर गने

केशरि त्रिनिगा मन्दाहि डीन दुल नालन केश 4

नसीर शाह गाने मुद्रो कलल नयन धने

विशे विवे रह पन्थ गौरध को विनागि भन

मुन्दरीके देखि रोखेक भयन भरीभाय उभर गित भडे

समय बलि दूनु १ वद समन्यवीक २ दन्त विजगा विजलता 1

पुष्ट पृथ पृथ 3 दूना नालपमय 4 112 भनू सिद्धि भोय

गतरे रिक 5 नसीर १ वद नसीर 11 12 भो मुन्दरी हुनका 11

नरविह नीर धनगा देलक

महो नहा गल १ धरहे नहि नहि नसीर भनू

महो नहा दुलगा मय नहा नल विजुरि 2

रोले आरुय गौर पुरतलि दिस मय भोय 3

महो नहा नयन विक 4 महो नहा कमल 11 12

महो नहा हाहा मयगा नहा नहा भोय विजुरि 5

महो नहा रुतेन कटाव नतदि भदनन्याय 6

इवदने मे धनि खो नय वि भुलन भोय 7

पुनू जव दरसन पाव नडे मय 11 दूव नय 8

विजगि कह जति नुअ गुने दगाय भाने 9

५१

नयक कागिनीके देखि भयन भयन भयन व्यक्त कौन अछि

नयक जना कागिनीके धरन जाइत नल नल नल नल जेता कमलक

फूल झरोत गेल हो 15 अमित्र अमित्र कागिनीके एकपती देखल

नलगाहेस लगेछ जेता नीनू लोकस अडोरे अडोरे हो (विजगिनायक

रका 8)

५२

ए सांडि देखल एक भयन सुनहुन मय भयन मय 1

कमल नुलगा पर गन्दक मय नयन पद नल नल नल 2

नयन दन्त विजुरि नल कागिनीके 11 12 नलि जती 3

मय विजुरि मय नल नलि नय पलनय भयनक भानि 4

विजल विजगि नयन नयन नयन नयन नयन 5

मय दन्त नयन नयन नयन नयन नयन 6

11 नलि नलि नलि नलि नलि नलि नलि नलि 7

मय विजगि नयन नयन नयन नयन नयन 8

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 9

भयनक नयन 10 नयन नयन नयन नयन नयन 11

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 12

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 13

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 14

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 15

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 16

11 नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 17

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 18

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 19

नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 20

विजगि नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन नयन 21

५३

राधा सखीकं कृष्णक मन्दिरं सुन्दरं छति । (1) सौन्दर्येति
विद्युत 3) कारी केस लगीछ जना कामदेव नान धनुष जजगस नद के
सज्जोने होयि:

5-7

कान्ह हेच छल मन यह साथ, न हेरहुन मेल एत परमाद ।
नवधरि अदुधि अदुधि हमे जाये कि कहि कहिने किछु बुझान एत
साजौन घन सम डेर हु लयन अदिरन वससस करण गन 1
को लागि सज्जी दरसन भन 1 भरी साज विष न होय देव 4
ने जाति किछ कर मोहन सोर हेरहुने पाज हरि लग गेल मोर 5
एत सम सादेर गेल दरसन जत विमरिष विमरल नहि राए
विषयनि कर गुन वरजायि धीरन धर चित मिलन भरण 17

राधा सखीकं धिरह्वयथा गुनदेन छति । (1) साध मनीरय नानसा।
परमाद गडबड। 2 लखीर लखनमी। 3 धनमन कलकल 4) नमसे
होत निध जण

5-8

कि कबहू हे मणि दुह दुख जो न से जोर न गनन नव जो
हल न से लखन सखनक मछ नद न लखन न न न न न
किछ पुनक गोरुग दह गाने न होय देव हम केर 1
गुरुगन समुपति भन गान न से न गान दुपति न न न न 4
नदु नदु वरन धनिभ गन भन न से न न न न न न न न
ननु नन विमल करण विमलकथ न न न न न न न न न न

राधा धिरह्वयथा सखीकं मुनदेन छति । (1) उली मल्ल नय धिक
नकर सोसक विषमं हमा देह भो 1) न न भन गन 2 विमलिन नन
13 विपुल बरुन

5-9

न धनि पदनिन नन नन नन नन नन नन नन नन
गुपुख नन नन नन नन नन नन नन नन नन

5-10

हेरहुने न दूट धम अदभुत नदने लदटा सनालक सुन
सवहु माडगज मोति न भानि सकल कणठ नहि कोकिल गानि 14
सकल सखय नहि रीतुसल्ल सकल पुन्य नहि हो गुनमन 5

1 ककालिनि 2 अद्य

सखी नयिकाके प्रेमय उपदेश दैत छति । पदिदानी उत्तम
कोटिक नारी 12 दैम लीन 2 मृताल कमलक डोट 14 मरुगज
मन हाथी

5-11

कबरी भय चामरि मिरिन्दर मुखभय चान्त अकाले
हिन लयन भय सर भय कोकिल गाने भय गज गनबासे 1
मुन्दरि कहे मणि समभासे न जति
लुभ भय इह भय दुरहि उवाच नहि गुन कहे हरि 2
पुनभय कजन कोकिल नने बुद्धि रह धर पल्लव हुगम
दोहम 1) लखन गान न न न न न न न न न न
भन भय वरन मृगन पद न रह ननभय विमलन नन
विषयनि कर ककल नन नन नन नन नन नन नन

नयन सखि नद न न न न न न न न न न 1) ननरी
ककालि 2) लखन नन नन नन नन 13 न न नन 14 न
नन नन नन नन नन नन नन नन

5-12

गुन गुन रानि नन नन नन नन नन नन नन नन
ननन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
ननन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
विषयनि कर नन नन नन नन नन नन नन नन

5-13

सखी मुग्धा न शिक के संगमक रीते मिश्रवैत उथि २ सखत
पलन सीम का. १। रीम सरदति ३। परसीने बुडिन बाग्य रोक्क
(4) साधसे डराण के।

पहिनांहे राधा साधस भेत चकिनदे गांहे जयन कर हेत
अनुभय कत कत करतारि कान्ह नवित जित धीन ॥ १ ॥
होरे हरी लखन पुनरि न भव कति नव ननु मर बांहे गन ॥ २ ॥
अशिर माधव धर रांहेक राध करे कर कति ॥ ३ ॥
भनइ विगापनि नहि सख मा ॥ ४ ॥

१ काकु २ पुलक

कौये राधा ओ कृष्णक पथम संगमक कणल करैत उथि १
चाहि देखिके। बयन करे हेत मूढी भुआ लेव ॥ २ ॥ कान्ह करैत
उथि

॥ हरि कौये नहि परमव गांहे नित्यवत नान नान राध ॥ १ ॥
॥ नहि रसकर नान होउ हमे न सुखस राध ॥ २ ॥
॥ स पनकर उठा कहु कौये नहि रीति नहि कर मरि कौये ॥ ३ ॥
॥ भनइ नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ४ ॥
॥ निराधारी केह वलन करे नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ५ ॥

राधा कृष्ण के रमस बलनहि विनाम करवैत रीतेन नहि ॥ २ ॥
३ भाव

गरबे न कर हठ ननु गुराये ननु भगुन न नित्य ॥ १ ॥
नहि नानागुर हमे नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ २ ॥
नहि नहि कवि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ३ ॥
विनापनि केह का अथवा ॥ ४ ॥

१ पर २ सख ३ केशव

राधा कृष्ण के हठकाये रमस। में परसीने छायें। ॥ २ ॥
अभिमानसे

लिखि बन्धन हरि किन कर दू ॥ १ ॥
होले कभीत मुख न बुझ दिवारी ॥ २ ॥
हमर सपथ नै हरि मुगारि ॥ ३ ॥
विहसि रहसि हेवन कोर कथा ॥ ४ ॥
वहू नहि सुतेन गहन परकर ॥ ५ ॥
संगनन सुनि सुनि ॥ ६ ॥

१ धिर से

राधा कृष्ण के रमस विमल ॥ २ ॥

कि कहव है सोये नित्य नान ॥ १ ॥
को कृष्णन हठकाये नान ॥ २ ॥
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ३ ॥
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ४ ॥
नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ५ ॥

मधु

राधा सखी के रीति नहि संगमव सुखीत नहि ॥ १ ॥
द-नान ॥ २ ॥

॥ नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ १ ॥
॥ नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ २ ॥
॥ नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि नहि ॥ ३ ॥

1. सुकृष्णस्य वैशिः करणं नृपः वरुणः औत्तमः शतम् हरिः हरिः 4
 निवेद्यन्तः शरः चर्मणि कृतं गौरिः शतम् मदनः मदनः चर्मणि 5
 पूजनीयः शमनी हिमः भुवः नृपः शक्तिः शतम् शतम् शतम् शतम् 6
 विद्यापतिः शक्तिः वरुणः वरुणः शतम् शतम् शतम् शतम् 7

कृष्ण मणिक रणक संग केने विलासक वर्णन सुनबैत छथि ।
 लहलहुं भन्द भन्द भस वज्रैत आछे । (६) अन्ध कर (७) तन्प
 तन्प सेज परिरञ्जैत आनखिन

[illegible]

कवि रसिक अथवा वाग्विद और नारी सभ कथा में । नारी
हार्थी गालस देकर रग टिकोव लटि । अंगुली नहि कुल्लत मी

शिवधकार चमर १२ सलक श्वमर सेमर भंडर धनुष भमर
 हागेले कपार अधचन्द्र : अष्टि कललिरी गरुडक नील, काल
 निधिली पक्षी ४ मुख तलक दपण चाल कमल अधर प्रवाल। दान
 मुक्ता कुन्द दादिमरीर कण्ठ कम्बु १५ स्वन वेन ताड
 स्वाधकारा स्वर्ण परेत स्वर्णकटांग, वाहु १६ नील लता सेमर
 कज्जल त्रिवली नदी नाभि सरोवर कमलदल नितम्ब गजपुच्छ
 जोर कदली मुंड पाण दाथ स्थलकमल नख दादिम चन्द्र रत्न
 जर्णी भमर

तब भूतलगाते गंधर्व विष्णु नाहें गाने लगा
 एकाने कान्त प्रकृत सुख विष्णु नाहें गाने २
 गाने मनेमय हर ३ भूत मनेमय ३
 कर मनेमय मनेमय मनेमय मनेमय ३ मनेमय ३
 मनेमय मनेमय मनेमय मनेमय मनेमय ३ मनेमय ३
 मनेमय मनेमय मनेमय मनेमय मनेमय ३ मनेमय ३
 विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ३ मनेमय ३
 विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ३ मनेमय ३

[illegible][illegible]

अपने ही समय बुझावह चली दंडोव कजोन परि नठ ऊपर १
 भलहु विद्यापति विभुमपराधे - कर उघाणे मनीष वध ३
 देखिहि सुन एहु रसवाने सेवसिह चयिज देखि रमने ५

राधा गुप्त सगम का आन कृष्णके देखि कौन छवि ।
 नओलह लगओलह लेवलह गेए छिपावक लेन १५ परतछ चहै
 प्रत्यक्षक अपेक्षा १५ मरिहिन नीला कमकलि

अपनेहि अहंनिह काल कजोन मन गमओल भरजन नज १
 बादर भरल बहल मुरमोष राहुक न कबए मरिहिन लेन २
 ए मरिहिन ए मरिहिन कि कहव चोह टिबसक दोस दुसस भेन मरिहिन ३
 हरि न हेन मरिहिन मरिहिन मरिहिन रोस निहाओल घननिह टिब ४
 वडोस गमओल मरिहिन नम कि कहव भवि विधान वध ५

कृष्णसे गोविन्द राधा सहीके मरिहिन मरिहिन मरिहिन १
 अकाल मरिहिन काल बहल नष्ट भेन मरिहिन मरिहिन २
 दरिद्र काधन रस १५ मरिहिन नम नमक पद १५

विमलिन विकर विमलिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन २
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ३
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ४
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ५
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ६
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ७
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ८
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ९
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १०

कृष्ण वरमकलासे पारगन राधाक प्रशमा करै छौथे युद्धक रूपक
 ११ है मुन्तरी तोहर मुहपर झवरन केस लहैछ जेन चानके भेन घेरने
 हो १२ रांगरूपी युद्धमे कामदेव हरि जेन ब्रह्मा विष्णु महेश की
 कलहाह अघोर रक्षा तांहे रक्षा सकलथिन १३ रतिक कालमे दंडक धुधर
 एक रती वाजत के कामदेवक सेना नक लेनह

११३

आनन दिवसि राध दमन धाकल मरिहिन मरिहिन १
 दिनकर विरत भेन रंगरूप केसर कुसुम धातु हैमदण्ड २
 नम अरुन नम पंडल गत काचन कुसुम छत्र धर माथ ३
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ४
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ५
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ६
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ७
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ८
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ९
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १०
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन ११
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १२
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १३
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १४
 मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन मरिहिन १५

कति गजक राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी २
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ३
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ४
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ५
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ६
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ७
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ८
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ९
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १०
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी ११
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १२
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १३
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १४
 राजी क राजी क राजी क राजी क राजी क राजी १५

नय वृत्तान्त नय नय नयान्त नय नय ठिकाने १
 नयन वसन्त नयन मलय निल मातल नय अलिकुल
 विहरत नयन कि मार
 कानिनिदि पुनिल कुम्भवन सभन नय नय पेम पेम २
 नयन नयल सुकुन मधु मातल नय कौकिल कुल ग ३
 नय जुहतीजन चित्त उमलकुल नय रस कौलन पय ४
 नय सुवगत नयन वरनागरी मीनल नयनय मीन
 निल निल रोसन नय नय नयन विद्यापति नयि माति ५

कवि राधाकृष्णक तिहारक सभ वसन्तक वर्णन कौन उथि २
 पुनिल नय ३ रसल भुलन भासक मार ४

मधुरी मधुरा पीत मधु कुम्भ मधु मधु
 मधुर वृन्दावन मधुर मधुर मधु रस रस २
 मधुर सुविकल सभन मधुर मधुर रस ३
 मधुर मधुर रसल मधुर मधुर क ४
 मधुर नयन मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ५
 मधुर मधुर रसल मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ६

कवि राधाकृष्णक सभ वसन्तक वर्णन कौन उथि ६
 नयनिहार कृष्ण मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर

विपुल नयन विपुल नयन रसल रस मधुर मधुर १
 रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल २
 रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल ३
 रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल ४
 रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल ५
 रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल रसल ६

कवि गोपी रसक सभ कृष्णक नयन वर्णन कौन उथि
 अनुप्रासक नय सभ वसन्त मधुर १ रसल कौन २ उद्योगदि
 लिखन ३ रसल मधुरी कपिलास रस वाजाव लस गिर

विपुल नयन मधुर रस कुलवन विपुल वसन्त जैसे मधुरी मधुर
 कि पुनिल कि मधुरी सुन विपुल मधुरी कइसे वसन्त इ दिल मधुरी
 नयनक निन्द मधुरी वसन्तक हास मुख गेल विपुल सभ दुख हस फास
 मधुर विपुल सुन वर नयन सुननक कृष्णक मधुर मधुर मधुर

मधुर मधुरी विपुल विपुल सुननक उथि १ विपुल कुल मधुर मधुर
 मधुर २ वसन्त विपुल

विपुल उद्योग दिखन मधुर रसल मधुरी मधुर मधुर १
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर २
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ३
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ४
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ५
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ६

विपुल मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर १
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर २
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ३
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ४
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ५
 मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर मधुर ६

दखिन पवन बह मन्द भोजी हूँ सकलन्द
 नखने हरेब मन मरि जोवन हलब निचरि २
 पिअ है
 जदि लहै जाणव विदेस धरि हमर जगैह ३
 सधुवर जदि कर सब जदि पिकु जगाम गाय ४
 लखने कब भवधान मूँटि रहब दह कल ५
 परनिरि मानव ११११ धरि मलभय जति ६
 राखब भवत पानि मोह करव जलदन ७
 सुकवि भलधि कण्ठहार के सह कास धरि ८

१ अनुमान २ यह ३ हमारे।

विरहिणी उदासी प्रियतमके उपदेश देत छथि ११) जखन दक्षिण
 पवन मन्दमन्द चलै स भोजीसं मन्दमन्द झरै लखन २ तखन मन
 के जति लेब अ सोकरस भयि हटाव लेब ३ राख बूँ ब शब्द
 दिक कोकिल ४ अवधान सजकेल ५ पानि ११११ ६ सधन
 राधा यवनाके राखव ७ हमरा पानि जेते देव

सब मधुरपुर राखव मोल गोकुल सोनार के राख लेन १
 गोकुल उजलत सकलज सोन २ राख के जेन देखै हरि ३
 सुल भेल सोलै सुल भेल लखि ४ सो भेल दगैठे सुल भेल लखि
 कैसो हस गाय गजुल धर कैसो लेखव ५ जेन कल ६
 मधुरि जेन सह कल कुलसो ७ जेन लेखव हरी ८ जेन लेखव ९
 विद्यापति कह के भवत सो जेन लेखव १० जेन लेखव ११

१ को २ कैसो जाओ ३ जोख

राधा कृष्णक विरहमे विलाप करैत छथि १ भाव कन्ह मधुरा
 घलि गेल जानै जहि के गोकुलक चरन कृष्णके हरि लेनक २ गेल
 भोजन ३ मधुरा कृष्णके भस्म ४ कन्ह कौतुक ५ लावक
 करवाक हेतु नुकाणल छथि (मधुरा जहि गोकुल)

जनि दसा छथि गेल १ जका दसांमे दसा २ धरि मेनि भा
 हुनि अजब अजब अपकार हमे लेब भडिहरन जेन धरि ३
 भवे सुख मायु काल विदेस सुख जेन जेन टिहठि सन्देस ४
 यह भवयौल झर सकल ५ जेन सहसल झरन पल ६
 जेन कलकल केनि भस्म ७ जेन लेखव भवमन्द हमरा ८
 भव विद्यापति निरह कल लेखव ९ जेन वर जीवक कल १०

राधा विरहमे विलाप करैत छथि १) जनि दसा विरहक दस
 अवस्थामे जेन मूँ २ दसांमे दस ३ यु ४ धरि लखन

सजिज निनु सर मा दि १ सजिज जे सजिज जेन २
 जेन वि ३ जेन वि ४ जेन वि ५ जेन वि ६
 जेन ७ जेन ८ जेन ९ जेन १०
 जेन ११ जेन १२ जेन १३ जेन १४ जेन १५
 जेन १६ जेन १७ जेन १८ जेन १९ जेन २०
 जेन २१ जेन २२ जेन २३ जेन २४ जेन २५
 जेन २६ जेन २७ जेन २८ जेन २९ जेन ३०
 जेन ३१ जेन ३२ जेन ३३ जेन ३४ जेन ३५
 जेन ३६ जेन ३७ जेन ३८ जेन ३९ जेन ४०

राधा सखीके विरह वटना सुनवैत छथि सरसि कसब
सूर सूर्य 2 बोलछड भयल बचलस हठधिर छली 3 संनहि
नि शेष कर

५११

सजनी के कह आभय मथाई
विरह बधाधि पा कित पाव मोर मन नहि पतिभई १
एखन सबन का विरह गमाबौन विरह देवस का मथा
मास मे म का वरस गमाबौन छानन नीवन भाता
बरस वरस का समय गमाबौन छानन कनक भई
हिमका किरन ललिते गटे तरु कि करव मधुप मान
भदुपुन गजनाप मोद करव कि करव ललित मेर
इ नहि जीवन दिखै गमाभय के करव ही निभ मेर २
भनइ विषणनि मृग गनैव नद नद हीन विषम
मे वलननन वदय भनननन गुणगुण भनन ३

राधा सखीके विरह वटना सुनवैत छथि १ विरह बधाधि
विषणनि मृग २ न चन्द्रकिरण कजोवैत न नद नद ३
सखीक भनन नहि ४ न न न न सुनैत न न न न न न

वदय न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न

४

दूती कृष्णके राधाक विरहवटा सुनवैत छथि १ नीह विरहमे
राधा चानन दिख सन लगीन छै शीतल घनल सबैत छैक जेन मणि
२

५१२

हमे धनि कपिति न्हिति कपिति दोर न नहि लपट
बरखा पारबस पिन गेल दूर देस रिपु भेल जेन भनडग १
सजनी भाऊ सजन दिन होइ
मननय अवधर लहरा झपल जेन विरहमा हरि सोइ २
घन घन गरन न न न न न न न न न न न न न न
पनिह टारन विरहिय सुनैत भावे नहि देइ न न न न
बरसा पुन पावे न न न न न न न न न न न न न न
विषणनि कह मुन रसवीर मीनव पद सुनभन ३

राधा सखीके विरह वटना सुनवैत छथि १ सजनी दिन मनय
दिन न न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न न न

५१३

दूती कृष्णके राधाक विरहवटा सुनवैत छथि १ नीह विरहमे
राधा चानन दिख सन लगीन छै शीतल घनल सबैत छैक जेन मणि
२
न न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न
न न न न न न न न न न न न न न न न न

राधा विरह वटना सुनवैत छथि १ नीह विरहमे
राधा चानन दिख सन लगीन छै शीतल घनल सबैत छैक जेन मणि
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

५१४

अवस्थाओं में कानन दृष्टि में सहचरी दिन काल आगच्छे (१) एव अखन
 ओ राधात्त माधव ओ पून माधवमें राधा भेदि तैयो भोजन दरण
 विश्रम दूर नहि भेन स्थिर नहि कर पल्लवक जे ओ राधा दिके किं
 माधवः एहि अवस्थाओ भोजन विरहज्जाला अन्तर चरु लक्षण ५
 ओकर अवस्था ओहने सन भण गेव तेहन दरण दून कात नरेन काठक
 बीचमे पडल कीट केर हांडछ (अपनके माधव बुझलक तँ राधाक विहे
 याकुल जँ राधा बुझलक तँ कृष्णक विरहे

दि ई दण चैतन्य सम्प्रदायमे महाभाग स्व के एव बुझल)
 कहयैत अछि।

५६

आह्वान भाभीय तव गीतेन पल्लव काल हैवन हैवनः १

आवेशे अखन पिता धार्य तपस दम त जलन पदु कये २

कैकुत्स धार्य नर दामन ओ कल यावद कालन लक्ष्मण ३

रामस माधव पिता तवही कुंड मरि वि से कानन नाहे लखी ४

मरुजि शुपुङ्गव भगवत एव वीर विजय भगवत दम ५

जखन हरद मार भोजन विराजते कल रति न चमक ६

राधा सोनैत छवि में अखन प्रवासन कृष्ण एव नद नखन ओ की
 की क नीद , हैवन कालमात्र कलेक ११ भावने ई हैवनकी ६
 राधास रति १६ पछि कल

५७

पिता तव भाभीय न सङ्ग गीत मरुजि न दू कल १

कालक कृष्ण भावि कृष्ण गति २२२ एव कल २५ २

बोह कल राम अ त भाभी कुलदे कल है दू व कले ३

कलवि रोपव हमे मरुजि दितकय भोज जलन नहि विरहज्जाले दृष्टि ४

द्विभक्तिसे भावना वाञ्छिते कल चरित भगवत नहि दृष्ट ५

विश्रुति कल पुरा राम दू एक दलक गीत न स १३ ६

५८

राधा सोनैत छवि में अखन पिता भाभीय नखन की की कल
 (गीत घर भगवत देहे नतेक से मागलिक उपहार छैक न राम
 अपना दहरिमें कर लैव १२) जेन स्नत मरुज्जाल होना कल + न
 अखि दण होत ३ भजन अकल भुन पाशके वेदी बलगाव १०
 होत विजय जितन्य केरक थम होत

५९

टीकत दमन नतव दू देन हरि मरु हैवन सच दू गीत १

नद नखन ओ कल कल सच से सच पुरा होत पासा २

कि नद दे मरि आनन्द मर विर दिते माधव मरिद ३

रामस माधवगन एवक र भेन सपरक कल विर दू कल ४

माधव विराजते आव न माधव समुचित औखध न रह केन ५

राधा सोनैत विराजत कृष्णमें जितनक दलबाम सु गीत रति १
 विराजतस्थमे कलन नतेक दू देन से कलक मरु दृष्टि १२ दूर ३-४
 गीत ४ दृष्टि मरिद मरुज्जाल कलवि दल गीत देन गीतगन ३-५
 चैतन्यविजयत माधव लखी (कलीय सोनल से कल गीत मरि से
 अद्वैत गीत है कल सचोचन न श्री रीत गद दू याकुल मरु गीत १४
 लीत नखन

६०

मरु दे क दृष्टि मरुज्जाल १

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल २

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ३

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ४

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ५

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ६

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ७

मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल मरुज्जाल ८

६१

कर्म शिवाक गतागत पुनपुन निरु पुन पान्था
 भन्तु विद्युति अतस्य कान्त भन्तु इह मन्त्रेण
 पुन पान्थाक कधि नदन्तुन विल एक देह दन्तुन ४

कधि इहभोरुम विरक्त भग पालकक धिन्त कौत छवि है
 माधव हम तीतर बहुत प्रायेन करेन छी तिल स पुनसौ लण अपन देह
 नील आपन कएल। आब हमरा प्रति दया करव नहि आवह ॥ नहु
 छार न ससार जगन्नाथ शरपुर्ण ससारक पालनकर्ता कहवेन छह
 हमरा ओहि समयसँ बहर नहि बुझह ॥ १) मनुष्य पशु पक्षी कीट
 पन्नग नाहें कोनहु रूपसँ हमर रजस हो कसै फलक अनुसार पुनपुन
 जन्म माया हो सब अवस्थामे हमर प्यान ली एह मजाल रन इह
 हमर प्रायेन

१) मनुष्य पशु पक्षी कीट पन्नग नाहें कोनहु रूपसँ हमर रजस हो कसै फलक अनुसार पुनपुन
 जन्म माया हो सब अवस्थामे हमर प्यान ली एह मजाल रन इह
 हमर प्रायेन
 २) मनुष्य पशु पक्षी कीट पन्नग नाहें कोनहु रूपसँ हमर रजस हो कसै फलक अनुसार पुनपुन
 जन्म माया हो सब अवस्थामे हमर प्यान ली एह मजाल रन इह
 हमर प्रायेन
 ३) मनुष्य पशु पक्षी कीट पन्नग नाहें कोनहु रूपसँ हमर रजस हो कसै फलक अनुसार पुनपुन
 जन्म माया हो सब अवस्थामे हमर प्यान ली एह मजाल रन इह
 हमर प्रायेन
 ४) मनुष्य पशु पक्षी कीट पन्नग नाहें कोनहु रूपसँ हमर रजस हो कसै फलक अनुसार पुनपुन
 जन्म माया हो सब अवस्थामे हमर प्यान ली एह मजाल रन इह
 हमर प्रायेन

14 पण्डित बाबाक पोथीसँ-

१५२

कान्त जतन कर भोजन ग्राम खन खन खन धाले छाया निमर
 करण मुधाहृदि चुन्कन दान लेगे करण नैत भोजन पाल २
 न जिनम भोजन न करण रसवान निर्विचल कोअहने चर एह भय
 कुचकुच परहेन मंगल नदण मरह न मान जनि बान मुजब ३
 भन्तु विद्युत् नून वर कान्त भनपे भनपे लोहे कन मधुपन

कृष्ण राधिक सग अपन रगरभसक वर्णन करेन छवि ३
 निर्विचल माधवी गौर खाला लखरहु तँ भयहि पारे (हुन गी) स
 पति गये

१५३

पतिपति गह कान् दसम भेल पारिषय दलभ दूर रह कवि
 ननुचि मरहने मजरा वरनी दिकित विनीकन नख विद्यु ४
 अजन्त प्रसन्न वचन वचन गह कान् दह भय पयति ५
 विद्युत् नून वर कान्त भनपे भनपे लोहे कन मधुपन ६
 कि कन चकन पालन दह दह दह भय भय भय ७
 दह दह दह भय भय भय दह दह दह भय भय भय ८
 भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय ९

१) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १०
 २) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय ११
 ३) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १२
 ४) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १३
 ५) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १४
 ६) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १५
 ७) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १६
 ८) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १७
 ९) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १८
 १०) भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय १९

१५४

कान्त १ दह दह दह भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय भय २
 न विद्युत् नून वर कान्त भनपे भनपे लोहे कन मधुपन ३
 माधवी गौर खाला लखरहु तँ भयहि पारे (हुन गी) स पति गये ४
 कृष्ण राधिक सग अपन रगरभसक वर्णन करेन छवि ५

१५५

नोहर मधुर गुन कलस मुन आन लखु कठिन करि लगे
नइसन नुबेन धरिभ रत्नोकर कहान न सम्य २२ त ३
विद्यापति वासी मुन गुनमति लगे करि पयल
राजा सिवसिंह भजनगण लोकेन टंड २३ त ४

दूसी राधा के दीसबासे अपन टिफलन कृष्ण के सुनवैत अछि ॥
हे कान्हू मोरा भक्तिक गुन राधा भक्ति टलिनुहु। ओकरा कतेक जेहि
उपदेश देब? तौ ते जेना जेना करण कहलह हम सम्य सँदिया सँदिया
कएलहु। ॥२॥ तैमो राधा हमर पयोधन कहि भागतक ॥ रहित पाला
नुषार रत्नोकर चल।

४६

कुचनुर भक्त धराधर लगे दोह बैसा लगे पह दैत जनि ॥
छाया बिन्दु गुन हेरए लख गुन लखे म न भवगद ॥
बुझा न मर विद्या गुन भक्त चरन लोका दुन पदता ॥३॥
अपन लखे लगे अ भक्त न बुझए लखे विद्या गुन ॥४॥
नखर लखे लगे अ भक्त न बुझए लखे विद्या गुन ॥५॥
ए विद्यापति विद्यापति आ न लखे लखे लखे लखे भक्त

४७

भक्त लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
राधा बिन्दु गुन लखे लखे लखे लखे भक्त
राधा लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
सुख लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
कष्टक लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
जल लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त
लखे लगे अ भक्त न लखे लखे लखे लखे भक्त

४८

राजा सिवसिंह भजनगण लोकेन टंड २३ त ५

राधा अभिसारसे भेल कह कृष्णके सुनवैत छथि ॥ पथ विपथ
वाट कुवाट ॥२॥ पाप भलोभव पापी (दुष्ट कामदेव) सन्ध कुचालि ॥४॥
जीव रहल पाण योचल

४९

ए धति कर अवधान तो चिनु उन्नत कात ॥
कारन चिनु छने कात कि कए गदगद भास ॥२॥
भाकुल अनि उन्नत कात धिक् हा धिक् धीन ॥३॥
काण दुरवध देह धरए न चरण येह ॥४॥
विद्यापति कह भयो भजनगण सन्धि ॥५॥

॥ कह ॥

दूसी राधाके कृष्णके विरहोदना सुनवैत अछि ॥ हे राधा ध्यान
दा सुनह उन्नत दीन ॥३॥ छन ज्योतन भए धीन कर लगीत
अछि ॥४॥ धर भयो

५०

अगल उलनद मलय बसन्त दानन मलय होकरन कल
 विनुन म मात विरगन १ सखि लावनिजत यन्त्रिने
 लव रङ्ग लव टल देखि उपवन महन सँभिन कुसुंमन
 कुसुमि आका अखिअ लव अविदुके मलयन नव देव
 अनेमन मधुकर मधुर व कर मलयी नष्ट हजिन
 समय भानन वदन्त नई किछु हजनि विविधन वदित ४
 वडिचन नागर मोह समार पादे विदुषि ने न कर विहार ५
 अति आर हार मलयन मलय नष्ट रहि मलय २ न
 पुन्य पाप न वप नव हो भन मलयन मलय ६
 मलयन मलयन मलय मर मलयी नष्ट नष्ट नष्ट नष्ट
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन

मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन

मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन
 मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन मलयन

विधि हो कनक गर कनक विधि

लवण कुसुम लवण वलयन पुनः सदागन्ध गीत लव
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त २
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त ३
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त ४

कवि विदित विदित कवि विदित १) वसन्त कवि २) विदित
 तीन अविदित वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त वसन्त

कखन हरय दुख मोर हे भोला दाजी
दुखहि जलस भेल दुखहि गमाओल सुख सपनहु नहु मीन ॥
एहि भयसागर पार कतहु नहि मीन धर कतहु नहि
भन विषयपति मोर भोलनाथ गति करब अनन भोरे पार
कवि शिष्यक स्तुति करन छथि

एहि विदि दयाहार अयो एहन बाउर जोगी
टपर टपर कर बसाहा आएन खर खर भयमान
भकर भकर निय भाइ भकोसथि डमरु नल करन
ऐपन मोरन पुनर फाडल वा किमि चौमुख दीप
विआ लए मलाइति मण्डप पैसलि गविजु ननु मदि मोर
भनहु विषयपति मुन ए मलाइति ई शिक विभुन इन
कवि शिष्य कियाहक वन्दन करन छथि

जोगीभा हमार जगन सुखदायक दुख ककरहु नहि छथि
॥१॥ जोगीभाके भाइ पिता कर धन्य जोगी भाइ
कवि शिष्यक गन्धर्व दुहु जग यासक जग भवि के नहि जान
नोको नहि किछु अमरन धिकहुन रहिकक सोन नहि कज ॥२॥
आनक पुनके सोने रूप छाथि गर दुये सोनेमान
भयना पूरा नए किछु नहि मुडनि अनाक नए नमान ॥३॥
भनहु विषयपति मुन ई मोरद्वि दिद कर भजन मोरन
ई हर शिष्या विभुनपति दही नम भवि के नहि जान ॥४॥
कवि शिष्यक स्तुति करन छथि

जें हम्न जतिनहु भोला भोला ठपला हौं हनु रामदास
भाइ विभीषण चढ तप कानननि जपननि रामक नाम ॥१॥

पुनर पछिम गला नहि गेल अचल भेला थहि ठाम
बोस भुला दस माथ चढाओल भाइ दिखल भवि गाल ॥२॥
एक लाख पुन नय लागल जानी कोट मुनोक दान
गुन अघुन सिध गयो नहि दूझलनि रखलनि रामक नाम ॥३॥
भन विषयपति मुनहु पलित मलि कर नोदि चित्तभो भन
गुन अघुन हर मन लहि भालथि नैवकक हथि कलस ॥४॥
कवि शिष्यक स्तुति करन छथि

विभाइ चलल सिधसहकर हर वनकर
इमर लेल कर लाग वि विभुने मुनकर ॥१॥
नगर निभर हर भयल मुनि पामल
देखल चलल सब भूप रूप दधि बुधाल
परिषण चरनि मलाइति मय गढ़नि
नाम कोल ककरन कि दुराई गढ़नि
एहन डमरु घर के कर डर देखिय
गौरी घर राग ककरि काट वा दोसर ॥४॥
भनहु विषयपति मुनहु मोरद्वि मुनभोला
मुनि जोगी मुनहु मोरद्वि मुनभोला ॥५॥
॥१॥ विषयक स्तुति

भोला नय वला भोला भोला भोला नय वला
मधके भोटादे भोला भोला भोला भोला भोला भोला
मधके विभाइ भोला भोला भोला भोला भोला भोला
कोट चढाये भोला भोला भोला भोला भोला भोला
जोगी भोला भोला भोला भोला भोला भोला भोला
भन विषयपति मुनहु मोरद्वि मुनभोला ॥५॥
विषयक स्तुति

16 मजूमदारसँ

8/1/77

कमल मिलल दल मधुप चलल घर दिहल गलल निरु हलल
 अरे १ पथिक जन थीर कयल मल यन पौतर दू लाले
 नज्द रिशिए गहु परदेस बल पहु शम्भुकि न सुल्ल मल्ल
 निदुर समझ पुछर उदरिनि अओर कि कय वल्लने
 यन्दन चरप घन चामर जगि कुडकुम पटलने
 विष्णुपति अल पथिक बघन मुन चिरे दूझि कर अवधने
 न सिद्धिहि रूपनगन लखिभादेइ रमने ॥ १ ॥

विष्णुपति पथिकक सकेतसँ संगम हेतु आदान की १ छाय
 सँझ पडि गेल आगई गाम रहल दूरी आगे। बीचमे बडका पौतर
 गलल य बघि छैक

संगम

२५

परिशिष्ट

विष्णुपति

पटे - काष्ठमे पिताक लग देखाओल सति

१८

- 1 विष्णु ठाकुर
- 2 हरदिन्य ठाकुर
- 3 गद विसरी स विष्णुपति मसदिन्य ठाकुर
- 4 सन्धिपिठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 5 सन्धिपिठिक मल विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 6 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 7 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 8 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 9 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 10 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
- 11 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य
 महापति विठिक देवादे य राजवल्लभ भगदिन्य

- [illegible]

परिगणिका 2

पञ्जीमे विद्यापतिक वराक सन्दर्भ

एक,

(वृधबाल) श्रीजरसुनै शुभइरर दानुजौ सूवास हंनूदौ हरिंसेहपुर
निष्पृणीत सीमटा

12

(स्थपत्य) शुभदकरसूता मुगारि कान्ठ केशवा गडविमपीस
 किरिटे गडविमपीस टी.जी. विमटिममदिनय एमुती सान्धि
 विमरक देवादेय राजवन्म भवर्गदेवी। तत्र सान्धिगेयहिक
 देवर्गदेयसूता पाण्णवर्गक वीरवार म्हामहोपाध्याय गणेश्वर
 म्हामहोपाध्याय धीरवार भाण्डवर्गक जटेवार स्थानान्तरिक हस्त
 सान्धिगे हिक लहरीहस्त ठक्कुर शुभदला, आदीं न्यायवर्गदे
 विमटिममेवर्गदी सारी म्हादींसे म्हामहोपाध्याय
 म्हामहोपाध्याय काली तावदी धीरवारसूता त्रयदस वीरगे गडविमपीस
 हस्तवर्गदी विमटिमपीस म्हादीं धलीस म्हामहोपाध्याय गजेवर्गदी
 म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस
 म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस
 म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस
 म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस म्हादीं विमटिमपीस

751-43

१. शिक्षण क्षेत्रातील गरजू विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सहाय्य देणे.
२. विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक क्षेत्रातील गरजू विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सहाय्य देणे.
३. विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक क्षेत्रातील गरजू विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सहाय्य देणे.
४. विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक क्षेत्रातील गरजू विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सहाय्य देणे.
५. विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक क्षेत्रातील गरजू विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक सहाय्य देणे.

हरिसिंहपुरविष्णुजीस गुप्पभट्ट सुपनदी गडचिरोलीस महलदेव ।
महामहानक चन्द्रधरसुता दिवाकर दिवाकर दुधन जीवजी सोदरपुरस
देवेश्वरदौ घोसोनस गुप्पकर देवाकासुता मात धले भगीरथ
ठकपुरा खीमानस वृद्धिनाथदौ हरिसम्बस भगीरथजी राजदेव
शिवदनी गड विष्णुजीस जसजि दौ नयदनासुतौ शीरोधरदेव गणपती
सुभाषीस शिशु प चन्द्रकरदौ तत्र गणपतिमुते राजपण्डित महे
दिवापति बुधवानस श्रीकरदौ अपरा श्रीकरतुना दलदा चविभासस
भूमिदौ सोदरपुरस श्रीशिव राजपण्डित महे विद्यातीतसुतौ
हरपति तरपती मन्वुमानस गुप्पभट्टभट्टदौ दीर्घदहिमतस दीर्घमृत
रापु . तन्कपुर दरपणिसुतौ दलदाजी तप्यनपुराणिस भगवतदौ
दीर्घदहिमतस दीर्घ वसजीतसुतौ जसजि युद्धजी दशपुराणसुतौ
वागीदौ वागीसुतौ भातहरदौ भाण्डास कविदौ मन्वुमानस
रुद्रमुनि तसयोसुत २ शीरोधरस वरमानसजान दी

शिवासेहक वशाधली

पदेन १. लाह झा २. श्री ३. ठाकुर ४. श्रीतीरुप ठाकुर
५. श्रीशिव ठाकुर ६. श्रीविन्द ठाकुर ७. राजा काशेश्वर ठाकुर

काशेश्वरके तीन बालक भोगेश्वर कुरुमेश्वर सा भोगेश्वर
तीनही राखक निभजत भेल यथा

क (१) भोगेश्वर ठाकुर

२. स्थानान्तरीक दिशेश्वर मुदाहस्त वीरेश्वर मुदाहस्तक
गणेश्वर स्थानान्तरीक गणेश्वर

३. महाराज नयसिंह महाराज नयसिंह १२ कुमार श्रीसिंह
(गणेश्वर) कुमार भावव कुमार केशव कुमार मुर २ राजा जयसिंह
कुमार दामोदर (गणेश्वर)

ख (१) महाराज कुसुमेश्वर ठाकुर

१. महाराज महेश्वर महाराज महेश्वर १. महाराज महेश्वर

२. महाराज महेश्वर महाराज महेश्वर २. महाराज महेश्वर
महेश्वर मुदाहस्तक महेश्वर कुमार महेश्वर महेश्वर
महेश्वर महेश्वर महेश्वर महेश्वर महेश्वर महेश्वर
दुर्गासिंह (महेश्वर)

३. महाराज महेश्वर महेश्वर

४. कुमार महेश्वर कुमार महेश्वर कुमार महेश्वर महेश्वर
महेश्वर ठाकुर २. ग

क

महाराज श्रीगोश्वर

स्थानान्तरिक दिगेश्वर मुद्राहस्तक टीपेश्वर मृदहस्तक टीपेश्वर
स्थानान्तरिक गोविन्द

महाराज जयसिंह महाराज वीरसिंह वर कुमार कीर्तिसिंह कुमार
माधव कुमार केशव कुमार मंगरि राजा तदसिंह कुमार दामोदर

ख

महाराज कुसुमेश्वर

महाप्रहस्तक मंगेश्वर महाराज रत्नेश्वर राजपण्डित चन्दसिंह

महाप्रहस्तक हराड राजपण्डित मराड कुमार मराड कुमार मराडेश्वर
देवाचारिक मनीश्वर मुद्राहस्तक गुणेश्वर कुमार मराडेश्वर महेश्वर
राजा उद्धवसिंह महाराज रुद्रसिंह राजपण्डित मराडेश्वर महेश्वर

महाराज अमरसिंह रुद्रसिंह

महाराज अमरसिंह कुमार श्रीनसिंह कुमार बुद्धिसिंह

ग

1 महाराज अमरेश्वर

2 पाण्डीचारिक उद्धवसिंह कुमार विष्णुसिंह महाराज देवसिंह
महाराज हरिसिंह रंगू ध

3 कुमार प्रतापसिंह कुमार समरसिंह कुमार रणजितसिंह कुमार
दुर्गसिंह रुद्रसिंह कुमार समर्थसिंह वर
मराडेश्वर विष्णुसिंह महाराज शिवासिंह महाराज
परमसिंह देवसिंह दण्डीरायण महाराज तरसिंह हरिसिंह

4 कुमार सुदेशसिंह कुमार हेमसिंह कुमार कमसिंह कुमार दामन
सिंह कुमार प्राणसिंह कुमार कान्वासिंह कुमार गंगासिंह सिंह
(जनापसिंह) रुद्ररायण तरसिंह

5 दण्डीरायण महाराज तरसिंह कुमार विजयरायण राजसिंह
कुमार वीररायण मराडेश्वर कुमार रत्नाड ६१

6 हृदयरायण महाराज दीर्घसिंह हरिसिंह महाराज मराडेश्वर
मराडेश्वर राजा चन्दसिंह दुर्गमारायण राजा रणसिंह कुमार
पुराडेश्वर

7 महाराज राधासिंह मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर
दण्डीरायण महाराज मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर
मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर

8 हरि व कुमार मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर
मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर
हृदयरायण महाराज मराडेश्वर मराडेश्वर
राजा रामचन्द्र

दण्डीरायण महाराज मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर

9 कुमार मराडेश्वर कुमार मराडेश्वर मराडेश्वर
मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर मराडेश्वर

परिशिष्ट-4

महिला में आएल कवि ओ आत्मक नाम

(क) कविक

अभिलेख जयदेव 58 86 458 46 593 787

कण्ठहार 78 467 468 578

कवि कण्ठहार 43 85 123 88 194 331 335 349 353

584 586 587 589 629

दिवापति अधिक ठाम

कण्ठहार 78 468

कविकण्ठहार 43

सरस कवि 87 284 304 84 406 484

सरसति 58

(ख) आत्मयदना

भारत कुमार 87 485

भारत 94 355 486

जयदेव रायण 314

कविल 5551

भारतगुह 5 2

महारायण 603

गुणीश्वर 90

गुला देवी अजुन 486

चन्दन देवी वैजल 205 310 577

जयमती शङ्कर 414

नयराग 647 649 703

जलोदरी 4851

नूतन देवी 90

दासोदर दशवधान 360

देवसिंह 126 25 277 507 522 519

नारीशङ्कर 8031

गुलादेवी 5001

परिशिष्ट 76

वैजल देवी वैजल 205 310 577

भारतगुह 5001

नयराग 647

महारायण 603

महारायण 603

महारायण 603

महारायण 603

रतिधर मन्त्री 409 476

राघव 552 6631

रुकमिणि 426

रुद्रसिंह 465 790

रूपनारायण बहुत ठाम

रूपिनि 409 476

रघुकादेवी 350 464

रुखिमा बहुत ठाम

विश्वास देवी 26

वैद्यनाथ वैजलदेव 204

शङ्कर 4.41

शिवसिंह बहुत

सुप्रभा देवी 91 162 426 440 51

सुन्दर 213 416

सोमदेवी शिवसिंह 5251

हसिनिदेवी 16 24 177 522 539

हसिनि 147 603

परिशिष्ट 5

सन्दर्भ ग्रन्थ

गोपबन्धु झा विद्यापति गीतावली मैथिली अकादमी पटना 1981

शिवसिंह लाल मद्रास मैथिली प्रेस मैथिली सायल एमिग्रेशन सोसाइटी
सिफ देगल कलकत्ता 1882

देवीपुरी विद्यापति पटावली पुस्तक भंडार पटना

भोल झा मिथिला गीत मयह 97

रमानाथ झा भावगोतसंग्रह मैथिली वेबलपमेंट 4-5 पटना
विश्वविद्यालय पटना 1969

राजेश झा हरलीविद्या मिथिला विद्यापीठ सोसाइटी लखनऊ
दरभंगा 970

विद्यापतिहारी मनुमहाय विद्यापति लखी शरण कुमार मिथ
कलकत्ता 97

राजेश झा विद्यापति लखी विद्यापीठ सोसाइटी लखनऊ
दरभंगा 1961 दिनेश झा लखी विद्यापीठ 1979

राजेश झा 21 गीतावली लखी विद्यापीठ लखनऊ
दरभंगा

विद्यापति लखी मनुमहाय विद्यापति पुस्तक भंडार पटना 1941

गीताराम झा मैथिली गीतावली 1972

सुप्रभा देवी लखी विद्यापीठ लखनऊ लखी विद्यापीठ 1979

सुप्रभा देवी मैथिली गीतावली मैथिली अकादमी पटना 1977

परिशिष्ट 6
गीतक अनुक्रमणी

| गीतक आदि | गीताक | स्रोत |
|-------------------|-------|----------|
| अकामिक मन्दिर | 491 | न 210 |
| अगमन पैम | 16 | ने 23 |
| अघट हठ | 293 | ने 220 |
| अच्छ अचछ | 574 | गौर 2 |
| अछलि पुरय | 235 | ने 157 |
| अछलि भरमे | 236 | ने 58 |
| अजरधुनी | 718 | नगु 1011 |
| अकालि भरि | 753 | नगु 1512 |
| अतिनागर दे गुज्जा | | |
| अधर मङ्गलुन | 309 | ने 2 |
| अधरमुष्ट | 503 | न 227 |
| अधर सुशोभित | 335 | न 4 |
| अधर हास | 586 | गौर 14 |
| अलनग मलनस | 558 | माघा 90 |
| अलवरन्ध | 789 | नगु 14 |

1015

| | | |
|-------------------------|-----|----------------|
| अललहु न आबए दे ए कि | | |
| अनुखन माधय | 840 | नगु 79 |
| अपल सपत दे अपद सपथ | | |
| अपद सपथ | 432 | न 35 में 95 |
| अपनहि लागहि | 154 | ने 66 |
| अपनहि पैमक दे पहिलहि | | |
| अपन काज | 354 | न 28 गि 3 |
| अपना मन्दिर | 57 | ने 69 |
| अपनेहि अइदिहु | 821 | नगु 489 |
| अपर पयोधि | 769 | नगु 489 |
| अपकठ रूप | 120 | नगु 515 |
| अवधि वदमोल ले | 259 | ने 20 |
| अवधि वदम | 213 | ने 22 |
| अवधि मास | 706 | में 144 |
| अवलन मलन पू | 254 | ने 179 |
| अवनत आनन कर दे अवनत मुह | | |
| अवलन मुह | 345 | न 1 |
| अव नश्वरा | 830 | नगु 620 में 99 |
| अवयव सयोंहि | 5 | ने 32 |

1019

| | | |
|------------------------|-----|--------------|
| अबला अनुक | 368 | ने 48 राग 12 |
| अधिराज लयन | 99 | ने 6 राग 35 |
| अधिराज पल्लव | 47 | ने 86 |
| अधिराज बिल्वरस | 70 | राग 10 |
| अधिराज कौमल | 46 | ने 77 |
| अधिराज पल्लव | 466 | ने 80 |
| अधिराज दुहक | 75 | राग 76 |
| अधिराज रति तने | 160 | ने 72 राग 26 |
| अमा की न गमडति | 510 | हर 5 भाग 5 |
| अभिषेक लहरी | 39 | ने 8 |
| अमर जलधर दे सारङ्ग 213 | | |
| अमर विहङ्ग | 54 | ने 12 राग 55 |
| अमर बदल दे सुन सुन 291 | | |
| अमल जलधर | 14 | राग 1 |
| अमल लीला | 28 | ने 60 |
| अमर केन 10 रु | 330 | ने 12 |
| अमर निलक | 91 | राग 3 ने 164 |
| अमरिने जीग | 458 | ने 68 |
| अमरिने हस देवे | 34 | ने 11 |
| अमर धा स | 540 | अध 12 राग 8 |

| | | |
|------------------------|-----|----------------------|
| अमर मल लो | 89 | ने 07 |
| अमरिने वचने | 175 | ने 92 |
| अमर न सुनिज | 763 | राग हर 36 ने 187 |
| अमरिने चिकट | 150 | ने 22 |
| अमर उलमद | 855 | देती 214 |
| अमर पाउस | 247 | ने 172 |
| अमर बसन्त | 310 | ने 238 ने 170 |
| अमर रिपुति | 83 | राग 604 |
| अमर चिकर | 76 | ने 91 161 राग भाग 62 |
| अमर म मीय | 84 | राग 805 |
| अमर धा | 701 | ने 13 |
| अमर लय | 676 | राग 11 |
| अमर दीप दे धार अमर 42 | | |
| अमर बदल दे सुन सुन 291 | | |
| अमर उलम मीय | 644 | ने 52 ने 16 |
| अमर अमरिने | 724 | ने 254 |
| अमर कलहाड 11 | 143 | ने 15 |
| अमर निमि | 499 | ने 117 |
| अमर देवलोरो | 375 | ने 56 |

| | | |
|--------------|-----|----------------|
| आजे देखिअ | 632 | जि 34 |
| आजे पुनिअ | 59 | गम 2 |
| आजे मजे नानल | 497 | त 205 |
| आजे मजे हरि | 228 | त 150 त 4 |
| आदरि अलख | 444 | त 151 |
| आदरि आनलि | 283 | त 208 |
| आदरे अधिक | 5 | त 22 त 10 |
| आदि नयन | 165 | त 19 |
| आनन देखि | 72 | गम 73 |
| आनह तेनकि | 479 | त 195 |
| आनहु नोहरि | 357 | त 34 |
| आने बोनध | 166 | त 19 त 14 |
| आदि मंदर | 60 | त 19 त 14 |
| आवे न लखि | 32 | त 19 त 14 |
| आरति भयन | 427 | त 19 |
| आरे सवे भमर | 418 | त 19 |
| आसक लता ल | 658 | जि 69 त 148 |
| आसा छपदह | 79 | त 19 |
| आसाजे मन्दिर | 11 | त 19 त 33 गम 8 |
| आसा दहर उपे | 94 | त 19 |

| | | |
|----------------------|-----|----------------|
| आसे सुमुखि | 552 | भाषा 72 |
| आसे मंगडलि देखि | 677 | मिगील 13 |
| आदे मखि मजे | 630 | जि 28 त 281 |
| इन्दु से इन्दु | 182 | त 99 |
| इ दसि दे उधारे 51 | | |
| इमान रे मंग | 756 | नरु हर 2 त 310 |
| इममज जग | 136 | त 45 |
| इधिन पुनिअ | 677 | त 68 |
| उचित वरम | 6 | त 73 |
| उठ उठ भाव | 386 | त 73 |
| उठ उठ सुन्दरि | 60 | मिगील 12 त 1 |
| उधमान पेन कुसुम | 51 | गम |
| उधमान केन जल | 2 | त 19 त 14 |
| उधारी ह 24 | 30 | त 19 त 14 |
| उपध 51 | 553 | गम 1 |
| उमल ल तेन | 752 | नरु हर 8 |
| एक कुसुम दे मधुकर 63 | | |
| एके देरि | 26 | गम 77 |
| एके आरे | 3 | त 19 |
| एके अवल | 154 | त 19 |

| | | |
|--------------------|-----|---------------------|
| एके मधुमक्षिनि | 166 | ने 80 |
| एखने पाबजो | 128 | ने 35 |
| एतए कतए | 746 | नगु (हर) 8 |
| एत जपतप | 859 | देती 241 |
| एत दिन आगे भाइ | 536 | भाषा 1 |
| एत दिन छन पिआ | 440 | त 144 |
| एत दिन छलि | 640 | शि 48 |
| ए धनि कर अवधान | 854 | नगु 88 |
| ए धनि पदुमिनि | 809 | नगु 95 |
| ए भा कहए | 747 | नगु हर 2 |
| ए सखि ए सखि कि कहव | 604 | प 6 सखा 10 |
| ए सखि ए सखि जनु | 609 | प 11 सखा 120 शि 2 |
| ए सखि ए सखि न धौलह | 353 | त 26 |
| ए सखि पंगल | 809 | नगु 56 |
| एहन इमत धर | 668 | शि 82 |
| एहन करम मोर | 72 | नगु (शिखि) 614 |
| ए हरि बने नदि | 817 | प बाबा 11 |
| एहि जग नारि | 728 | मे 100 नगु (शिखि) 6 |
| एहि पुर पाहन | 36 | राम 18 |
| एहि घटे | 348 | त 20 |
| | 63 | |

| | | |
|-------------------------------|-----|---------------|
| एहि विधि | 861 | देती 243 |
| एहि मही दे तिलनूत लह 273 | | |
| औ भनि कोमल | 18 | राम 19 |
| ओतए मछलि धाले | 454 | त 163 |
| ओतए अरुन | 49 | त 118 |
| ओतएक नन्त | 329 | ने 258 |
| ओ पर बालेंभु दे अभिसारिनि 163 | | |
| ओहु राहु भय | 78 | राम 79 |
| कडडि घटओले | 381 | त 65 |
| कखल हरप | 860 | देती 242 |
| कजोले उमत ओलहे | 759 | नगु (हर) 28 |
| कजोले बर | 55 | भाषा 67 |
| कजोले गढल | 385 | त 2 |
| कण्टक दोरी | 416 | त 140 शि 2 |
| कण्टक भाइ | 00 | ने 147 शि |
| कल भाइ का | 68 | राम 68 |
| कल भउ जुधलि | 102 | ने 9 |
| कतए अरुन दे ओतए अरुन | 457 | |
| कतएक हने धनि | 79 | राम 30 ने 142 |
| कतए गुज्जा दे कतन गुज्जा | 287 | |
| | 615 | |

| | | |
|------------------------|-----|------------|
| कलए दामोदर दे के मोरा | 08 | |
| कलए रतल | 702 | मे 28 |
| कल कल कुसुम | 34 | राम 16 |
| कल कल भांगे | 497 | न 28 |
| कल कल भान्ति दे कति | 67 | |
| कल खन बचन | 707 | न 18 |
| कल दिन रह्य | 736 | राम 7 |
| कलन कोटि कु | 224 | न 146 |
| कलन गुज्जा | 285 | न 711 |
| कलन मल्ल | 849 | राम 66 |
| कलन जीवन | 03 | न 2 |
| कलन कुंरी | 310 | न 4 |
| कलन दिवस | 2 | न 216 न 23 |
| कलन बचन | 4 | न 152 |
| कलन बेटल | 147 | न 14 न 8 |
| कलन मलिली दले | 438 | न 220 |
| कल नहि कुसुम दे, कल कल | 35 | |
| कल सह दे, बाला 57 | | |
| कल सुखसार | 664 | न 72 |

| | | |
|---------------|-----|-----------|
| कल रनक्षर | 510 | राम 43 |
| कल सह | 96 | न 3 |
| कल कति भान्ति | 66 | राम 66 |
| कल मजुन्द | 364 | न 44 |
| कलक ननन भा | 669 | मिगिस 167 |

कल कल दे कल कल भान्ति 67

| | | |
|-------------|-----|------------|
| कदलिपुर गहन | 580 | गौर 8 |
| कल नट कल | 576 | गौर |
| कलन भुधर | 744 | नगु 72 |
| कलन भुध | 17 | राम 34 |
| कलन भुध | 8 | नगु 8 |
| कलन भुध नन | 24 | राम 5 |
| कलन भुध | 411 | न 1 मिगिस |
| कलन भुध | 867 | नगु 16 री |
| कलन भुध | 73 | न मिगिस 66 |
| कलन भुध | 219 | न 84 न 4 |
| कल भुध | 25 | न 4 |
| कलन भुध | 441 | न 4 |

करतल कमल दे करतल बयन 534

कर तल बयन 533

करतल तीन सोमर 83

कर धर कर 612

करह रदग 22

करहि अलक दे अलक 92

करहि मिलन 27

करहु युसुम 4

करिवर रा नरस 88

करे कुच दे रससहि 133

कलस कुच दे कुच कलस 278

कह कह सुन्दरि 134

कह गजगामिनि दे धिआ रसपेमन 382

कहव पधिक 54

कहमा सत्रो 680

कहो समो 560

कहु सखि कहु 642

कानर रदग 11

कानरे भिरनये मा 179

कादि जग चलि 48

1-8

राम 49

ने 100 दि 72

दि 5

राम 21

राम 28 न 19

राम 14

नगु 250

न 47 दि 2

भाषा 4

मिगिस 1 मी 31

भाषा 94

मिगिस 3 मी 19

राम न 29

न 94 मी 31

राम 50

कानन कोटिदे, कानन कोटि 226

कानन भमि भामे 727

कानन कानन 485

कानन हेरव 807

कामिनि कर 274

कामिनि लोहे 284

कामिनि बदल 58

कानि कहल 518

कानु दिस मार 756

कि आरे नय 534

कि करीने लवना 377

कि कल 3-10 434

कि कहव ए सखि दू 808

कि कहव ए सखि वालदुर 806

कि कहव ए सखि नमिक 459

कि कहव ए सखि नमिक 8-6

की कहु पद 709

की कानु निरेख 305

की कुच भचने 42

614

नगु (मिदि) 648

न 203

नगु 67

ने 128 न 4 राम 4 दि 11 44

ने 209

राम 59 ने 242 न 70

राम 20

ने 81

न 2 राम 8, भाषा 40

न 1

न 43 दि 1,1

नगु 18

नगु 57

न 69 दि 13

राम 80,

मी 10

ने 233

न 128

| | | |
|--------------------------|-----|-------------------|
| कोकिल कुल | 106 | त 3 |
| कोकिल गायन | 54 | शम 56 |
| कोटि कोटि देल | 92 | त 17 |
| कोन गुन | 662 | शि 75 |
| कोन बन बसधि | 619 | शि 47 |
| कोप करण चाह | 409 | त 06 |
| कोपे कपटे दे कपट कोपे 34 | | |
| कोमल कमल | 698 | मै 92 |
| कोमल तनु परभय | 269 | त 91 |
| कौतुक एक | 568 | हर 2 भाषा 57 |
| कौतुक रानलि | 627 | शि 2 |
| खनहि खन | 408 | त 105 |
| खने खने नयन | 793 | लगु |
| खने खने माङ्गण दे 602 | | |
| खने सन्ताप | 250 | त 15 त 5 |
| खरि खरि देखे | 405 | त 01 |
| खेत कणल | 210 | त 11 |
| खेदय मजे | 482 | त 99 |
| गगनक धान्द | 851 | दण्डित बाका नी 96 |
| गगन गरज घन | 574 | गग 57 भाषा 94 शि |

| | | |
|------------------------|-----|--------------------|
| गगन गरज मंचा | 492 | 69 मै 10 |
| गगन तीव | 299 | त 211 शम 47 |
| गगन बलाहक | 712 | त 227 |
| गगन भरल दे गगन गरज 495 | | लगु (मिथि 3 |
| गगन मगल | 404 | त 00 शि 16 |
| गगन मण्डल उग | 421 | त 121 ताना 50 |
| गगन मण्डल दुहुक | 134 | त 43 |
| गगन दिवस सजो | 57 | भाषा 3 राजा गितस 9 |
| गगन गभावरि | 52 | राजा 27 भाषा 3 |
| गरज गगन दे गगन गरज | 536 | |
| गगने न कर | 814 | लगु 169 |
| गगन चरवा | 28 | शम 29 त 24 |
| गुना भाति | 296 | त 11 |
| गुन मण्डल | 38 | त 47 |
| गुरुजल जाहे | 5 | शम |
| गुरुजल दुरजल | 44 | गग 46 |
| गुरुजल नयन | 196 | त 89 |
| गुरु हे ले | 59 | गोर 18 |
| गैलाह पुरुष दे | 529 | शम 42 |
| | 621 | |

| | | |
|--------------------------|-----|----------------------|
| गौरी लार अंगना | ६४७ | मिमीस २ ३ |
| गौरी औरी | ६५५ | मिमीस २ ३ कि २४ रि ९ |
| घटक बिहि | १२८ | न ९३ |
| घन घन गरजरा | ८५३ | पण्डित बाबाजी १ ७ |
| घर गुरुजन | ३९५ | न ८८ भाषा ० |
| घर घर भरमि | ६६७ | कि ८१ |
| छन्दिस नलटे | ४१५ | न १५ |
| छन्दन गरल | ८१४ | नगु २ ३ |
| छन्दो जनु डग | ३९७ | न ९० |
| चरन कमल दे अरुन १५ | | |
| चरन नूपुर दे अलक सिलक ९२ | | |
| चरनायुध शुभे | ५६ | भाषा ५६ |
| चरित चानर | २०५ | न १५ |

આગત્વ આમિક્ક દે અથા 402

[illegible][illegible]

| | | |
|------------------------------|-----|-------------|
| तापद्वय भास | 588 | शोर 15 |
| तातक वचने | 786 | नम (विशेष) |
| तातल सिकत | 845 | नम 23 |
| तासपनि रिपु | 260 | न 85 |
| ताल नडाग | 206 | न 17 |
| तिन तुल दुहु नह | 27 | न 125 न 126 |
| तीजिक तेरा | 615 | न 9 |
| तुम अनुराग | 10 | न 1 |
| तुअ गुन गरब दे कुलगुल 354 | | |
| तुअ गुने अमिज दे तुअ मुखे 72 | | |
| तुम गे हारे | 9 5 | नम 81 |
| तुम विसदास | 45 | न 1 |
| तुम मू 1 मोहीन | 7 | नम 2 |
| तुम मू 2 मोहीन | 587 | नम 5 |
| तुम मू 3 मोहीन | 523 | नम 11 नम 4 |
| तुम मू 4 मोहीन | 208 | न 11 |
| तुम मू 5 मोहीन | 96 | न 115 |
| तुम मू 6 मोहीन | 98 | न 1 |
| तुम मू 7 मोहीन | 67 | न 4 |
| तुम मू 8 मोहीन | 4 | नम 4 |

| | | |
|--------------------------|-----|------------|
| ताहरे शिर 123 | 797 | नम 34 |
| ताहरे शिर 124 | 754 | न 101 |
| ताहरे शिर 125 | 797 | नम 34 |
| ताहरे कुल ठाग | 192 | न 8 |
| ताहरे कुलमि | 212 | न 144 |
| ताहरे नवधर | 1 | न 45 |
| ताहरे परदेस दे सहे परदेस | | |
| ताहरे प्रभु विभजन | 767 | नम 47 |
| ताहरे प्रभु मू | 68 | मिमीम 1, 8 |
| ताहरे प्रभु मू 1 | 7 | न 14 |
| ताहरे प्रभु मू 2 | 64 | न 8 |
| ताहरे प्रभु मू 3 | 79 | न 1 |
| ताहरे प्रभु मू 4 | 0 1 | |
| ताहरे प्रभु मू 5 | 454 | न 1 |
| ताहरे प्रभु मू 6 | | नम 4 |
| ताहरे प्रभु मू 7 | | |
| ताहरे प्रभु मू 8 | | |
| ताहरे प्रभु मू 9 | | |
| ताहरे प्रभु मू 10 | | |
| ताहरे प्रभु मू 11 | | |
| ताहरे प्रभु मू 12 | | |
| ताहरे प्रभु मू 13 | | |
| ताहरे प्रभु मू 14 | | |
| ताहरे प्रभु मू 15 | | |
| ताहरे प्रभु मू 16 | | |
| ताहरे प्रभु मू 17 | | |
| ताहरे प्रभु मू 18 | | |
| ताहरे प्रभु मू 19 | | |
| ताहरे प्रभु मू 20 | | |
| ताहरे प्रभु मू 21 | | |
| ताहरे प्रभु मू 22 | | |
| ताहरे प्रभु मू 23 | | |
| ताहरे प्रभु मू 24 | | |
| ताहरे प्रभु मू 25 | | |
| ताहरे प्रभु मू 26 | | |
| ताहरे प्रभु मू 27 | | |
| ताहरे प्रभु मू 28 | | |
| ताहरे प्रभु मू 29 | | |
| ताहरे प्रभु मू 30 | | |
| ताहरे प्रभु मू 31 | | |
| ताहरे प्रभु मू 32 | | |
| ताहरे प्रभु मू 33 | | |
| ताहरे प्रभु मू 34 | | |
| ताहरे प्रभु मू 35 | | |
| ताहरे प्रभु मू 36 | | |
| ताहरे प्रभु मू 37 | | |
| ताहरे प्रभु मू 38 | | |
| ताहरे प्रभु मू 39 | | |
| ताहरे प्रभु मू 40 | | |
| ताहरे प्रभु मू 41 | | |
| ताहरे प्रभु मू 42 | | |
| ताहरे प्रभु मू 43 | | |
| ताहरे प्रभु मू 44 | | |
| ताहरे प्रभु मू 45 | | |
| ताहरे प्रभु मू 46 | | |
| ताहरे प्रभु मू 47 | | |
| ताहरे प्रभु मू 48 | | |
| ताहरे प्रभु मू 49 | | |
| ताहरे प्रभु मू 50 | | |
| ताहरे प्रभु मू 51 | | |
| ताहरे प्रभु मू 52 | | |
| ताहरे प्रभु मू 53 | | |
| ताहरे प्रभु मू 54 | | |
| ताहरे प्रभु मू 55 | | |
| ताहरे प्रभु मू 56 | | |
| ताहरे प्रभु मू 57 | | |
| ताहरे प्रभु मू 58 | | |
| ताहरे प्रभु मू 59 | | |
| ताहरे प्रभु मू 60 | | |
| ताहरे प्रभु मू 61 | | |
| ताहरे प्रभु मू 62 | | |
| ताहरे प्रभु मू 63 | | |
| ताहरे प्रभु मू 64 | | |
| ताहरे प्रभु मू 65 | | |
| ताहरे प्रभु मू 66 | | |
| ताहरे प्रभु मू 67 | | |
| ताहरे प्रभु मू 68 | | |
| ताहरे प्रभु मू 69 | | |
| ताहरे प्रभु मू 70 | | |
| ताहरे प्रभु मू 71 | | |
| ताहरे प्रभु मू 72 | | |
| ताहरे प्रभु मू 73 | | |
| ताहरे प्रभु मू 74 | | |
| ताहरे प्रभु मू 75 | | |
| ताहरे प्रभु मू 76 | | |
| ताहरे प्रभु मू 77 | | |
| ताहरे प्रभु मू 78 | | |
| ताहरे प्रभु मू 79 | | |
| ताहरे प्रभु मू 80 | | |
| ताहरे प्रभु मू 81 | | |
| ताहरे प्रभु मू 82 | | |
| ताहरे प्रभु मू 83 | | |
| ताहरे प्रभु मू 84 | | |
| ताहरे प्रभु मू 85 | | |
| ताहरे प्रभु मू 86 | | |
| ताहरे प्रभु मू 87 | | |
| ताहरे प्रभु मू 88 | | |
| ताहरे प्रभु मू 89 | | |
| ताहरे प्रभु मू 90 | | |
| ताहरे प्रभु मू 91 | | |
| ताहरे प्रभु मू 92 | | |
| ताहरे प्रभु मू 93 | | |
| ताहरे प्रभु मू 94 | | |
| ताहरे प्रभु मू 95 | | |
| ताहरे प्रभु मू 96 | | |
| ताहरे प्रभु मू 97 | | |
| ताहरे प्रभु मू 98 | | |
| ताहरे प्रभु मू 99 | | |
| ताहरे प्रभु मू 100 | | |

| | | |
|---------------------------|-----|------------|
| नअन दे नयन | | |
| नअमि दसा | 472 | न 187 |
| नअमि दसा दे | 831 | नगु 644 |
| नअरक बाजेलि | 30 | राम 91 |
| न जानल दे के जन 471 | | |
| ननयी सहप दे सरोबर 2 8 | | |
| नन्दक नन्दन | 508 | राम 4 |
| नन्दन बन | 637 | भाषा 4 |
| नधि अनुसंगोले | 8 4 | नगु 182 |
| नब जउयन दे कि अगरे 337 | | |
| नब गेदेखन | 9 4 | नगु 8 5 |
| नब इतिपति दे नब गिनुपति 6 | | |
| नब गिनु 1 | 6 | राम 1 |
| नब हरि मिलक | 3 | न 26 |
| न बहगन मस | 11 | राम 5 |
| नमित अलके दे नमित 278 | | |
| नयनके अल | 22 | न 59 |
| नयनके क अरे | 253 | न 8 |
| नयनके नीर | 55 | राम 5 न 21 |

| | | |
|-------------------------|-----|-------------|
| नयन निरोधि | 599 | न |
| नरि बह नयनक | 146 | न 16 |
| नदि किहु पुछलक | 317 | न 47 |
| नगर हो से | 220 | न 141 |
| नचिअ काहिअ | 19 | राम 20 |
| नारडिग ऊनडिग | 239 | न 162 |
| नारायण देवा | 573 | गोर 1 |
| नित मन्दि सजी | 401 | न 97 |
| नित मन्ने ज्ञाजी | 765 | नगु 187 38 |
| निधान की ज्ञाजी | 390 | न 64 |
| निधि नितम्ब | 142 | भाषा 49 |
| निवेद्य न | 8 3 | नगु 1 |
| निसि निहिन मम श्री | 4 | राम 9 न 9 |
| निसि निहिन मम श्री | 64 | न 18 |
| नीन्दे भगल दे सागरि 275 | | |
| नील कलेधर | 783 | नगु 187 4 |
| नूपुर रागा | 76 | राम 1 न 5 |
| नैर मय | 690 | नगु 187 |
| नोनुअ दे नोनुअ 282 | | |
| पड़रि मन्ने | 644 | न 187 नगु 1 |

| | | |
|---------------------------|-----|----------------|
| पडकज वैरि | 773 | नगु 14 |
| पछाँ नुनिअ | 63 | नै 83 नाला 7 |
| पञ्चबदन हर | 45 | न 55 |
| पञ्चाजल पुर | 569 | हर 3 भाषा 5 |
| पढल पुरुख | 647 | न 3 |
| पवल सुभा | 64 | राम 64 |
| परक पेभमि | 282 | नै 707 |
| परक चिल मिलि | 331 | नै 81 |
| परतह परदेस | 48 | नै 59 |
| परतह पुर | 567 | हर 1 भाषा 14.9 |
| परदेस गमन | 46 | न 8 |
| परमे बुझल | 371 | न 5 |
| परि नम गुराजल | 41 | न 4 |
| परिज ए | 870 | नगु 114 |
| परिज परमार | 8 | न 68 भाषा 1 |
| परिल बदरि | 736 | नगु 5 |
| परिल वारा और | | |
| परिलहि भमिअ | 71 | राम 74 |
| परिलहि कएलरु ह दे प्रयमहि | 315 | |
| परिलहि चोरिअ | 318 | न 244 |

| | | |
|------------------------------|-----|-----------------------|
| परिलहि उभार कर | 187 | नै 105 |
| परिलहि परस पयोधर | 133 | नै 41 |
| परिलहि पेनक त | 47 | राम 45 नै 104 |
| परिलहि रगु | 850 | परिलहि नाला 85 |
| परिलहि रगु 808 | 812 | नगु 160 |
| परिलहि सरस दे परिलहि परस 133 | | |
| परिलहि चिरीते | 469 | न 184 |
| परिलहि चोरिअ | 234 | नै 156 नै 82 |
| परिलहि वधन | 446 | न 154 |
| परिलहि उभार | 53 | राम 55 |
| परिलहि तिअर | 141 | नै 53 नाला 56 |
| परिलहि रगु | 610 | परिलहि नाला 35 |
| परिलहि रगु | 47 | राम 41 |
| परिलहि रगु | 63 | राम 65 |
| परिलहि रगु | 321 | नै 72 |
| परिलहि रगु | 684 | परिलहि रगु 2 1. नै 82 |
| परिलहि रगु | 129 | नगु 114 69 |
| परिलहि रगु | 827 | नगु 613 |
| परिलहि रगु | 842 | नगु 806 |
| परिलहि रगु | 224 | राम 3 |

| | | |
|----------------------------|-----|---------------|
| पिआ सोर | 555 | कि 79 |
| पिआ रसपेसल | 279 | न 63 |
| पिआ सत्रो कहव | 478 | न 94 |
| पीन पयोधर | 331 | न भाषा 33 न 1 |
| पीमल भाव | 717 | न 26 |
| पुनु चर्ले भावसे | 48 | न 8 |
| पुर परिजन | 111 | न 9 |
| पुरल पुरपरि दे पुर परिजन 2 | | |
| पुरुष भसर | 8 | राम 82 |
| पुरुष जत | 12 | न 10 |
| पुरुष पैम दे पुरुष जत 125 | | |
| पुरुष पैम तुम | 141 | कि 44 |
| प्रपारिमे मरामथ | 170 | न 94 |
| प्रथम गकारम | 0 | कि 11 म 1 |
| प्रथमक आदरे | 4.8 | न 1 |
| प्रथम नैयन लय | 118 | न 3, भाषा 44 |
| प्रथम जौवन सिरे | 0 | न 170 न 29 |
| प्रथम ठरम | 374 | न 15 |
| प्रथम पहर | 188 | न 70 |
| प्रथम पैम हरि | 1 | न 24 |

| | | |
|----------------------------------|-----|------------------|
| प्रथम शास भति | 13 | राम 11 |
| प्रथम वएस हस | 659 | कि 70 |
| प्रथम समारम के | 321 | न 25 न 58 |
| प्रथम समारम मुखल | 167 | न 8 न 43 |
| प्रथम समारम भेल | 660 | कि 7 |
| प्रथम सिरीकल दे प्रथम जौवन 203 | | |
| प्रथमहि भलक | 151 | न 63 न 42 |
| प्रथमहि वपनल | 474 | न 19 कि 1 |
| प्रथमहि कानल नखलक | 194 | न 4 |
| प्रथमहि कानल हटलक | 13 | न 243 |
| प्रथमहि कनर नोह | 297 | न 274 |
| प्रथमहि गिरि सम | 31 | न 14 न 11 |
| प्रथमहि गिरि पति | 09 | कि 2 |
| प्रथमहि लेह | 276 | न 48 |
| प्रथमहि ररग | 241 | न 66 न 20 भाषा 2 |
| प्रथमहि सवकर | 35 | न 155 |
| प्रथमहि सिनेर दे प्रथमहि नोह 226 | | |
| प्रथमहि सुन्दरि | 313 | न 4 |
| प्रथमहि हाथ पयोधर | 91 | राम 94 |
| प्रथमहि हटय वृक्ष नीलक | 248 | न 13 |

| | | |
|-------------------------------|-----|---------------|
| फिरि फिरि भमरा | 724 | नग्न किछि 724 |
| फुटल कुसुम लब | 836 | नग्न 726 |
| फुल एक दारी ल | 725 | नग्न किछि 725 |
| फूलल गिफुर | 490 | न 209 |
| फूजलि कबरी दे. अबनल आनन 256 | | |
| बणन कनर | 505 | न 247 |
| बचन अमित्र | 173 | न 90 |
| बचनक रचने | 291 | न 27 |
| बचन रचने दे कतन बचन | | |
| बड अज करण | 676 | कि 47 |
| बड कौशल लुअ | 384 | न 69 |
| बड सुपुरुष बोलि दे गुज्जा अनि | | |
| बाई गुंड लोह | 115 | न 44 |
| बाई बडाइ | 777 | नग्न किछि 777 |
| बाई मनोरथ | 9 | राम 9 |
| बदन कामिनि दे कामिनि बदन | | |
| बदन चानद लोर | 41 | न राम 1 |
| बदन झपाचा | 77 | न 94 |
| बटर सरिस | 43 | राम 45 |
| बदन सरोरुह | 44 | न 44 |

| | | |
|---------------------------|-----|-------------------|
| बदन सोहाजीत दे भकुन | | |
| बर दीरह | 671 | किछि 1303 न 7 |
| बरख दी आदस | 39 | राम 41 |
| बरिस लाल | 252 | न 177 |
| बरिस सदन | 77 | राम 78 |
| बसन हरइते दे हरइते बरुन | | |
| बसन रजनि | 17 | न 46 न 270 भाष 15 |
| बहिर रोनायी | 578 | गोर 6 |
| बाइक कमान | 97 | राम 94 |
| बाइक नयन सर | 557 | भाषा 49 |
| बाट बिकट | 400 | न 95 |
| बाट भुमदास | 150 | न 61 87 |
| बाटनि पिरिनि | 257 | न 182 |
| बाटिक पानि दे काटि | | |
| बाटिक बिकट | 528 | राम 41 भाषा 51 |
| बाटिक रोर | 23 | राम 24 न 40 |
| बास नयन बर दे बाइक नयन सर | | |
| बासा नयन फुल | 49 | राम 5 |
| बासा बयन नयन | 165 | न 45 |
| बारि बिलासिलि | 387 | न 74 |

| | | |
|------------------|-----|----------------|
| वारिस अग्निति | ९९ | ने २ |
| वारिस निसा | २४ | ने |
| वाला कल | ५६ | राज ५७ |
| वालि बिलासिति | १४३ | ने ३१ |
| वालुम निकुर | ७७० | नगु (पर ७ |
| विभाह चलना | ६६४ | बेनी २४८ मे २० |
| विकच कमल | ६ | राम ६१ |
| विकट जरा | ५४ | राज १५ |
| विक्रमण गतिहु | ३४६ | न ८ |
| विक्र दे विक्रिए | | |
| विशिते देखति | ५४८ | भाषा ६७ |
| विशालित निकुर | ८२२ | नगु ५४५ |
| विशालित वस्त | ५३९ | भाषा ८७ |
| विशद न देरी | ५२२ | राज २४ |
| विशाल | ७१४ | नगु मिनि २१ |
| विशिवस नु | २१ | ने ५३ |
| विलु दीखे | ७२६ | नगु मिनि ६७ |
| विमल कमलमुखि | ४२६ | न १२१ |
| विमलके भव | २५ | राम २६ |
| विसरल गुरु | ५९७ | गोर २५ |

| | | |
|-----------------------|-----|---------------|
| विहि मोर परसल | ६१ | जि |
| वीक भवनिहु | ५५३ | भाषा ७९ |
| बुझहि न पारल | ४२९ | न १३१ |
| बुझहि न पारनि | १४७ | ने ५७ |
| बुझिहल भाधव | ५४९ | भाषा ६३ |
| बुझा बड रहगुरिसा | ७११ | मे १६६ |
| बुझा वरम हर | ७६४ | नगु (हर ३१ |
| बुझा हे अये | ५९६ | गोर २४ |
| बेरा एक जिब दे आवे न | | |
| बेरी बेरी भादे | ७६१ | नगु ६२ ३ |
| बालनि बाल | ६१ | ने ७७ |
| बल कजण्डनु | ७९० | मज ७७४ |
| भगदल भगद | ४३७ | न ४ |
| भगल भगल अजि | ६५२ | मिमीन २४५ |
| भल भल राहिज | ३३७ | न ६ जि ७४ |
| भल हल भल | ७४५ | नगु १२२, ६ |
| भाइगल वाह वि | १०८ | मे ४७ |
| भाइगल कधील दे हमे धनि | | |
| भाविनि भल भल | ७३० | नगु मिनि, १०३ |

| | | |
|--------------------|-----|-------------------|
| भोला भड्गवा खाड़ने | 865 | बेनी 243 |
| भौह भाडिंग | 275 | ने 99 |
| भौह भना | 279 | ने 204 |
| भड्गल बिलहिअ | 749 | नगु हर 11 |
| भने सुधि पुरुब | 0 | ने 8 त 183 नगु 54 |
| भधुकर एक कु | 62 | राम 62 |
| भधुपुर गैल भन | | |
| भधुपुर मोहन | 724 | नगु जिथि 602 |
| भधु राजनी | 230 | ने 52 |
| भधु रिनु | 825 | नगु 606 |
| भधुसम वचन | 425 | ने 126 |
| भन ननमा | 610 | ने 2 |
| भन परचम | 650 | जि 11 |
| भनसि न धने | 40 | ने 8 |
| भन्यर गमल | 580 | गौर 0 |
| भन्य वचन | 465 | ने 170 |
| भनयानिले साहर | 462 | ने 174 |
| भनित कुसुम | 443 | ने 110 रग 8 |
| भाड़ है बालुम | 783 | नगु (नगु) 1 |
| भाघ माल सिदि | 513 | रग 4 |

| | | |
|---------------------|-----------|---------------------|
| भरि भलि | 754 | नगु हर 22 |
| भाधव नवल | | |
| भाधव आव न | 616 | जि 0 |
| भाधव ई लहे | 643 | जि 11 |
| भाधव एखन दूरि | 710 | ने |
| भाधव कठिन दे हिमकर | | |
| भाधव कत तौर | 742 | नगु जिथि |
| भाधव कत परबो | 819 | नगु 786 |
| भाधव करिअ सु | 456 | ने 195 जि 7 |
| भाधव जि कहव नाही | 661 | जि 14 |
| भाधव कि कहव नीर | 645 | जि 51 |
| भाधव कि कहव मुन्दरि | 69 | जि 14 |
| भाधव रगत | 417 | ने 166 |
| भाधव नाइने देखलि पय | 82 | जि 11 |
| भाधव नाइने देखलि पय | 603 | जि 8 |
| भाधव नानल | 496 | ने 217 भाग 14, जि 0 |
| भाधव लेजि गैल | 703 | ने 128 |
| भाधव लोहे नगु | 645 | जि 51 |
| भाधव देखलहुं नुअ | 622 जिथि, | जि 17 |
| भाधव देखलि जि | 663 | जि 76 |

| | | |
|--------------------|-----|----------------|
| माधव देखलि अंश | 780 | नगु १५) १७ |
| माधव यचन | 635 | शि ४१ |
| माधव बहुत मिलति | 847 | नगु ४३७ |
| माधव बुझाने तुभगुन | 654 | शि 63 |
| माधव बुझाने लोहर | ७५ | नगु ३६५ |
| माधव मत जनु | 683 | मिथिल २५ मी ३१ |
| माधव माधव होहु | 650 | शि ५४ मी १९ |
| माधव मास | १०९ | ने २१७ |
| माधव सब विधि | 704 | मी २९ |
| माधव सिधिस | 631 | शि २३ मी ४६ |
| माधव सुमुदि | 455 | ने ४४ |
| माधव हजर | 649 | शि ६४ मी ३७ |
| माधवे ज्ञान | १९४ | ने १९ मी १९ |
| मान परिहर हे | 509 | राग 6 |
| मानिक धेमाहन | 60१ | प ६ माना ३१ |
| मानिनि आव | 642 | शि ५० |
| मानिनि मान अबहु | 416 | ने १६ |
| मानिनि मान औन | २० | गम १ |
| मानति मधु | 193 | ने १२ |

| | | |
|------------------------|-----|---------------------|
| मानति मत | 716 | नगु ३१३ |
| मास अखाद | ७३५ | नगु ३१३ ७२९ |
| मुहुन निमसोलह | 589 | गोर १७ |
| मुख मनोहर दे पीन पयोधर | | |
| मृगमटपडक | ३४९ | ने ७ राग 46 भाषा ७० |
| मंदुर मुंदिर | 545 | भाषा ५९ |
| मोर निरधन | ७५८ | नगु १४७ २७ |
| मोर गहरा देखल | ३७७ | ने २५४ |
| मोरा मत मतमथे | 5५६ | भाषा ४४ ११० |
| मोरा १ भाषाभा | 500 | ने २४ |
| मोरा १ भाषाभा | ७४ | नगु १९४ ४ |
| मोरा १ भाषाभा ३६६ | ७३ | नगु ३१ ५ |
| मोरा १ भाषाभा ४६४ | २६४ | नगु ६४ १ |
| मोरी उचितय | १ | ने १ |
| मोहन मधुपुर बास | 6५७ | ने ६३ |
| मोहि तीजे | 64१ | शि ६ मी १०० |
| मोहरि ११२ | १२ | ने ३९ |
| मोहि कानन | ३११ | ने २४० न ५५ राग 4९ |
| मोहि सगपानि | ० | ने ७५ |
| मोहिक मरुम | २४४ | ने १६९ ने ६० |

| | | |
|-------------------------|-----|----------------|
| राजकाज | 57 | गो 5 |
| रामा अड़बिहै | 526 | राग 16 भाषा 45 |
| रामा अधिक | 359 | त 57 भाषा 18 |
| रामा नीरि बड़ाउलि | 378 | त 6 |
| रामा देह | 362 | भाषा 00 |
| राहु तरासे दे की कान्हु | | |
| राहु भेघ भा | 403 | त 99 |
| रितुपति रानि | 826 | नर 511 |
| रिपु पंचसर | 34 | न 244 |
| रसनि भवनी | 571 | ह 5 भाषा 54 |
| रे नरनाह | 672 | मिमीस 29 |
| रोषल मग्रे | 601 | त 3 |
| रोषलह राहु | 520 | राग 24 |
| लता लरुअर | 464 | त 8 भाषा 5 |
| लवये धार | 594 | गो 2 |
| लखित अलके | 276 | त 2 भाषा 50 |
| ललित लता | 484 | त 2 |
| लहु कय मोललह दे राट | | |
| लहु लहु सञ्चर दे छान्द | | |
| लाखहु लता | 4 | त 21 त 3 राग 1 |

| | | |
|----------------------|-----|--------------|
| लिखव डनैस | 856 | शि 67 |
| लुपुधले लजले | 1 | राग 1 |
| लोचन अस्त | 638 | शि 44 अ 95 |
| लोचन चपल | 340 | त 0 |
| लोचन धार दे हरि हरि | | |
| लोचन लीप | 489 | त 208 भाषा 4 |
| लोटुत्र वदन | 280 | न 205 |
| सखि उत्तरे दे कि आरे | | |
| सखि कि पुजासे | 844 | नगु 814 |
| सखि हे भज जगद | 532 | राग 35 |
| सखि हे कि नर बुझाव | | |
| सखि हे बालभु | 515 | राग 5 |
| सखि हे बल्लल | 824 | त 3 |
| सखि हे भाग्य बारी | 480 | त 9 |
| सख सखारज नारे | 2 | त 64 |
| सखि श्री ररति | 18 | राग 40 |
| सजली मयट ल | 43 | त 32 |
| सजली के वह उग सोव | 533 | नगु 54 |
| सजली भन कर प | 194 | नगु 3 |
| सजल ललिते | 108 | त 15 |

| | | |
|-------------------------------|-----|------------------------------------|
| सपने आपल सखि | 527 | राम. 40 |
| सपने देखल पिअ | 738 | नगु (मिथि) 800 |
| सपने देखल हमे | 791 | नगु (विदिध) 11 |
| सपने देखल हरि उप. | 57 | राम. 58; ने. 239; राम. 8, भाषा 165 |
| सपने देखल हरि मेलहुँ | 57 | राम. 58 |
| सपनेहु न पुरले दे. सपनेहु मनक | | |
| सपनेहु मनक पु. | 263 | ने. 187; त. 25 |
| सवे परिहरि | 442 | त. 147 |
| सवे सबतहु | 200 | ने. 119 |
| सवन रचावहि | 223 | ने. 145 |
| सरदक वान्द | 103 | ने. 10 |
| सरदक ससधर मुख दे. माधय जानल | | |
| सरदक ससधर मज | 412 | त. 112; राम. 32 |
| सरस बसन्त | 613 | गि. 6; मिथि सं. पृ. 3 |
| सरसिज विनु | 832 | नगु. 652 |
| सरुष कथा | 156 | ने. 68 |
| सरोवर घाट | 216 | ने. 137 |
| सरोवर मज्जि | 486 | त. 204; ने. 34 |
| ससन परस | 507 | राम. 3 |

| | | |
|-----------------------------|--------|-------------------|
| सहज पसन मुख | 358 | त. 36 |
| सहज सितल | 85 | राम. 86 |
| सहज सुन्दर | 7 | राम. 7 |
| सहजहि आनन अछल | 218 | ने. 139 |
| सहजहि आनन सुन्दर | | |
| सहजहि तनु | 302 | ने. 230 |
| सहजे सुन्दरि दे. मृगमद पङ्क | | |
| सहस रमनि सत्री. दे. नयनक क | | |
| साओत जलधर | प. 33; | प. 33; नाना. 21 |
| साकर सूप | 246 | ने. 171 |
| साजनि अकथ | 373 | त. 54 |
| साजनि तैसन | 602 | प. 4 |
| साजनि निद्रुष्टि | 784 | नगु (नाना) 7 |
| साजनि से दिव | 608 | नाना. 7; प. 10 |
| साँझक वरौ | 506 | राम. 1 |
| साँझक वेरि | 319 | ने. 249; नाना. 83 |
| साँझहि तित्र | 322 | ने. 252 |
| सात बहिलि हमे | 694 | ने. 38 |
| सागर पुरुसा | 461 | त. 173; भाषा. 17 |
| सागर सुन्दर जे | 272 | ने. 196 |

| | | |
|----------------------------|-----|----------------|
| सामरि हे झामरि | 273 | जे. 197; त. 57 |
| साइङ्ग रुचि अम्बर | 211 | जे. 132 |
| सासु जरातुरि | 771 | नगु (पर) 8 |
| साहर मञ्जर | 474 | त. 190 |
| साहर सडरम | 483 | त. 201 |
| सिब सङ्कर हे | 768 | नगु (हर) 43 |
| सिब हे भलि अनुगति | 607 | प. 35 |
| सिब हे सेवण अण | 760 | नगु (हर) 30 |
| सिब हो उतरव पार | 857 | कली. 238 |
| सिरजह जानि | 591 | गोर. 19 |
| सिरिहि पुरव दे. रत्ना अधिक | | |
| सिसिर | 733 | नगु (मिथि) 722 |
| सुकृतिव वाट | 595 | गोर. 23 |
| सुख जनमान्तर | 109 | जे. 16 |
| सुखे न सुनसि | 140 | जे. 49 |
| सुजन अरजि कत | 696 | जे. 48 |
| सुजन वचन छोटे | 174 | जे. 91 |
| सुजन वचन हे | 130 | जे. 37 |
| सुतति छलहुँ | 782 | नगु (नाला) 5 |

| | | |
|---------------------------------|-----|-----------------------|
| सुधामुखि को विधि | 798 | नगु. 20 |
| सुन सुन माधव | 494 | त. 213 |
| सुन सुन सुन्दरि | 289 | जे. 215 |
| सुन सुन हे सखि वचन | 811 | नगु. 132 |
| सुनिऐन्दि हर | 675 | मिगीस. 1/32; जे. 28 |
| सुनि सिरिखण्ड तरु | 295 | जे. 222; त. 145 |
| सुन्दरि कह कह न | 618 | पि. 13 |
| सुन्दरि गरुअ तौर | 360 | त. 38 |
| सुन्दरि चलतिह | 628 | पि. 26, मिगीस. जे. 10 |
| सुन्दरि जमो तोहि | 566 | भाषा. 129 |
| सुन्दरि विह सवन | 648 | पि. 57; जे. 100 |
| सुन्दरि सुफल दे. आसात्रे मन्दिर | | |
| सुन्दरि हे तोहि | 866 | पि. 80 |
| सुपुरख पेस | 838 | नगु. 763 |
| सुपुठख भासा घी | 153 | जे. 65 |
| सुरत घरिसम दे. सुरा सिधिल | | |
| सुरत समापि | 634 | राग. 84; पि. 37 |
| सुरत सिधिल तन | 217 | जे. 138 |
| सुरभि निकुञ्ज वेदि | 84 | राम. 85 |
| सुरभि समय भल | 501 | त. 225 |

| | | |
|------------------------------------|-----|-------------------------|
| सुरसरि सेवि | 789 | नगु (गंगा) 2 |
| सुरुज सिन्दुर बिन्दु | 312 | नै. 241; त. 48; राज. 25 |
| सूखल सर | 21 | राज 22 |
| सून सङ्केत | 131 | नै. 38 |
| से अति नागर दे. से वरनागर | | |
| से अति नागर नये दे. तत्रे रस नागरि | | |
| सेभेल सामि | 139 | नै. 48 |
| सेवण अपनाहु दे. हर है | | |
| से वरनागर | 191 | नै. 109 |
| से भल जे | 449 | त. 157; भा. 38 |
| सेहे कान्ह सेह हम | 717 | नगु (मिथि) 472 |
| सेहे परदेस | 118 | नै. 25; भाषा. 141 |
| सेसव जीवन दरसन भेल | 797 | नगु. 4 |
| सेसव जीवन दुहु दल | 795 | नगु. 4 |
| सेसव जीवन दुहु पथ | | |
| सोलह सहस | 204 | नै. 123 |
| सीरम लोमे | 292 | नै. 216 |
| स्याम धरन | 695 | मै. 48 |
| हठ न करह दे. अबला | | |
| हठे न हलब मोर | 382 | त. 67 |

| | | |
|------------------------|-----|----------------------|
| हमर धसार दे. पहिल परखर | | |
| हमर मन्दिर | 948 | नगु. 845 |
| हमराके | 691 | मिथी सं. 3/9; मै. 48 |
| हमरा घर नहि | 772 | नगु (पर) 10 |
| हम सजो रुसल | 755 | नगु (हर) 23; मै. 185 |
| हम हसि हेरल | 713 | नगु (मिथि) 61 |
| हमरे बचने | 129 | नै. 36 |
| हमे अबला अगेअनि | 671 | मिथीसं. 1/28 |
| हमे अबला लोहें | 389 | त. 49 |
| हमे एकसरि | 243 | नै. 168 |
| हमे जुबती | 168 | नै. 82 |
| हमे जोगिनि एकसरि | 679 | मै. 36; मिथीसं. 1-35 |
| हमे धनि | 126 | नै. 33 |
| हमे धनि तापिनि | 835 | नगु. 712 |
| हमे नहि आजु | 674 | मिथीसं. 1/31; मै. 27 |
| हरइले बसल | 52 | राज. 54; नै. 58 |
| हरख सहित दे. सपना एक | | |
| हर जनि विसरव | 858 | देवी. 240 |
| हर विनु तनय | 781 | नगु (पर) 17 |
| हर है सेवण | 572 | हर.; भाषा... |

| | | |
|-------------------|-----|------------------------|
| हरि गेल मधुपुर | 699 | मै. 100 |
| हरि धरु | 719 | नगु (मिथि) 563, मै. 98 |
| ...हरिनि हताहलि | 59 | राम. 59 |
| हरि पति बैरि | 777 | नगु (प) 10 |
| हरि पतिहित | 262 | मै. 186 |
| हरि बिसरल | 303 | मै. 231 |
| हरि रव सुनि | 181 | मै. 98 |
| हरि रिपु अनुज | 63 | राम. 63 |
| हरि रिपु तनय | 781 | नगु. (पदे.) 17 |
| हरि रिपु बरद | 120 | मै. 27 |
| हरि रिपु रिपु | 233 | मै. 155 |
| हरि रिपु रिपु सुज | 298 | मै. 226 |
| हरि सम आनन | 775 | नगु (प) 5 |
| हरि हरि हरि | 470 | त. 185; भाषा. 130 |
| हसि निहारन | 3 | राम. 3; मै. 210 |
| हथिक दसन | 261 | मै. 185-क |
| हाथि धोळ | 592 | मोर. 20 |
| हासक चतुरिम | 538 | भाषा. 25 |
| ...हिलि बाला | 56 | राम. 57A |
| हामे बिलासिलि | 277 | मै. 202 |

| | | |
|------------------|-----|------------------------|
| हिमकर हेरि | 240 | मै. 165 |
| हिम सम चान्दन | 171 | मै. 86 |
| हृदयक कपट | 172 | मै. 89 |
| हृदयक हार | 278 | मै. 203 |
| हृदय कुसुम सम | 221 | मै. 143 |
| हृदय लोहन | 12 | राम. 12; मै. 1; त. 33. |
| हे सपत्नह | 672 | जिगीस. 1/29 |
| हैमलता हिम | 563 | भाषा. 102 |
| हेरिलोहे दीठि | 355 | त. 31 |
| हेरि हेरि माधुर | 546 | भाषा. 60; राम. 1 |
| हे हर जानि न भेल | 686 | मै. 183; जिगीस. 2/32 |
| हे हरि हे हरि | 633 | मि. 35 |